२५५६

सेतु माहात्म्य

अनु. पं. दुर्गाप्रसाद

२)

स्कन्दपुराणान्तर्गत

सेतुमाहात्म्यखण्ड का भाषानुवाद ॥

जिसमें

सेतुबन्ध का माहात्म्य वहां के सब तीर्थोंका वैभव महालय श्राद्धका विस्तारपूर्वक माहात्म्य नरकोंका वर्णन रामेश्वर के माहात्म्यका विस्तारसे वर्णन औ अनेक अतिमनोहर कथाओंका वर्णनहै जिनके पठन और श्रवण से चित्तको महान् आनन्द मिलताहै और पुण्यकीभी प्राप्ति होतीहै

जिसको

श्रीमद्गुणग्राहक पण्डितसुखदायक भरतखण्डके परमहितैषी आर्य्य जनोंकी उन्नति के लिये अहोरात्रतत्परकल्पअतिदत्त अवधसमाचारपत्र सम्पादक दूसरवंशावतंस श्रीयुत मुंशीनवलकिशोर साहबके निदेश में काश्मीरेन्द्र श्रीमहाराज गुलाबसिंहजी के मुख्यदैवज्ञ ज्योतिषी श्रीव्रजलाल पण्डितजीके पुत्र अलवरप्रान्तवर्त्ति हमज़ापुरग्राम निवासि चौरासियाख्य ब्राह्मण कुलोत्पन्न वर्त्तमान काल में जयपुरदेशाधीश श्रीमन्महाराजाधिराज श्री १०८ माधवसिंहजी के आश्रित

श्री पण्डित दुर्गाप्रसादने

संस्कृत से आर्य्यभाषा में किया

चौथीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

फ़रवरी सन् १९०५ ई० ॥

सूचना ॥

अनेकप्रकारकी पुस्तकें इस यंत्रालयमें मुद्रित हुई हैं उन से जितने पुराणहैं उनसे चुनकर कुछ पुस्तकें नीचे लिखीजाते हैं जिन महाशयों को इसमें से किसी पुस्तककी आवश्यकता हो वे इस प्रेसके मेनेजरको पत्र लिखकर मँगालें तथा पुस्तकों का जो सूचीपत्र छपाहै वह भी मँगाकर देखलें ॥

देवीभागवत भाषा क़ी० ३) पु०

इसका उल्था पण्डित महेशदत्त सुकुलने कियाहै—इसमें मुख्य करके श्रीदेवीजी के पाठ आदिक का विस्तार और सर्व प्रकारकी शक्तियों का कथन और उनके अवतार, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र, कवच, कीलक, अर्गला, पूजा, स्तोत्र, माहात्म्य, सदाचार, प्रातःकृत्य, रुद्राक्षमहिमा, गायत्री और देवियों के पुरश्चरण का वर्णन, सन्ध्योपासन, ब्रह्मयज्ञादि असंख्य तन्त्र मन्त्रके विषयहैं भाषा ऐसी स्पष्ट है कि साधारणलोग भी समझसक्ते हैं ॥

लिंगपुराण क़ी० ॥।≈)

इसका उल्था छापेखाने के बहुत खर्चसे जयपुरनिवासी पण्डित दुर्गा प्रसादजीने भाषामें कियाहै—जिसमें अनेक प्रकारके इतिहास सूर्यवंश चन्द्रवंशका वर्णन, ग्रह, नक्षत्र, भूगोल और खगोलका कथन, देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और नागादिकी उत्पत्ति इत्यादि बहुतसी कथायें हैं

विष्णुपुराण भाषा वार्तिक क़ी० ॥।) पु०

इसका पण्डित महेशदत्त सुकुलने भाषान्तर कियाहै--जिसमें जगदुत्पत्ति, स्थिति, पालन, ध्रुव, पृथु आदि राजाओं की कथा, भूगोल, खगोल वर्णन, धर्मशास्त्र, मन्वन्तरकथा, सूर्य और सोमवंशी राजाओं का कथन इत्यादि बहुतसी कथायें संयुक्त हैं ॥

विष्णुपुराणभाषाश्रीराजाअजीतसिंहवैकुंठवासीकृतक़ी. १॥)

जिसको श्रीराजाप्रतापबहादुरसिंह ताल्लुक़दार व आनरेरी मॉजिस्ट्रेट व प्रेसीडेंटप्रतापगढ़ने छपवायाहै—इसमें सम्पूर्ण विष्णुपुराण दोहा चौपाई इत्यादि अनेकप्रकार के ललित छन्दों में वर्णित है काग़ज़ सफ़ेद है ॥

भूमिका

विदितहो कि इस असार संसार में धर्म, अर्थ, काम औ मोक्ष ये चार ार्थ सार हैं इसीलिये सब मनुष्य अपनी २ रुचिके अनुसार इन की ति के लिये यत्न करते हैं इनमें धर्म प्रधान है धर्म के सेवन से ये रों प्राप्त होते हैं औ धर्म की प्राप्ति अपने २ वर्ण और आश्रमों के लिये चित वैदिक कर्म्म के अनुष्ठान से सदा होतीरही इसीलिये पूर्वकाल में नों वर्ण के मनुष्य वेद पढ़ने में अतिपरिश्रम करते थे औ वेदपढ़ क्कर्म का अनुष्ठान कर अपना २ अभीष्टफल पाते थे—परन्तु कलियुग मनुष्य ऐसे अल्पायुष् औ मन्दबुद्धि होंगे कि जो जन्म भरमें अतिप- श्रम करने से भी सम्पूर्ण वेद न पढ़सकेंगे यह विचार परमकारुणिक ण द्वैपायनमुनि ने वेद के चार भाग किये—इसीसे उनका नाम वेद- स हुआ—औ वेदका आशय लेकर अठारह पुराण औ श्रीमहाभारत न इतिहास रचा जिनके पठन औ श्रवण से थोड़ेसे परिश्रम करनेसेही लियुग के आलस्य युक्त आर्य्यजनों को धर्म का ज्ञान भलीभांति हो- ताथा—औ अपने २ धर्मका सेवनकर उत्तमफल पाते थे—परन्तु पुराण दि का तात्पर्य्य समझने के लिये संस्कृतका ज्ञान चाहिये औ वर्त्तमान ल में आर्य्यलोगों से प्रायः संस्कृतविद्या का अभ्यास छुटगया—इसी रण पुराण आदिका परिशीलन नहीं करसक्ते औ वर्णाश्रमधर्म को नहीं नते--जब धर्म का ज्ञानही नहीं तो आचरण क्योंकर होसक्ताहै—औ चरण विना आयुष्, बुद्धि, बल, ऐश्वर्य्य, तेज, विद्या, धन, पौरुष, ाम, कीर्त्ति आदि से हीन होतेजाते हैं यह दुर्दशा अपने बन्धु आर्य्य ों की देख औ सब पुरुषार्थ प्राप्ति का मूल ज्ञानपूर्वक धर्माचरण धर्मज्ञान का मूल पुराण आदिका परिशीलन समझ औ आर्य्यजनों

को प्रायः संस्कृतभाषा में अनभिज्ञ देख विज्ञातिविज्ञ भारतवर्ष के परम-हितैषी आर्य्यजनों के कल्याण में अहोरात्र तत्पर दूसरवंशावतंस अवध समाचारपत्रसम्पादक श्रीमुन्शीनवलकिशोर साहबने यह इच्छा की कि यदि सब पुराण संस्कृत से आर्यभाषामें अनुवाद होकर मुद्रित होजायँ तो सब आर्य्यजन उनका तात्पर्य्य सुगमता से जानसकैं औ यथार्थ धर्म स्वरूप जान दुराचरणसे बच सत्कर्म में प्रवृत्त रहैं तो सब प्रकारके क्लेशों से छुट ईश्वर के अनुग्रह से अपरिमित आनन्दपावें-यह मनमें निश्चय कर श्रीयुत मुन्शीसाहब ने इस सत्कार्य्य में सत्कारपूर्वक हमको प्रवृत्त किया हमने भी उनकी इच्छानुसार लिङ्गपुराण और भविष्यपुराण का आर्य्यभाषा में अनुवाद किया जो मुन्शीसाहब ने अतिस्वच्छता से मुद्रित करायाहै-अब स्कन्दपुराण के अनुवाद का प्रारम्भ किया परन्तु यह पुराण सब पुराणों में बड़ाहै जिसकी श्लोक संख्या ८११०० है औ एक स्थान में मिलता भी नहीं इस लिये जो जो खण्ड इसका मिलता जाय उसीका अनुवाद होकर छपताजाय--यह विचार प्रथम हमने इस पुराण के ब्रह्मोत्तरखण्ड का अनुवाद किया वह छप भी गया है अब यह सेतुखण्ड अनुवादित होकर छपाहै आगेभी पुरुषोत्तमखण्ड, रेवाखण्ड, काशीखण्ड, केदारखण्ड, अवन्तिखण्ड आदि जो जो खण्ड प्राप्त होते जायँगे उनका अनुवाद होकर छपता जायगा और ईश्वरके अनुग्रह से कुछ काल में यह बड़ा पुराण सम्पूर्ण अनुवादित होजायगा-इस ग्रन्थका अनुवाद हमने अतिसावधानता से किया है औ हमारे परममित्र पण्डितवर श्री सरयूप्रसाद जी ने इसके शोधनका परिश्रम स्वीकार किया है--अब हम आशा रखतेहैं कि सरलहृदय औ क्षमाशील सज्जन इस पुराण के पाठक आर्य्यजन दोषों पर दृष्टि न देकर गुणग्रहणही करेंगे औ ईश्वर के अनुग्रह से कल्याणभागी होंगे शुभम् ॥

इति ॥

सेतुमाहात्म्यखण्ड का सूचीपत्र ॥



स्कन्दपुराणान्तर्गत ॥

सेतुमाहात्म्यखण्डका भाषानुवाद ॥

पहिला अध्याय ॥

मंगलाचरण सूतजीके प्रति शौनकआदि मुनियोंका प्रश्न सूतजीका कथन रामेश्वर क्षेत्रकी प्रशंसा और नरकोंका वर्णन और नरकके अधिकारियों का वर्णन और सेतुबन्ध यात्राका फल और विधि ॥

दो॰ विबुध मुकुट मणिदीपिका नीराजित दिनरैन ।
विघ्नहरैं हेरम्बके चरण कमल सुखदैन ॥ १ ॥
भजौं नित्य गौरी गिरिश सकल सिद्धि के हेतु ।
भक्तमनोरथ कल्पतरु भवसागर के सेतु ॥ २ ॥

कथा ॥

शुक्लाम्बरधरंविष्णुं शशिवर्णंचतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनंध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥

नैमिषारण्यमें बड़े महात्मा मुमुक्षु ब्रह्मज्ञानमें तत्पर अष्टाङ्ग योग में निपुण निर्मम धर्म्मज्ञ असूया आदि दोषों से रहित जितेन्द्रिय जितक्रोध सब भूतों पर दया करनेहारे शौनक आदि छब्बीस सहस्रमुनि अपने शिष्य प्रशिष्यों सहित भक्तिसे विष्णु भगवान् का पूजन करतेहुये उग्रतप करते थे एक समय मुनि

के देनेहारे परमपुण्य उस क्षेत्रमें सब मुनियों का समाज एकत्र हुआ औ परस्पर अनेक प्रकारकी कथा कहनेलगे औ भुक्ति मुक्ति की प्राप्ति के लिये सुगम उपाय सोचनेलगे इसी अवसरमें बड़े विद्वान् व्यासजी के शिष्य सब पौराणिकों में उत्तम औ बड़े तपस्वी श्रीसूतजी वहां आये उनको देख सब मुनि उठे औ बड़े आदरसे सूतजीको आसनपर बैठाय पाद्य अर्घ्य आदि से उनका पूजनकर कुशल प्रश्न पूंछा कुछ कालके अनन्तर सूतजी स्वस्थ भये तब शौनक आदि मुनीश्वरों ने पूछा कि हे सूतजी ! आपने सब पुराण श्रीवेदव्यासजी के मुख से श्रवण किये हैं इस कारण आप सब पुराणों का तात्पर्य्य भली भांति जानते हैं अब आप यह वर्णन करें कि भूमण्डल में कौन पुण्यतीर्थ है कौन पुण्यक्षेत्र है जीव संसारसागर से क्योंकर मुक्त होते हैं शिव औ विष्णुमें दृढ़ भक्ति क्योंकर होसक्ती है औ तीन प्रकार के कर्म्म का फल क्योंकर सिद्ध होता है यह सब आप कृपाकर कथन कीजिये क्योंकि यह सब विषय व्यासजी ने आप को उपदेश किये होंगे प्रिय शिष्य को गुरु रहस्यबात भी कहदेते हैं यह मुनियोंका वचन सुन अपने गुरु श्रीवेदव्यासजी को प्रणामकर सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो ! आपने जगत्के हितके लिये यह बहुत उत्तम बात पूछी आजतक यह रहस्य हमने किसीसे नहीं कहा अब आप एकाग्रचित्त हो भक्तिपूर्वक श्रवण कीजिये हम वर्णन करते हैं ॥

रामचन्द्र के बांधे हुये सेतुके समीप सब क्षेत्र औ तीर्थों में उत्तम रामेश्वर नाम क्षेत्रहै जिसके दर्शनमात्रसे शिव औ विष्णु में भक्ति पुण्यकी वृद्धि तीनप्रकार के कर्मकी सिद्धि औ संसार से मुक्ति होतीहै जो मनुष्य भक्तिसे सेतुका दर्शनकरै वह अपने माता पिताके दोकोटि कुलसहित एककल्प पर्यन्त शिवलोक में निवास कर अंतमें मुक्ति पाता है भूमि के पांशु अर्थात् धूलि के कण गिन

सकते हैं आकाश के तारेभी गिनसकते हैं परन्तु सेतुदर्शन के पुण्य को शेषनाग भी नहीं गिनसक्के सब देवताओं का रूप सेतु है उसके दर्शन का सम्पूर्ण पुण्य कौन वर्णन करसकता है सेतु दर्शन करने से सम्पूर्ण यज्ञकरने का सब तीर्थों में स्नान करने का औ सब प्रकार के तपकरने का फल प्राप्त होताहै जो और मनुष्योंको सेतुदर्शन करने के लिये उपदेश करै वह भी अनन्त पुण्य पाताहै सेतुके समीप स्नान करनेहारा मनुष्य अपने सातकोटि कुलों सहित विष्णुलोक में जाय वहांहीं मुक्त होताहै सेतुरामेश्वरलिंग औ गन्धमादन पर्व्वत को चिन्तन करनेहारा मनुष्य सब पापों से छुटता है माता पिता आदि लक्षकोटि कुलों सहित तीनकल्प शिवलोक में निवासकर वहांहीं मुक्त होता है सेतु स्नान करनेहारा मनुष्य मूषावस्था बसाकूप वैतरणी नदी श्वभक्ष मूत्रपान तप्तशूल तप्तशिला पुरीषह्रद शोणितकूप शाल्मल्यारोहन रक्तभोजन कृमिभोजन स्वमांसभोजन वह्निज्वाला प्रवेशन शिलावृष्टि अग्निवृष्टि कालसूत्र क्षारोदक उष्णतोयआदि घोरनरकों को नहीं देखता महापातकी पुरुषभी सेतुस्नानकरै तो माता पिताके सौकोटि कुल सहित तीनकल्प विष्णुलोक में निवासकर वहांहीं मुक्तिपावै अधःशिर क्षारसेवन पाषाणयन्त्र पीडन गर्तप्रपतन पुरीषलेप क्रकचदारण पुरीषभोजन रेतःपान सन्धिदाह अङ्गारशय्याभ्रमण मुसलमर्दन आदि नरकों को सेतु दर्शन करनेहारा मनुष्य नहीं देखता है जो पुरुष मन में यह चिन्तन करता है कि मैं सेतुबन्ध के दर्शन के लिये जाऊंगा अथवा सेतुबन्ध यात्रा के अर्थ सौ पैर भी चलै वह सब पापों से मुक्तहो स्वर्ग्गको जाता है काष्ठयन्त्रपीडन शस्त्रभेदन पतनोत्पतन गदादण्डनिपीडन गजदन्तहनन भुजगदंशन धूमपान पाशबन्ध शूलनिपीडन क्षारोदकसेचन क्षाराम्बुपान तप्तलोह सूचिभक्षण स्नायुदाह स्नायुच्छेदन अस्थिभेदन श्लेष्मा-

दन पित्तपान महातिक्तनिषेवण उष्णतैलपान क्षारोदकपान कषायोदकपान तप्तपाषाणभोजन तप्तबालुकाभोजन दशनमर्दन तप्तलोहशयन तप्ताम्बुनिषेचन आदि महानरकों को सेतुदर्शन करनेहारा नहीं देखता औ जिन नरकों में पापियों के नेत्रों में सूचीडालते हैं शिश्नु औ वृषणों में लोह का भार लटकाते हैं पापियों को वृक्षसे गिराते हैं तीखे शस्त्रों की शय्यापर सुलाते हैं औ वीर्य पिलाते हैं इत्यादि दारुण नरकों को सेतु में स्नान करनेहारा नहीं देखता सेतु के समीप बालूरेत में लोटने से जितने पांशुके कण देह में लगें उतनी ब्रह्महत्याओं का नाश होजाता है जिसके शरीर में सेतु का पवन लगे उसके दशहजार सुरापान पातक उसीक्षण निवृत्त होजाते हैं जिसके केश सेतु के समीप जलमें गिरैं उसके दशहजार गुरुदारगमन नामक महापातक नाश को प्राप्त होते हैं जिस पुरुषके अस्थियों को उसके पुत्रपौत्र सेतुबन्ध में डालैं उसके दशहजार स्वर्णस्तेय पातक दूरहोते हैं औ स्नान के समय सेतुबन्धका स्मरण करने से संसर्गज महापातक कटते हैं मार्गभेदी अर्थात् रस्ता तोड़नेवाला केवल अपने लिये रसोई बनानेवाला यति ब्राह्मणदूषक बहुत भोजन करनेवाला और वेद बेचनेवाला ये पांच ब्रह्मघातक हैं जो पुरुष ब्राह्मण को धनआदि कोई पदार्थ देना अंगीकार करके फिर न देवै जो धर्म्मोपदेश करनेहारे गुरुसे द्वेष करैं औ जो ब्राह्मणों का तिरस्कार करैं वेभी ब्रह्मघाती होते हैं जो पानी पीनेके लिये आतेहुये गोसमूह को निवारण करै वहभी ब्रह्महा है ये सब पापी सेतुदर्शन करने से निष्पाप होजाते हैं उपासना त्यागनेहारा देवताके अन्नको भोजन करनेहारा वेश्यापतित समूह आदिका अन्नभक्षण करनेवाला और सुरापान करनेहारी स्त्रीसे संग करनेहारा ये सब सुरापान करनेहारे के समान हैं ये सब सेतुस्नान करने से निष्पाप होजाते हैं कन्द मूल फल

कस्तूरी पट्ट वस्त्र दूध चंदन कपूर सुपारी शहद घी तांबा कांस्य और रुद्राक्षकी चोरी करनेहारे सुवर्णस्तेयी गिनेजाते हैं येभी सेतुदर्शन से निष्पाप होते हैं और भी किसी द्रव्यकी चोरी करने हारे दुष्ट पुरुष सेतुके दर्शन करते ही सब पापों से छुटजाते हैं बहिन पुत्रकी स्त्री भाईकी स्त्री मित्रकी स्त्री रजस्वला परस्त्री मद्य-पान करनेहारी स्त्री हीन वर्णकी स्त्री औ विधवा स्त्री से संग करनेहारे पुरुष गुरुदारगामी कहाते हैं ये सब सेतुस्नान से निष्पाप होजाते हैं जो इनके संसर्गी हैं वेभी सेतु दर्शन करने से पाप रहित होते हैं जो पुरुष यज्ञ विनाकिये स्वर्ग में मेनका घृताची आदि अप्सराओं के साथ विहार करना चाहैं वे सेतु में स्नान करैं सूर्य औ अग्निको विना सेवन किये औ देवताओं के आराधन विना जो पुरुष अपना कल्याण चाहे वह भक्तिसे सेतु स्नान करै तिलभूमि सुवर्ण औ अन्नदान किये विना जे स्वर्ग चाहैं वे सेतुस्नान करैं उपवास व्रतादिकरके शरीरको संतापदिये विना स्वर्ग की इच्छाहोय तो सेतुस्नान करो सेतुस्नान करने से मनकी शुद्धि होती है औ मोक्ष प्राप्त होता है जप होम दान यज्ञ तप आदिसे सेतु स्नानको पुराण में उत्तम कहाहै जो पुरुष नि-ष्कामहो सेतुस्नान करै उसके सब पाप निवृत्त होते हैं औ पुन-र्जन्मभी नहीं होता औ जो पुरुष संपत्तिके लिये सेतुस्नान करै वह बड़ी संपत्तिपाताहै शुद्धिकेलिये स्नानकरै तो शुद्धिपावै मुक्ति के लिये करै तो मुक्ति पावै औ अप्सराओं के साथ रतिके लिये सेतुस्नान करै तो स्वर्ग में जाय अप्सराओं के साथ उत्तम भोग भोगै सेतुस्नान से पापका क्षय धर्म्म की वृद्धि औ सब मनोरथों की सिद्धि होती है सब व्रत यज्ञ योग औ तीर्थोंसे सेतुस्नान बढ़ कर है ब्रह्मलोक वैकुंठ कैलास अथवा इन्द्रादिलोकों में जिनकी विहारकरनेकी इच्छा हो वे सेतु स्नान करें आयुष् अरोग्य संपत्ति अतिरूप सांगवेदों का ज्ञान सब शास्त्रों का बोध सब

मंत्रों में अभिज्ञता इत्यादि जिस कामना के उद्देशसे सेतु स्नान करै वह कामना अवश्यही सिद्ध होय जो पुरुष दारिद्र्य औ नरक से डरतेहों वे सेतुस्नान करैं श्रद्धा से अथवा बिन श्रद्धा सेतु स्नान करनेहारा मनुष्य दुःखभागी नहीं होता सेतु स्नान से सब के पापसमूह नष्ट होते हैं औ शुक्लपक्ष के चंद्रकी भांति पुण्य बढ़ता है जैसे समुद्र में रत्नों की वृद्धि होती है इसी भांति सेतु स्नान करने से धर्मकी वृद्धि होती है कामधेनु कल्पवृक्ष अथवा चिंतामणि जिस प्रकार मनुष्यों के सब मनोरथ सिद्ध करते हैं इसी भांति सेतुस्नान भी सब कामना सिद्ध करनेहारा है जो पुरुष दारिद्र्य से सेतुयात्रा करने को समर्थ न होयँ वे और मनुष्यों से धन मांगकर सेतुयात्रा करैं जो पुरुष सेतुयात्रा करनेहारे को धन देवैं वे भी सेतुस्नान के समान फल पाते हैं सेतुयात्रा के लिये ब्राह्मण से धन लेवै ब्राह्मण न देवै तो क्षत्रिय से क्षत्रिय भी न देवै तो वैश्य से धन मांगे परन्तु शूद्र से कभी धन न लेवै सेतुयात्रा करनेहारे पुरुष को जो पुरुष धन धान्य वस्त्र भोजन आदि देवैं वे अश्वमेध आदि यज्ञों का फल पाते हैं औ तुलापुरुष आदि महादान करने का औ चारों वेदों के पारायण का भी फल पाते हैं सेतु स्नान से ब्रह्महत्या आदि पातक दूर होते हैं औ सब मनोरथ सिद्ध होते हैं सेतुयात्रा के लिये जो याचनाकर धन लेवै औ यात्रा करै उस को प्रतिग्रह लेनेका दोष नहीं होता औ सेतु स्नान का भी सम्पूर्ण फल होता है जो पुरुष किसी से कहै कि तू सेतु यात्राकर मैं तुझे धन दूंगा और पीछे से धन न देवै वह ब्रह्मघातक होता है औ जो यात्रा के लिये याचना करके धन लेवे औ यात्रा न करै वह भी ब्रह्मघातक है जो धनवान् होकर लोभ से यात्रा के लिये धन मांगता फिरै वह चोर है जिस किसी उपाय से सेतुयात्रा करै जो यात्रा करने का अपने को अवसर न

होय तो दक्षिणा देकर ब्राह्मण से सेतुयात्रा करावै धन मांगकर यज्ञ करने में जिस भांति दोष नहीं इसी प्रकार सेतुयात्रा में भी याचना करने का दोष नहीं औरों से द्रव्य याचना करके भी मनुष्यों को सेतु स्नान में प्रवृत्त करै सत्ययुग में ज्ञान से त्रेता में यज्ञ करने से द्वापर में दान देनेसे मोक्ष मिलता है औ सेतुस्नान से चारोंयुगों में मोक्षप्राप्ति होती है ॥

दूसरा अध्याय ॥

रामचन्द्रजी की कथा औ सेतुबाँधनेका वर्णन सेतुके बीच मुख्य चौबीस तीर्थों के नाम ॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी! रामचन्द्रजी ने अगाध समुद्र में क्योंकर सेतु बांधा औ सेतुमें गन्धमादनपर्वत के बीच कितने तीर्थ हैं यह आप वर्णन करैं यह ऋषियों का वचन सुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो! रामचन्द्रजी ने जिस भांति समुद्रमें सेतुबांधा वह हम वर्णन करते हैं आप प्रीति पूर्वक श्रवण करैं पिताकी आज्ञा से दण्डकारण्य में पञ्चवटी के बीच कुटी बनाय सीता और लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजी ने निवास किया वहांहीं मारीच के छल से रावण ने सीता को हरा रामचन्द्र भी वन में सीता को ढूंढ़ते २ शोक मोह से व्याकुल पम्पासर के तीर पर पहुँचे वहां एक वानर को देखा उस वानर ने भी रामचन्द्र से पूछा कि आप कौन हैं तब रामचन्द्र ने अपना सब वृत्तान्त कहा औ वानर को भी पूछा तब वह वानर कहनेलगा कि हे राम!वानरों के राजा सुग्रीव का मैं मंत्री हूं औ हनुमान् मेरा नाम है औ आपके पास मुझे भेजा है वह आपसे मैत्री चाहते हैं इस लिये आप को वहां चलना चाहिये यह हनुमान् का वचन सुन रामचन्द्र सुग्रीव के पास गये औ उसके साथ अग्निसाक्षी से मैत्रीकर बालिके मारनेकी प्रतिज्ञा

की औ सुग्रीवने सीताका ढूंढ़ना अंगीकार किया इसभांति दोनों प्रतिज्ञा कर बड़े स्नेहसे ऋष्यमूक पर्वत में रहने लगे सुग्रीव के निश्चय के लिये दुन्दुभिनाम राक्षस के शरीर को पैरके अँगूठे से रामचन्द्र ने कई योजन फेंक दिया औ एक बाण से साततालके वृक्ष बेधे तब सुग्रीव ने प्रसन्न हो कहा कि हे राम! आप को मित्रकर अब मुझे इन्द्रआदि देवताओंसे भी भय नहीं है मैं रावण को मार अवश्य सीता को लाऊंगा फिर राम लक्ष्मण को साथ ले सुग्रीव किष्किन्धा में गया औ गर्जने लगा बाली भी उसके गर्जने को पहिचान क्रोध कर अन्तःपुर से निकला औ अपने छोटे भाई सुग्रीव से युद्ध करनेलगा बाली ने एक मूका सुग्रीवके ऐसा मारा कि वह विह्वलहो भगा औ रामचन्द्र के समीप पहुँचा तब रामचन्द्र ने एक माला सुग्रीव को पहिनाय दी औ फिर युद्ध करने के लिये भेजा सुग्रीव भी जाय बाली के साथ बाहुयुद्ध करनेलगा इसी अवसर में रामचन्द्र ने एक बाण ऐसा मारा कि बाली गिरपड़ा औ मरगया किष्किन्धा का राज्य सुग्रीव ने पाया वर्षाऋतु व्यतीत होने के अनन्तर बहुतसी वानरों की सेना साथले सुग्रीव रामचन्द्र के पास आया औ सीता के ढूंढ़ने को वानरों को भेजा उनमें हनुमान् लङ्का में पहुँचे औ सीताजी को देखा औ उनका दिया चूड़ामणि लाकर रामचन्द्र को दिया उसको देख रामचन्द्र को हर्ष औ शोक एकही काल में हुये फिर लक्ष्मण सुग्रीव हनुमान् जाम्बवान् आदि को संगले रामचन्द्रजी ने अभिजित् मुहूर्त्त में लङ्का की ओर प्रस्थान किया औ कई देशों को लंघनकर महेन्द्र पर्वतमें पहुँचे वहां चक्रतीर्थ पर निवास किया वहांहीं रावण का भाई विभीषण अपने चार मन्त्रियों समेत रामचन्द्रजी से आमिला रामचन्द्रजी ने विभीषण का बड़ा आदर किया परन्तु सुग्रीव के मनमें सन्देह हुआ कि यह रावणका दूत न होय तब

रामचन्द्रजी ने सुग्रीवका सन्देह दूरकिया औ अनेक युक्तियोंसे विभीषण को निष्कपट जान अपने समीप रक्खा औ सम्पूर्ण राक्षसों का राजा बनाय सुग्रीवके समान उसको भी अपना मंत्री बनाया रामचन्द्रजी ने सब वानरों से यह पूछा कि समुद्र लंघन करने का क्या उपाय कियाजाय वानरों की सेनाभी बहुत बड़ी औ समुद्र भी दुस्तर है जिसमें बड़े २ तरंग उठरहे हैं मत्स्य शंख शुक्ति नक्र आदि जीवोंसे भराहै कहीं बड़वाग्नि करके भयंकर है किसी ओर बड़े २ तरंग उठते हैं कहीं प्रलय के मेघ गर्ज रहे हैं औ सौ योजन इसका विस्तार है सब सेना सहित हम क्योंकर इसके पारहोंगे यह बड़ाभारी विघ्न बीचमें है सीता क्योंकर प्राप्तहोंगी कौन उपाय कियाजाय जिससे समुद्रके पार होयँ बड़ाकष्ट हमारे ऊपर पड़ा राज्य से भ्रष्ट भये वनमें आये पिता मरगये औ भार्य्या हरीगई ये सब दारुण दुःख तो थेही सबसे अधिक दुःख यह पड़ा कि समुद्र लंघन किसभांति होय इस समुद्र के गर्जने को धिक्कार है कि जो हमारा दुःख नहीं देखता औ अगस्त्यजी ने कहा था कि हे राम ! तुम रावण को मारकर पापनिवृत्त होने के लिये गंधमादनपर्व्वत में जाना यह मुनिका वचन क्योंकर मिथ्या होसकता है इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो ! रामचन्द्रजी का यह वचन सुन सुग्रीवआदि वानर हाथ जोड़ बोले कि महाराज नौका औ छत्रों करके सब सेना पार होजायगी आप क्यों चिन्ता करते हैं तब विभीषणने कहा कि समुद्रका लंघन नौकाआदिसे नहीं होसकता इसका यह उपायहै कि रामचन्द्रजी समुद्र के शरण में प्राप्तहोयँ क्योंकि रामचन्द्रके पूर्व पुरुषों ने समुद्रको खोदाहै इसलिये समुद्र भी सगरवंशका अवश्यही सहाय करेगा यह विभीषणका वचन सुन सब वानरों को आश्वासन करते हुये रामचन्द्र बोले कि सौ योजन समुद्र का विस्तार है इससे नौका आदि करके सब

सेना नहीं पार होसकती औ इतनी नौकाभी कहाँहैं कि जिनमें सब सेना बैठजाय औ व्यापारियों को क्लेशदेना औ उनकी नौका छीनना हमको अंगीकार नहीं औ नौका आदिपर चढ़कर समुद्रमें प्रवेश करतेही कदाचित् शत्रु प्रहार करैं तो न इधर के न उधर के इससे विभीषण का कथनही हमको उत्तम देखपड़ता है पहिले हम समुद्र की उपासना करते हैं जो हमको उपासना करने से भी मार्ग्ग न देगा तो आग्नेयास्त्र से समुद्रको दग्धकर-देंगे यह विचारकर पवित्र हो आचमनकर लक्ष्मण सहित रामचन्द्रजी कुशाके बिछौनेपर समुद्रतट के ऊपर सोयगये इस प्रकार निराहार तीन दिन तीन रात्रि उसी कुशाके बिछौने पर सोतेरहे और समुद्र का उपासनकरते रहे परन्तु समुद्र ने रामचन्द्रजीको दर्शन न दिया तब कोपकर लक्ष्मण से रामचन्द्रजी ने कहा कि आज हम शंख शुक्ति मगर मत्स्य आदि जीवों समेत समुद्र को अपने बाणों से शुष्क करैंगे क्षमाकरके युक्त हम को समुद्र असमर्थ जानता है इसलिये ऐसे में क्षमा करना अनुचित है हे लक्ष्मण! हमारा धनुष्लाओ कि हम समुद्रको सुखा देवैं औ हमारी सेना पैरोंसेही पार उतरजाय बड़े बड़े दैत्य महामकर औ ऊंचे ऊंचे तरङ्गों करके युक्त इस निर्मर्याद समुद्र की आज हम मर्यादा तोड़ते हैं इतना कह रामचन्द्रजीने क्रोधकर धनुष्पर बाण चढ़ाया उस समय उनका स्वरूप ऐसा दुर्धर्ष था जैसा त्रिपुरवध के समय शिवजीका होय फिर कोपसे धनुष् को खैंच तीनों लोकों को कंपित करते हुये समुद्रपर बाण छोड़ने लगे उन बाणोंके लगतेही भयभीतहो समुद्र पाताल से निकल रामचन्द्रजी के शरण में आया औ ब्राह्मणरूप धार हाथ जोड़ रामचन्द्रजी की स्तुति करनेलगा॥

समुद्रउवाच। नमामितेराघवपादपंकजं सीतापतेसौम्यदपादसेविनाम्। नमामितेगौतमदारमोचदं श्रीपादरे

णुसुरवृन्दसेव्यम् १ सुन्दप्रियादेहविदारिणेनमो नमोस्तुते कौशिकयागरक्षिणे। नमोमहादेवशरासभेदिने नमोनमो राक्षससंघनाशिने २ रामरामनमस्यामि भक्तानामिष्टदायिनम्। अवतीर्णंरघुकुले देवकार्यचिकीर्षया ३ नारायणमनाद्यन्तं मोक्षदंशिवमच्युतम्। रामराममहाबाहो रक्ष मांशरणागतम् ४॥

इसभांति स्तुतिकर समुद्रबोला कि हे रामचन्द्र! हे दया के सागर! तुम कोपको निवृत्त करो औ मेरी रक्षाकरो मैं आपके शरण में प्राप्तहूं भूमि वायु तेज आकाश आदिका विधाताने जो स्वभाव रचाहै वे उसी में स्थिरहैं इसीभांति मेरा स्वभाव अगाधता (अर्थात् जिसके तलको कोई स्पर्श न करसके) है लोभसे कामसे भयसे औ रागसे मैं अपने स्वभावको कभी नहीं त्याग सक्ता परन्तु आपकीसेना उतरनेके लिये अवश्य सहायता करूंगा यह समुद्रका वचनसुन रामचन्द्रजीने कहा कि हे समुद्र! तुमशुष्क होजाओ जिससे हम सेनासहित लंकामें पहुंचें तब समुद्र ने फिर प्रार्थनाकरी कि महाराज जो उपाय मैं कहूं वह आप कीजिये जो मैं आपकी आज्ञासे शुष्क होजाऊं तो जो आवैगा वही मुझे धनुष्का बल दिखावैगा औ सूखनेकी आज्ञा देगा इसलिये आपकी सेना पारहोनेका मैं उपाय कहता हूं आपकी सेनामें विश्वकर्मा का पुत्र बड़ा शिल्पी अर्थात् कारीगर नल नामक एक वानर है वह जो तृण काष्ठ पाषाणआदि जलमें फेंकेगा उसको मैं धारण करूंगा वही सेतु बनजायगा उसी सेतुसे सेना सहित तुम लङ्का को जाओ इतना कह समुद्र अन्तर्द्धान हुआ औ रामचन्द्रजी ने नलसे कहा कि तू समुद्रमें सेतु बांधने को समर्थ है इसलिये सेतु बांध तब नल कहनेलगा कि हे रामचन्द्रजी! आपकी आज्ञा से समुद्रमें मैं सेतु बांधसकता हूं मेरे पिता विश्वकर्मा ने मुझे वर

दिया है औ मेरी माताको भी वरदिया है कि मेरे तुल्य शिल्पी तेरा पुत्र होगा मैं विश्वकर्म्माका औरस पुत्रहूं औ विश्वकर्म्मा के समानहूं इसलिये अबहीं सेतु बांधताहूं यह नलका वचन सुन रामचन्द्रजीने वानरोंको आज्ञादी औ वानर भी क्षणभरमें हज़ारों पर्व्वतोंके शृंग वृक्ष बेलि तृणआदि लेआये औ नलने समुद्र के ऊपर रामचन्द्रकी आज्ञासे दशयोजन चौड़ा औ सौ योजनलम्बा सेतुबांधा उस रामचन्द्रजीके बँधवायेहुये सेतुका जे मनुष्य दर्शन करैं वे सब पातकों से छूटजाते हैं सेतु दर्शन से जैसे शिवजी प्रसन्नहोतेहैं ऐसे व्रत दान तप होमआदि करके प्रसन्न नहीं होते सूर्य्यके तेजकेसमान जैसे कोई तेज नहीं इसी भांति सेतु स्नानके तुल्य स्नान नहीं जहां रामचन्द्रजीने सेतु बांधा औ जहां कुश-शय्यापर सोये वही पीछे लोक में प्रसिद्ध बड़ातीर्थ हुआ सूत जी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! यह हमने सेतुबंधनकी कथा कही सेतुबंध के समीप इतने तीर्थ हैं कि जिन सबकी गणना शेषजी भी अपनी हज़ार जिह्वा से नहीं करसकते परन्तु जो तीर्थ वहां मुख्य हैं उनका हम माहात्म्य कहतेहैं वहां चौबीस तीर्थ प्रधानहैं चक्रतीर्थ वेतालवरद पापविनाशन सीतासर मंगलतीर्थ अमृतवापिका ब्रह्मकुंड हनुमत्कुंड अगस्त्यतीर्थ रामतीर्थ लक्ष्मणतीर्थ जटातीर्थ लक्ष्मीतीर्थ अग्नितीर्थ शक्रतीर्थ शिवतीर्थ शंख तीर्थ यमुनातीर्थ गंगातीर्थ गयातीर्थ कोटितीर्थ साध्यामृततीर्थ मानसतीर्थ औ धनुष्कोटितीर्थ ये चौबीस तीर्थ सेतुके समीप प्रधानहैं औ महापातक हरनेहारे हैं जिस प्रकार रामचन्द्रजी ने सेतुबांधा औ जो २ वहां प्रधानतीर्थ हैं वह सब हमने वर्णन किया जिसके श्रवण से मनुष्य मुक्ति पाते हैं जो भक्तिपूर्वक इस अध्यायको पढ़ै अथवा श्रवण करै वह जय पाता है औ जन्म मरण के क्लेशसे छूटता है॥

तीसरा अध्याय ॥

चौबीसतीर्थों में चक्रतीर्थका माहात्म्य और गालवमुनिकी अद्भुत कथा ॥

शौनक आदि ऋषि पूंछते हैं कि हे सूतजी! आपने चौबीसतीर्थ सेतु के समीप कहे उनमें प्रथम तीर्थ का नाम चक्रतीर्थ क्योंकर हुआ यह आप वर्णन करैं यह मुनियों का वचन सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! चौबीसतीर्थों में जो प्रथम तीर्थ है उस के स्मरण करने से गर्भ में वास नहीं होता औ उस तीर्थ में स्नान आदि करने से लाखों जन्मों के किये पाप दूर होते हैं उस तीर्थ से अधिक अथवा उस के समान जगत् में कोई तीर्थ नहीं है गंगा सरस्वती नर्मदा पंपा गोदावरी यमुना कावेरी मणिकर्णिका आदि बड़े २ तीर्थ और उत्तम २ नदी इस तीर्थ के कोटि भागके भी तुल्य नहीं हैं उस तीर्थ का पहिला नाम धर्मतीर्थ है उसकी जिस भांति चक्रतीर्थ संज्ञा भई वह वर्णन करते हैं सेतुमूलके समीप जहां दर्भशयनहै वहांहीं चक्रतीर्थ है पूर्वकालमें विष्णुभक्त गालवमुनिने दक्षिणसमुद्रकेकिनारे हालास्यफुल्लग्राम क्षीरसर धर्मपुष्करिणी आदि तीर्थोंमें बहुत काल तपकिया निरन्तर वेद पढ़ता दयायुक्त सत्यवादी जितेंद्रिय सब भूतों को अपने तुल्य समझता विषयों से निस्पृह सब जीवों के हित में तत्पर गालवमुनि तप करने लगा बहुत काल तक निराहार रहा बहुतकाल वृक्षका एक सूखा पत्ता खाकर रहा कुछकाल जलाहार रहा और बहुतकालतक वायु भक्षणकर तपकिया पांच हज़ार वर्ष इस भांति घोरतप करके फिर पांच हज़ार वर्ष निराहार दृष्टि औ श्वास रोंककर तप किया वर्षाऋतु में वर्षामें रहना हेमंतमें जल के बीच शयन करना और ग्रीष्ममें पञ्चाग्नि तापना इसभांति हृदय में विष्णुभगवान् का ध्यान औ अष्टाक्षर मंत्र का जप करते बड़ाउग्रतप किया तप करते २ गालवमुनि को

लाखोंवर्ष बीते तब उस के तप से प्रसन्न हो शंख चक्र गदा पद्म धारे कोटिसूर्य के समान प्रकाशित गरुड़ पर चढ़े छत्र चामर हार केयूर कटक मुकुट कुंडल आदि से भूषित विष्वक्सेन सुनन्दआदि सेवकों करकेयुक्त वेणु वीणा मृदंगआदि बाजे बजाते औ गातेहुये नारद आदि मुनियों करके सेवित पीताम्बर पहिने लक्ष्मीकरके शोभित मेघके समान नीलवर्ण दोनों ओर सनक आदि महायोगियों करके सेवित एक हाथ से कमल को हिलाते मन्दहास्यसे तीनोंलोकोंको मोहित करते अपनी कान्ति से दशों दिशाओं को प्रकाशित करते कंठमें कौस्तुभमणि करके भूषित सुवर्ण की छड़ी हाथ में धारे हज़ारों कंचुकियों करके युक्त भक्तवत्सल विष्णुभगवान् गालवमुनि के सम्मुख प्रकट हुये गालवमुनि भी भगवान्के दर्शन पाय आनन्द में मग्न हो परमभक्ति से स्तुति करने लगा॥

गालवउवाच। नमोदेवाधिदेवाय शंखचक्रगदाभृते नमोनित्यायशुद्धायसच्चिदानन्दरूपिणे १ नमोभक्तार्त्तिहंत्रेतेहव्यकव्यस्वरूपिणे। नमस्त्रिमूर्तयेतुभ्यं सृष्टिस्थित्यंतकारिणे २ नमःपरेशायनमोविभूम्ने नमोस्तुलक्ष्मीपतये विधात्रे। नमोस्तुसूर्येन्द्रविलोचनायनमोविरंच्याद्यभिवंदिताय ३ योनामजात्यादिविकल्पहीनस्समस्तदोषैरपिवर्जितोयः। समस्तसंसारभयापहारिणे तस्मैनमोदैत्यविनाशनाय ४ वेदांतवेद्यायरमेश्वरायवैकुण्ठवासायविधातृपित्रे। नमोनमःसर्वजनार्तिहारिणे नारायणायामितविक्रमाय ५ नमस्तुभ्यंभगवते वासुदेवायशार्ङ्गिणे। भूयोभूयोनमस्तुभ्यंशेषपर्यंकशायिने ६। इति॥

इसभांति स्तुतिकर गालवमुनि भगवान्का ध्यान करनेलगे

भगवान् भी स्तुति सुनकर परमप्रसन्नहो प्रीतिसे मुनिको आलिंगनकर कहनेलगे कि हे गालव! तेरे तपसे औ स्तोत्रसे हम बहुत प्रसन्नहुये अब जो तेरी इच्छा होय सो वर मांग यह भगवान्का वचन सुन गालवमुनि प्रार्थना करनेलगा कि हे नारायण! हे जगन्नाथ! हे गोविन्द! मैं आपके दर्शन से कृतार्थ हुआ औ सब जगत् में श्रेष्ठहुआ अधर्मी पुरुष आपको नहीं देख सकते औ ब्रह्मा शिव इन्द्र आदि देवताभी आपका तत्त्व नहीं जानते योगी औ कर्मनिष्ठ आपका दर्शन नहीं पा सकते तीनों वेद्भी आपका भलीभांति प्रतिपादन नहीं करसक्के औ मैंने साक्षात् आप का दर्शन पाया इससे अधिक और क्या वर होगा मैं अपने को आपके दर्शनसेही कृतार्थ मानताहूं जिन के नाम स्मरण से महापातकी भी मुक्ति पाते हैं उनका मैं साक्षात् दर्शन करता हूं अब यही वर चाहता हूँ कि आपके चरणारविन्द में दृढ़भक्तिहोय यह गालवका वचन सुन भगवान्ने कहा कि हे गालव! हमारे में तेरी निष्काम दृढ़भक्ति होगी औ सब कर्म का फल मेरे अर्पण करताहुआ औ मेरे ध्यानमें आसक्त इस देहके अंत में मुझ में लीनहोगा अब तू इसी आश्रम में निवास कर यह धर्मपुष्करिणी सब पाप हरनेहारी है इसके तीर पर तप करनेसे अवश्यही सिद्धि होगी पूर्वकाल में दक्षिण समुद्र के तटपर महादेवजी की प्रसन्नता के लिये यहां बहुतकाल तक धर्म ने तप कियाहै औ यह तीर्थ स्नान के लिये रचा इसीसे इस का नाम धर्मपुष्करिणी हुआ जिस प्रकार हमारी प्रसन्नता के लिये तैंने तपकिया इसीभांति शिवजी के प्रसाद के अर्थ धर्म ने बहुत तप किया तब प्रसन्नहो शिवजी ने धर्मको दर्शनदिया धर्मभी दर्शन पाय परमसंतुष्ट हो भक्तिसे शिवजी की स्तुति करनेलगा॥

धर्मउवाच। प्रणमामिजगन्नाथमीशानंप्रणवात्मकम्। समस्तदेवतारूपमादिमध्यांतवर्जितम् १ ऊर्ध्वरेतसंविरू

पाक्षं विश्वरूपंनमाम्यहम् । समस्तजगदाधारमनंतमज मव्ययम् २ यमामनन्तियोगीन्द्रास्तंवन्देपुष्टिवर्द्धनम् । नमोलोकाधिनाथाय वंचतेपरिवंचते ३ नमोस्तुनीलकंठाय पशूनांपतयेनमः । नमःकल्मषनाशाय नमोमीढुष्टमाय च ४ नमोरुद्रायदेवाय कद्रुद्रायप्रचेतसे । नमःपिनाकहस्ताय शूलहस्तायतेनमः ५ नमश्चैतन्यरूपाय पुष्टीनांपतयेनमः । नमःपंचास्यदेवाय चेत्राणांपतयेनमः ६ ॥

इसप्रकार धर्म के मुखसे स्तुति सुनकर महादेवजी प्रसन्न हो कहनेलगे कि हे धर्म ! हमतेरे इस तप औ स्तोत्र से बहुत प्रसन्न हुये अब जो वर तू चाहै वह मांग तब धर्मने प्रार्थनाकरी कि हे नाथ ! मैं सदा आप का वाहन होकर रहूं यही वर चाहता हूं औ इसीवर से मैं कृतार्थ हो जाऊंगा यह धर्म की प्रार्थना सुन श्रीमहादेवजीने कहा कि हे धर्म ! तू हमारा वाहन हो औ हमारे धारण करने की तुझ में शक्ति होय तेरी सेवा करनेवाले पुरुषों की हमारे में दृढ़ भक्ति होजायगी यह महादेवजी की आज्ञा पातेही धर्म्म ने वृषरूपधार महादेवजी को अपने ऊपर चढ़ा लिया महादेवजी भी उसपर चढ़ प्रसन्न हो कहनेलगे कि हे धर्म ! दक्षिणसमुद्र के तीरपर जो तीर्थ तैंने बनाया वह धर्म्मपुष्करिणी नाम से लोकमें प्रसिद्ध होगा इसके तटपर कियेहुये जप होम दान वेदपाठ आदि धर्मकृत्य अनन्तफलको देनेहारे होंगे इतना वर इस तीर्थ को दे उसी वृषरूप धर्म के ऊपर चढ़े हुये महादेवजी कैलासकोगये इतनी कथा सुनाय विष्णुभगवान् ने कहा कि हे गालव ! तूभी इसी धर्मपुष्करिणी के तटपर जब तक शरीर रहै तब तक निवासकर पीछे हमारे लोक में प्राप्त होगा जो यहां कुछ तुझे भय होगा तो हमारी आज्ञा से सुदर्शनचक्र तेरे भय को निवृत्त करेगा इतना कह विष्णुभगवान् अन्त-

र्द्धान भये सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! विष्णुभगवान् के अन्तर्द्धान होनेके अनन्तर गालवमुनिभी धर्मपुष्करिणीकेतटपर तीनकाल शालग्राम शिलामें विष्णुभगवान् का पूजन करता औ विरक्तहो विष्णुभगवान् का ध्यान करता एकदिन माघ शुक्ल एकादशी का उपवासकर जागरण किया औ विष्णुभगवान् का पूजन किया द्वादशी को प्रभातही स्नानकर धर्म्मपुष्करिणी के तीरपर संध्यावन्दन आदि कर्म्मकर भांति भांति के पुष्प औ तुलसीदल लाकर भक्ति से विष्णुभगवान् का गालवमुनिने पूजनकिया औ स्तुति करने लगा ॥

गालवउवाच । सहस्रशिरसंविष्णुं मत्स्यरूपधरंहरिम् । नमस्यामिहृषीकेशं कूर्म्मवाराहरूपिणम् १ नारसिंहंवामनाख्यं जामदग्न्यंचराघवम् । बलभद्रंचकृष्णंचकल्किं विष्णुं नमाम्यहम् २ वासुदेवमनाधारं प्रणतार्तिविनाशनम् । आधारंसर्वभूतानां प्रणमामिजनार्दनम् ३ सर्वज्ञंसर्वकर्तारंसच्चिदानन्दविग्रहम् । अप्रतर्क्यमनिर्देश्यंप्रणतोस्मि जनार्दनम् ४ ॥

इसभांति भगवान् की स्तुति कर गालवमुनि धर्म्मपुष्करिणी के तीरपर विष्णुभगवान् का ध्यान करनेलगा इसी अवसर में एक राक्षस भूँख से व्याकुल वहां आ निकला औ गालवमुनिको देख बहुत प्रसन्नहुआ औ दौड़कर मुनि को जा पकड़ा गालवमुनि भी अपनी यह दशा देखि पुकारनेलगा कि हे नारायण ! हे करुणासिंधो ! हे शरणागतपालक ! हे दामोदर ! हे लक्ष्मीकांत ! हे गरुड़ध्वज ! जिसभांति आपने प्रह्लादकी रक्षा करी औ ग्राह से गजको छुटाया उसीभांति इस दुष्टराक्षस से मेरे प्राण बचाइये इसप्रकार गालवमुनि को भयभीत जान विष्णुभगवान् ने उसकी रक्षाके लिये सुदर्शनचक्रको आज्ञा दी

आज्ञा पातेही अनेक सूर्य्यों के समान प्रकाशवान् सुदर्शनचक्र घोरशब्द करता हुआ धर्मपुष्करिणी के तटपर आया उसको देखतेही वह राक्षस भगा परंतु सुदर्शनने उसका शिर काटदिया गालवमुनि राक्षसको भूमिपर गिरेदेख अतिप्रसन्न हो सुदर्शन चक्रकी स्तुति करनेलगा॥

गालवउवाच। विष्णुचक्रनमस्तेस्तु विश्वरक्षणदीक्षित। नारायणकराम्भोजभूषणायनमोस्तुते १ युद्धेष्वसुरसंहारकुशलायमहारव। सुदर्शननमस्तुभ्यं भक्तानामार्तिनाशिने २ रक्षमांभयसंविग्नं सर्वस्मादपिकल्मषात् ३॥

इतनी स्तुतिकर गालवमुनिने कहा कि हे विष्णु चक्र! हे प्रभो! आप जगत् के कल्याणके अर्थ इस धर्मतीर्थ में विराजमान होयँ यह गालवमुनिका वचन सुन बड़ीप्रीतिसे सुदर्शनचक्र बोला कि हे गालव! यह धर्मतीर्थ बहुत पुण्यप्रदहै इसलिये लोकों के हित के अर्थ मैं इसमें निवास करूंगा तेरीपीड़ा देख विष्णुभगवान् ने मुझको भेजा मैंने भी शीघ्र आकर तेरी रक्षाकरी औ इस दुष्ट राक्षस को मारा तू विष्णुभगवान् का परमभक्तहै अब इस धर्म पुष्करिणीमें लोकरक्षाके अर्थ मैं सन्निधान करताहूं मेरे सान्निध्य से तुझको व और भी जीवों को यहां भूत राक्षसआदिकी बाधा न होगी यह धर्मपुष्करिणी पूर्वकालमें धर्म ने देवीपत्तन पर्यंत बनाई है इस सबस्थान में मैं निवास करूंगा औ मेरे सान्निध्य से इसका नाम चक्रतीर्थ होगा जो पुरुष भक्तिसे इस चक्रतीर्थ में स्नान करेंगे उनके वंश के सब मनुष्य निष्पापहो विष्णुलोक को जायँगे जो पुरुष यहां पितरों के उद्देश से पिण्डदान करेंगे वे अपने पितरों सहित स्वर्ग में प्राप्त होंगे इतना कह गालवमुनि के औ सबमुनियों के देखते देखते सुदर्शनचक्र ने धर्मपुष्करिणी में प्रवेशकिया इतना कह सूतजी बोले कि

हेमुनीश्वरो! धर्मतीर्थका जिसनिमित्त चक्रतीर्थ नामहुआ वह हमने आपको श्रवण कराया चक्रतीर्थके तुल्य दूसरा तीर्थ न हुआ न होगा इस तीर्थ में स्नान करनेहारे अवश्य मुक्ति पावैंगे जो पुरुष इस अध्याय को भक्ति से पढ़ैंगे अथवा श्रवण करैंगे वे चक्रतीर्थ स्नान का फल पावैंगे औ इसलोक में सुखभोगकर सद्गति पावैंगे धर्मतीर्थ को समाप्ति करते हुये गालवमुनि को औ राक्षसों के नाशकरनेहारे सुदर्शन चक्र को जो पुरुष स्मरण करैंगे वे सब पापों से छूटेंगे ॥

चौथा अध्याय

एक राक्षसकी कथा जिसने गालवमुनिको पीड़ादीथी व चक्रतीर्थ का माहात्म्य औ चक्रतीर्थकी सीमाका कथन ॥

शौनकआदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी! वह राक्षस कौन था जिसने परमविष्णुभक्त गालवमुनि को पीड़ादी यह आप कृपाकर वर्णन कीजिये यह मुनियों का प्रश्न सुन सूत जी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो! अब हम उस का वर्णन करते हैं जिसभांति मुनियों के शाप से वह राक्षस हुआ पूर्बकाल में कैलास के शिखरपर हालास्यनाम शिवमन्दिर में वशिष्ठ अत्रि आदि चौबीस हजार मुनि ब्रह्मवादी परमशिवभक्त सब अंगों में भस्म धारे रुद्राक्षमाला पहिने त्रिपुण्ड्र दिये पंचाक्षरका जप करते हुये मुक्ति के लिये हालास्य नामक शिवजी की उपासना करते थे औ मथुरापुरवासी भी उपासना कररहे थे इसी अवसर में विश्वावसु नाम गन्धर्वका पुत्र बड़ाकामी अपनी सौ स्त्रियों सहित नग्न होकर हालास्य के समीप तीर्थ जल में विहार करनेलगा औ वशिष्ठमुनि भी सब मुनियों सहित मध्याह्न कृत्य करनेको शिवमन्दिर से उठ उसी तीर्थपर आये उन मुनीश्वरों को देख भय औ लज्जा से सबस्त्रियों ने वस्त्र धारण करलिये परन्तु निर्लज्ज उस दुर्दम नाम गन्धर्वने वस्त्र न धारे तब

क्रोधकर वशिष्ठजी बोले कि हे निर्लज्ज! तैंने हम को देखकर भी वस्त्र न धारे इसलिये तू राक्षस होजा इतना कह वशिष्ठजी ने उन स्त्रियों से कहा कि हे नारियो! तुम ने हम को देख लज्जा से वस्त्र धारे इसलिये तुम को शाप नहीं देते अब तुम स्वर्ग को जावो यह वशिष्ठजी का वचन सुन सब स्त्री हाथजोड़ नम्र हो प्रार्थना करने लगीं कि हे ब्रह्मपुत्र! हे सर्वधर्मज्ञ! वशिष्ठजी आप कृपा करैं औ इस कोपको शान्तकरैं स्त्रियों का पतिही भूषणहै चाहे सौ पुत्र भी होयँ परन्तु पतिहीन नारी विधवाही कहाती है औ विधवा होना स्त्रीको मरणके तुल्यहै इसलिये आप हमारे पतिका यह अपराध क्षमाकरैं औ इसपर कृपाकरैं तत्त्वदर्शी मुनि अपराध क्षमाकिया करते हैं इसलिये आपभी इस अपने दासपर क्षमाकरैं यह स्त्रियों का वचन सुन प्रसन्न हो वशिष्ठजी बोले कि हे स्त्रियो! हमारा वचन मिथ्या तो नहीं होसकता परन्तु जो हम कहैं उसको श्रद्धा से सुनो यह शाप सोलहवर्ष पर्यंतरहे सोलहवर्ष के अनन्तर राक्षसहुआ यह तुम्हारा पति चक्रतीर्थपर अपनी इच्छासे जायगा वहां विष्णुभक्त गालवमुनि को भक्षण करने के लिये ग्रहण करैगा तब विष्णुभगवान् की आज्ञा से सुदर्शनचक्र इसका शिर काटैगा तब यह अपना पहिला दिव्य-रूप धार स्वर्ग में जाय आनन्द से तुम्हारे साथ विहार करैगा इसमें कुछ संशय नहीं है सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! इतना कह वशिष्ठजी तो मुनियों सहित हालास्य के स्थान को गये औ वे स्त्री अपने पति दुर्दम को आलिंगन कर दुःख से रोदन करने लगीं औ वह दुर्दम भी उनके देखते २ ही महाभयंकर राक्षस होगया कि बड़ी २ जिसकी दाढ़ लालरंगके केश दाढ़ी औ नेत्र अतिकृष्ण जिसका वर्ण ऐसा उसका रूप देख वे नारी भयभीत हो स्वर्ग को गईं औ वह राक्षसरूप दुर्दम भी जीवों को भक्षण करता देश २ औ वन २ में विचरने लगा इसप्रकार सोलहवर्ष

बीते तब चक्रतीर्थ पर पहुंचा औ गालवमुनि को भक्षण करने दौड़ा गालवमुनि ने विष्णुभगवान् की स्तुतिकरी तब भगवान् की आज्ञापाय सुदर्शनचक्र ने राक्षस का शिर काटा औ गालव मुनि के प्राण बचाये वह दुर्दम भी शिर कटतेही राक्षस देह छोड़ दिव्यदेह होगया औ उत्तमविमानमें बैठ हाथजोड़ प्रणाम कर भक्तिसे सुदर्शनचक्र की स्तुति करने लगा ॥

दुर्दमउवाच । सुदर्शननमस्तेस्तु विष्णुहस्तैकभूषण । नमस्तेऽसुरसंहर्त्रे सहस्रादित्यवर्चसे १ कृपालेशेनभवत स्त्यक्काहंराक्षसीतनुम् । स्वरूपमभजंविष्णोश्चक्रायुधन मोस्तुते २ त्वन्मनस्कोभविष्यामि यावज्जीवंयथाह्यहम् । तथाकृपांकुरुष्वत्वं मयिचक्रनमोस्तुते ३ ॥

इतनी स्तुति कर दुर्दम ने प्रार्थना करी कि हे चक्रराज! अब आप मुझे स्वर्ग जानेकी आज्ञा दीजिये विरह करके पीड़ित मेरी भार्या मेरा स्मरणकर रही होंगी यह दुर्दमकी बिनती सुन सुदर्शनचक्र ने उसको प्रसन्नहो स्वर्ग में जानेकी आज्ञादी दुर्दम आज्ञा पातेही गालवमुनि को प्रणामकर औ उनकी भी आज्ञाले स्वर्ग को गया दुर्दम के स्वर्ग जाने के अनन्तर गालव मुनिने फिर सुदर्शनचक्रसे प्रार्थना करी कि हे चक्रराज! आपको हम वारंवार प्रणाम कर प्रार्थना करते हैं कि देवीपत्तन पर्यन्त इस धर्म्मतीर्थ में आप सन्निधान करैं औ यहां स्नान करनेहारे पुरुषों को सब पाप दूरकर मोक्ष देवैं औ यह तीर्थ लोकमें चक्र-तीर्थ नाम से प्रसिद्ध होय औ यहां के निवासी मुनियों को भूत प्रेत पिशाच राक्षस आदिकों का कभी भय न होय यह गालव की प्रार्थना अंगीकार कर सुदर्शनचक्र उसी तीर्थ में अन्तर्द्धान होगया सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! चक्रतीर्थ का माहात्म्य औ राक्षसकी उत्पत्ति हमने वर्णन करी इसके श्रवण करने से

मनुष्यों के सब पाप दूर होजाते हैं शौनकआदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी! दर्भशयन से देवीपत्तन पर्यन्त आपने चक्रतीर्थ वर्णन किया वह बीच २ में क्योंकर विच्छिन्न होगया यह हमारा संदेह आप निवृत्त करें यह मुनीश्वरोंका प्रश्न सुन सूतजी कहनेलगे कि हे ऋषीश्वरो! पूर्वकालमें सब पर्वत उड़तेथे औ उड़ते २ जिस नगर ग्रामआदि के ऊपर गिरते वही चूर्ण होजाता औ हज़ारों मनुष्य पशु पक्षीआदि मरते ब्राह्मणआदि वर्ण इस उपद्रवसे नष्ट होगये औ पृथिवीपर यज्ञहोने बन्द होगये इससे देवताओं को भी बड़ाक्लेश हुआ तब इन्द्रने क्रोधकर अपने वज्र से पर्वतों के पक्ष काटना आरम्भ किया उससमय भयभीत हुये पर्वत समुद्र में गिरे औ समुद्रकी भ्रांतिसे कोई २ चक्रतीर्थ में भी प्रविष्ट होगये इसीसे चक्रतीर्थ बीच २ में विच्छिन्न होगया किनारोंपर पर्वत न गिरे इसलिये दर्भशयन औ देवीपत्तन के समीप तो चक्रतीर्थ ठीकरहा औ बीचमें पर्वतों के गिरने से विभक्त अर्थात् बांटागया सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! जिस भांति चक्रतीर्थ बीचमें स्थल होगया औ इन्द्र के पक्ष काटने पर जिसप्रकार पर्वत समुद्रमें प्रविष्टहुये यह सब हमने वर्णन किया अब आप क्या श्रवण किया चाहते हैं॥

पांचवां अध्याय॥

चक्रतीर्थकी प्रशंसा औ राजा सहस्रानीक की अद्भुत कथा॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! हम फिर भी चक्रतीर्थ का प्रभाव वर्णन करते हैं विधूमनामक वसु औ अलंबुषा नाम अप्सरा ब्रह्माजी के शापसे मनुष्य होगये औ चक्रतीर्थ में स्नान कर शाप से मुक्तहुये इतना सुन मुनियों ने पूछा कि हे सूतजी! उनदोनोंको ब्रह्माजीने किस अपराध पर शापदिया औ शापहोनेके अनन्तर कहां जन्मलिया किसके पुत्रहुये औ उनका शापान्त

क्योंकर हुआ यह आप विस्तारसे वर्णन करें आपव्यासजी के शिष्य हैं औ महाबुद्धिमान् हैं इसलियेकोई वृत्तांत आपसेछिपा नहीं है यह मुनियोंका वचन सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! पूर्वकालमें ब्रह्माजी अपनी सभामें विराजमान थे सावित्री औ सरस्वती उनके दोनों ओर बैठी थीं सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार नारद आदि मुनीश्वर सब देवताओं समेत इन्द्र सूर्य्यआदि ग्रह सिद्ध साध्य मरुत् किन्नर वसु आदि सब सेवामें स्थित थे औ उर्वशी आदि अप्सरा नृत्य करती थीं इस भांति सत्यलोक के बीच ब्रह्माजी की सभा जम रहीथी सब नृत्य देखते थे मृदङ्ग वीणा वंशी आदि के मधुरशब्द सुननेवालों को आनन्द देतेथे औ गंगाजल के कणिका लिये शीतल मन्द सुगन्ध पवन चलता था एक अप्सरा जब नृत्य से श्रांत होजाती तब दूसरी नाचने लगती इसीभांति नाचते नाचते अति रूपवती अलंबुषानाम अप्सरा सब सभा को मोहित करती हुई नाचनेलगी उस अवसर में वायुसे उसका अधोवस्त्र दूर होगया औ गुप्त अङ्ग दीखने लगा तब ब्रह्मादि देवतावोंने लज्जासे आंखमूंदली परन्तु विधूमनाम वसु काम के वशहो उसके गुप्त अङ्ग को देखगया औ प्रसन्नता से उसके नेत्र प्रफुल्लहोगये औ शरीर में रोमाञ्च भी हुआ यह उसका दुर्विनीतपनादेख ब्रह्माजीने शापदिया कि हे विधूम! तैंने हमारी सभा में इस अप्सरा पर कुदृष्टिकी इसलिये तू मनुष्यलोक में जन्म लेकर मनुष्यहो औ यह देवांगना तेरी भार्याहोगी वह ब्रह्माजी के मुखसे शाप सुनकर विधूम बहुत व्याकुल हुआ औ ब्रह्माजी के चरणों पर गिर प्रार्थना करनेलगा कि महाराज मैं आपके इस दारुणशाप के योग्य नहींहूं आप कृपाकर मेरा अपराध क्षमाकरैं औ इस घोरशाप से मुझे बचावैं इसप्रकार विधूम के अतिदीनवचन सुन ब्रह्माजी के दयाआई औ कहनेलगे कि

हेविधूम! हमारावचन मिथ्या तो नहीं होसकता परन्तु पृथिवी पर जन्म ले चक्रवर्ती राजा होगा औ यह तेरीरानी होगी बहुतकाल निष्कंटक राज्यकर इसमें पुत्र उत्पन्न कर उसको राज्यदे दक्षिण समुद्र के तीरपर पुल्लग्राम के समीप चक्रतीर्थ के बीच इस अपनी भार्य्या सहित स्नान करैगा तब मनुष्य देहको त्याग दोनों अपनेलोक में प्राप्त होवोगे चक्रतीर्थमें स्नान किये बिना यह दारुणशाप निवृत्त न होगा यह ब्रह्माजी का वचन सुन उदास होकर विधूम अपने स्थानमें आया औ चिन्तन करने लगा कि मर्त्यलोक में किसके घर जन्मलूं औ कौन मेरे माता पिताहोवैं यह विचार करते करते निश्चयकिया कि कौशाम्बीनगरीमें बड़ावीर औ धर्मनिष्ठ राजा शतानीक है औ उसकी रानी विष्णुमती बड़ी पतिव्रता है इसलिये उनसेही जन्म लेना चाहिये यह मनमें ठान पुष्पदन्त माल्यवान् बलोत्कटनाम अपने तीन सेवकों को बुलाकर कहा कि हे मेरे प्यारे सेवको! ब्रह्माजी के शापसे शतानीक की रानी विष्णुमती में मैं जन्मलेता हूं तुम सबको विदित रहै यह अपने स्वामी का वचन सुन अति व्याकुलहो अश्रुपात करते हुये सेवक बोले कि हे स्वामिन्! हम तीनों आपका वियोग नहीं सहसक्ते इसलिये हमकोभी आप मनुष्यलोक में अपने संग लेचलैं शतानीक राजा के मंत्री युगन्धर के सेनापति बिप्रतीप के औ शतानीक के नर्मसुहृत् वसन्तक नाम ब्राह्मण के हमतीनों पुत्र होकर आपकी सेवा में रहैंगे यह भृत्यों का वचन सुन विधूम कहने लगा कि हे मेरे प्रिय सेवको! मैं तुम्हारा स्नेह भलीभांति जानता हूं परन्तु मनुष्यलोक अति निन्द्य है मुझे तो ब्रह्माजी के दारुणशाप से जन्मलेना पड़ा अब तुमभी इसकष्टमें मतपड़ो औ थोड़ेदिन मेरा वियोग सहो मनुष्यलोक में जन्म लेने की कभी इच्छा मत करो यह विधूम का वचन सुन वे फिर बोले कि हे प्रभो! क्या आपके वियोग से

भी मनुष्यलोक में जन्म लेने से अधिक दुःख है हम आप का वियोग क्षणमात्र भी नहीं सहसकते इसलिये आपको हमारा त्याग न करना चाहिये आप के साथ मनुष्यलोक में भी रहने से कुछ दुःख नहीं औ आपके विना यह स्वर्ग भी दुःखों की खानि देखपड़ता है इसभांति सेवकों का दृढ़ निश्चय देख विधूम ने उनका वचन अंगीकार किया औ तीनों को संगले कौशाम्बीनगरी को चला इस अवसर में चन्द्रवंशभूषण अर्जुन के प्रपौत्र जनमेजयका पुत्र बड़ाप्रतापी बुद्धिमान् प्रजापालन में तत्पर शतानीक नाम कौशाम्बी का राजा था उसका मुख्य मंत्री युगन्धर नामथा सेनापति विप्रतीक औ परमसुहृत् वल्लभ नाम ब्राह्मणथा और विष्णुमती नाम रानी सब रानियोंमें मुख्य औ राजाकी अतिप्रिया जिसप्रकार विष्णुभगवान् के लक्ष्मीथीं परंतु राजा के पुत्र न था इसलिये वह दुःखी रहता एक दिन राजाने अपने मंत्री युगन्धरको बुलाकर कहा कि मेरेपुत्र क्योंकर उत्पन्न होय इसका विचार करना चाहिये तब युगन्धरमन्त्री ने विचार कर प्रार्थना करी कि महाराज शांडिल्य नाम मुनि बड़े महात्मा सत्यवादी तपस्वी औ दयालुहैं आप उनकी शरणमें जायँ विनय से पुत्रकी याचना करें तो वे अवश्यही आपको पुत्रदेंगे यह मंत्रीका वचन सुन राजा बहुत प्रसन्नहुआ औ मंत्रीको संग ले शांडिल्यमुनिके आश्रम में गया औ वहां जाय अतितेजस्वी शांडिल्यमुनि के चरणों में प्रणाम किया शांडिल्यमुनिनेभी राजा का बड़ासत्कार किया औ पाद्य अर्घ्य आदि देकर कहा कि हे राजन्! आप किसप्रयोजनके लिये हमारे आश्रम में आये हम से कहो कि हम शीघ्रही तुम्हारा मनोरथ सिद्धकरें यह ऋषिका वचन सुन युगन्धर कहनेलगा कि हे मुनीश्वर! ये महाराज पुत्र न होनेसे दुःखी हैं औ अब आपके शरण में आये हैं इसलिये आप इनका यह दुःख दूरकरें यह मंत्रीका वचन सुन शांडिल्य

मुनिने प्रतिज्ञा की कि हम अवश्य पुत्र देंगे औ राजा के साथ कौशाम्बी में आय राजासे पुत्रेष्टि कराई उस इष्टि के प्रभाव से राजाके पुत्र हुआ जिस भांति महाराज दशरथ के घर श्रीरामचन्द्र जन्मे थे उस पुत्रका नाम राजा ने सहस्रानीक रक्खा इस भांति विधूम वसु राजा शतानीक का पुत्र हुआ माल्यवान् युगन्धर का पुत्र हुआ जिसका नाम उसके पिताने यौगन्धरायण रक्खा पुष्पदन्त विप्रतीकका पुत्र रुमण्वान् नामहुआ औ बलोत्कट वसन्तक का पुत्र वल्लभ नाम हुआ जो राजा सहस्रानीक का परममित्र हुआ राजकुमार के सहित ये तीनों दिन २ वृद्धि को प्राप्त होनेलगे औ पांच २ वर्ष के हुये तब अलंबुषा नाम अप्सरा भी अयोध्या के राजा कृतवर्मा की पुत्रीहो जन्मी जिसका नाम पिता ने मृगावती रक्खा इसभांति विधूम आदि सब मृत्युलोक में जन्मे इसी अवसर में बड़े पराक्रमी अहिदंष्ट्र नाम दैत्य ने अपने मित्र स्थूलशिरा को साथले बड़ी सेना से स्वर्ग्ग को जा घेरा औ देवताओं को पीड़ा देनेलगा औ देवता दैत्यों के युद्धका आरम्भ हुआ तब इन्द्रने अपनी सहायता के लिये राजा शतानीकको बुलाया राजा शतानीक भी पुत्रको राज्य देकर इन्द्रके रथमें बैठ स्वर्ग्ग में आया औ इन्द्र की आज्ञा से दैत्योंको मारनेलगा औ बड़ीवीरता से अहिदंष्ट्र को मारा परन्तु आपभी उसी युद्ध में कामआया तब इन्द्रने राजाका शरीर रथ में रख उसकी राजधानी को भेजा इन्द्रका सारथी मातलि भी राजाके शरीर को रथमें रख मृत्युलोक में आया औ राजा सहस्रानीक से सब वृत्तान्त कहा सहस्रानीक ने भी पिता की मृत्यु सुन बड़ा विलाप किया औ सब प्रेतकृत्य किया औ शतानीक की रानी विष्णुमती अपने पति के साथ सतीभई औ युगन्धर विप्रतीक औ वल्लभ भी थोड़े दिनके अनन्तर परलोक को सिधारे औ राजा सहस्रानीक यौगन्धरायण आदि मन्त्रियोंसहित

धर्मराज्य करनेलगा। कुछकाल के अनन्तर स्वर्ग में कुछ उत्सव था वहां इन्द्रने राजा सहस्रानीक को भी निमन्त्रणदे बुलाया उत्सव के अन्त में इन्द्रने कहा कि हेराजन्! तुम विधूम नाम वसु हो। ब्रह्माजी की सभा में अलंबुषा नाम अप्सरा को वायु करके नग्नहुई देख तुम कामातुर हुये इसलिये ब्रह्माजी ने तुमको शाप दिया कि मृत्युलोक में जन्मो उसी शाप से तुम मनुष्य हुये औ वह अप्सरा अयोध्या के राजा कृतवर्मा की कन्या हुई वही तुम्हारी रानीहोगी बहुतकाल राज्यकर पुत्रको राज्यपर बैठाय अपनी रानी मृगावती समेत जब दक्षिणसमुद्र के तटपर फुल्लग्राम के समीप चक्रतीर्थपर आय स्नानकरोगे तब शापसे मुक्त होगे यह सत्यलोक में ब्रह्माजी ने कहा है यह इन्द्रका वचन सुन वहां से बिदाहो इसी बातको बिचारता हुआ राजा सहस्रानीक अपनी राजधानीको चला मार्गमें तिलोत्तमा नाम अप्सरा प्रीति करके राजासे बोली परन्तु राजाका चित्त और बातमें लगरहा था इसलिये तिलोत्तमा को कुछ उत्तर न दिया तब अनादर से लज्जितहो तिलोत्तमाने शापदिया कि हे राजन्! मैं तुझसे प्रीति करके बोलतीहूं औ तू उत्तर नहीं देता सौभाग्यवती और रूपवती स्त्री इतना अनादर नहीं सहती हैं मृगावतीका ध्यान करताहुआ मुझ से संभाषण नहीं करता इसलिये चौदहवर्ष मृगावती से तेरा वियोग होगा यह तिलोत्तमा का शाप सुन राजाने कहा कि जो मृगावती प्राप्तहोगी तो वियोगभी सहलेंगे इतना कह अपनी राजधानी में आया औ मृगावती से विवाह किया विलास रूप वृक्षकी मंजरी औ विभ्रमरूप समुद्रकी लहरी उस मृगावती को पाय राजा बड़े आनंदको प्राप्तहुआ कुछकाल के अनन्तर रानी मृगावती के गर्भरहा औ अंग पीतवर्ण होगये स्तनों के अग्र कृष्णहोनेलगे मृगावती दोहदकी व्यथा में जो जो मनोरथ राजा से कहती सब सिद्धहोता एकदिन रानीने कहा कि महाराज

आज मेरी इच्छा रुधिरकी भरी वापी में स्नान करनेकीहै यह रानीका वचन सुन राजाने कुसुम के रंगसे बावली भरवाई औ रानी उसमें स्नानकरनेलगी रानीके सब अंग लाल होगये इसी अवसर में गरुड़के वंशका एकपक्षी पर्वत के तुल्य आकाश में उड़ा जाता था उसने रानीको देखा औ मांसपिंडकी भ्रांति से चोंच में उठाय लेउड़ा औ जब देखा कि यह जीती है तब उदयाचल पर्वतकी कंदरा में रानीको छोंड़ आप चलागया थोड़े कालमें रानीकी जब मूर्च्छा खुली तो अपने को उस घोरवनमें अकेली देख भयसे काँपती हुई औ कमल तुल्य नेत्रों से आंसू टपकाती हुई विलाप करनेलगी कि हे नाथ! हे प्रिय! तेरे वियोग करके पीड़ित मैं कहांजाऊं क्या करूं औ क्योंकर तुम्हारे दर्शन होयँ इसभांति अनेकप्रकार के विलापकर मरने के लिये कभी तो सिंह के सम्मुखजाती कभी मस्तहाथी के आगे गिरती परन्तु उन्होंने भी उसको न मारा तब फिर विलाप करनेलगी कि आपत्काल में मनुष्यों को मरण भी दुर्लभ है उसका अतिकरुणा युक्त विलाप सुन मृगों ने चरना छोंड़दिया औ पक्षी उड़ने से बंद हुये इस अवसर में जमदग्नि ऋषिका शिष्य उस वनमें आया था उसने रानीको देखा औ बहुतसा आश्वासन दे उस को अपने साथ आश्रम में लेगया वहांजाय अपने गुरू जमदग्नि मुनिसे रानी का सब वृत्तान्तकहा जमदग्नि मुनिने भी रानीका बहुत आश्वासन किया औ कहा कि हे पुत्रि! अपने पिता कृतवर्माके तुल्य मुझे समझ औ प्रसन्नता से यहां रह परमेश्वर तेरा सबदुःखदूरकरेगा यह मुनिका वचन सुन रानी मृगावती उसी आश्रम में रहनेलगी कुछ कालके अनन्तर रानीके बड़ा तेजस्वी पुत्र जन्मा औ मुनियोंकी पत्नियोंने बड़ीप्रीति से सूतिकाके सब नेग जैसे घरमें होने चाहिये किये आकाशवाणी हुई कि उदयाचल में जन्मलेने से इस बालककानाम उदयन होगा

जमदग्नि मुनिने उस बालकके सब संस्कार किये औ सब विद्या पढ़ाई औ वह बालक तरुण अवस्था को प्राप्त हुआ एक दिन उदयन मृगया खेलने वनमें गयाथा वहां देखा कि एक व्याध सर्पको पकड़ेलाता है उसको देख राजकुमार को दयाआई औ व्याध से कहा कि रेतू इस सर्पको क्यों क्लेश देता है छोंड़दे तू इसका क्या करेगा यह उदयन का वचनसुन व्याध बोला कि हे महाराज ! मेरी जीविका इसीसे है नगर औ ग्रामों में इस को दिखलाने से मुझे धन औ अन्न मिलेगा इसलिये मैं इसको छोड़ नहीं सक्ता इतनाकह व्याध ने उस सर्प को पिटारी में बांधलिया तब उदयन ने अपने हाथ से सुवर्ण का कंकण उतारा जो उसकी माताने बालअवस्था में पहिनाया था औ जिसमें सहस्रानीक का नाम भी खुदाथा उस व्याध को दे सर्प को बन्धन से छुटाया सर्प भी छूटतेही मनुष्यरूप धार हाथ-जोड़ उदयन को प्रणामकर बड़ीप्रीति से अपने साथ नाग लोकमें लेगया उदयन भी धृतराष्ट्रनाग के पुत्र उस किन्नर नाम नागके साथ पाताल में जाय पहुंचा वहां धृतराष्ट्रनाग ने अतिसुन्दरी ललिता नाम अपनी कन्या उदयन को विवाहदी उदयन भी अपनी प्रिया के साथ नागलोक में सुख भोगने लगा कुछकाल में ललिताके गर्भ रहा औ पुत्र उत्पन्नहुआ पुत्र होतेही ललिता ने उदयन से कहा कि हे प्रिय ! मैं पूर्वजन्म में सुवर्णानाम विद्याधरी थी औ शाप से नागकन्या हुई अब वह मेरा शाप निवृत्त हुआ इसलिये आप इस अपने पुत्रको लीजिये औ मुझे मेरे लोकको जानेकी आज्ञा दीजिये इतना कह वह पुत्र औ पुष्पमाला जो कभी न कुम्हलाय औ घोषवती नाम एक अतिउत्तम वीणा उदयनको दी औ सबके देखते देखतेही आकाश को उड़कर चलीगई उदयन भी माला वीणा औ अपने पुत्रको ले अपने श्वशुर से बिदाहो बहुत दिन

के वियोग से दुःखिनी अपनी माता के समीप को चला औ जमदग्निमुनि के आश्रम में पहुंच अपनी माताको प्रसन्नकिया औ सब वृत्तांत उससे कहा मृगावती भी अपने पुत्र औ पौत्र को देख बहुत प्रसन्न हुई इतने में वह व्याध भी उस सुवर्ण कंकण को बेचने के लिये कौशाम्बी में पहुंचा औ एक वैश्यको दिखाया वैश्य उस जड़ाऊ कड़ेको देख औ उसपर राजा का नाम खुदाहुआ देख उस व्याधको साथले राजाके समीप गया औ सब वृत्तान्त निवेदन किया राजाने भी व्याधसे सब वृत्तांत पूंछा औ बहुतसा धनदे कंकण उससे लेलिया औ कंकण को अपनी छाती से लगा अनेक प्रकार के विलाप करनेलगा औ बहुतकाल विलापकर अपने मन्त्रियों को संगले व्याधके कहेके अनुसार अपनी मृगावती की प्राप्ति के लिये उदयाचल को चला कुछ मार्ग चलकर विश्राम किया राजा को मृगावती के विरह से निद्रा नहीं आती थी इसलिये वसन्तक ने भांति भांति की मनोहर कथा सुनाय राजाके चित्तको प्रसन्नकिया औ कथा सुनते सुनते वह रात्रिबिताई प्रभात होतेही वहां से चले कुछ कालके अनन्तर राजा सहस्रानीक अपनी सेना समेत उदयाचलके बीच जमदग्निमुनि के आश्रम में पहुंचे औ मुनिके चरणोंपर भक्ति से प्रणाम किया मुनि ने भी राजाको यथायोग्य आशीर्वाद दिया औ पाद्य अर्घ्य आचमन आसन आदिदे यह कहा कि हे राजन्! तुम्हारी मृगावती रानी में यह बड़ाप्रतापी पुत्र उत्पन्न हुआ है जो सब दिशाओं को जीतेगा इसका नाम हमने उदयन रक्खा है और यह उदयन का पुत्र औ आपका पौत्रहै और यह परमपतिव्रता तुम्हारी रानी मृगावतीहै अब इन तीनोंको ग्रहण कीजिये इतनाकह मुनिने राजाको तीनों अर्पण किये राजाभी रानी पुत्र औ पौत्रको पाय अतिहर्षितहो मुनिसे बिदाहुआ औ कुछ दिनों में कौशाम्बी में आपहुंचा वहां आय

राजाने इन्द्रका वचन स्मरण कर मनुष्य जन्म की निन्दाकर सम्पूर्ण राज्य व्यवहार उदयन को सौंपा उदयन भी भलीभांति प्रजापालन करने लगा औ राजा सहस्रानीक रानी मृगावती यौगंधरायण वसंतक रुमण्वान् आदि अपने मन्त्रियों को साथले शाप मुक्ति के लिये दक्षिण समुद्र के तटपर चक्रतीर्थ में स्नान करनेचले औ थोड़ेही कालमें चक्रतीर्थपर पहुँचे औ तीर्थ में सबने स्नान किया स्नान करतेही दिव्य देहधार दिव्यवस्त्र भूषणआदि से भूषित उत्तम विमानों पर चढ़ चक्रतीर्थ की प्रशंसा करते हुये सबके देखते २ स्वर्ग्गको गये उसदिन से सब मनुष्यों ने चक्रतीर्थ का प्रभाव जाना औ सब भक्ति से स्नान करनेलगे उस चक्रतीर्थ में जो भक्तिसे स्नानकरै वह अवश्यही स्वर्ग्गको जाय इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! यह विधूम का चरित हमने वर्णन किया इस अध्याय को जो भक्ति से पढ़ै अथवा सुनै उसके सब मनोरथ सिद्ध होते हैं ॥

छठा अध्याय ॥

देवीपुरके नामका कारण औ महिषासुरके युद्धका वर्णन ॥

शौनकआदि ऋषि पूंछते हैं कि हे व्यास शिष्य सूतजी! आपने पहिले वर्णन किया है कि देवीपत्तन पर्यन्त चक्रतीर्थ है अब आप यह वर्णन करैं कि देवीपत्तन कहां है औ उस स्थान का नाम देवीपत्तन क्योंकर हुआ औ सेतुमूल में तथा चक्रतीर्थ में स्नान करनेवाले मनुष्यों को क्या पुण्य होती है ये सब आप वर्णन करैं यह मुनियों का प्रश्नसुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो! आप सावधान होकर श्रवण करैं जो आपने पूंछा उस सबका हम वर्णन करते हैं जिसके सुनने से सब पातक निवृत्त होजायँ जहां नैमिषारण्य स्थापनकर पहिले रामचन्द्रजी ने सेतु बांधनेका आरम्भकियाहै वहांही देवीपुरहै जहांतक चक्रतीर्थकी

सीमाहै औ जिस कारण उस स्थान की देवीपुर संज्ञाहुई वह भी हम वर्णन करते हैं पूर्वकालमें देवता औ दैत्योंका युद्धहुआ उसमें देवताओंने सब दैत्य मारदिये तब दैत्यों की माता दिति अपनी कन्यासे दुःखीहो बोली कि हे पुत्रि! वनमें जाकर तपकर औ ऐसा पुत्र उत्पन्नकर कि जो इन्द्रआदि देवतावों को जीतै यह माताकी आज्ञापाय महिषी का रूपधार दितिकी कन्या तप करनेके लिये वनको गई औ वन में जाय पंचाग्नि के मध्य में बैठ ऐसा घोर तप किया कि तीनोंलोक कांप उठे औ इन्द्रआदि देवता भय-भीत होगये तब ब्रह्माजी सुपार्श्वमुनिका रूपधार उसके समीप आये औ कहा हे महिषि! तेरे तपसे हम बहुत प्रसन्नहुये बड़ा प्रतापी औ इन्द्रआदि देवतावों के जीतनेवाला तेरेपुत्र होगा जिसका मुख महिष का औ शरीर मनुष्यका होगा वह महिष नाम तेरा पुत्र स्वर्गको पीड़ा देगा इतना वरदे औ उसको तप से निवारण कर सुपार्श्वमुनिरूपधारी ब्रह्माजी अपने लोकको गये औ कुछकाल के अनन्तर उसके पुत्रभी उत्पन्न हुआ औ प्रतिदिन बढ़ने लगा जब वह तरुण हुआ तब विप्रचित्तीका पुत्र विद्युन्माली नाम दैत्य बहुत से दैत्यों को सङ्गले महिषासुर के समीप आया औ कहने लगा कि हे महिष! पहिले स्वर्ग में हमारा ही राज्य था पीछे विष्णु के सहाय से देवतावों ने हमारा राज्य छीनलिया अब तू अपना पराक्रम प्रकटकर औ इन्द्र को मार स्वर्ग्ग का राज्य फिर ले ब्रह्माजी के वर से कोई तुझे न जीत सकैगा यह विद्युन्माली का वचन सुन सब दैत्यों को संगले महिषासुर अमरावती नगरीपर चढ़ा औ जाय देवतावों से युद्ध करनेलगा सौ वर्षतक घोरयुद्ध हुआ अन्त में इन्द्रआदि देवताहारे औ युद्धसे भगकर ब्रह्माजीकी शरण में प-हुँचे ब्रह्माजी उनसब देवतावोंको साथले वहांगये जहां शिवजी औ विष्णुजी थे वहां जाय नमस्कार कर ब्रह्माजीने शिवजी औ

विष्णुजी की स्तुति करी औ महिषासुरका सब वृत्तांत कहा कि इन्द्र अग्नि यम कुबेर वरुणआदि सब देवताओं के अधिकार महिष ने छीनलिये औ सब देवता स्वर्ग से निकाल दिये अब मनुष्यों की भांति देवता भूमिपर घूमते हैं यह वृत्तांत आपको विदित करने के लिये हम आये हैं इसमें जो उचित होय वह कीजिये यह ब्रह्माजी का वचन सुन शिवजी ने औ विष्णुजी ने बड़ा क्रोधकिया औ उनके मुख क्रोधसे प्रज्वलित अतिभयंकर होगये तब विष्णुजी शिवजी औ ब्रह्माजी के मुख से तेज निकला औ इंद्रआदि देवताओं के शरीर से भी तेज निकला वह सब तेज एकत्र हुआ औ जलतेहुये पर्वतकी भांति अपनी ज्वालाओं से दिशाओं को व्याप्त करनेलगा औ सब देवताओं के देखते देखते क्षणमात्र में वह तेज एक अतिसुन्दरी स्त्री होगया शिवजीके तेजसे उसका मुख विष्णुके तेजसे भुजा ब्रह्मतेजसे चरण इंद्रके तेजसे मध्यभाग यमके तेजसे केश चन्द्रके तेजसे कुच वरुणके तेजसे जंघा औ ऊरू पृथ्वीके तेजसे नितम्ब सूर्यके तेजसे पैरों की अंगुली वसुओं के तेज से हाथोंकी अंगुली कुबेर के तेजसे नासिका प्रजापतियों के तेजसे दन्तपंक्ति अग्निके तेज से नेत्र सन्ध्याओंके तेजसे भ्रू वायुके तेजसे कर्ण इसभांति सब देवताओं के तेजसे उस भगवती दुर्गा के सब अंग बनगये सबके तेजसे उत्पन्न भगवतीके रूपको देख महिषासुरके सतायेहुये सब देवता बहुत प्रसन्नहुये औ शिव विष्णुआदि देवताओं ने अपने२ आयुधोंसे उत्पन्नकर शूल चक्रआदि आयुधदिये औ भांति२ के भूषण वस्त्र माला चन्दनआदि सब देवताओं ने दिये भगवती भी उत्तमवस्त्र भूषण मालाआदिसे भूषितहो सब शस्त्रधार अट्टहास औ भयंकर शब्द करनेलगी जिस शब्दसे तीनोंलोक काँप उठे सिंह के ऊपर चढ़ीहुई भगवती की सब देवता मुनि गंधर्वआदि स्तुति करनेलगे भगवती के गर्जनेको सुनकर महि-

षासुरने बड़ा क्रोध किया औ अपनी सेना साथले उस शब्दके अनुसार वहां पहुँचा जहां सब देवताओं करके सेवित जगदम्बा विराजमानथी महिषासुरने देखा कि अनन्त भुजाओंकरके युक्त एक परमसुंदरी स्त्री सब शस्त्रधारे सिंहपरचढ़ीहुई खड़ीहै जिस के तेजसे सबजगत् व्याप्तहोरहाहै यह रूप भगवतीका देख सब दैत्योंसमेत महिषासुर युद्ध करनेलगा अस्त्र शस्त्र चक्र गदा खड्ग बाण मुसलआदिकी वृष्टि होनेलगी हाथी घोड़ रथआदि करके युक्त महिषासुर युद्ध करनेलगा महिषासुर की सेनामें कई करोड़ प्रधान दैत्यथे औ उनमें एक एकके साथ इतनी सेनाथी कि जिसकी गिनती नहीं होसकती वे सब दैत्य एकबारही भगवती पर शस्त्रोंकी वर्षा करने लगे परंतु भगवती अपने बाणों कर के उनके शस्त्रों को अनायास से काट देतीथी औ भगवती के आश्रय से सब देवता भी निर्भय हो दैत्योंके साथ युद्ध करते थे भगवती की शक्तिपाकर देवताओं ने महिषासुर की सब सेना का संहार करदिया तब महिषासुर क्रोधकर देवताओं को बाण मारने लगा इन्द्र को दशहज़ार बाण यमराज को पांचहज़ार वरुण को आठहज़ार औ कुबेरको छःहज़ार बाण मारके सूर्य्य चन्द्र अग्नि वसु वायुआदि देवताओं के शरीरों में भी महिषासुरने बाणमारे तब देवता भयभीतहो युद्धसे भगे औ त्राहित्राहि कहते भगवतीके शरणमें आये तब भगवतीने अपने गण भूत वेताल आदिको आज्ञादी कि तुम महिषासुर की सेना को मारो जो बची है औ मैं महिषासुरके साथयुद्ध करतीहूं यह भगवती की आज्ञा पातेही गणोंने महिषासुरकी सेनाका संहार किया तब महानाद सुचक्षु महाहनु महाचंड महाभक्ष महोदर महोत्कट पंचास्य पादचूड़ बहुनेत्र प्रबाहुक एकाक्ष एकपाद बहुपाद अपाद आदि अपने बड़े २ वीर मंत्रियोंसमेत महिषासुर भगवती के साथ बड़े कोपसे युद्ध करनेलगा तब सिंहपर चढ़ीहुई भगवती

भी धनुष का भयंकर शब्दकर बाणोंकी वर्षा करनेलगी दशलाख हाथी एककरोड़ घोड़े दशकरोड़ रथ औ एकअर्ब्ब पयादों करके युक्त महाहनुनाम दैत्य को क्षणमात्र में भगवती ने मार गिराया और भी महिषासुर के सब मंत्री इतनी २ ही सेनाकर के युक्तथे परंतु एक पहर में भगवती ने सब का संहार किया यह देख सब देवताओं को बड़ा आश्चर्य्य हुआ ॥

सातवां अध्याय ॥

महिषासुरके संहार का वर्णन ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! इसभांति भगवती ने किये हुये सेना संहार को देख बड़े क्रोधसे चण्डकोप नाम अपने मंत्री को महिषासुर कहने लगा कि हे चण्डकोप ! इस दुष्ट स्त्रीसे तू युद्धकर यह अपने प्रभु की आज्ञापाय चण्डकोप भगवती को बाण मारनेलगा परन्तु उसके बाणोंको भगवती लीलासेही काट देतीथी औ अपने बाणों से चण्डकोप के घोड़े ध्वज धनुष रथ औ सारथि छेदन करदिये तब चण्डकोप खड्ग औ चर्म अर्थात् ढाल लेकर भगवती से युद्ध करनेलगा पहिले एक खड्ग का प्रहार सिंहपर किया पीछे भगवती की बाईंभुजापर खड्ग चला- या परन्तु भगवती की भुजापर लगतेही उस खड्गके हज़ारों टुकड़े होगये तब त्रिशूल उठाय भगवती ने चण्डकोप की छाती में मारा जिससे वह गिरा औ मरगया फिर हाथी पर चढ़ा हुआ चित्रभानुनाम दैत्य युद्ध करने आया औ घंटाओं करके भूषित अतिभयंकर बर्छी उसने भगवती पर चलाई परन्तु उस बर्छी को अपने हुंकार शब्द से निवारणकर एक त्रिशूलका प्रहार भगवती ने चित्रभानु के हृदय में ऐसा किया कि वह हाथी से गिरा औ मृतहुआ उसके मरने पर और भी कई प्रधान दैत्य युद्ध करने आये उनमें कराल को भगवती ने अपनी मुष्टि के

प्रहार से गिराया मदोन्मत्तको गदा से मारा बाष्कलको पट्टिश से संहार किया औ अंधक को चक्रकरके यमलोक को भेजा इस भांति और भी महिषासुर के मन्त्री त्रिशूल से मारे तब महिषासुर महिष का रूपधार भगवती के गणों को त्रास देनेलगा कई गणों को अपने मुख से कइयों को सींग औ खुरों से मारा औ कितनेही गण अपनी श्वास के पवन से उड़ा दिये इस प्रकार गणोंका संहारकर भगवती के वाहन सिंहको मारने चला उस को आतेदेख सिंहने भी कोपकर नखोंसे उसको विदारण किया औ भगवती ने भी महिष के मारने का विचार किया औ उस को पाश से बाँधा परन्तु वह पाश से निकलगया औ सिंहका रूपधार गर्जने लगा जबतक भगवती उसका शिर काटा चाहैं इतनेही में वह खड्ग हाथमें लिये पुरुष होगया भगवती उस पुरुष को अपने तीक्ष्ण बाणोंकरके विदारण करने लगी तब वह बड़े बड़े दांतों करके शोभित पर्वत के समान ऊंचा एक मस्तहाथी बनगया औ अपनी सूंड़ से सिंह को खैंचने लगा सिंहने उस की सूंड़को अपने तीखनखों से भेदन किया तब फिर वह महिषरूप हुआ औ युद्ध करने लगा तब भगवती ने मधुपान किया जिससे लालनेत्र होगये औ अट्टहास किया औ महिषासुर भी अपने सींगोंसे बड़े बड़े पहाड़ उठाय भगवती पर फेंकने लगा उन पर्वतों को अपने बाणों से काट भगवती ने महिषासुर से कहा कि रे मूढ़! मैं मधुपान करूं तबतक तू गर्जले पान करके तुझे मैं यमलोक को भेजती हूं औ तेरे मारे जाने पर सब देवता अपना अपना अधिकार पावैंगे इतना कह जगदम्बाने मधुपान कर एक मूका महिषासुर के ऐसा मारा कि वह व्याकुल होकर भगा भगवती उसके पीछे लगी परन्तु महिषासुर दक्षिण समुद्र के तटपर जाय दशयोजन लम्बी चौड़ी धर्म्मपुष्करिणी के जल में जगदम्बा के भय से गुप्त हो-

गया औ भगवती ने उसको वहां न देखा तब आकाशवाणी हुई कि हे महादेवि! तुम्हारे भय से वह दुष्टदैत्य धर्मपुष्करिणी के जलमें छिपगया है इसको किसी उपाय से मारो यह आकाशवाणी सुन जगदम्बाने अपने वाहन को आज्ञादी कि हे मृगेन्द्र! तू इस धर्म्मपुष्करिणी के सम्पूर्ण जल को पान कर जा यह आज्ञा पातेही सिंह सब जल को पीगया औ भयभीत हुआ महिषासुर उससे निकला तब भगवती ने अपना चरण महिषके मस्तकपर रख त्रिशूल से उसके कण्ठको भेदन किया औ खड्गसे उसका शिर काटदिया इसभांति उस दैत्यको दुर्गा ने मारा सब देवता ऋषि गन्धर्व सिद्धआदि भगवती की स्तुति करनेलगे फिर भगवती ने देवताओं को अपने अपने अधिकार दिये औ दक्षिण समुद्र के तटपर अपने नाम से नगर बसाया वही देवीपुर हुआ जगदम्बा की आज्ञा से धर्म्मपुष्करिणी को देवताओं ने अमृत से भरदिया औ भगवती ने पुरको यह वर दिया कि इस नगर में रोगका भय न होगा औ यहां के पशु हृष्ट पुष्ट रहेंगे औ धर्म्मपुष्करिणी को भी वरदिया कि इसमें जे पुरुष स्नान करेंगे उनके सब मनोरथ सिद्धहोंगे इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! देवीने बसाया इसलिये उस नगर का नाम देवीपत्तन हुआ गणेशजी का पूजनकर औ तिलकस्वामी को प्रणामकर शिवजी की आज्ञापाय देवीपत्तन के समीप नव शिला रामचन्द्रजीने सेतु की अपने हाथसे स्थापन करी फिर रामचन्द्रजी तो सिंहासन पर बैठे देखते रहे औ वानरोंने सेतुबांधा पर्वत वृक्ष पत्थर काष्ठ तृणआदि तो सब वानर लाये औ नल ने सेतुबांधा देवीपत्तन से लंकातक सौयोजन लम्बा औ दशयोजन चौड़ा सेतु पांच दिन में पूराहुआ देवीपुरके निकट नव पाषाणोंके समीप सब पाप निवृत्त होनेके लिये स्नानकरै पीछे चक्रतीर्थ में स्नानकर सेतुके अधिपति भगवान्

का दर्शन करै देवीपत्तन से सेतुका आरम्भ हुआ इसलिये देवी-पुर सेतुमूल कहाया सेतुका पश्चिमअग्र दर्भशय्या औ पूर्वअग्र देवीपत्तन है ये दोनों स्थान सेतुमूल हैं जिनके दर्शन से सब पाप निवृत्त होतेहैं सेतुमूल में स्नानकर चक्रतीर्थ में स्नानकरै पीछे संकल्पकर सेतुबन्धन को जाय देवीपुर दर्भशय्या औ चक्रतीर्थ में स्नान करने से सब पातक दूर होते हैं औ पुण्य की वृद्धि होतीहै चक्रतीर्थ के स्मरण से भी सब पाप निवृत्त होते हैं जन्म मरण से मनुष्य छूटता है औ मुक्ति भी अनायास से मिलतीहै चक्रतीर्थके तुल्य तीर्थ न हुआ न होगा भूलोकमें जितने गंगादि तीर्थहैं वे चक्रतीर्थकी सोलहवींकलाकी भी तुल्य नहीं करसकते पहिले नवपाषाण के समीप समुद्र में स्नानकर चक्रतीर्थमें जायतीर्थ श्राद्धकरै औ सब पाप निवृत्त होनेके लिये सेतुनाथ भगवान् का सेवन करै इसीभांति दर्भशय्यामें भी पिण्डदान आदि करै नलके बनाये सिंहासन को जिसपर रामचन्द्र बैठे थे जो मनुष्य प्रणामकरैं उनको नरकका भय नहीं होता रामचन्द्र जी का ध्यान करताहुआ सेतुका दर्शनकरै औ ये मन्त्र पढ़ै ॥

रघुवीरपदन्यासपवित्रीकृतपांसवे । दशकंठशिरश्छेदहेतवेसेतवेनमः ॥ केतवेरामचन्द्रस्यमोक्षमार्गैकसेतवे । सीतायामानसांभोजभानवेसेतवेनमः ॥

ये मन्त्रपढ़ सेतु को साष्टाङ्ग प्रणाम कर वेतालवरद नाम तीर्थको जाय इस अध्याय को जो पुरुष भक्ति से पढ़ै अथवा श्रवण करै उसको स्वर्गआदि दुर्लभ नहीं औ मुक्ति भी हाथ परही रक्खी है ॥

आठवां अध्याय ॥

वेतालवरदतीर्थ का माहात्म्य औ दो विद्याधरकुमारोंकी अद्भुतकथा ॥

शौनकादि ऋषि कहतेहैं हे सूतजी ! आपके वचनरूप अमृत

पान करते करते हमको तृप्ति नहीं होती इसलिये और भी अति मधुर कथा आप वर्णनकरें आपने पहिले कहा था कि चक्रतीर्थके दक्षिण भाग में वेतालवरद नाम तीर्थहै अब आप उस तीर्थका प्रभाव औ वेतालवरद नामका कारण वर्णन कीजिये यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो! आपने अति गुप्तबात पूछी इसका हम वर्णन करतेहैं इस कथाके श्रवणकरने से पामर पुरुष भी आनन्द को प्राप्त होते हैं पूर्व्वकाल में यह कथा कैलास पर्व्वत के बीच एकान्त में शिवजीने पार्वतीजीको सुनाई है उसी अतिअद्भुत कथाको हम वर्णन करते हैं पूर्व-काल में अपने आश्रम के बीच गालवमुनि तप करते थे औ उनकी कान्तिमतीनाम परमसुन्दरी कन्या उनकी सेवा करती पूजनकेलिये पुष्प हवन के लिये समिधा वनसे लाती औ नित्य वेदी का मार्जनआदि करती एकदिन कान्तिमती उत्तम पुष्प लेनेके अर्थ दूर वनमें गई वहांसे पुष्पलेकर आश्रम को चली आतीथी उसको सुदर्शन औ सुकर्णनाम दो विद्याधरकुमारों ने देखा जो विमान में बैठे आकाशमार्ग्ग में चले जाते थे रूप औ यौवन करके युक्त मानो साक्षात् कामदेव की पत्नी रतिही होय ऐसी गालवमुनिकी कन्या को देख काम करके पीड़ित सुदर्शन उसके साथ रतिकी इच्छा से विमान से उतर पड़ा औ उस चन्द्रमुखीको देख प्रसन्न होताहुआ समीप जाय बड़ी प्रीति से पूंछनेलगा कि हे भद्रे! तू कौनहै औ किसकी पुत्री है तेरा यह परमसुन्दर रूप मेरे मनको बहुत आह्लाद देताहै औ तुझे देख कामदेवभी मुझे सताताहै सुकंठ नाम विद्याधरराज का मैं सुद-र्शन नाम पुत्रहूं तू मेरे ऊपर कृपादृष्टिकर मैं तेरा दासहूं तू भी मुझसरीखे पतिको पाय उत्तम २ भोगभोगेगी यह सुदर्शन का वाक्यसुन कान्तिमती कहनेलगी हे महाभाग विद्याधरकुमार! मैं गालवमुनिकी कन्या कान्तिमतीहूं औ मेरा विवाह नहीं हुआ है

पिताकी सेवा करती हूं आज भी पुष्प लेने आई थी एक प्रहर मुझेआये होगया इसलिये पिता मुझपर क्रोधकरैगा अब मैं पुष्प लेकर पिता के समीप जातीहूं कन्या पिता के अधीन होती है स्वतन्त्र नहीं होती जो तुझको मेरी इच्छाहोय तो मेरे पिता से मेरी याचनाकर इतना सुदर्शनसे कहकर कान्तिमती अपने आश्रमको चली परंतु सुदर्शन कामके वश होरहा था उसने दौड़कर कान्तिमती के केश पकड़लिये केश पकड़तेही कान्तिमती पुकारी कि हे पिता! शीघ्र मेरी रक्षाकरो यह दुष्ट विद्याधरकुमार बल से मुझे पकड़ता है यह शब्द सुनतेही गंधमादन पर्वतके वासी सब मुनियोंसमेत गालवमुनि वहां दौड़े आये औ देखा कि एक विद्याधरकुमारने कान्तिमती को पकड़ रक्खा है औ दूसरा उस के पास खड़ा है यह देखतेही महायोगी गालवमुनि क्रोध से जल उठे औ शापदिया कि रे अधमसुदर्शन! तैंने यह निन्द्य कामकिया इसलिये मनुष्ययोनिमें जन्मले औ इस पापका फल भोग औ थोड़ेकाल मनुष्य रहकर तू वेताल होजायगा औ मांस रुधिरआदि बुरे पदार्थ खाताफिरैगा राक्षस वेतालआदि-कही पराई कन्या को हठसे पकड़ते हैं इसलिये तूभी मनुष्य होकर वेताल होजायगा औ यह तेरा छोटाभाई सुकर्ण भी इस कुकर्मका साक्षी है इसलिये यह भी मनुष्य होगा परन्तु इसने साक्षात् कुछ पाप नहीं किया केवल तेरा अनुमोदनही किया है इसलिये मनुष्यही रहेगा वेताल न होगा औ विज्ञप्तिकौतुक नाम विद्याधर गुरुको जब देखैगा तबहीं शापसे मुक्तहोजायगा औ तैंने यह महापापकर्म्म किया इसलिये मनुष्य होगा औ उसी जन्ममें वेताल होकर बहुतकाल लोकमें विचरैगा यह शाप उन विद्याधरकुमारों को देकर अपनी कन्याको साथले गालव-मुनि सब मुनियोंसमेत आश्रमको गये मुनिके जानेके अनन्तर अतिव्याकुल हो सुदर्शन औ सुकर्ण ने विचारकर यह निश्चय

किया कि यमुनातट निवासी गोविन्दस्वामी नाम ब्राह्मण बहुत उत्तम हैं उनकेही पुत्र होना चाहिये यह मन में ठान दोनों ने गोविन्दस्वामीके घर जन्मलिया गोविन्दस्वामी ने बड़े पुत्र का नाम विजयदत्त औ छोटे का नाम अशोकदत्त रक्खा वे दोनों कुछ कालमें तरुणहुये इसी अवसर में बारह वर्ष दृष्टि न होने से अतिदुर्भिक्ष पड़ा तब गोविन्दस्वामी अपने नगर को छोड़ स्त्री पुत्रोंको साथले कालक्षेप करनेके लिये काशीको चला कुछ दिनों में प्रयाग में पहुंचा औ अक्षयवटका दर्शन किया औ एक सन्न्यासी को गोविन्दस्वामी ने देखा जो कपालमाला पहिने था मानो साक्षात् शिवही होय उसको गोविन्दस्वामी ने प्रणाम किया सन्न्यासी ने भी आशीर्वाद देकर गोविन्दस्वामीसे कहा कि हे ब्राह्मण! तेरे इस बड़ेपुत्र विजयदत्तसे तेरा वियोग होगा इतना कह सन्न्यासी तो चलेगये औ गोविन्दस्वामी चित्तमें खिन्नहुआ इतनेमें सूर्य्य अस्त हुआ तब गोविन्दस्वामी ने संध्या आदिकर रात्रि बिताने के लिये एक पुराने शून्यदेवालयमें अपने स्त्री पुत्रोंसमेत प्रवेशकिया वे सब मार्गके परिश्रम से थकरहेथे इसलिये ब्राह्मणी औ अशोकदत्त तो निद्रावश होकर सोगये औ विजयदत्तको मार्ग के खेदसे शीतलगकर ज्वर चढ़आया गोविन्दस्वामीने विजयदत्तको बहुतसे वस्त्रउढ़ाये औ ऊपर से दबाया परंतु उसका शीत न उतरा गोविन्दस्वामी से विजयदत्तने कहा कि हे पिता! मुझे शीत बहुत पीड़ा देरहाहै इसलिये कहीं से अग्नि लाओ तब गोविन्दस्वामी अग्नि लेनेगया परन्तु कहीं अग्नि न मिला तबआयकर पुत्रसेकहाकिइस अर्द्धरात्रि के समय सब सोते हैं सबके द्वार बन्द हैं मैंने बहुत यत्न किया परन्तु कहीं अग्नि नहीं मिलता तब विजयदत्त फिर दीनवचन बोला कि हे पिता! मुझे बहुत शीत लगताहै औ शीतल पवन चलरहाहै किसी भांति मुझे चैन नहीं पड़ता औ आपने मिथ्या

ही कहदिया कि कहीं अग्नि नहीं मिलता देखो सम्मुख कैसा प्रचण्ड अग्नि जल रहा है जिसकी ज्वाला आकाशतक उठती है आप जाकर वहांसे अग्नि लेआवैं यह विजयदत्तका वचन सुन गोविन्दस्वामी बोला कि हे पुत्र! मैं कभी मिथ्या नहीं बोलता इस समय अग्नि कहीं नहीं मिलता यह सामने श्मशानहै उसके बीच चिता जलरही है वही अग्नि देखपड़ता है इस अग्निसेवन से आयुष्का क्षयहोताहै इसलिये इस अपवित्र औ अमंगल अग्नि को मैं नहीं लाया तुझे इस अग्निका स्पर्शकरना योग्य नहीं यह सुन विजयदत्त फिर व्याकुलहो बोला कि हे पिता! चाहे यह चिताका अग्निहो चाहे यज्ञका आप शीघ्र लाइये नहीं तो मेरे प्राण जातेहैं यहपुत्रका वचन सुन स्नेहवशहो गोविन्दस्वामी श्मशानमें अग्नि लेनेचला तब विजयदत्तभी उठकर उसके पीछे २ चलदिया वहां जाय चिताग्निसे अपनेशरीरकोसेंका औ कुछशीतबाधा निवृत्तहुई तब विजयदत्त बोला कि हे पिता! चिताके बीच यह गोल२कमलसा क्या पदार्थ जल रहाहै मुझेबताओ तब गोविन्दस्वामीने कहा कि हे पुत्र! मज्जासे भरा यह मनुष्यका कपाल जलरहाहै यह सुन विजयदत्त ने एक लकड़ी से उसको फोड़ दिया तब उसमें से मज्जा उछट कर विजयदत्तके मुखमें गिरी उसके मुखमें गिरतेही वह अतिभयंकर वेताल होगया औ घोर शब्द करनेलगा कि जिससे आकाश औ भूमि मानों फटजायँ औ कपालको चितासे निकाल सब मज्जा चाटगया औ अपने पिताकोभी भक्षणकरने दौड़ा तब आकाशवाणी हुई कि अरे तू यह साहस मतकर तब वह अपने पिता को छोड़ आकाश को उड़गया औ वेतालों के समूह में जा मिला वे वेताल उसको देख बोले कि कपाल के फोड़ने से यह वेताल हुआ इसलिये इसका नाम कपालस्फोटहै यह उसका नाम रख सब वेताल उसको अपने राजा नरास्थिभूषणके पास लेगये नरास्थिभूषण देखकर

बहुत प्रसन्न हुआ औ कपालस्फोटको अपना सेनापति बनाया कुछकालके अनन्तर चित्रसेन गन्धर्व से राजा नरास्थिभूषण का युद्ध हुआ उसमें नरास्थिभूषण मारागया तब सब वेतालों ने मिलकर कपालस्फोट को अपना राजा बनाया इसभांति विद्याधरेन्द्र का पुत्र मुनिशाप से मनुष्य हुआ मनुष्य से वेताल औ वेतालसे वेतालों का राजा बनगया औ सुखसे राज्य करनेलगा ॥

नवां अध्याय ॥

वेतालवरदतीर्थ की प्रशंसा औ दोनों विद्याधरकुमारोंका शाप मोक्ष ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! प्रभात होतेही अपनी स्त्री औ पुत्र समेत गोविन्दस्वामी विलाप करनेलगा उसको विलाप करते देख समुद्रदत्त नाम एक वैश्य दयाकर अपने घरको लेआया औ गोविन्दस्वामीको बहुत आश्वासन कर अपने धन की रक्षा का अधिकार उसे दिया गोविन्दस्वामी भी अपने पुत्र विजयदत्त के फिर मिलने की आशा से वैश्य के घरमें कालक्षेप करने लगा गोविन्दस्वामी का छोटा पुत्र अशोकदत्त शास्त्र में औ शस्त्रविद्या में बड़ा विचक्षण हुआ औ औरभी विद्याओं में उसने इतना अभ्यास किया कि उसके तुल्य विद्वान् और कोई भूमण्डल में न निकलै औ सब नगर में प्रसिद्धहोगया इसी अवसर में काशी के राजा प्रतापमुकुटके समीप एक बड़ा बलवान् मल्ल देशांतर से आया उसके साथ काशी के किसी मल्लने लड़ना अंगीकार न किया तब राजाने गोविन्दस्वामी के पुत्र अशोकदत्त को बुलवाया अशोकदत्त भी राजा की आज्ञा से सभा में आया तब राजाने कहा कि हे अशोकदत्त ! तू सब बलवान् पुरुषों में अधिक बलीहै इसलिये इस दुर्जय मल्लको जीत दक्षिणदेश के सब मल्लोंका यह स्वामी है यदि तू इसको जीतेगा तो जो मांगेगा वही मुझसे पावैगा यह राजाका वचनसुन

प्रसन्न हो अशोकदत्त उस दक्षिणी मल्लके साथ युद्ध करने लगा अशोकदत्त ने उसको नीचे गिराकर ऐसा दबाया कि उसकी पुतली फिरगई औ प्राणमुक्तहुये यह दुष्कर कर्म देखराजा बहुत प्रसन्न हुआ औ बहुत से धन ग्राम आदि देकर अशोकदत्त को प्रसन्न किया औ सदा उसको अपने समीप रखनेलगा एकदिन सायंकाल के समय राजा अशोकदत्त को साथ लेकर एकांत में विचरने गया वहां अकस्मात् एक ओरसे यह शब्द हुआ कि हे राजन्! मुझे विनाअपराध नगरके दंडपाल ने मेरे शत्रुकी प्रेरणा से शूलीपर चढ़ादिया आज चारदिनहुये पूर्वजन्मके पापसे मेरे प्राण नहीं निकलते औ इससमय मुझे तृषा बहुत पीड़ा देतीहै आप जल पिलाओ यह दीनवचन सुन राजाने अशोकदत्त को आज्ञादी कि तू इस निरपराध मनुष्य को जल पिलायआ यह राजाका वचन सुन जलका कलशभर उस श्मशान में अशोक-दत्त गया जहां से वह शब्द सुनाथा वहां जाकर देखा कि एक परमसुंदरी स्त्री सब भूषणों से भूषित खड़ीहै उसको अशोकदत्त ने पूंछा कि हे भद्रे! तू कौनहै औ इस भयंकर श्मशान में रात्रि के समय इस शूलीपर चढ़ाये हुये पुरुष के नीचे क्यों खड़ी है तब वह स्त्री बोली कि हे महात्मा! इस शूलपर मेरे पतिको राजा ने चढ़ादिया कृपणपुरुष जिसभांति धन नहीं त्यागै इसभांति यह प्राण नहीं त्यागता मैं इसके साथ सती होनेके लिये यहां आईहूं अब यह तृषा से पुकारताहै परन्तु मैं शूलके ऊपर नहीं पहुँच सकती कि इसके मुखमें जलडालूं शूल बहुत ऊंचाहै यह स्त्रीका वचन सुन अशोकदत्त ने कहा कि हे माता! तू मेरी पीठ पर चढ़कर इसको ठंढाजल पिलादे इतना कह अशोकदत्त शूल के नीचे झुकगया औ वह नारी भी झटपट उसके ऊपर चढ़गई थोड़े काल में अशोकदत्तके ऊपर रुधिर गिरा तब उसने ऊपर को दृष्टि करी तो देखा कि वह स्त्री उस पुरुषके मांसको खाती

है अशोकदत्त ने उस स्त्रीका पैरपकड़ा परन्तु वह पैरको छुटाय आकाशको उड़गई औ एक जड़ाऊ नूपुर अर्थात् पाजेब अशोकदत्तके हाथ में रहगया उस नूपुरको लेकर अशोकदत्त राजाके समीप आया औ सम्पूर्ण वृत्तांत राजाको सुनाय वह नूपुर दिया राजा अशोकदत्त का धैर्य्य देख बहुत प्रसन्न हुआ औ उस वीर का अपनी मदनलेखा नाम परमसुन्दरी कन्या ब्याहदी अशोकदत्त भी आनन्द से रहने लगा एकदिन राजा उस दिव्य नूपुर को देख बोला कि ऐसा दूसरा नूपुर कहां से मिलै यह राजा के वचन सुन अशोकदत्त ने मनमें विचार किया कि श्मशान में यह नूपुर मिलाथा अब वह स्त्री फिर कहां मिलै कि दूसरा नूपुर भी प्राप्त होय इसभांति अनेक प्रकार के विचार कर अशोकदत्त ने निश्चय किया कि श्मशान में जाय महामांस विक्रय करूं तब सब भूत प्रेत पिशाच आदि मन्त्र के बलसे आजायँगे उनमें वह राक्षसी भी अवश्य आवेगी तब बलसे उसका दूसरा नूपुर भी लूंगा हज़ारों भूत प्रेत भी मेरा कुछ नहीं कर सकते यह मनमें ठान महामांस अर्थात् मनुष्यमांस ले रात्रिके समय श्मशान में गया औ मन्त्र पढ़ यह पुकारने लगा कि मैं महामांस बेचताहूं जिसकी इच्छाहोय वह लेवै यह शब्द सुनतेही अतिहर्षित हो चारों ओर से किलकिलाते हुये भूत प्रेत पिशाच राक्षस कंकाल वेताल आय इकट्ठेहुये इतने में महामांस की इच्छासे बहुत सी राक्षसकन्याओं करके युक्त वह राक्षसी भी वहां आय पहुँची औ अशोकदत्त ने भी उसको पहिचाना उस राक्षसी ने पूछा कि महामांसका क्या मोल होगा तब अशोकदत्त ने कहा कि दूसरा नूपुर राक्षसी बोली कि मैं तेरे धैर्य्य पर बहुत प्रसन्न हूं इसलिये दूसरा नूपुर औ अपनी कन्या भी तुझे देती हूं महामांस की मुझे कुछ आकांक्षा नहीं इतना कह उस विद्युत्केशी नाम राक्षसी ने अपनी रूप

यौवन करके युक्त विद्युत्प्रभा नाम कन्या अशोकदत्त को विवाह दी औ वह नूपुर देकर एक सुवर्ण का कमल भी दिया नूपुर सुवर्ण कमल औ विद्युत्प्रभा को साथले अपनी सासु विद्युत्केशीसे बिदाहो अशोकदत्त राजाके समीप पहुँचा औ वह नूपुर राजाको दिया राजा भी दूसरा नूपुर पाय बहुत प्रसन्न हुआ औ अशोकदत्त की प्रशंसा करने लगा एक दिन अशोकदत्तने अपनी प्रिया विद्युत्प्रभा से पूछा कि हे प्राणप्यारी! यह सुवर्ण कमल तेरी माता ने कहांसे पाया मुझे ऐसे कमलोंकी और भी इच्छा है यदि तू बतावै तो मैं ले आऊं तब विद्युत्प्रभा ने कहा कि हे प्रिय! कपालस्फोट नाम वेतालों का राजा है उस के सरोवर में ऐसे कमल होतेहैं मेरी माता एक दिन जलक्रीड़ा करने उस सरोवर में गईथी तब एक पुष्प तोड़ लाईथी यह अपनी प्रिया का वचन सुन अशोकदत्त ने कहा कि मुझे उस सरोवरके तटपर पहुँचादे तब विद्युत्प्रभा अशोकदत्त को ले उड़ी औ क्षण भर में वहां पहुँचा दिया औ सरोवर में घुसकर सुवर्ण कमल तोड़ने लगा तब उस सरोवरके रक्षक अशोकदत्त को मारने दौड़े परन्तु उसवीरने उन सबको मारदिया तब कपालस्फोट आप युद्ध करने निकला औ अशोकदत्तसे युद्ध करनेलगा अशोकदत्त अपने खड्गसे कपालस्फोट के दो टुकड़े करना चाहता था इतने में विद्याधर गुरु विज्ञप्तिकौतुक विमानमें बैठे वहां आनिकले वे पुकारे कि हे अशोकदत्त! साहस मतकर यह वचन सुन अशोकदत्त ने ऊपर को दृष्टि की तो देखा कि अति प्रभावान् विद्याधर गुरु विमान में बैठे हैं उनको देखतेही अशोकदत्त शाप से मुक्तहुआ औ मनुष्य देह छोड़ दिव्य देह होगया तब विद्याधर गुरु ने अशोकदत्त को अपने पहिले रूप में प्राप्तहुये देख कहा कि हे सुकर्ण! यह तेरा भाई गालवमुनि के शापसे वेताल हुआहै इसने गालवमुनिकी कन्याको स्पर्शकिया

था औ इसपापका तैंने अनुमोदन किया था इसलिये तुझे भी गालवमुनि ने शापदिया तेरा शाप मेरे दर्शन तक था औ इस तेरे भाई के शापका अन्त गालवमुनि ने कुछ कल्पन नहीं किया अब तू शापसे मुक्तहुआ इसलिये स्वर्ग को चल औ उत्तमभोग भोग यह गुरु का वचन सुन सुकर्ण ने कहा कि महाराज बड़े भाईको इसी दुर्दशा में छोड़ मुझे स्वर्ग में जाना उचित नहीं आप कोई ऐसा उपाय बतावैं कि जिससे यह भी शापसे मुक्त होय यह सुन विज्ञप्तिकौतुक ने कहा कि यह शाप निवृत्त होना अति कठिन है परन्तु एक गुप्त बात हम कहते हैं जो ब्रह्माजी ने सनत्कुमार आदि से कही थी दक्षिण समुद्रके तटपर चक्रतीर्थ के समीप एक तीर्थ है जिसके दर्शनमात्रसेही सब पाप निवृत्त हो जाते हैं उसमें स्नान करने से जो फल होता है उसका तो कौन वर्णन करसकै उस तीर्थ में जाकर तेरा भाई स्नान करै तो वेतालपने से मुक्तहो दिव्यदेह धार स्वर्ग को जाय सुकर्ण यह वचन सुन अपने भ्राता कपालस्फोट नाम को साथले दक्षिण समुद्र के तटपर उस तीर्थपर पहुँचा जो विज्ञप्तिकौतुक ने बताया था वहां जाय सुकर्ण ने अपने भाई से कहा कि हे भ्राता ! तू इस तीर्थ में स्नानकर जिससे यह गालवमुनि का शाप निवृत्त होय इतने में पवन चला उससे तीर्थ के जलकण उड़कर कपालस्फोट की देहपर गिरे उन जलकणों के गिरतेही वेतालरूप छोंड़ ब्राह्मण पुत्र विजयदत्त होगया फिर उसने तीर्थ में स्नान किया तब मनुष्य देह छोंड़ दिव्य देह होगया औ दोनों भाई उत्तम विमानपर चढ़ दिव्य स्त्रियों सहित उस तीर्थ की प्रशंसा करते हुये अपने गुरु विज्ञप्तिकौतुक के संग स्वर्ग को गये उस दिनसे उस तीर्थका नाम वेतालवरद हुआ चक्रतीर्थ के दक्षिण भाग में स्थित वेतालवरद नामक तीर्थ में जे स्नान करैंगे वे जीवन्मुक्तहोंगे इस तीर्थ के तुल्य और तीर्थ न हुआ है न होगा

इसमें स्नान करने से वेतालपना छूटा यहां सङ्कल्पकर स्नानकरै औ नियमपूर्वक पिण्डदान पितरों के निमित्तकरै इतना कह सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो ! यह हमने वेतालवरद तीर्थ के नाम का कारण औ माहात्म्य वर्णन किया जो पुरुष इस अध्याय को पढ़े अथवा भक्तिसे श्रवण करै वह मुक्त होय ॥

दशवां अध्याय ॥

गन्धमादन पर्व्वतका माहात्म्य औ एक शूद्र औ एक मुनि की कथा औ पापनाशन तीर्थ का माहात्म्य ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! वेतालवरद तीर्थ में स्नान कर धीरे धीरे गन्धमादन पर्व्वत को जाय समुद्र में जो सेतु रूप करके गन्धमादन पर्व्वत स्थित है वह ब्रह्मलोक का मार्ग विश्वकर्म्मा ने बनाया है लाखों सरोवर नदी समुद्र महापुण्यवन आश्रम पुण्यक्षेत्र अरण्यवेद वशिष्ठ आदि मुनि सिद्ध चारण किन्नर लक्ष्मी औ धरणी सहित विष्णुभगवान् सावित्री औ सरस्वती सहित ब्रह्माजी गणपति कार्त्तिकेय इन्द्रआदि देवता सूर्य्यआदि ग्रह अष्ट वसु पितर लोकपाल सब उस पर्व्वत में निवास करते हैं औ दर्शन करनेहारों के महापातक हरते हैं इसी पर्व्वत में शिव पार्वती विहार करते हैं किन्नर गन्धर्व्व विद्याधर आदि इसी पर्व्वत में अपनी कांताओं के साथ क्रीड़ा करते हैं गन्धमादन के दर्शन करतेही उत्तम बुद्धि औ सौख्य प्राप्त होता है उसके ऊपर निवास करनेवाले सिद्ध चारण गन्धर्व्व आदि सदा सदाशिव का पूजन करते हैं गन्धमादन का पवन शरीर में लगतेही करोड़ों ब्रह्महत्या आदि महापातक नष्ट होजाते हैं पहिले यह पर्व्वत समुद्र के मध्य में होने से मनुष्यों को अगम्य था केवल देवता औ ऋषिही इसमें रहते थे श्रीरामचन्द्रजीकी आज्ञासे नल ने सेतु बांधा उसके मध्यमें यह पर्व्वत

आगया तब से मनुष्य जानेलगे गन्धमादनपर्वतके समीप जाय प्रार्थनाकरै औ ये मंत्र पढ़ै ॥

क्षमाधरमहापुण्य सर्वदेवनमस्कृत । विष्णवादयोपियं देवास्सेवन्तेश्रद्धयासह ॥ तंभवंतमहंपद्भ्यामाक्रमामिन गोत्तम । क्षमस्वपादघातंमेदययापापचेतसः ॥ त्वन्मूर्द्धनिकृतावासंशंकरंदर्शयस्वमे ॥

इन मंत्रोंसे प्रार्थनाकर धीरे२ गन्धमादन पर्वतमें जाय समुद्र में स्नानकर गन्धमादनमें पिंडदानकरै सरसोंके तुल्यभी पितरों के निमित्त पिंडदेवै तो एक युगपर्यन्त पितर तृप्त रहते हैं जो समीवृक्ष के पत्रके तुल्य पिंडदेवै तो उसके पितर नरक से स्वर्ग को जायँ औ जो पहिलेही स्वर्गमें होयँ तो मुक्ति पावैं गन्धमादन के ऊपर लोकमें प्रसिद्ध पापविनाशन नाम तीर्थहै जिसके स्मरण करनेसेही मनुष्य जन्म मरणसे छूटै उस तीर्थ में जाय भक्तिसे स्नान करै तो मुक्तिपावै । इतनी कथा सुन शौनकआदि मुनीश्वरोंने पूछा कि हे सूतजी! आप पापविनाशनतीर्थ का माहात्म्य विस्तार से वर्णनकरौ व्यासजीकी अनुग्रह से आप सर्वज्ञहैं यह मुनियों का वचन सुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो! हिमालयपर्वत में ब्रह्माजी के आश्रमके बीच जो कथा हुई उसको हम वर्णन करते हैं हिमालयपर्वत में अतिमनोहर एकआश्रमहै जो अनेकवृक्ष लता गुल्म मृग पक्षी हाथीआदि से भराहै सिद्ध चारण व्रती ऋषि तपस्वी ब्राह्मण दीक्षित ब्रह्मचारी वेदपाठी वानप्रस्थ संन्यासीआदि करके नित्य सेवित है बालखिल्य मरीचिआदि मुनि जिस आश्रममें निवास करते हैं एक समय बड़ा साहसी दृढ़मति नाम एक शूद्र उन ब्राह्मणों के समीप आया वहां बड़े २ तेजस्वी औ तपस्वी ब्राह्मणोंको देख उसने साष्टांग दण्डवत् किया ब्राह्मणोंने उसका सत्कार किया ब्राह्मणोंको देख

उसकी भी इच्छा तप करनेकी हुई औ कुलपति अर्थात् उन सब ऋषियों में मुख्य ऋषिके समीप आय प्रार्थनाकरी कि महाराज मैं शूद्रहूं औ आपकी सेवामें रहकर तप किया चाहताहूं अब मैं आपके शरण में प्राप्तहुआ इसलिये आप मुझेभी यज्ञकी दीक्षा दीजिये यह दृढ़मति का वचन सुन कुलपतिने कहा कि शूद्रको दीक्षा नहीं होसकती जो तेरी तप करने की इच्छाहोय तो ब्राह्मणों की शुश्रूषाकर शूद्रको कभी उपदेश न करना चाहिये शूद्रके उपदेश करने से उपदेष्टा को बड़ादोष होताहै शूद्रको कभी न पढ़ावै औ शूद्रसे याचना भी न करै शास्त्र व्याकरण काव्य नाटक अलंकार पुराण इतिहासआदि शूद्रको कभी न पढ़ावै जो ब्राह्मण शूद्र को पढ़ावै उसको चांडाल के तुल्य समझ सब ब्राह्मण मिलकर अपने ग्राम से निकालदेवैं औ अक्षरयुक्त शूद्रका भी त्यागकरैं इसलिये हे दृढ़मति! तू श्रद्धासे ब्राह्मणोंकी सेवाकर इसी में तेरा कल्याण है मनु आदिकों ने ब्राह्मणकी सेवा करना शूद्रका मुख्य कर्म कहाहै इसलिये तुझे अपने जातिधर्मको त्याग न करना चाहिये यह मुनिका वचन सुन शूद्र चिंतन करनेलगा कि अब मुझे क्या करना चाहिये मेरी श्रद्धा तो तप करने में पहिलेसेही है इसलिये अब वही उपाय करना चाहिये जिससे मुझे ज्ञान प्राप्तहोय यह मनमें ठान उस आश्रम से दूरजाकर एक झोपड़ी बनाय उसमें एक देवमन्दिर बनाया औ एक तालाब खोद उसके तटपर पुष्पवाटिका लगाई इसभांति आश्रम बनाय श्रद्धासे तप करनेलगा अभिषेक उपवास बलि हवन देवपूजन आदि नित्यकरता फलाहार करता जितेंद्रिय रहता औ पुष्प पत्र फल मूलआदि करके नित्य अतिथियोंका पूजन करता इसप्रकार तप करते २ बहुतकाल व्यतीत हुआ एक बड़ेतपस्वी गर्गकुलमें उत्पन्न सुमति नामकमुनि उसके आश्रममें आये दृढ़मतिने भी मुनिको स्वागत प्रश्नकर भलीभांति उनका पूजनकिया औ फल

मूलआदि उनको भोजन कराय प्रणामकर अनेकप्रकार की कथा कह प्रसन्नकिया मुनि भी सन्तुष्टहो दृढ़मति को आशीर्वाद देकर अपने आश्रमको गये परन्तु उसदिन से सुमतिमुनि प्रतिदिन दृढ़मतिके आश्रम में आने लगे दृढ़मति भी उनका बहुत सत्कार औ सेवा करता इसभांति उस शूद्र के साथ सुमति का बहुत स्नेह होगया औ जो शूद्र कहता उसको मुनिभी अङ्गीकार करते एकदिन दृढ़मति ने सुमतिमुनि से कहा कि आप मुझे हव्य कव्य विधान के सब मन्त्र उपदेश करें जिससे मैं देवता औ पितरों को सन्तुष्ट करूं महालयश्राद्ध अष्टकाश्राद्ध आदिका विधान और भी जो वैदिककृत्य होय वह सबआप मुझे सिखावें यह दृढ़मति का वचन सुन सुमतिमुनि ने सब मंत्र औ विधान उसको सिखाये औ आप उससे श्राद्ध करवाया औ शूद्र से बिदाहो प्रसन्नतापूर्वक अपने आश्रम को गये औ दृढ़मति से नित्य मिलते वह भी उनकी सेवा करता सुमति को शूद्रका संसर्ग देख और मुनियों ने त्यागदिया अपना आयुष् भोगकर सुमतिमुनि मृत्युवश हुये तब उनको यमराज के दूतों ने ले जाकर नरक में डालदिया किरोड़ोंकल्प नरक में पड़ेरहे पीछे स्थावरयोनि अर्थात् वृक्षआदि हुये फिर क्रमसे गर्दभ ग्रामशूकर श्वान काक चांडाल शूद्र वैश्य क्षत्रियआदि योनियों में जन्मलेते ब्राह्मण के घर में जन्म पाया पिताने उस बालक का आठवेंवर्ष में यज्ञोपवीत किया औ सब वैदिक आचार सिखाया एकदिन वह बालक वनमें गयाथा वहां उसको ब्रह्मराक्षस का आवेश होगया वहांसे रोता हँसता विलापकरता गाता गिरता भ्रमता औ हाहाशब्द करता घरमें आया और सब वैदिककर्म उसने छोड़दिया पिता भी पुत्रकी यह दशादेख अतिदुःखी हुआ औ उसको सङ्गलेकर अगस्त्यमुनिकी शरणमें गया वहां जाय अगस्त्यजी को प्रणामकर ब्राह्मण ने प्रार्थना करी कि

महाराज मेरे इस पुत्रमें ब्रह्मराक्षस का आवेश होगया है इस लिये क्षणमात्र भी इस को सुख नहीं औ पितरों का ऋण निवृत्त करनेके लिये मेरे कोई दूसरा पुत्र नहीं अब आप कृपाकर कोई उपाय बतावैं आपके समान तीनोंलोकों में कोई तपस्वी नहीं औ सब ऋषि आपको शिवभक्तों में मुख्य गिनते हैं आपके विना कोई इसकी रक्षा करनेहारा नहीं इसलिये आप इस अनाथपर औ मुझपर अनुग्रह करैं महात्मापुरुष दयालु होते हैं सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! यह ब्राह्मण का वचन सुन अगस्त्यजी ने ध्यान किया औ बहुतकालतक ध्यानकर बोले कि हे ब्राह्मण! कई जन्म पहिले यह तेरा पुत्र सुमतिनाम ब्राह्मण था इसने शूद्रको सब वैदिककर्म्म उपदेश किये उस पापके फल से किरोड़ों वर्ष नरकवास भोगकर स्थावरआदि अनेक दुष्ट योनियों में जन्म लेता अब तुम्हारा पुत्र हुआ अब भी पूर्व्व जन्म के पापसे यमराज के भेजेहुये ब्रह्मराक्षस ने इसको आघेरा अब हम इसकी निवृत्ति का उपाय कहते हैं सावधान होकर श्रवणकरो दक्षिणसमुद्र में देवताओं करके सेवित सेतुरूप से स्थित गन्धमादननाम पर्व्वत है उसके ऊपर पापविनाशन नाम तीर्थ है उस तीर्थ में स्नान करने से भूत प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस औ बड़े बड़े रोग नष्ट होते हैं हे ब्राह्मण! तू अपने पुत्रको वहां स्नान करावे दिन दिन स्नान कराने से ब्रह्मराक्षस निवृत्त होजायगा इसके विना और कोई उपाय नहीं है इसलिये तुम विलम्ब मतकरो शीघ्रही जाय इस पुत्र को स्नान करावो यह अगस्त्यजीका वचन सुन उनको प्रणामकर गन्धमादन पर्व्वत को चला वहां कुछ दिनों में पहुंच अपने पुत्र को पापविनाशन तीर्थ में तीनदिन सङ्कल्प पूर्व्वक स्नान कराया औ ब्राह्मणने आप भी स्नान किया स्नान करतेही वह ब्राह्मणपुत्र अरोग्य औ दिव्यरूप करके युक्त होगया औ बहुत

काल संसारसुख भोग अन्त में मुक्तिको प्राप्त हुआ ब्राह्मण भी तीर्थ स्नानके फलसे अपने आयुष् के अन्त में मुक्त हुआ औ जिस शूद्र को वैदिककर्म का सुमति ने उपदेश किया था वह भी बहुतकाल नरक भोग अनेक बुरेजन्म भोगता गन्धमादन पर्वत में गीध हुआ एक दिन वह गीध पापनाशन तीर्थ में जल पीने आया वहां उसने जलपिया औ देहपर भी जलके छींटे लगाये उस जलके स्पर्श होतेही दिव्यदेह पुरुष होगया दिव्य वस्त्र भूषण मालाआदि से भूषितहो उत्तम विमान में बैठ सुन्दरी स्त्रियों करके सेवित छत्र चामर आदि से शोभित हो स्वर्ग को गया हे मुनीश्वरो! पापविनाशन तीर्थ का ऐसा प्रभाव है स्वर्ग मोक्ष पुण्य आदि सब पदार्थ मिलते हैं औ पापों का नाश होताहै उस तीर्थ में स्नान करने से कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं ब्रह्मा विष्णु महेशआदि देवता सदा उसका सेवन करते हैं पापोंका नाश करनेसे उस तीर्थका नाम पापनाशन पड़ा कल्याण की इच्छावाले पुरुष वहां अवश्यही स्नानकरैं हे मुनीश्वरो! यह पाप विनाशनतीर्थका परमगुप्त माहात्म्य संक्षेप से कहाहै जिस तीर्थ के स्नान करने से अति दुराचार शूद्र औ ब्राह्मण भी मुक्त हुये उसकी महिमा कहांतक वर्णन करैं॥

ग्यारहवां अध्याय॥

सीतासरोवरका माहात्म्य औ कपालाभरण नाम राक्षसराज की कथा॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! पापनाशन तीर्थ में स्नान कर फिर सीतासरोवर में जाना चाहिये संसारमें गङ्गाआदि जितने तीर्थ हैंसब सीतासरोवर में निवास करते हैं काशीआदि क्षेत्रभी अपना २ पाप निवृत्त होने के लिये सदा उस तीर्थ का सेवन करते रहते हैं सब जीवों के पातक हरने के लिये शिवजी भी वहां निवास करते हैं इसी तीर्थ में स्नान करने से इन्द्रको

ब्रह्महत्या ने छोड़ा यह सूतजी का वचन सुन मुनियोंने पूंछा कि इन्द्रने क्योंकर ब्रह्महत्याकी औ उस तीर्थ में स्नान किसभांति किये यह आप वर्णनकरैं तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! पूर्वकालमें कपालाभरण नाम एक बड़ापराक्रमी राक्षस हुआ वह ब्रह्माजीके वरसे सब देवतावों करके अवध्यथा अर्थात् देवता उसको नहीं मार सकतेथे उस राक्षसका मंत्री शवभक्ष नामथा बैजयन्तनगर उसकी राजधानी थी औ सौ अक्षौहिणी सेना उस राक्षसकी थी अपने नगर में आनन्द से कपालाभरण निवास करताथा एक दिन कपालाभरण ने अपने मंत्री शवभक्ष को बुलाकर कहा कि हे प्रधान! हमारी इच्छाहै कि इन्द्रको जीत कर स्वर्ग में अपनी सेना समेत निवास करैं यह अपने प्रभुका वचनसुन मंत्रीने भी कहा कि बहुत उत्तम बात है तब कपालाभरण दुर्मेधानाम अपने पुत्रको राज्य देकर बहुतसी सेना लेकर अमरावतीनगरी को जीतनेचला समुद्रों को सुखाता पर्व्वतोंको चूर्णकरता घोड़े हाथी रथ पयादों के शब्द से दिग्गजों को भी बधिरकरता देवतावों के साथ युद्ध करने के लिये अमरावती के समीप जापहुँचा देवताभी सेनाका कलकल सुन नगरके बाहर निकले औ राक्षसों के साथ युद्ध होनेलगा ऐसा युद्धहुआ कि न किसीने पहिले देखाथा न सुनाथा देवता राक्षसों को मारनेलगे औ राक्षस देवतावोंको परस्पर द्वन्द्वयुद्ध होनेलगा कपालाभरण इन्द्रके साथ शवभक्ष यमराज के साथ कैशिक वरुण के साथ औ रुधिराक्ष कुबेरके साथ युद्ध करनेलगा मांसप्रिय मद्यसेवी क्रूरदृष्टि औ भयावह ये चार कपालाभरणके छोटे भाई अश्विनीकुमार वायु औ अग्निके साथ युद्ध करनेलगे यमराजने एक दण्ड ऐसा मारा कि शवभक्ष के प्राण मुक्तहुये औ उसके साथ तीस अक्षौहिणी सेनाथी वहभी यमराज ने मारडाली वरुण ने भाले से कैशिक का शिर काटलिया रुधिराक्ष को कुबेर ने मार गिराया

कपालाभरण के चारोंभाई अश्विनीकुमार वायु अग्निने मारे औ इन्द्रने कपालाभरण की सौ अक्षौहिणी सेनाका क्षणमात्र में संहार किया कपालाभरण अपनी सेनाको नष्टहुई देख क्रोधकर इन्द्रकी ओर दौड़ा औ इन्द्रसे कहा कि खड़ारह इतनाकह पांच बाण इन्द्रके मस्तक में मारे परन्तु उन बाणोंको इन्द्रने काटदिया तब इन्द्रके ऊपर कपालाभरण ने त्रिशूल फेंका उसको इन्द्रने अपनी बर्छीसे काटदिया तब क्रोधकर सौहाथ लंबी औ पांचहजार मन भारी अतिभयंकर लोहकी गदा उठाकर कपालाभरण ने इन्द्रकी छातीमें मारी उसके लगतेही इन्द्र मूर्च्छित होगया तब बृहस्पतिने मृतसंजीविनीविद्या जपकर इन्द्रको चैतन्यकिया तब इन्द्र ऐरावत हस्तीपरचढ़ फिर कपालाभरणके सम्मुखआया औ उसके ऊपर वज्रका प्रहारकिया वहभी वज्रलगतेही रथ सहित चूर्ण होगया उस राक्षसके मरतेही सब जगत् में आनन्द हुआ परन्तु वहांसेही उत्पन्नहोकर एक घोरब्रह्महत्या इन्द्रके पीछे लगी इतनीकथासुन मुनीश्वरोंने पूंछा कि हे सूतजी! वह राक्षस ब्राह्मण तो थाही नहीं फिर उसके मारने से इन्द्रको हत्या क्यों लगी तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! अतिगुप्त बात हम वर्णन करते हैं आप सावधानहो श्रवणकरैं पूर्वकाल में विंध्याचलपर्वत के बीच त्रिविक्रमनाम एक राक्षस रहताथा उसकी परमसुन्दरी औ सब उत्तम लक्षणों करकेयुक्त सुशीलानाम भार्याथी एकदिन सुशीला वनमें विचरतीथी वहांहीं शुचिनाम एकमुनि तपकरते थे उन्होंने सुशीला को देखा देखतेही कामके वशहुये औ कहने लगे कि हे सुन्दरि! तू किसकीभार्याहै औ इसभयंकरवनमें अकेली क्यों आई है तू मुझे थकीसी देखपड़ती है इसलिये आज तू मेरे उटज अर्थात् झोपड़ीमें सुखसे निवासकर यह मुनिका वचनसुन सुशीलाने कहा कि महाराज मैं त्रिविक्रमनाम राक्षसकीभार्या हूं औ पुष्प तोड़ने इस वनमें आईहूं मुझे पतिने यह भी आज्ञादी

है कि शुचिमुनिको प्रसन्नकर उनसे पुत्र उत्पन्नकरावे इसलिये आप कृपाकर मुझमें पुत्र उत्पन्न कीजिये यह सुशीलाका वचन सुन प्रसन्नहो मुनिबोलेकि हे सुशीले! तुझे देख मुझेभी बहुत प्रीति हुई इसलिये मेरा मनोरथ तू शीघ्रही पूराकर इतनाकह मुनि औ सुशीला विहारकरनेलगे तीनदिन मुनि उसके समीप रहे चौथेदिन उससे कहा कि हे प्रिये! तेरे गर्भ में पुत्र है वह चिरकाल राज्य करैगा उसका नाम कपालाभरण रखना हजारवर्ष तपकरके ब्रह्माजी से वर पावैगा औ इन्द्रके विना और किसीदेवताका उसको भय न होगा इतना कह मुनि तो काशीको गये औ कुछ कालके अनन्तर सुशीलाके पुत्रहुआ वही कपालाभरण था जिसको इन्द्रनेमारा शुचिमुनिके वीर्यसे कपालाभरण उत्पन्न हुआ इसलिये उसके मरने से इन्द्रको ब्रह्महत्या लगी इन्द्र भी उस हत्याकरके पीड़ित सबलोकों में दौड़ता फिरा परन्तु कहीं चैन नहीं मिला तब ब्रह्मलोक में गया औ ब्रह्माजी से प्रार्थना करी कि महाराज यह ब्रह्महत्या मुझे बहुत दुःख देती है इसका आप कोई उपाय बताइये यह इन्द्र का वचन सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे देवराज! गन्धमादन पर्वत में सीताकुंड है वहां जाय उस तीर्थमें स्नानकर यज्ञकरो तब तुमको यह हत्या छोड़ेगी सीतासरोवर मुक्तिका देनेहारा है उसमें स्नान करने से सब पातक उपपातक दुःख दारिद्र आदि दूर होते हैं यह ब्रह्माजी का वचन सुन इन्द्र सीतासरोवरपर पहुंचा वहां स्नानकर यज्ञ किया तब ब्रह्महत्या निवृत्त हुई औ सुखी होकर इन्द्र स्वर्ग का राज्य करनेलगा इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! ऐसा प्रभाव सीतासरोवरकाहै रामचन्द्रजी का संदेह निवृत्त करने के लिये सीताने अग्निमें प्रवेश किया औ अग्नि से निकल अपने नामका यह तीर्थ बनाया औ आप उसमें स्नान किया इसी से उसका नाम सीतासरोवर हुआ उस तीर्थ में जो

मनुष्य स्नानकरै उसके सब मनोरथ सिद्धहोते हैं उस तीर्थ के जलसे आचमनकर अनेक प्रकारके दानदेवै बड़ी दक्षिणावाले यज्ञकरै तो अवश्यही मुक्तिपावै हे मुनीश्वरो! यह सीतासरोवर का प्रभाव हमने वर्णन किया इसको जो पढ़ै अथवा सुनै वह उत्तम भोग भोगकर अंतसमय में सद्गति पाता है ॥

बारहवां अध्याय ॥

मंगलतीर्थका माहात्म्य औ मनोजवराजाका इतिहास ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! सीताकुण्ड में स्नानकर मङ्गलतीर्थ को जाना चहिये उस तीर्थ में लक्ष्मी निवास करतीहै इन्द्रादि देवता अलक्ष्मीके नाशके लिये नित्य उस तीर्थमें स्नान करते हैं हे मुनीश्वरो! हम एक इतिहास वर्णन करते हैं उसको आप प्रीतिसे श्रवणकरो पूर्वकालमें चंद्रवंशके बीच मनोजवनाम एक राजा हुआ वह राजा सदा वेद पढ़ता यज्ञकरता ब्राह्मण भोजन कराता वेद के अर्थ को चिंतन करता नीतिशास्त्रका विचार करता औ सब शत्रुओंको जीत धर्म्मसे प्रजाकी रक्षाकरता था इसप्रकार धर्म्मराज्य करते२ राजाके चित्तमें अहंकार उत्पन्न हुआ हे मुनीश्वरो! जहां अहंकारहोय वहां काम क्रोध लोभ मद हिंसा असूया आदि सब दोष रहते हैं औ इन सबके होने से पुरुष सम्पत्ति औ सन्तानसहित नष्ट होजाताहै राजाके चित्तमें अहंकार उत्पन्नहोतेही ईर्षा औ लोभभी उत्पन्नहुये राजाने विचार किया कि ये ब्राह्मण कुछ कर नहीं देते इनसेभी दंडलेना चाहिये यह मनमें निश्चय कर ब्राह्मणों के धन धान्य हरनेलगा शिव विष्णुआदिके मन्दिरोंमें जो धनथा वह सब लेलिया ब्राह्मणोंकी औ देवालयों की भूमि छीनली इस प्रकार अन्याय करते २ उस राजाके नगर को एकसमय रणदेश के राजा गोलभने अपनी चतुरंगिनी सेना से आ घेरा उसके साथ परमअहंकारी मनो-

जवने छःमहीनेपर्यंत युद्ध किया परन्तु अन्तमें हारकर भगा औ राज्यछोड़ अपने पुत्र स्त्रियोंको साथले वनको गया इसभांति मनोजव को निकाल गोलभ राज्य करनेलगा मनोजव भी भूखा प्यासा बड़े गह्वर वनमें जा पहुँचा जहां सिंह व्याघ्रआदि जीव गर्जते थे हाथी चिंघाड़ते थे महिष वराहआदि दुष्टजीव चारों ओर फिरते थे उस वनमें मनोजव राजाके बालकपुत्रने कहा कि हे पिता! मुझे भोजन दो भूख लगीहै औ यही बात अपनी मातासे भी कही यह पुत्रका वचन सुन राजा रानी बहुत दुःखी हुये औ राजाने अपनी सुमित्रानाम रानीसे कहा कि हे सुमित्रे! भूख से मेरे प्राणजाते हैं प्यास से कण्ठ सूखताहै औ यह बालक जो भोजन न पावेगा तो मरही जायगा मुझ से मंदभागी को विधाताने क्यों उत्पन्न किया कौन मुझे इस विपत्तिसे बचावेगा शिव विष्णु सूर्य अग्निआदि देवताओं का मैंने पूजन नहीं किया देव ब्राह्मणोंकी जीविका औ धन मैंने हरा इन सब पापों सेही मैं राज्यसे भ्रष्ट होकर वनमें निकला तिसपरभी क्षुधा तृषा से कुटुम्ब व्याकुल होरहा है अब मैं इस बालक को अन्न कहां से लाकरदूं शिवआदि देवताओं का मैंने पूजन नहीं किया न हवन किया न तीर्थयात्रा की माता पिताका कभी पार्वण अथवा एकोद्दिष्टश्राद्ध नहीं किया कभी बहुत से ब्राह्मणों को भोजन नहीं कराया इन पापों से मुझे यह घोरदुःख प्राप्तहुआ चैत्रमास के चित्रानक्षत्र में चित्रगुप्तकी प्रसन्नता के लिये अनेक प्रकार के पाक केला कटहरआदि मीठेफल छतरी दण्ड खड़ाऊं जूता ताम्बूल पुष्प चन्दनआदि लेपन कभी ब्राह्मणों को न दिये उस पापसे यह दुःख मुझे पड़ा पीपल बड़ आम्र इमली नीम कैथा आमला नालिकेरआदि कोई वृक्ष भी मार्ग्ग में मैंने नहीं लगवाये जिनकी छाया में कोई पथिक बैठे उसी पाप से यह दुःख मुझे मिला शिवालयआदि में मार्ज्जन नहीं

किया न कुवां बावली तालाबआदि खुदवाये न तुलसी अथवा पुष्पवाटिका लगाई न कोई देवालय बनवाया उसी पापका यह फलहै महालयपक्ष में मैंने कभी पितरों के निमित्त पार्वणश्राद्ध अष्टकाश्राद्ध नित्यश्राद्ध नैमित्तिकश्राद्ध न किये इसीसे यह क्लेश भोगता हूं बहुत दक्षिणावाले कभी यज्ञ नहीं किये एकादशी आदि व्रत नहीं किये धनुर्मास में शिव विष्णुआदि देवताओं का प्रभातही पूजन कर नैवेद्य नहीं लगाया उस पापसे आज मैं वनमें भटकताहूं शिव विष्णुआदि नामोंका मैंने कभी उच्चारण नहीं किया जावालप्रोक्त मन्त्रों करके कभी विभूति नहीं धारणकी औ रुद्राक्ष कभी नहीं धारे शिवपंचाक्षरमन्त्रका जप औ रुद्राध्याय का पाठ मैंने कभी नहीं किया इसी पाप से मेरे ऊपर यह विपत्ति पड़ी पुरुषसूक्त औ अष्टाक्षरमन्त्र मैंने नहीं जपा और भी कोई धर्म्मकृत्य नहीं की इसीसे वनमें दुःख भोगता फिरताहूं इसभांति विलाप करताहुआ राजा मूर्च्छित हो भूमिपर गिरपड़ा पतिको गिरे देख सुमित्रा भी उस को आलिङ्गन कर विलाप करनेलगी कि हे चन्द्रवंश के भूषण महाराज! मुझे इस वनमें छोंड़ कहां चले मैं अनाथ हूं जो आप का मृत्यु होगया होय तो मैं भी आपके साथ सती होजाऊं विधवा होकर क्षणमात्र भी नहीं जी सकती यह माता पिताकी दशा देख उन का पुत्र चन्द्रकांत भी विलाप करने लगा इसी अवसरमें रुद्राक्षधारे सब अंगों में विभूति लगाये भस्मका त्रिपुण्ड्र मस्तक में दिये जटाधारे श्वेतयज्ञोपवीत पहिने मृगछाला ओढ़े पराशरमुनि वहां आय निकले सुमित्राने उनके चरणोंपर प्रणाम किया औ अपने बालकपुत्रसे भी प्रणाम करवाया पराशरमुनि ने आशीर्वाद देकर कहा कि हे भद्रे! विलाप मतकर औ मुझ यह बताये कि तू कौन है यह भूमिपर कौन पड़ा है औ यह बालक तेरा कौन लगता है यह पराशरमुनि का वचन सुन सुमित्रा

बोली कि महाराज यह चन्द्रवंश का भूषण बड़ापराक्रमी मनोजव नाम राजाहै मैं सुमित्रानाम इसकी रानीहूं औ यह बालक चन्द्रकांतनाम हमारा पुत्र है इस राजा को इसके शत्रु गोलभ ने जीतकर राज्य से निकाल दिया तब राज्यभ्रष्ट हो हमने इस घोरवनमें प्रवेश किया यहां क्षुधाकरके पीड़ित इस बालक ने भोजन मांगा परन्तु भोजन नहीं था यह दुःख देख राजा मूर्च्छित होगया यह सुमित्राका दीनवचन सुन शक्तिमुनिके पुत्र परमदयालु पराशरमुनि बोले कि हे पतिव्रते! कुछभय मतकर शीघ्रही तुम्हारी यह विपत्ति दूर होजायगी औ तुम्हारापतिभी जी उठैगा इतना कह पराशरमुनि ने राजा को अपने हाथ से स्पर्शकिया औ शिवजी का ध्यानकर मृत्युञ्जयमन्त्र पढ़ा तब राजा की मूर्च्छा खुलगई औ उठकर मुनिको प्रणाम कर कहने लगा कि महाराज आपके चरणों की कृपा से मेरी मूर्च्छा निवृत्त हुई औ सब पाप भी कटगये पापीपुरुषों को आप का दर्शन नहीं होसकता मुझे शत्रुओं ने राज्यसे निकाल दिया आप मुझ पर कृपादृष्टि करें जिससे मेरे सब दुःख दूर होयँ यह राजा का वचनसुन पराशरमुनि कहने लगे कि हे राजन्! फिर राज्य प्राप्ति के लिये एक उपाय हम कहते हैं सावधान होकर सुनो सेतुबंध के बीच गन्धमादन पर्वत में मङ्गलतीर्थ है उस तीर्थ में सदा रामचन्द्र और सीतासन्निहित रहते हैं वहां स्नान करने से अलक्ष्मी का नाश होताहै इसलिये हे राजन्! तू अभी अपने पुत्र औ रानी समेत वहां जाय भक्तिसे स्नानकर औ तीर्थश्राद्ध आदि सब कर्म्मकर उस तीर्थ के प्रभाव से तुझे फिर राज्य मिलैगा अलक्ष्मी दूर होगी औ शत्रुओं को जीतेगा इसलिये तू शीघ्रही गन्धमादन को चल औ तेरे कल्याण के अर्थ हम भी साथ चलैंगे इतना कह पराशरमुनि सकुटुम्ब राजाको साथले सेतुबन्ध को चले औ वन पर्वतआदि उल्लंघन करते कुछ

दिनों में मङ्गलतीर्थ के समीप जायपहुँचे वहां जाय सङ्कल्पकर विधिपूर्वक पराशरमुनि ने तीर्थमें स्नान किया औ राजा रानी औ उस बालक को भी स्नान कराया राजाने श्राद्धकिया फिर तीनमहीने तक नित्य स्नान करते रहे तीनमहीने के अनन्तर पराशरमुनि ने राजा को रामचन्द्रजी का एकाक्षरमन्त्र उपदेश किया राजा भी मन्त्रपाय मुनिकी बताई विधि के अनुसार मंगलतीर्थ के तटपर बैठ अनुष्ठान करने लगा चालीस दिन में अनुष्ठान पूरा हुआ तब उस तीर्थ से एक बड़ादृढ़ धनुषबाण रखने के दो तूणीर जिनमें बाण कभी निबडै़ नहीं सुवर्ण की मूठ की खड्ग ढाल गदा मुसल बड़ा शब्द करनेहारा शंख सुवर्ण का कवच घोड़े सारथी औ पताका समेत बहुत उत्तम रथ हार केयूर कंकण मुकुटआदि भूषण सुवर्ण कमलों की वैजयंती माला औ हजारों दिव्यवस्त्र राजा के आगे निकलआये उनको देख राजाने पराशरमुनि से कहा तब मुनिने तीर्थ का जल लेकर राजा का अभिषेक किया अभिषेकके अनन्तर राजा दिव्यभूषण वस्त्र पहिन कवच औ मुकुट धार सब शस्त्रों को बांध रथ में बैठा उस समय राजाका तेज ऐसा था जिसभांति ग्रीष्मऋतु में मध्याह्न के सूर्य्य का हो पराशरमुनि ने राजा को सांग औ सरहस्य ब्रह्मास्त्र का उपदेश किया औ आशीर्वाद दिया कि तुम्हारा जय होय राजा भी मुनि की आज्ञापाय अपनी रानी औ पुत्र को अपने रथमें बैठाय मुनि की प्रणाम औ प्रदक्षिणा कर विजय के लिये चला अपने नगर के समीप जाय वह दिव्यशंख बजाया शंख का घोरशब्द सुनतेही राजा गोलभ सेना समेत युद्ध के लिये निकला तीनदिन राजा मनोजव औ गोलभ का युद्ध हुआ चौथे दिन मनोजव ने ब्रह्मास्त्र चलाया जिससे सेनासमेत गोलभराजा भस्म हुआ औ मनोजव नगर में जाय सिंहासनपर बैठा औ धर्मराज्य करनेलगा

उसी दिन से ईर्षा औ अहंकार को त्याग दिया औ धर्म्म में तत्पर हो प्रजा का पालन करनेलगा हज़ार वर्ष राज्य कर अन्त में विरक्त हो पुत्र को राज्य दे आप तप करनेके लिये गन्धमादन पर्व्वत में मङ्गलतीर्थ पर गया वहां जाय हृदय में श्रीसदाशिवका ध्यान करता हुआ तप करनेलगा बहुतकाल तपकर अन्तमें देह त्याग तीर्थ के प्रभाव से राजा शिवलोक को गया औ रानी सुमित्रा भी उसके शरीर के साथ दग्ध हुई औ अपने पति के समीप शिवलोक में पहुँची सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! यह मङ्गलतीर्थ का प्रभाव है मनोजव राजा जिस तीर्थ के प्रभाव से शत्रुओं को जीत अन्त में शिवलोक को गया इसलिये सबको इस तीर्थ में स्नान करना चाहिये हे मुनीश्वरो! यह तीर्थ भुक्ति औ मुक्तिकादेनेहारा है औ पापोंको दग्ध करने के लिये अग्नि है इसलिये आपको भी इस तीर्थ का सेवन करना चाहिये ॥

तेरहवां अध्याय ॥

एकान्त रामनाथ का औ अमृतवापी का माहात्म्य
औ अगस्त्यमुनि के भ्राताकी कथा ॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! मङ्गलतीर्थमें स्नानकर एकांत रामनाथ नामक क्षेत्र को जाय वहां सीतासहित औ हनुमान् आदि वानरों करके सेवित श्रीरामचन्द्र लोकों के कल्याण के लिये सदासन्निहित रहतेहैं उसी क्षेत्रमें अमृतवापिकाहै जिसमें स्नान करनेहारे मनुष्य शिवजीकी अनुग्रह से अजर औ अमर होजाते हैं उस वापी में स्नान करनेवालों को मोक्ष देनेके लिये श्रीसदाशिव वहां सदा निवास करते हैं इतना सुन मुनीश्वरोंने पूछा कि हे सूतजी ! इस वापीकानाम अमृतवापी क्योंकरपड़ा औ इसका क्या प्रभावहै आप वर्णनकरैं हे व्यासशिष्य सूतजी!

आपका वचनरूप अमृतपान करते करते हमको तृप्ति नहीं होती यह मुनियों का वचन सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनि-श्वरो! इस अमृतवापीका प्रभाव औ इसके नामका कारण हम वर्णन करते हैं आप श्रवणकीजिये पूर्वकालमें सिद्ध चारण गन्धर्व आदि देवताओंकरके सेवित सिंह व्याघ्र वराह महिष हाथीआदि जीवोंकरके युक्त तमाल ताल हिंताल साल चंपक अशोकआदि वृक्षोंकरके शोभित हंस चक्रवाक कोकिल दात्यूहआदिक पक्षियों के शब्दोंसे मनोहर पद्म कुमुद नीलकमलआदि सेभरे सरोवरों करके रमणीय हिमालय पर्वत में अपने आश्रम के बीच सत्य-वादी जितेन्द्रिय अगस्त्यमुनिका भाई तप करता था वह वनके फल फूलों करके तीनकाल शिवपूजन करता जो अतिथि आता उसको कंदमूलआदि भोजनसे तृप्तकरता नित्य संध्यावन्दन गा-यत्रीआदि मंत्रोंका जप अग्निहोत्रआदि कर्मकरता प्रभातही स्नानकर वेदपाठ करता मध्याह्न में अतिथि पूजाकर पुराणबाँ-चता नित्य पञ्चमहायज्ञ करता प्रतिवर्ष पितरों का श्राद्ध करता औ निरन्तर शिवजीका ध्यानकरता इसप्रकार उत्तम तप करते करते एक हज़ार वर्ष बीतगये परन्तु शिवजीके दर्शन न हुये तब वह अगस्त्यमुनि का भ्राता पंचाग्निके बीच बायेंपैरकी कनिष्ठा अंगुली के ऊपर खड़ा होकर सूर्य्य में दृष्टि लगाय दोनों भुजा ऊपर को उठाय शिवजी का हृदय में ध्यान करता हुआ उग्रतप करनेलगा इसभांति उसका अतिकठिन तप देख शिवजी प्रसन्न हो प्रत्यक्ष हुये मुनि भी वृष के ऊपरचढ़े श्रीसदाशिवको देख प्रणामकर भक्तिसे स्तुति करनेलगे ॥

मुनिरुवाच ॥ नमस्तेपार्वतीनाथ नीलकण्ठमहेश्वर । शिवरुद्रमहादेव नमस्तेशंभवेविभो १ श्रीकण्ठोमापतेशूलि न्भगनेत्रहराव्यय । गङ्गाधरविरूपाक्ष नमस्तेरुद्रमन्यवे २

अंतकारेकामशत्रो देवदेवजगत्पते । स्वामिन्पशुपतेशर्व नमस्तेशतधन्वने ३ दक्षयज्ञविनाशाय स्तायूनांपतये नमः । निचेरवेनमस्तुभ्यं पुष्टानांपतयेनमः ४ भूयोभूयो नमस्तुभ्यं महादेवकपालय । दुस्तराद्भवसिंधोर्मांतारय स्वंत्रिलोचन ५ इति ॥

यह स्तुति सुन प्रसन्नहो श्रीशिवजी बोले कि हे मुनि ! तेरे तपसे हम बहुत प्रसन्नहुये इसलिये मुक्तिके अर्थ एक बहुतसुगम उपाय हम तुझको उपदेश करते हैं गंधमादनपर्वतमें मंगल-तीर्थ के समीप एकतीर्थ है उसमें स्नानकर तो अवश्यही मुक्ति पावैगा इससे सूधा उपाय मोक्षके लिये और कोई नहीं है उन तीर्थका सम्पूर्ण प्रभाव हमभी वर्णन नहीं करसकते इस बातमें तू कुछ संदेह मतकर औ जाकर उस तीर्थ में स्नानकर तो अव-श्यही मुक्ति पावैगा इतना कह शिवजी अन्तर्द्धान हुये औ मुनि भी शिवजीकी आज्ञा पाय गन्धमादनपर्वत में एकांत रामनाथ नाम क्षेत्रमें पहुँचे औ उसी तीर्थ को ढूंढ़ा औ उस तीर्थमें स्नान करनेलगे तीनवर्ष पर्यन्त नियमपूर्वक मुनेने स्नान किया चौथे वर्ष में समाधि करके प्राणायाम से अपने कपाल को भेदनकर मुनिने प्राण त्यागे औ तीर्थ के प्रभाव से मुक्तिपाई अगस्त्य के भ्राताकी वहां मुक्तिहुई इसी से उस तीर्थ का नाम अमृत-वापी हुआ (अमृत मोक्षको कहते हैं) इसी तीर्थ में जो म-नुष्य तीनवर्ष स्नान करैं वे निस्संदेह मुक्तिपाते हैं इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो ! अमृतवापी के नामका का-रण औ प्रभाव हमने वर्णन किया अब आप क्या श्रवण किया चाहते हैं वह कहैं तब शौनकआदि मुनि बोले कि हे सूतजी ! उस क्षेत्र का नाम एकांत रामनाथ क्यों हुआ यह आप वर्णन करैं हमको श्रवण करने की बहुत इच्छा है तब सूतजी कहने

लगे कि हे मुनीश्वरो ! पूर्व्वकालमें लक्ष्मण सुग्रीव विभीषण हनूमान्आदि के साथ श्रीरामचन्द्र रावण के वधका औ सीता लानेका विचार करते थे औ सब वानर सेतुबांधने में लग रहे थे परन्तु समुद्र के तरंगों का ऐसा घोरशब्द होता था कि एक की दूसरेका वचन नहीं सुनाईदेता था तब रामचन्द्रजी ने क्रोध कर भृकुटी चढ़ाई औ समुद्र को गर्जने से रोका औ एकान्तमें बैठ रावण के वधका विचार अपने मन्त्रियों के साथ किया उसी दिनसे उस क्षेत्रका नाम एकान्त रामनाथ हुआ औ उसीदिनसे उस क्षेत्र के समीप समुद्र के जल में शब्द नहीं होता औ तरंग नहीं उठतीं जो पुरुष एकान्त रामनाथक्षेत्र में आकर अमृतवापी में स्नान करते हैं वे अवश्य मुक्ति पाते हैं अद्वैतज्ञान करके शून्य समाधि औ वैराग्य से रहित यज्ञ अनुष्ठानआदि से वर्जित भी पुरुष अमृतवापी में स्नान करै तो अवश्यही मुक्ति पावै ॥

चौदहवां अध्याय ॥

ब्रह्मकुण्डका माहात्म्य औ ब्रह्मा विष्णु के परस्पर कलह होनेकी कथा ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! अमृतवापी में स्नानकर एकान्त राघव के दर्शनकरै पीछे ब्रह्मकुण्ड में स्नान करनेके लिये जाय गन्धमादनपर्व्वत के बीच ब्रह्महत्याआदि सब पाप औ दारिद्र्य के नाश करनेहारा ब्रह्मकुण्ड तीर्थ है जो मनुष्य ब्रह्मकुण्ड में स्नानकरैं उनको और तीर्थ यज्ञ तप दानआदि से कुछ प्रयोजन नहीं है ब्रह्मकुण्ड में स्नान करनेवाले मनुष्य वैकुण्ठको जाते हैं ब्रह्मकुण्ड से निकली विभूति को जो धारै उसके समीप ब्रह्मा विष्णु और शिवजी सदा निवास करते हैं उस विभूति का जो मस्तक में त्रिपुंड्र धारै मुक्ति उसके हाथ परही धरी है जो उस विभूति से सारे देहमें उद्धूलन करै उसके पुण्यको शिवजी भी

नहीं वर्णन करसकते उस विभूति को जो नहीं धारते वे रौरव नरक में प्रलयपर्यन्त पड़े रहते हैं जो उस भस्म से उद्धूलन अथवा त्रिपुंड्र नहीं करते वे कभी सुखी नहीं होते जो उस विभूतिको निन्दाकरै उसको वर्णसंकर जानना चाहिये जो ब्रह्मकुण्डकी विभूति को और विभूति के तुल्य कहै अथवा उस विभूतिको छोड़ और विभूतिको जो पुरुष धारै उसकी उत्पत्तिमेंभी संकर जानिये जो मनुष्य ब्रह्मकुण्डका भस्म ब्राह्मण को देवै उस को सम्पूर्ण भूमिदान का फल होताहै इस बात में कभी संदेह मत करना हम तीनबार शपथ खाकर कहते हैं औ भुजाउठाकर सत्य कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! ब्रह्मकुण्ड के भस्म को अवश्य धारण करो पूर्व्वकाल में ब्रह्माजीने शिवजी का शाप निवृत्त करने के लिये गन्धमादनपर्व्वत में बड़ीदक्षिणावाले अनेक यज्ञ किये तब शिवजी के शापसे निवृत्त हुये उन यज्ञों का यह भस्म है जो पुरुष इस तीर्थ में स्नानकरैं वे अवश्य शिवलोक में निवास करते हैं इतनी कथा सुन शौनकआदि ऋषियों ने पूछा कि हे सूतजी! चौदहभुवन रचनेवाले ब्रह्माजी को शिवजीने किस अपराध पर शाप दिया औ क्या शाप दिया यह आप कृपाकर वर्णनकरैं तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! एक समय ब्रह्माजी औ विष्णुजी का परस्पर विवाद हुआ ब्रह्माजी कहैं कि हम जगत् के कर्त्ता हैं इसलिये हमहीं सब से बड़े हैं औ विष्णुजी कहैं कि हम सबसे बड़े हैं इसी अवसर में उनका अहंकार हरने के लिये बीच में एक लिङ्ग प्रकट हुआ उस ज्योतिर्मय लिङ्ग को देख ब्रह्माजी औ विष्णुजी चकित हो परस्पर कहने लगे कि यह अनादि अन्त करोड़ों सूर्यों के तुल्य प्रकाशमान लिङ्ग देख पड़ताहै हम दोनों मेंसे जो इसके आदि अन्तका निश्चय करै वही सबसे बड़ा औ लोककर्त्ता गिनाजावे ब्रह्माजी ने कहा कि हे विष्णुजी! हम लिङ्गका

अग्रभाग देखने ऊपर को जाते हैं औ आप इसके अन्तका निश्चय करने के लिये नीचे को जाओ यह निश्चय कर ब्रह्माजी हंस का रूपधर ऊपरको उड़े औ वाराहरूपधार विष्णुजी नीचेको चले कईहजारवर्ष तक विष्णुभगवान् नीचे को गये परन्तु लिङ्गका अन्त न पाया तब लौट आये औ सब देवताओं से कहा कि हमको इस लिङ्गका कहीं अन्त न मिला इतने में ब्रह्माजी भी आय पहुँचे औ सब देवताओं के आगे असत्य बोले कि हम इस लिङ्ग का अग्र देख आये हैं यह ब्रह्माजी का वचन सुन हँसकर शिवजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी! तुमने हमारे सम्मुख झूठ बोला इसलिये जगत् में कोई तुम्हारी पूजा न करेगा औ विष्णुजीसे कहा कि हे विष्णुजी! आपने कपट नहीं किया सत्य कहदिया इसलिये हमारे तुल्य आपका भी सब जगत्में पूजन होगा ब्रह्माजी शिवजीका वचन सुन बहुत दुःखी हो बोले कि हे नाथ! हमसे अपराध बनपड़ा आप क्षमाकरें जगत्प्रभु को अपने सेवकोंका अपराध क्षमा करना चाहिये तब शिवजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी! हमारा वचन मिथ्या तो नहीं होसकता परन्तु तुम गन्धमादनपर्व्वत में जाय यज्ञकरो जिस से हमारे शापका दोष तुमसे निवृत्त होजायगा औ श्रौतस्मार्त कर्मों में तुम्हारी पूजा भी होगी प्रतिमामें तुम्हारा पूजन न होगा इतना कह शिवजी तो अन्तर्द्धान होगये औ ब्रह्माजी गन्धमादन पर्व्वत को गये वहां जाय इन्द्रादि देवताओं के सम्मुख शिवजी की प्रसन्नता के लिये अट्ठासीहजारवर्ष पर्य्यंत ब्रह्माजीने निरन्तर पौंडरीकआदि यज्ञकिये तब शिवजी प्रत्यक्षहुये औ प्रसन्नहो ब्रह्माजी को वरदिया कि हे ब्रह्माजी! तुम्हारा दोष निवृत्तहुआ अब श्रौतस्मार्त कर्मों में तुम्हारा पूजन हुआकरेगा औ तुम्हारा यह यज्ञ करने का स्थान जगत् में ब्रह्मकुण्ड के नाम से प्रसिद्ध होगा जो इस ब्रह्मकुण्ड में एकबार भी स्नान करेगा उसके लिये

मुक्तिका द्वार खुलजायगा जो इस कुण्ड के भस्म को धारण करैगा वह अवश्यही मायारूप कपाट खोलकर मुक्तिके द्वार में प्रवेश करैगा जो इस भस्म को भक्तिसे धारण करैगा वह अपने माता पिताका पुत्र न होगा ब्रह्मकुण्ड के स्नानसे करोड़ों ब्रह्महत्या सुरापान सुवर्ण की चोरी गुरुस्त्री गमनआदि महापातक क्षणमात्र में नष्ट होजायँगे औ महापातक करनेहारों के संसर्ग्ग से जो पातक लगेहोयँ वेभी निवृत्तहोंगे इसभस्म के धारण करने से भूत प्रेत पिशाचआदि समीप नहीं आवेंगे इतना कह शिवजी अन्तर्द्धान हुये उसदिन से ब्रह्मकुण्ड का प्रभाव जान मुनि देवता सिद्ध चारण गन्धर्व्व किन्नरआदि निरन्तर वहां निवास करनेलगे औ ब्रह्माजी भी यज्ञों को समाप्त कर अपना मनोरथ सफलकर सत्यलोक को गये उसदिन से और भी देवता ऋषिआदि वहां यज्ञ करनेलगे सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! यज्ञ करनेकी इच्छा होय तो ब्रह्मकुण्ड परही करनाचाहिये सब देवता ऋषिआदि करके सेवित सब पाप हरनेहारा मोक्षप्रद औ सब मनोरथ सिद्ध करनेहारा ब्रह्मकुण्डहै॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

हनुमत्कुण्डका माहात्म्य औ धर्मसखराजा की कथा॥

सूतजीकहते हैं कि हे मुनीश्वरो! ब्रह्मकुण्डमें स्नानकर मनुष्य हनुमत्कुण्डको जाय रावणको मार जब रामचन्द्र लौटे औ गन्धमादनपर्वतपर पहुंचे तब अपने नामसे हनुमान्जीने उत्तमतीर्थ बनाया उस तीर्थको साक्षात् रुद्र सेवन करते हैं उस तीर्थके तुल्य दूसरा तीर्थ न हुआ न होगा जिसमें स्नान करनेसे शिवलोककी प्राप्ति होती है जिस तीर्थके बनने से सब नरक खालीहोगये उस तीर्थके प्रभावको शिवजीही जानते हैं धर्मसखनाम राजाने भक्तिपूर्वक उस तीर्थ में स्नानकर दीर्घायु औ प्रतापी सौ पुत्र पाये

शौनकआदि ऋषियों ने पूछा कि हे सूतजी! धर्मसखराजा ने हनुमत्कुण्डके प्रभावसे सौ पुत्र किसप्रकार पाये आप उसका चरित्रवर्णनकरें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! संक्षेपसे हम धर्मसखका चरित्र वर्णन करते हैं आप प्रीति से श्रवणकरो केकयवंशमें बड़ा प्रतापी शत्रुओंको जीतनेहारा प्रजाके पालन करने में तत्पर धर्मसखनाम एक बड़ा धर्म्मात्मा राजा हुआ उस की सौ रानीथीं परन्तु पुत्र एकमें भी नहीं उत्पन्न हुआ राजाभी पुत्रके लिये सदा यत्न किया करता अश्वमेधआदि अनेक यज्ञ उसने किये तुला पुरुषआदि महादान दिये औ सदा अभ्याग- तों को उत्तम २ भोजन देता विधिपूर्वक श्राद्ध करता सन्तान देनेवाले मन्त्रोंका जप करता इसभांति पुत्रकेलिये अनेक प्रकार के धर्मदानआदि करते करते राजा वृद्ध होगया तब वृद्धावस्था में बड़ी रानीके गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम सुचन्द्र रक्खा राजाकी सब रानी उस बालकको बड़े प्रेम से पालनेलगीं औ राजा प्रजा राजमाता रानी मन्त्रीआदि उस बालकको देख परमआनन्दको प्राप्त होते एकदिन वह बालक पालनेमें झूलता था उससमय उसके पैरमें बीछूने काटा काटतेही वह राजकुमार चिल्लाया उसके रोनेसे सब रानी रोदन करनेलगीं औ अन्तः- पुरमें कोलाहल मचगया सभा में बैठेहुये राजा ने रोदन का शब्द सुन घबराकर कंचुकी को भेजा कंचुकी ने अन्तःपुरके द्वारपर जाय नादिरों से पूछा कि भीतर सब स्त्री क्यों रोती हैं इसका कारण बताओ इसी लिये मुझे महाराजने यहां भेजा है यह उसका वचन सुन नादिर भीतरगये औ सब वृत्तान्त पूछ कर कंचुकी से आ कहा कंचुकी ने सभा में आय राजा से कहा राजाभी पुरोहित औ मन्त्री समेत अन्तःपुरमें गया औ बीछूका मन्त्रजाननेवालोंसे उस बालककी चिकित्सा कराई बालक अच्छा हुआ राजाने वैद्य औ मंत्रियों को बहुतसा धनदे बिदा किया औ

सभामें आकर सब ऋत्विक् औ पुरोहितों को बुलाकर यह कहा कि एक पुत्र होना बड़े दुःखका कारणहै इससे तो पुत्र न होनाही अच्छा है हे ब्राह्मणो ! मैंने संतान के अर्थ सौ विवाह किये अब वृद्धावस्था में एक पुत्र हुआ अब हम सबके प्राण इसमें रहते हैं जो कदाचित् यह बालक मरजाय तो हमारी सब रानी औ हम भी नाशको प्राप्त होयँ इसलिये हे ब्राह्मणो ! ऐसा कोई उपाय बताओ जिसमें मेरे बहुत पुत्र होयँ सौ रानियों में एक २ पुत्र होजाय ऐसा यत्नकरो तुम जो उपाय कठिन सुगम छोटा बड़ा शास्त्रको देखकर बताओगे वह सब मैं करूंगा यह राजा का वचन सुन सब ब्राह्मणोंने विचारकर कहा कि महाराज एक उपाय है जिससे आपकी सब रानियोंमें पुत्र होयँ। दक्षिणसमुद्र के बीच सेतुके मध्यमें सब पाप हरनेहारा देवता ऋषि गंधर्वसिद्ध चारणआदि करके सेवित गन्धमादन नाम एक पर्व्वत है उस पर्वतमें हनुमत्कुण्ड नाम एक तीर्थ है जिसमें स्नान करने से सब दुःख दारिद्र्य कटजाते हैं नरक का भय नहीं रहता औ स्वर्ग्ग प्राप्ति होती है उस कुंडमें जो स्त्री स्नानकरै उसके अवश्यही पुत्र उत्पन्न होताहै इसलिये आपभी वहां जाय हनुमत्कुण्डके तीरपर पुत्रेष्टिकरैं तब आपके सौ पुत्र अवश्य होंगे। यह ब्राह्मणों का वचन सुन उन सबको साथले अपनी सब रानी औ मन्त्रियों समेत राजा धर्मसख गन्धमादन पर्वतमें गया वहांजाय हनुमत्कुण्डके तीरपर डेरा किया औ नित्य स्नान करनेलगा जब चैत्रमास आया तब यज्ञका आरंभकिया ऋत्विक् औ पुरोहित सब काम यज्ञका करनेलगे जब यज्ञ समाप्त हुआ तब हवनका शेष पुरोहितने सब रानियों को खिलाया राजाने हनुमत्कुण्डमें यज्ञान्त स्नान किया औ ऋत्विजोंको बहुतसे ग्राम और रत्न दक्षिणामें दिये। इस भांति यज्ञकर राजाधर्मसख अपने परिवार समेत राजधानीको आया दश महीनेके अनन्तर सब रानियों में एक २

पुत्र उत्पन्नहुआ राजाने बड़ेहर्ष से स्नानकर जातकर्म किया औ गो भूमि तिल सुवर्णआदि ब्राह्मणों को दिये बड़ीरानीमें दो पुत्र होगये एक पहिलेथा दूसरा सब रानियोंके साथहुआ इस भांति एकसौ एक पुत्र राजाधर्मसखके वृद्धिको प्राप्त होनेलगे जब ये राज्यभार के योग्य हुये तब उनको सब राज्य बांट अपनी रानियों को संगले राजा गन्धमादनपर्व्वत में तप करने गया वहां जाय हनुमत्कुण्ड के तीर पर तप करने लगा बहुतकाल तप औ शिवजी का ध्यान करते २ राजा मृत्युवशहो कैलास को गया औ सबरानी उसके साथ सतीहुईं सुचन्द्रनाम बड़े पुत्रने उन सबके श्राद्धआदि करे इसभांति राजा तो सद्गतिको प्राप्त हुआ औ सुचन्द्रआदि राजपुत्र धर्मसे राज्य करनेलगे हे मुनीश्वरो! हनुमत्कुण्ड का प्रभाव औ राजाधर्मसख का चरित्र हमने वर्णन किया सब मनोरथ सिद्ध होने के लिये हनुमत्कुण्ड में स्नान करना चाहिये जो पुरुष इस अध्याय को भक्तिसे पढ़ै अथवा सुनै वह इसलोक में सब सुख भोग परलोकमें देवताओं के साथ विहार करता है॥

सोलहवां अध्याय॥

अगस्त्यतीर्थ का माहात्म्य औ कक्षीवान् मुनिका अद्भुत इतिहास॥

सूतजी कहते हैं हे मुनीश्वरो! हनुमत्कुण्डमें स्नानकर अगस्त्य तीर्थको जाना चाहिये यह तीर्थ साक्षात् अगस्त्यजीने बनायाहै पूर्वकालमें सुमेरुपर्वत औ विन्ध्यपर्वतका परस्पर विवाद हुआ तब विन्ध्याचल दिन २ बढ़नेलगा इतना बढ़ा कि सब जीवोंका श्वास रुकगया तब व्याकुलहो सब देवता कैलास में गये औ शिवजीके आगे सब बात कही महादेवजी ने भी सप्तऋषियों को बुलाया उनमें वशिष्ठआदि ऋषियों को तो हिमालय के घर पार्वती जी के सम्बन्ध के लिये भेजा औ अगस्त्यजी को आज्ञा

दी कि तुम जाकर विन्ध्याचलका निग्रह करो तब अगस्त्यजी
ने प्रार्थना करी कि महाराज हम आपके विवाहवेष का दर्शन
कियाचाहते हैं तब श्रीमहादेवजीने कहा कि तुम जाकर विन्ध्य
का निग्रह करो हम तुमको वेदारण्यमें विवाहकेही वेषसे दर्शन
देंगे यह आज्ञा पातेही अगस्त्यजी विन्ध्याचलमें गये औ उस
पर्वतको अपने पैरसे दबाया कि वह भूमिके समान होगया फिर
अगस्त्य वहांसे चले औ दक्षिण दिशामें विचरतेहुये गन्धमादन
पर्वतमें पहुँचे वहां अपने नामसे तीर्थ बनाया जिसमें अगस्त्यजी
अपनी भार्य्या लोपामुद्रा सहित आजतकभी निवास करते हैं
उस तीर्थमें स्नान करै औ उसका जलपीवै तो फिर जन्म न होय
जगत् में उस तीर्थके समान कोई तीर्थ नहीं वह तीर्थ भुक्ति औ
मुक्तिको देनेहारा है दीर्घतपामुनि के पुत्र कक्षीवान् ने उस
तीर्थके प्रभाव से स्वनय की परमसुन्दरी कन्यासे विवाह किया
हे मुनीश्वरो ! सब पापों के हरनेहारी कक्षीवान् की कथा हम
कहते हैं आप प्रीति से सुनो। दीर्घतपा नाम बड़ातपस्वी एक
मुनिथा उसके कक्षीवान् नाम पुत्रहुआ दीर्घतपा ने अपने पुत्र
का यज्ञोपवीत किया यज्ञोपवीत के अनन्तर कक्षीवान् अपने गुरु
कुलमें जाय उत्तंकमुनि से वेदपढ़नेलगा चारोंवेद वेदकेअंग छः
शास्त्र इतिहास पुराण उपनिषत आदि सब साठवर्षमें पढ़े औ गुरु
को दक्षिणा देकर अपने घरको कक्षीवान् चला तब हाथजोड़
गुरुसे प्रार्थनाकरी कि आप मुझे घरजाने की आज्ञा दीजिये औ
मुझपर कृपादृष्टि रखिये यह कक्षीवान् का वचन सुन उत्तंकमुनि
बोले कि हे पुत्र ! सुखसे घरको जा औ विवाहकर तेरे विवाहके
लिये एक उपाय मैं कहताहूं वह तू सुन दक्षिणसमुद्र के तीरपर
अगस्त्यमुनिका बनाया सब मनोरथ सिद्ध करनेहारा एकतीर्थ है
वहां जाय नियमसे तीनवर्ष निवासकर चौथावर्ष लगतेही उस
तीर्थ से श्वेतवर्णका औ चारदंतों करके युक्त एक बहुत बड़ा

हाथी निकलेगा उस हाथीपर तू चढ़कर राजास्वनयकी पुरीको जाना राजास्वनयभी तुझे इन्द्रकी भांति चतुर्दन्त हाथीपर चढ़े देख अपनी कन्या के लिये निश्चिन्त होजायगा उस राजा की कन्या ने यह प्रतिज्ञा कररक्खी है कि श्वेतवर्णके चतुर्दन्तहाथी पर चढ़कर जो यहां आवेगा वही मेरा भर्ता होगा यह अपनी कन्याकी प्रतिज्ञा सुन राजाको बड़ी चिन्ताहुई इसी अवसर में नारदमुनि वहां आये राजाने उनका पूजन किया औ सिंहासन पर बैठाय यह प्रार्थना करी महाराज मेरी कन्याने यह प्रतिज्ञा करी है कि श्वेतवर्ण चतुर्दन्त हाथीपर जो चढ़कर आवेगा वही मेरापति होगा यह कन्याकी प्रतिज्ञा सुन मुझे बड़ीचिन्ताहुई कि ऐसा हाथी इन्द्र विना दूसरे के पास नहीं है औ इस कन्याने मूर्ख-पने से प्रतिज्ञा करली जबतक इस कन्या का विवाह न होगा मुझे चैन नहीं यह राजाका वचन सुन नारदजी ने कहा कि हे राजन्! चिंतामतकर थोड़ेही काल में कक्षीवान्नाम ब्राह्मण ऐसे हाथीपर चढ़कर आवेगा वही तुम्हारा जामाताहोगा इत-ना कह नारदमुनि देवलोक को गये उस दिन से राजास्वनय दिन रात अपनी कन्या के लिये वरकी राह देखता है इसलिये हे कक्षीवान्! तू अगस्त्यतीर्थ को जा वहां तेरा कल्याण होगा यह उत्तंकमुनि की आज्ञा पाय कक्षीवान् गंधमादनपर्वत को चला कुछ दिन में अगस्त्यतीर्थ पर पहुंचा एक दिन तीर्थोप-वास किया दूसरे दिनसे नियमपूर्वक स्नान करनेलगा रात्रिको भी तीर्थ के तटपरही सोता इस प्रकार एकदिन न्यून तीनवर्ष पूरेहुये उस दिन भी कक्षीवान् सायं संध्याकर उसीतीर्थ के तट पर सोया जब एक प्रहररात्रि शेषरही तब अकस्मात् घोरशब्द हुआ औ बड़ा कोलाहल मचा उस शब्द को सुन कक्षीवान् की निद्रा खुलगई औ देखा कि मधुराका राजास्वनय अपनी सेना लिये मृगया खेलने के लिये वहां आयाहै अनेक सिंह

व्याघ्र सूकर मृग हाथी आदि जीवोंको मारताहुआ राजास्वनय अगस्त्यतीर्थके तटपर आपहुंचा औ वहां डेरा किया इतनेमें प्रभात हुआ कक्षीवान् ने शौच आदि कर तीर्थ में स्नानकिया औ संध्या वंदनकर मंत्रका जप करनेलगा इसी अवसर में कैलासपर्वत के तुल्य ऊंचा औ श्वेतवर्ण चतुर्दन्त एक हाथी निकला औ कक्षीवान् के समीपआया कक्षीवान् ने भी देखकर पहिचान लिया कि मेरेगुरु ने यही हाथी बताया था औ स्नान कर तीर्थ को प्रणामकर कक्षीवान् उस हाथीपर चढ़ बैठा औ राजास्वनय के डेरेमें पहुंचा राजाने भी हाथी से पहिचाना कि यही कक्षीवान् है राजा उठकर कक्षीवान् के समीप आया औ पूँछा कि हे ब्राह्मण ! तू किसका पुत्र है तेरानाम क्याहै औ इस हाथीपर चढ़ कहां जाताहै यह राजा का वचन सुन कक्षीवान् बोला कि मैं दीर्घतपा का पुत्र कक्षीवान् हूं औ इस चतुर्दन्त हाथीपर चढ़ स्वनयराजा की कन्या विवाहने जाता हूं यह कक्षीवान् का वचन सुन राजा अति मुदितहो कहनेलगा कि हे कक्षीवान् ! मैंहीं राजास्वनय हूं जिसकी कन्या से तू विवाह किया चाहता है औ तेरे दर्शन से मैं कृतार्थ हूं हे बालब्रह्मचारी ! तुझे स्वागत हो तू मेरी कन्या को ग्रहण कर औ उसके सहित गृहस्थधर्म का सेवन कर यह राजाका वचन सुन कक्षीवान् बोला कि हे राजन् ! मेरा पिता दीर्घतपामुनि वेदारण्यमें तप करताहै उसके समीप एक ब्राह्मण आप भेजदेवैं जो यह वृत्तान्त मेरे पितासे कहआवे राजाने अपने पुरोहित सुदर्शनको दीर्घतपाके समीप जानेकी आज्ञादी सुदर्शनभी आज्ञा पातेही बहुत से हाथी घोड़े औ सेना साथले राजाकी भांति चला औ कुछ दिनमें वेदारण्यके बीच पहुंचा वहां देखा कि पर्णशालाके भीतर समाधि लगाये दीर्घतपामुनि बैठे हैं उनको प्रणाम किया मुनिने नेत्र खोले तब राजपुरोहितने पूछा कि हे मुनीश्वर ! आप प्रसन्न

हैं औ आपका तप निर्विघ्न होताहै यह कुशलप्रश्न सुन मुनिने कहा कि हे सुदर्शन! सबप्रकार ईश्वरकी अनुग्रहसे कुशलहै तुम तो प्रसन्नहो आपतो राजास्वनयके पुरोहित सुदर्शन हो राजा को छोड़ बहुतसी सेना साथले इस वनमें किस निमित्त आये यह मुनिका वचन सुन नम्रहो सुदर्शनने प्रार्थना करी कि आप की कृपादृष्टिसे मैं बहुत प्रसन्नहूं औ राजास्वनयने आपको साष्टांगदण्डवत् प्रणामपूर्वक यह प्रार्थना करी है कि आपका पुत्र कक्षीवान् गन्धमादनपर्वत में अगस्त्यतीर्थ पर रहताहै वह तप धर्म्म कुल औ रूपकरके उत्तम है औ वेद शास्त्र भलीभांति जानता है उसको मैं अपनी कन्या मनोरमा दियाचाहता हूं मृगया खेलने के लिये मैं गन्धमादनपर्वत में आया औ अब आपके पुत्रके समीप हूं आपकापुत्र यह कहता है कि पिताकी आज्ञा विना मैं विवाह नहीं करता इसलिये सुदर्शन को आपके पास भेजताहूं आप कृपाकर अपने पुत्र को विवाह करने की आज्ञादीजिये इतना कह सुदर्शन बोला कि महाराज यहराजा का संदेश है सो आपसे कहा अब आप जो आज्ञादेवें सो कीजाय सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! इतना कह सुदर्शन चुप होगया तब दीर्घतपामुनि बोले कि हे सुदर्शन! राजाकी इच्छा हमको अङ्गीकार है हमभी गन्धमादनपर्वत को चलेंगे इतना कह वेदारण्य के स्वामी को प्रणाम कर दीर्घतपामुनि भी सुदर्शन के साथचले औ छः दिनमें अगस्त्यतीर्थ पर आ पहुँचे कक्षीवान् ने अपने पिताके चरणों पर प्रणाम किया पिताने भी उसको अपनी गोदीमें बैठाय स्नेह से आलिङ्गन किया औ उस के मस्तक को सूंघा औ पूछा कि हे पुत्र! तैंने सब वेद औ शास्त्र किसभांति पढ़े तब कक्षीवान्ने सब वृत्तांत अपने पितासेकहा ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

राजास्वनयकी कन्यासे कक्षीवान् के विवाहका वर्णन ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! कक्षीवान् ने अपने पिता से यह वृत्तांत कहा कि मैं सब शास्त्र और वेदपढ़चुका तब मेरे गुरु उत्तंक ने मुझे यहां भेजा मैं भी यहां आय राजास्वनयकी कन्या से विवाह करने के अर्थ गुरुकी आज्ञानुसार इस अगस्त्यतीर्थ का सेवन करनेलगा तीनवर्षके अनन्तर राजास्वनय यहांही आगया औ उसने मुझसे यह कहा कि हे ब्राह्मण! मैं अपनी कन्या तुझे देताहूं उसीने आपके बुलानेके लिये अपने पुरोहित सुदर्शनको भेजा इतना कह कक्षीवान् चुपरहा सुदर्शन भी राजाके पासगया औ कहा कि दीर्घतपामुनि आय पहुंचे हैं राजा भी मुनिका आगमन सुनतेही अपने तंबू के बाहर निकलआया औ अगस्त्यतीर्थ पर जाकर दीर्घतपामुनि के चरणों पर प्रणामकिया दीर्घतपामुनि ने भी उठकर राजाको आशीर्वाद दिया इसी अवसर में एकलाख शिष्य साथलिये उत्तंक मुनि भी अगस्त्यतीर्थ में स्नान करने के लिये आये उत्तंकको देख कक्षीवान् उठा औ उनके चरणों पर प्रणाम किया उत्तंक ने अपने शिष्य कक्षीवान् को आशीर्वाद दिया दीर्घतपा औ उत्तंकभी परस्पर मिले और आसनपर बैठ प्रीतिसे भांति २ की कथा करनेलगे राजा ने भी उत्तंकमुनि को प्रणाम किया औ दीर्घतपा मुनिसे राजास्वनय ने प्रार्थना करी कि महाराज विवाहका निश्चय कीजिये तब मुनिने कहा कि कलही बहुत उत्तम मुहूर्त है इसलिये इस उत्तम क्षेत्रमें कलही विवाह होनाचाहिये तुम कन्याको औ अपनी रानियों को यहांही बुला लो यह मुनि का वचनसुन उसीसमय राजाने नादिरों को सब अंतःपुर लाने की आज्ञादी वे भी आज्ञा पातेही उत्तम घोड़ोंपरचढ़ मधुरापुरी

में पहुँचे औ सब अंतःपुर को लेकर शीघ्रही गन्धमादनपर्वत में आय पहुँचे दूसरे दिन दीर्घतपामुनिने पुत्रके गोदान आदि संस्कार विधिपूर्वक किये फिर अपने पिता औ गुरुसमेत चतुर्दन्तहाथी पर कक्षीवान् चढ़ा औ विवाह के लिये तोरण बन्दन माला आदिसे भूषित राजाके द्वारपर गया औ हजारों ब्राह्मण स्वस्तिवाचन पढ़तेहुये इसके साथगये कक्षीवान् को राजकन्याने देखा औ बहुत प्रसन्नहुई कि मेरी प्रतिज्ञा सत्यहुई कक्षीवान् जब राजद्वार पर पहुँचा तब राजा अपने मंत्री औ पुरोहितको साथले सम्मुख आया भूषण वस्त्रोंसे अलंकृत उत्तम २ कन्याओंने सोने चांदीके पात्रोंसे कक्षीवान् का नीराजन अर्थात् आरती की फिर सबके सब राजमंदिर के भीतर गये राजास्वनयने उत्तंक औ दीर्घतपा का पाद्य अर्घ्य आदि से पूजनकिया सब एक बहुत उत्तम मण्डप में बैठे राजकन्या को सब भूषण वस्त्रोंसे अलंकृतकर वहां लाये राजकन्या ने आकर सब सभाके बीच अपने हाथसे चम्पेके पुष्पोंकी माला कक्षीवान् के गलेमें पहिनाई फिर उत्तंकमुनि ने वेदीपर अग्नि स्थापन कर उसके सब संस्कार करे औ वधूवर से लाजा होम कराया औ दोनोंका पाणिग्रहण कराया सब वैदिककर्म्म उत्तंकमुनि ने कराये सब ब्राह्मणोंने वधू औ वरको आशीर्वाद दिये राजा स्वनयने दीर्घतपा उत्तंक वरके पक्षके औ अपने पक्षके सब मनुष्योंको भोजन कराया औ तीनलाख ब्राह्मणों को षट्रस भोजन कराय दक्षिणा ताम्बूल आदि दे प्रसन्नकिया इसकारण विवाह होजानेके अनंतर उत्तंकमुनि अपने आश्रम को गये औ सब ब्राह्मण अपने २ देशोंको गये वह चतुर्दन्तहाथी अगस्त्यकुण्ड में प्रवेश करगया दीर्घतपामुनि ने अपने पुत्र औ स्नुषासमेत अगस्त्यतीर्थ में स्नान किया औ तीर्थ की बहुत प्रशंसा की फिर दीर्घतपामुनि ने अपने आश्रम में जाने के लिये राजा से पूछा राजाने अपनी

कन्या को पांचसौ ग्राम एकलाख मोहर एकहजार दासी दश हजार उत्तम २ पोशाक सौ पेटी भूषणों की एकहजार रत्नों के हार औ बहुत से हाथी घोड़े रथआदि दे बिदा किया दीर्घतपा मुनि राजासे बिदाहो सब सामग्री समेत अपने पुत्र औ स्नुषा को साथले वेदारण्य को चले कुछ दिन में वहां पहुँचे औ सुख पूर्वक सब निवास करनेलगे राजा भी अगस्त्यतीर्थ में स्नानकर अपनी सेनासाथले अपनी राजधानीको गया इतनी कथासुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो ! अगस्त्यतीर्थ के प्रभाव से कक्षीवान् का ऐसा उत्तम विवाह हुआ जो और का होना दुर्लभ है हे मुनीश्वरो ! यह इतिहास वेद सिद्धहै औ धन यश आयुष् कीर्त्ति सौभाग्य आदि देनहारा है इसलिये सबको पढ़ना चाहिये इस इतिहास को जो पुरुष भक्ति से पढ़ैं अथवा श्रवण करैं उनको कभी दारिद्र्य नहीं होता औ बहुत काल संसार के सुख भोग कर उत्तमगति पातेहैं ॥

अठारहवां अध्याय ॥

रामतीर्थ का माहात्म्य सुतीक्ष्णमुनि की कथा औ राजायुधिष्ठिर का इतिहास ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! अगस्त्यकुंड में स्नानकर सब पापोंके निवृत्त होनेके लिये रामकुंडको जाय रघुनाथ सरोवरके तीरपर अल्पदक्षिणाका यज्ञभी करै तो वह भी संपूर्ण फल देताहै जप होम वेदपाठ आदि वहां करै तो बहुत फल होताहै एक मुट्ठी अन्न भी वहां ब्राह्मण को दे तो अनन्तफल होता है हे मुनीश्वरो ! रामकुंडका एक इतिहास हम वर्णन करतेहैं जिसके श्रवण से महापातक भी निवृत्त होजायँ अगस्त्यमुनि के शिष्य रामचन्द्रजी के परमभक्त सुतीक्ष्णमुनि ने उस सरोवर के तीर बहुतकाल तपक्रिया नित्य उस सरोवरमें स्नानकर रामषडक्षर महामंत्र का पांच सहस्र जप करते औ भिक्षा के अन्नका भोजन

करत इसभांति तपकरते २ सुतीक्ष्णमुनिको बहुत काल बीता एक दिन सीताराम का हृदयमें ध्यानकर भक्तिसे सुतीक्ष्णमुनि स्तुति करने लगे॥

सुतीक्ष्णउवाच। नमस्तेजानकीनाथ नमस्तेहनुमत्प्रिय। नमस्तेकौशिकमुनेर्यागरक्षणदीक्षित १ नमस्तेकौशलेयायविश्वामित्रप्रियायच। नमस्तेहरकोदण्डभंजकामरसेवित २ मारीचान्तकराजेन्द्रताटकाप्राणनाशन। कबन्धारेहरेतुभ्यंनमोदशरथात्मज ३ जामदग्न्यजितेतुभ्यं खरविध्वंसिनेनमः। नमःसुग्रीवनाथायनमोबालिहरायते ४ विभीषणभयक्लेशहारिणेमलहारिणे। अहल्यादुःखसंहर्त्रेनमस्तेभरताग्रज ५ अम्भोधिगर्वसंहर्त्रेतस्मैसेतुकृतेनमः। तारकब्रह्मणेतुभ्यंलक्ष्मणाग्रजतेनमः ६ रक्षःसंहारिणेतुभ्यंनमोरावणमर्दिने। कोदण्डधारिणेतुभ्यंसर्वरक्षाविधायिने ७॥

यह स्तुति सुतीक्ष्णमुनि नित्य पढ़ते औ राम सरोवर में स्नानकर षडक्षरमन्त्र का जपकरते इस प्रकार तप करते २ रामचन्द्रजी में दृढ़भक्ति होगई औ दिव्यज्ञान भी उत्पन्न हुआ विना पढ़े सब वेदशास्त्र आगये विना सुने पदार्थ को जानलेना दूसरे शरीर में प्रवेश करना आकाश में गमन करना सब कलाओं को जानना सब लोकों में चलेजाना देवताओं के साथ संभाषण करना अतीन्द्रिय पदार्थों को भी जानना पिपीलिका आदि सब जीवों की भाषा समझना कैलास वैकुण्ठ ब्रह्मलोक आदि में जाना औ चौदह भुवनों में अपनी इच्छा से विचरना इत्यादि अनेक सिद्धि सुतीक्ष्णमुनि को प्राप्तिहुई जो योगियों को भी दुर्लभ हैं हे मुनीश्वरो! यह सब रामतीर्थ का प्रभाव है

उस तीर्थ में स्नान करने से सब पापों का नाश होता है औ सब सिद्धि औ भोग मोक्ष मिलते हैं अपमृत्यु औ नरक का भय निवृत्त होताहै रामचन्द्रमें दृढ़भक्ति होती है इसतीर्थके तटपर एक शिवलिङ्ग है रामतीर्थ में स्नानकर उस लिङ्ग का दर्शन करै तो मोक्ष भी दुर्लभनहीं औ पदार्थों की तो क्या कथाहै राजा युधिष्ठिर इस तीर्थ में स्नानकर शिवलिङ्ग के दर्शनकर असत्य भाषण के महादोष से तत्क्षण छुटगया शौनक आदि ऋषियों ने पूछा कि हे सूतजी ! युधिष्ठिरने धर्मपुत्र होकर क्यों असत्यकहा औ फिर उस दोष से क्योंकर छुटा यह आप वर्णन करैं तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो ! जिस कारण युधिष्ठिर ने असत्य कहा औ रामतीर्थ के प्रभाव से जिसभांति वह पाप निवृत्तहुआ हम वर्णन करतेहैं युधिष्ठिर आदि पांच पुत्र पांडु के औ दुर्योधन आदि सौपुत्र धृतराष्ट्र के थे इनका राज्यके लिये परस्पर बड़ा वैर बढ़ा तब अठारह अक्षौहिणी सेनाले कुरुक्षेत्र में आय युद्ध करनेलगे दशदिन भीष्मपितामहने युद्धकिया औ पांच दिन धृष्टद्युम्न का औ द्रोणाचार्य्य का घोरसंग्राम हुआ द्रोणाचार्य ने अनेक प्रकार के अस्त्र औ शस्त्रों से पांडवों की सेना को पीड़ादी धृष्टद्युम्न ने भी अपने बाणों से द्रोण की सेना को भेदन किया तब द्रोणाचार्य ने ऐसी बाणों की वर्षा की कि पाण्डवों की सेना भयभीतहो चारोंओर भगी तब क्रोधकर द्रोणाचार्यसे अर्जुन युद्धकरनेलगा उनदोनों गुरुशिष्यों का युद्ध देखने के लिये देवता विमानों में बैठ २ आये जिनसे आकाश भरगया ऐसा युद्ध हुआ कि जिसकी कोई उपमा नहीं देसक्ते द्रोणाचार्य ने अर्जुन के पराक्रम की बहुत प्रशंसाकी औ अपने प्रियशिष्य अर्जुनकोछोड़ पांचालों से द्रोणाचार्य युद्ध करनेलगे द्रोणाचार्यने क्षणमात्र में अस्सीहजार चतुरंगिणी सेना पांचालों की मारदी तब क्रोधकर धृष्टद्युम्न युद्धकरनेलगा परन्तु द्रोणाचार्यके बाणों

के सम्मुख न ठहरसका औ युद्ध छोड़भगा उसको भीमसेन ने आश्वासनकर अपने रथमें बैठाया औ द्रोणाचार्य से कहा जो तुम सरीखे दुष्ट ब्राह्मण ब्रह्मकर्म छोड़ अस्त्रविद्या सीख युद्ध न करते तो इतने क्षत्रियों का क्यों नाशहोता ब्राह्मणों का परम धर्म अहिंसाहै हिंसाकरके अपने कुटुम्बका पालन व्याध करते हैं तू एक पुत्र के लिये इतने राजाओं को युद्ध में मारता है परन्तु वह तेरा पुत्र युद्धमें मारागया तौ भी तुझे लज्जा औ शोक नहीं होता यह भीमसेनका वचनसुन द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिरसे पूंछा तब युधिष्ठिर ने भी यही कहा कि आपका पुत्र मारागया युधिष्ठिर का वचन सत्यमान द्रोणाचार्य ने शस्त्र त्यागदिये औ योग की रीति से प्राण त्याग करने के लिये समाधि करनेलगे यह अवसर पाय धृष्टद्युम्न खड्ग लेकर द्रोणाचार्य का शिर काटने दौड़ा उसको सब पाण्डव इसकर्म से रोकतेथे इतनेमें द्रोणाचार्य के मस्तक से एक ज्योति निकलकर ऊपर को गई यह चमत्कार कृपाचार्य श्रीकृष्ण युधिष्ठिर अर्ज्जुनआदि सबने देखा इसप्रकार जब द्रोणाचार्य ने प्राण त्यागदिये पीछे मृत शरीरका शिर धृष्टद्युम्नने काटलिया इसप्रकार द्रोणाचार्यके मरनेपर उनकी सब सेना भयसे भागी औ धृष्टद्युम्न पाण्डवआदि बहुत प्रसन्नहुये तब द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामाने दुर्योधनसे पूंछा कि हमारी सेना क्यों भगीजाती है द्रोणाचार्यका मरण दुर्योधन तो अपने मुखसे नहीं कहसका परन्तु कृपाचार्यको संकेतकिया तब कृपाचार्य बोले कि हे अश्वत्थामा! तुम्हारा पिता युद्धमें ब्रह्मास्त्र करके पाण्डवोंकी सेनाको दग्ध करनेलगा तब श्रीकृष्ण चन्द्र ने पाण्डवों से कहा कि द्रोणाचार्य के जीतनेका एकही उपाय है जो कोई प्रामाणिक मनुष्य यह कहदेवै कि तुम्हारा पुत्र अश्वत्थामा युद्धमें मारागया तो द्रोणाचार्य शस्त्र त्यागकर युद्ध से निवृत्त होय नहीं तो यह सब सेनाका संहार करदेगा इसलिये यह वचन धर्मपुत्र युधिष्ठिर कहैं

यह उपाय द्रोणाचार्य के जीतने का है धर्म से किसी भांति द्रोण को नहीं जीतसक्के औ शत्रुको अधर्म से भी जीतना चाहिये यह श्रीकृष्णचन्द्रका वचनसुन पहिले भीमसेन ने कहा कि हे द्रोण! तेरा पुत्र मारागया भीम के वचन पर द्रोणाचार्य्य को निश्चय न हुआ तब युधिष्ठिर से पूंछा कि हे धर्मपुत्र! तू सत्यकह कि अश्वत्थामा मारागया कि जीताहै यह गुरुका वचन सुन युधिष्ठिर का चित्त डोलायमान हुआ कि मैं क्याकहूं इसी अवसर में भीमसेनने अश्वत्थामानाम एकहाथीको युधिष्ठिर के सम्मुख माराथा उसीके उद्देश से युधिष्ठिर ने कहा कि हां अश्वत्थामा को भीमने मारदिया यह युधिष्ठिरका वचन सुन शस्त्र छोंड़ तेरा पिता युद्ध से निवृत्तहुआ पीछे युधिष्ठिरने यहभी कहदिया कि अश्वत्थामा एक हाथीथा परन्तु तुम्हारे पिताकी यह प्रतिज्ञाथी कि शस्त्रको त्यागकर फिर ग्रहण न करैंगे इसलिये फिर शस्त्र न धारा धृष्टद्युम्नको अपनी मृत्युजान प्राण त्यागने के लिये रथमेंही तुम्हारे पिता समाधि करनेलगे तब मस्तकको भेदनकर ज्योतिरूप उनके प्राण निकलकर ऊपरको चलेगये पीछेसे जाकर धृष्टद्युम्न ने तुम्हारे पिताके केशपकड़ खड्गसे शिरकाटलिया पाण्डवआदि तो उसको इस दुष्कर्म से रोकतेथे परन्तु उसने एककी न मानी सूत जी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! कृपाचार्यसे अपने पिताकी मृत्युका समाचार सुन अश्वत्थामा रोदन करनेलगा बहुत देर विलाप कर क्रोधसे जलताहुआ यह वाक्य बोला कि जिसने झूठबोल मेरे पितासे शस्त्र त्यागकराया उसको औ जिसने मेरे पिताका शिर काटा उसको औ सब पाण्डवोंको शीघ्रही मारूंगा श्रीकृष्ण आदि सब मेरा पराक्रमदेखें हे मुनीश्वरो! यह अतिघोर प्रतिज्ञा उससमय अश्वत्थामाने की इतने में सायंकाल हुआ तब दोनों ओरके राजा युद्ध बन्दकर अपने२ डेरेको गये इसप्रकार अठारह दिन महाभारतका युद्धहुआ उसमें भीष्म द्रोण कर्ण शल्य दुर्यो-

धनआदि बड़े २ वीर मारेगये अन्त में राजा युधिष्ठिरने सबका क्रियाकर्मकिया फिर धौम्यआदि मुनियोंसहित पाण्डव हस्तिनापुरमें आये औ राजाधृतराष्ट्रको प्रणामकिया औ धृतराष्ट्रकीआज्ञा पाय अपने मंदिरोंमें प्रवेशकिया कुछदिनके अनंतर नगरकेलोग औ धौम्यआदि मुनीश्वरोंने युधिष्ठिरका राज्याभिषेक करना चाहा तब आकाशवाणी हुई कि हे धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर ! तू राज्याभिषेक मतकराव तू राज्य के योग्य नहीं है तैंने छलसे अपने गुरुद्रोणाचार्यको मारा इसलिये तुझे बड़ापाप लगाहै जबतक प्रायश्चित्त न करैगा राज्यके योग्य न होगा अब तू प्रायश्चित्तकर यह आकाशवाणी सुन युधिष्ठिर बहुत व्याकुलहुआ औ कहनेलगा कि देखो मैंने राज्यलोभ से कैसा घोरपाप किया मैं बड़ादुष्ट क्रूर औ साहसीहूं अब मैं कौन दान यज्ञ प्रायश्चित्तआदि कर्म करूं जिससे यह पातक निवृत्तहोय इसप्रकार राजायुधिष्ठिर चिन्ता कररहाथा इतने में श्रीवेदव्यासजी वहां आये राजा युधिष्ठिरने उठकर उनको प्रणामकिया औ आसन पर बैठाय पाद्य अर्घ्य आदिसे उनका पूजन कर अपने दुःखका सब वृत्तान्त उनको सुनाया जो आकाशवाणी ने कहा था व्यासजी धर्म्मराज का वाक्य सुन बहुतकाल तक ध्यानकर कहनेलगे कि हे युधिष्ठिर ! शोक मतकर इस पापकी शान्तिके लिये हम एक उपाय कहते हैं वह करो दक्षिणसमुद्र में गन्धमादनपर्वत के बीच रामसरोवर नाम एक अतिउत्तम तीर्थ है जिसके दर्शनमात्र से सब पातक निवृत्त होजाते हैं जिसभांति सूर्य्यकेआगे अन्धकार-रामतीर्थका दर्शन करतेही ब्रह्महत्या निवृत्त होजाती है इसलिये हे धर्म्मपुत्र ! जाकर उस तीर्थ में स्नानकरो तब पाप निवृत्तहोगा औ राज्यकी योग्यता होगी उस तीर्थ के तटपर गो भूमि तिल सुवर्ण चांदी वस्त्र भोजनआदि का दान करो तब अवश्य सब पापों से छूटोगे सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! व्यासजी का

यह वचन सुन अपने पुरोहित धौम्यमुनिको औ भीमसेन आदि अपने भाइयों को साथले राज्य व्यवहार सहदेव को सौंप राजा युधिष्ठिर पैदलही रामतीर्थ को चले कुछ दिनमें वहां जाय पहुंचे वहां तीर्थ में विधिपूर्वक स्नान किया औ तीर्थश्राद्धकर व्यास जीने जो दान बताये थे सब किये इसीप्रकार एक महीने तक निराहार रहकर नित्य तीर्थ में स्नान किया और धन का लोभ छोंड़ राजायुधिष्ठिरने बड़े बड़े दान रामतीर्थ के तटपर किये एक मासके अनंतर आकाशवाणीहुई कि हे राजायुधिष्ठिर! तुम्हारे सब पाप नष्टहुये छलसे असत्य बोलकर आचार्य के मारनेसे जो पापहुआ था वह भी निवृत्त हुआ अब अपने नगर को जाकर राज्याभिषेक कराय औ धर्म से प्रजाका पालन कर इतना कह आकाशवाणी बन्दहुई राजायुधिष्ठिरभी प्रसन्नहो आकाशवाणी को प्रणाम कर अपने भाइयों समेत हस्तिनापुर को चले कुछ दिनों में हस्तिनापुर पहुंचे वहां सब नगरके लोग औ मुनीश्वरों ने राजायुधिष्ठिर का अभिषेक किया औ राजा युधिष्ठिर धर्मसे राज्य करने लगे हे मुनीश्वरो! इसभांति रामतीर्थ के प्रभाव से राजायुधिष्ठिर निष्पाप औ राज्यके योग्य हुये हे मुनीश्वरो! सब पापका हरने हारा रामतीर्थका यह थोड़ासा प्रभाव हमने वर्णन किया जो पुरुष इस अध्यायको पढ़ै अथवा सुनै वह निष्पाप हो कैलासको जाय औ जन्म मरणके भयसे छूटै ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

लक्ष्मणतीर्थ का माहात्म्य औ बलदेवजीकी कथा ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! तारकब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी के तीर्थ में स्नानकर लक्ष्मणतीर्थको जाय लक्ष्मणतीर्थ में स्नान करने से मनुष्य निष्पाप हो मुक्ति पाता है लक्ष्मणतीर्थ में स्नान करनेसे दरिद्र निवृत्त होता है औ आयुष्मान् गुणवान् विद्वान्

औ धार्मिक पुत्र उत्पन्न होता है जो पुरुष उस तीर्थ के तटपर बैठ मन्त्रजपै वह विनापढ़े सब वेदऔ शास्त्रका जाननेहारा होजाय उस तीर्थ के तटपर लक्ष्मणने शिवलिङ्ग स्थापन कियाहै तीर्थ में स्नानकर लिङ्गका दर्शन करै तो रोग दरिद्र औ संसार के क्लेशों से मनुष्य छूटै श्रीकृष्णचन्द्र के बड़ेभ्राता बलदेवजी लक्ष्मण तीर्थमें स्नानकर औ लक्ष्मणेश्वरका सेवनकर ब्रह्महत्या से छूटे यह सुन मुनीश्वरों ने पूंछा कि हे सूतजी! बलदेवजी ने ब्रह्महत्या क्योंकर की औ फिर उससे किस प्रकार छूटे यह आप वर्णन करैं तब सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो! पूर्वकाल में कौरव पाण्डवोंका युद्ध होनेलगा उस समय शेषके अवतार बलदेवजीने विचार किया जो हम कौरवोंके पक्षमें रहैं तो पाण्डव कोप करैंगे औ जो पाण्डवों की ओर रहैं तो दुर्योधन बुरा मानेगा इसलिये यहां रहना उचित नहीं यह मनमें निश्चयकर तीर्थयात्रा के उद्देश से बलदेवजी चले पहिले प्रभासतीर्थ में जाय विधि से स्नानकर देवता ऋषि पितरोंका तर्पणकर औ ब्राह्मणोंको दानदे पश्चिमकी ओर सरस्वती नदी के तीर २ चले मार्ग में पृथूदक बिन्दुसर मुक्तिदतीर्थ ब्रह्मतीर्थआदि तीर्थों में स्नानकरते गंगा यमुना सिन्धु शतद्रूआदि नदियों में भी स्नान दानआदि कर्म करते बलदेवजी कुछ कालमें नैमिषारण्य तीर्थपर पहुंचे उनको आये देख नैमिषारण्य के सब तपस्वी आसनों से उठे औ बड़े आदर से बलदेवजी को आसन पर बैठाय कन्दमूल आदि से उनका सब ऋषियों ने पूजन किया परन्तु व्यासजीके शिष्य सूत जी ऊंचे आसन पर बैठेथे उनने बलदेवजी को उत्थान न दिया औ उनको प्रणाम भी न किया यह देख बलदेवजी को बड़ाक्रोध उत्पन्न हुआ कि देखो सब मुनियों ने हमारा सत्कार किया औ यह सूत आसन से भी न उठा यह मनमें विचार बलदेवजी बोले कि यह नियजाति सूत मुनियों के बीच ऊंचे सिंहासनपर बैठा

यह बहुत अनुचित बात है औ हमारा इसने अनादर किया न तो आसन से उठा न प्रणाम किया इसने व्यासजीसे पुराण इतिहास धर्मशास्त्र आदि पढ़े हैं उसी से इतना अहंकार इसकोहै कि हमको देख प्रणाम न किया औ आसन भी नहीं छोड़ा व्यासजी के शिष्य पैल वैशंपायनआदि ब्राह्मण ऐसा अनुचितकर्म कभी नहीं करते इसलिये इस दुष्ट को हम मारेंगे हमारा जन्म दुष्टोंको दण्ड देनेके लिये है औ हमारे हाथसे मृत्युपाय यह दुष्ट भी शुद्ध होजायगा इतना कह बलदेवजीने कुशा के अग्रकरके सूतकाशिर काटलिया यह देख मुनियोंने हाहाकार किया औ बलदेवजी से कहा कि आपने बड़ा अधर्मकिया हम सबने मिलकर यह ऊंचा आसन इसको दियाहै औ अक्षयआयुष् भी इसको दियाथा यह जानकरभी आपने ब्रह्महत्याकी आप जगत्‌केप्रभुहैं इसलिये आपका कोई नियामक नहीं परन्तु आपही विचारकर इस ब्रह्महत्या का प्रायश्चित्त कीजिये यह मुनियोंका वचन सुन बलदेवजी बोले कि हे मुनीश्वरो! लोकमर्य्यादा के लिये हम प्रायश्चित्त करेंगे वास्तव में तो हमको पाप हैही नहीं अब आप सब हमको प्रायश्चित्त बतावैं औ आपने इसको अक्षयआयुष् दिया है इसलिये हम इसको अपनी योगमायाकरके फिर जीता करदेतेहैं तब मुनियोंने कहा कि हे बलदेवजी! आपका शस्त्र औ हमारा वर दोनोंही सफलरहैं ऐसा काम कीजिये तब बलदेवजी ने कहा कि हे मुनीश्वरो! वेद में पुत्रको आत्मा के तुल्य लिखाहै इसलिये इस सूत से दीर्घायु औ बुद्धिमान् पुत्रहोगा वही आपको पुराण सुनावेगा इतना कह फिर बलदेवजीने कहा कि हे मुनीश्वरो! और जो कुछ आपचाहते हैं कहैं हम अभी आपका अभीष्ट सिद्ध करेंगे औ हमने यह पाप अज्ञान से किया इसका आप प्रायश्चित्त बतावैं तब मुनि कहनेलगे कि हे बलदेवजी! इल्वलदैत्यका पुत्र बल्वल है वह सदा हमारे यज्ञको दूषित करताहै उस हमारे कंटक दुष्ट

दैत्यको आप मारदेवैं यही हमारा बड़ा सत्कारहै वह दैत्य हमारे यज्ञमें अस्थि विष्ठा मूत्र रुधिर मांस मद्यआदि वर्षाताहै औ इस भारतवर्ष में जितने तीर्थ हैं उनमें आप एकवर्ष स्नानकरैं तब आप शुद्ध होजायँगे सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! मुनीश्वर इतना कहते थे कि बड़ाप्रचण्ड पवनचला औ यज्ञशालामें विष्ठा मूत्रआदिकी वृष्टि होनेलगी औ बल्वलदैत्य त्रिशूल हाथमें लिये यज्ञशाला के समीप बलदेवजीको देखपड़ा बलदेवजी ने देखा कि दग्धहुये पर्वतके तुल्य वह दैत्य जिसके ताम्रके रंगकी बड़ी दाढ़ी औ बड़ी २ दाढ़ेंहैं औ पर्वतकी कन्दराकासा जिसका अति भयंकर मुखहै तब बलदेवजीने अपने हल औ मूसलका स्मरण किया स्मरण करतेही दोनों आयुध आगये तब बलदेवजी ने हलसे उसदैत्यको खैंचा औ मूसलसे उसके मस्तकको चूर्णकिया तब बल्वल भूमिपर गिरा औ सब मुनि बलदेवजी की स्तुतिकरने लगे औ बलदेवजीका सब मुनियों ने तीर्थजलसे अभिषेक किया औ कमलोंकी वैजयन्तीमाला सुन्दर श्वेतवस्त्र औ भूषण बलदेव जी को दिये बलदेवजी ने वे सब धारण किये औ मुनियों से बिदा हो तीर्थयात्रा को चले एकवर्ष सब तीर्थों में बलदेवजी ने स्नान किया औ अपने नगर को चले तब पीछे एक कृष्णवर्णकी छाया देखी जो घोर शब्द करती चली आतीथी औ यह आकाशवाणी भी सुनी कि हे बलदेवजी! एक वर्ष आपने तीर्थयात्राकरी परन्तु ब्रह्महत्या नष्ट न हुई यह वाणी सुन औ उस भयंकर छाया को देख बलदेवजी बड़े खिन्नहुये कि देखो एकवर्ष हमने प्रायश्चित्त किया तौ भी ब्रह्महत्या नष्ट न हुई अब क्याकरैं तब नैमिषारण्य में जाय बलदेवजीने सब वृत्तान्त मुनियों से कहा तब मुनिबोले कि हे बलदेवजी! जो आपकी ब्रह्महत्या नष्ट नहीं भई तो आप दक्षिणसमुद्र के बीच गन्धमादनपर्वत में जाय लक्ष्मणतीर्थ में स्नानकर लक्ष्मणेश्वर शिवका पूजन करैं तब यह हत्या सम्पूर्ण

नाशको प्राप्त होजायगी सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! मुनियों का वचनसुन बलदेवजी लक्ष्मणतीर्थपर पहुंचे वहां तीर्थमें स्नान कर गौ भूमि अन्न सुवर्णआदि सब वस्तु दानकर ब्राह्मणोंको दी औ लक्ष्मणेश्वर का पूजनकिया तब आकाशवाणीहुई कि हे बलदेवजी! अब तुम्हारी ब्रह्महत्या संपूर्ण नष्टहुई सुखसे अपनी पुरी को जावो यह वाणी सुन बलदेवजी ने उस तीर्थकी बहुत प्रशंसाकरी औ धनुष्कोटि आदि सब तीर्थोंमें स्नानकर रामनाथ का दर्शनकर प्रसन्नतासे द्वारकाको आये हे मुनीश्वरो! ब्रह्महत्या आदि पातक हरनेहारे लक्ष्मणसरोवर का हमने यह माहात्म्य वर्णन किया जो पुरुष भक्तिसे इस अध्यायको पढ़ैं अथवा श्रवण करैं वे अवश्य मुक्ति पाते हैं॥

बीसवां अध्याय॥

जटातीर्थका माहात्म्य औ शुकदेवजी की कथा॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! ब्रह्महत्याआदि पापों के निवृत्त करनेहारे लक्ष्मणतीर्थ में स्नानकर चित्त की शुद्धि के लिये जटातीर्थ में जाय जन्ममरण रोगआदि करके पीड़ित जीवोंके अज्ञान नाश करने के लिये जटातीर्थ से उत्तम कोई तीर्थ नहीं कोई पुरुष ज्ञान की प्राप्ति के लिये वेदान्त पढ़ते हैं परन्तु उसका अनुभव होना कठिन है वेदान्तरूप समुद्र है जिसमें पूर्व पक्ष ग्राह औ उत्तरपक्ष बड़े २ मत्स्यहैं उसमें पड़कर मूढ़ पुरुष मोहको प्राप्त होते हैं चित्तकी शुद्धि के लिये वेदान्त पढ़ते हैं परन्तु चित्तकी शुद्धि नहीं होती औ लोगों से कलह करते फिरते हैं हे मुनीश्वरो! वेदान्त पढ़ने से श्रमही बढ़ताहै चित्तकी शुद्धि नहींहोती इसलिये हम वेदांतशास्त्रको उत्तम नहीं समझते जो विना परिश्रम चित्तकी शुद्धिचाहो तो जटातीर्थका सेवन करो यह हम सबको कहते हैं पूर्वकालमें सबके उपकार के अर्थ यह

तीर्थ अज्ञान हरनेहारा साक्षात् सदाशिवने गंधमादनपर्वत में बनाया है औ रावणको मार रामचन्द्रजी ने इसतीर्थ में जटा धोईथी इससे उसतीर्थ का नाम जटातीर्थपड़ा साठिहजारवर्ष गंगास्नानकरै सिंहकी बृहस्पति में गोदावरी में स्नानकरै औ हजारबार सिंह की बृहस्पति में गोमतीस्नान करै तब जितना पुण्य होता है उतनापुण्य जटातीर्थ के दर्शनमात्र से होजाता है जटातीर्थ में स्नान करनेहारे मनुष्यों का अंतःकरण शुद्ध हो-जाताहै औ अज्ञान निवृत्त होता है अज्ञान नाशहोने से ज्ञान प्राप्तहोकर मुक्ति मिलती है औ अखण्ड सच्चिदानन्दरूप प्राप्त होताहै इसमें एक प्राचीन इतिहास भी है पूर्वकालमें सब शास्त्र वेदके जाननेहारे औ महाज्ञानी श्रीवेदव्यासजी से शुकदेवजीने पूंछा कि हे पिता! आप ऐसा उपाय बतावैं जिससे अज्ञान नि-वृत्त होकर ज्ञान प्राप्त होय औ मोक्ष मिलै मैंने आपसे वेदांत इतिहास पुराणआदि सब पढ़े परन्तु अंतःकरणकी शुद्धि न हुई अब ऐसा उपाय बतावैं जिससे चित्तशुद्ध होय यह अपने पुत्र शुकदेवजी का वचनसुन वेदव्यासजी कहनेलगे कि हे पुत्र! हम अतिगुप्त बात कहते हैं जिससे अविद्याग्रन्थि का भेदन होकर ज्ञानकी प्राप्तिहोय दक्षिणसमुद्र के बीच रामसेतु के मध्य में ग-न्धमादनपर्व्वत है उसके बीच पापहरनेहारा जटातीर्थ है जहां श्रीरामचन्द्रजी ने जटाधोई थी औ रामचन्द्रजीने उसीतीर्थ को वरदिया कि जो इस तीर्थ में स्नान करैगा उसका अंतःकरण शुद्ध होजायगा दान यज्ञ जप तप उपवासआदि विना किये जटातीर्थ में स्नानमात्र से अंतःकरण शुद्ध होजाता है उसतीर्थ में स्नान करने से सब विपत्ति दूर होती हैं औ पुण्यलोक की प्राप्ति होती है इसतीर्थ से उत्तम जप तप नियमआदि कोई नहीं धन यश आयुष मंगल पुण्य पवित्रता ज्ञानआदि सब पदार्थ जटातीर्थ में स्नान करने से मिलते हैं भगुने अपने पिता

वरुण से अन्तःकरण के शुद्धका उपाय पूंछा तब वरुणने भृगुसे यही कहा कि गन्धमादनपर्वतके बीच जटातीर्थमें स्नानकरनेसे अन्तःकरण शुद्ध होता है तब भृगुने जाकर जटातीर्थ में स्नान किया जिससे भृगुकी बुद्धि शुद्ध होगई औ दिव्य अद्वैत ज्ञान उत्पन्नहुआ औ सच्चिदानन्द अखण्ड चैतन्य स्वरूप भृगु होगया शिवजी के अंश दुर्व्वासामुनि ने जटातीर्थ में स्नान कर उत्तम ज्ञान पाया विष्णुके अवतार दत्तात्रेयमुनि ने भी जटातीर्थ में स्नानकर ब्रह्मज्ञान पाया जो अज्ञानका नाशकिया चाहै तो जटातीर्थ में स्नान करै हे पुत्र शुकदेव! तू भी अंतःकरणकी शुद्धि के लिये जटातीर्थ में जाकर स्नान कर यह पिताका वचनसुन शुकदेवजी रामसेतु को चले वहांजाय जटातीर्थ में सङ्कल्पपूर्वक शुकदेवजी ने स्नान किया तब उनको अन्तःकरण शुद्धहोकर आत्मज्ञान प्राप्तहुआ जो मनशुद्धिकी इच्छारखताहोय वह जटातीर्थमें स्नानकरै कल्पवृक्ष के तुल्य जटातीर्थके होतेभी अज्ञानी पुरुष और तीर्थों को ढूंढ़ते फिरते हैं जटातीर्थ में स्नान करने से भुक्ति औ मुक्ति दोनों मिलती हैं वेदपाठ यज्ञ तप व्रत दान उपवासआदि करके कष्ट से मन शुद्ध होता है औ जटातीर्थ में स्नानमात्रसे होजाता है जटातीर्थ का माहात्म्य हम नहीं वर्णन करसक्ते ब्रह्मा विष्णु शिवजी जटातीर्थ के माहात्म्यको भली भांति जानते हैं जटातीर्थ के तुल्य कोई तीर्थ न हुआ न होगा। जटातीर्थ के तीरपर श्राद्ध करनेसे गयाश्राद्ध के तुल्य फल होता है जटातीर्थ में स्नान करने से पाप नरक औ दारिद्र्य का भय नहीं होता। सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! यह जटातीर्थ का माहात्म्य हमने थोड़ासा कहा जिसतीर्थ के प्रभाव से शुकदेवजीने ज्ञानपाया जो इस अध्याय को पढ़ै अथवा सुनै वह सब पापोंसे छूट विष्णुलोक को जाता है ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

लक्ष्मीतीर्थका माहात्म्य औ पाण्डवोंकी संपत्ति प्राप्त होनेका वर्णन ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! जटातीर्थ में स्नानकर शुद्ध चित्त हो लक्ष्मीतीर्थ को जाय जिस मनोरथ से लक्ष्मीतीर्थ में स्नान करै वही मनोरथ सिद्ध होताहै दुःख दरिद्र हरनेहारा औ धन धान्य सुख संपत्ति देनेहारा लक्ष्मीतीर्थ है श्रीकृष्णभगवान् की प्रेरणासे धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरने इन्द्रप्रस्थ से आकर लक्ष्मीतीर्थ में स्नानकिया तब बड़ा ऐश्वर्य्य पाया शौनकआदि ऋषियोंने पूंछा कि हे सूतजी ! राजायुधिष्ठिरने जिसभांति ऐश्वर्य्यपाया वह आप वर्णन करैं तब सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो ! धृतराष्ट्र की आज्ञासे पाण्डव इन्द्रप्रस्थ में रहते थे एक समय उनके मिलने के लिये द्वारका से श्रीकृष्णचन्द्र आये पाण्डव भी श्रीकृष्णचन्द्रको देख परम हर्षितहुये औ उनको बड़े आदर से अपने महल में रक्खा एकदिन राजा युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णचन्द्र का पूजनकर पूंछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र ! जिस कर्म्म से बड़ा ऐश्वर्य्य प्राप्त होय वह आप हमको बतावें तब श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हे महाराज ! गन्धमादनपर्वत में एक लक्ष्मीतीर्थ है उसमें स्नान करने से ऐश्वर्य प्राप्त होताहै धन धान्य बढ़ता है शत्रुओंका नाश होताहै आपभी उस तीर्थ में स्नान करैं उस तीर्थ में स्नान करके देवताओं ने परम ऐश्वर्यपाया औ दैत्यों को मारा उस तीर्थ में स्नान करने से राज्य धन औ धर्म शीघ्रही प्राप्त होते हैं तप दान यज्ञ औ ब्राह्मणों के आशीर्वादसे जिस भांति ऐश्वर्य की वृद्धि होती है ऐसेही लक्ष्मीतीर्थ के स्नान से भी होती है सब विघ्न पाप औ रोग लक्ष्मीतीर्थ में स्नान करने से दूर होते हैं औ परमकल्याण प्राप्त होताहै इस तीर्थ में स्नान करने से नल कूबरने सब अप्सराओं में मुख्य रम्भा अ-

प्सरा पाई कुबेर लक्ष्मीतीर्थ में स्नानकर महापद्मआदि नौ निधियों के स्वामीहुये इसलिये हे महाराज! आपभी अपने भाइयोंसहित लक्ष्मीतीर्थ में स्नान करैं तो सब शत्रुओं को जीत बड़ीलक्ष्मी पावैंगे इसमें कुछ संदेह न कीजिये यह श्रीकृष्ण-चन्द्रका वचनसुन अपने भाइयों को ले राजायुधिष्ठिर गन्धमा-दनपर्वत को चले वहां लक्ष्मीतीर्थपर पहुंच सबने स्नान किया इसीभांति नित्य एक मासतक स्नान करते रहे औ गौ भूमि तिल सुवर्णआदि दान नित्य ब्राह्मणों को देतेरहे फिर इन्द्रप्रस्थ को आये इन्द्रप्रस्थ में पहुंच राजायुधिष्ठिर ने राजसूययज्ञ करने की इच्छाकी तब श्रीकृष्णचन्द्रको बुलाने दूत भेजा श्रीकृष्ण-चन्द्रभी दूत के पहुंचतेही सत्यभामा समेत रथमें बैठ इन्द्रप्रस्थ को चले इन्द्रप्रस्थ में पहुंचे तब पाण्डवों ने बड़ाउत्सव किया औ युधिष्ठिर ने राजसूययज्ञ करने का मनोरथ उनसे कहा श्री कृष्णजीने भी स्वीकार किया औ यह कहा कि हे महाराज! आप से हम यथार्थ बात कहते हैं जो बहुत से हाथी घोड़े औ सेनाका अधिपति होय वही राजा इस यज्ञको करसक्ता है साधारण राजा इस यज्ञके अधिकारी नहीं पहिले आप सब दिशाओं के राजाओं को जीतैं औ उनसे करलेवैं उसी धनसे आप यह यज्ञ करैं इसलिये यज्ञसे पाहिले आपदिग्विजय कीजिये यह श्रीकृष्ण-चन्द्रका वचनसुन राजायुधिष्ठिर बहुत प्रसन्नहुये औ अपने भाइयोंको बुलाकर कहा कि हे भ्राताओ! मैं राजसूययज्ञ किया चाहताहूं इसलिये तुम चारो बहुतसी सेना साथलेकर चारों दिशाओं को जीतो जीतकर जो धन तुम लावोगे उसी से यज्ञ होगा यह राजायुधिष्ठिरकी आज्ञापाय भीमसेन अर्जुन नकुल औ सहदेव बहुतसी सेना साथले दिग्विजयको चले थोड़ेही कालमें सब राजाओंको जीत अपने वशमें स्थापनकर बहुतसा धनले अपने नगर में पहुंचे सौभार सुवर्ण भीमसेन एक हज़ार

भार सुवर्ण अर्जुन सौभार सुवर्ण नकुल औ विभीषण के दिये सुवर्ण के चौदह ताल औ दक्षिण देशके राजाओं को जीत बहुत सा धन सहदेव भी लाया औ कई करोड़का धन श्रीकृष्णभगवान् ने युधिष्ठिर को दिया सब भ्राताओंका लाया धन औ श्रीकृष्णचन्द्र का दिया असंख्य धन करके युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णचन्द्रके आश्रयसे राजसूययज्ञ किया उस यज्ञमें युधिष्ठिर ने ब्राह्मणों को यथेष्ट धन अन्न गौ भूमि भूषण वस्त्र आदि दिये जितना याचकों ने मांगा उससे दूना पाया जितना धन युधिष्ठिर ने यज्ञमें बांटा उसकी इयत्ता कोटिवर्ष में भी नहीं करसक्ते एक २ अर्थी को दिया धन देख लोग यही जानते थे कि राजा ने अपना सर्वस्व इसी को देदिया औ जब राजा का खजाना देखते कि जिसमें सुवर्ण औ रत्नोंके ढेर लगे थे तब यह जानते कि अर्थीको बहुत थोड़ा दिया इसभांति राजसूययज्ञकर राजा युधिष्ठिर अपने भाइयों समेत धर्मराज्य करनेलगे सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! लक्ष्मीतीर्थ के प्रभावसे राजायुधिष्ठिरने यह सम्पत्ति पाई यह तीर्थ स्नान करनेहारों के सब पातक दूरकर धन धान्य औ ऐश्वर्य देता है इस तीर्थ में स्नान करने से ऋण औ दरिद्र नहीं रहता नरक औ दुःखभी समीप नहीं आते इसमें स्नान करने से स्वर्ग औ मोक्षभी मिलता है औ स्त्री पुत्रभी उत्तम प्राप्त होते हैं इसतीर्थ के तुल्य कोई तीर्थ हुआ नहीं औ होगा भी नहीं यह लक्ष्मीतीर्थ का माहात्म्य हमने कहा इसके पढ़ने से अथवा सुनने से धन धान्य मिलता है दुःस्वप्नका फल नष्ट होता है औ सब मनोरथ सिद्ध होते हैं ॥

बाईसवां अध्याय ॥

अग्नितीर्थका माहात्म्य औ दुष्पण्यनाम एक वैश्यपुत्रकी अद्भुत कथा ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! सब ऐश्वर्य देनेहारे लक्ष्मी-

तीर्थ में स्नान कर अग्नितीर्थको जाना चाहिये अग्नितीर्थ सब तीर्थों में उत्तम अभीष्ट सिद्ध देनेहारा औ सब पातकोंका हरनेहारा है मनुष्य को अपने पाप निवृत्त करने के लिये उस में स्नान करना चाहिये शौनकआदि ऋषि पूंछते हैं कि हे सूतजी! उस तीर्थ का नाम अग्नितीर्थ क्यों हुआ औ वह तीर्थ कहां है यह आप वर्णन करैं हमारी श्रवण करनेकी बहुत इच्छा है यह मुनियोंका प्रश्न सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! आपने बहुत उत्तम बात पूंछी हम वर्णन करते हैं पूर्वकालमें सकुटुंब रावण को मार औ लङ्का का राज्य विभीषणको दे सीता औ लक्ष्मण सहित सिद्ध चारण गन्धर्वआदि करके सेवित मुनियोंकरके स्तुत श्रीरामचन्द्रजी तीर्थ दर्शनकी इच्छासे औ जानकी की शुद्धिके लिये सेतुमार्ग करके गन्धमादनपर्व्वत पर पहुंचे वहां लक्ष्मी तीर्थ के तटपर स्थिर होकर सब देवता ऋषि औ पितरोंके समीप अग्निका आवाहन किया आवाहन करतेही पीतवर्ण रक्तनेत्र पीतवस्त्र पहिने धनुष हाथ में लिये अपनी सात जिह्वाओं से दशों दिशाओंको चाटता अग्नि समुद्रसे निकला औ रामचन्द्रजीके समीप आय यह वचन कहनेलगा कि हे रामचन्द्र जी! जानकी के पतिव्रता धर्मके प्रभावसे आपने रावणको मारा इसमें कुछ संदेह नहीं यह जानकी साक्षात् जगत्की माता लक्ष्मी है जब २ आप अवतार लेते हैं तब २ यहभी आपके पीछे अवतार धारती है आप परशुराम हुये तब यह धरणीहुई अब जानकी है आगे रुक्मिणी होगी औरभी सब अवतारों में आपके साथ रहेगी आप साक्षात् विष्णु हैं अब मेरे वचन से आप इसको ग्रहण करैं यह अग्निका वचन सुन देवता ऋषि विद्याधर गंधर्व मनुष्य नागआदि सब जानकी औ रामचन्द्रजी की प्रशंसा करनेलगे रामचन्द्रजी ने भी अग्निके वचन से सीताको ग्रहण किया रामचन्द्रजी के आवाहन करने से जहां अग्नि प्रकट हुआ वहांहीं

अग्नितीर्थ हुआ अग्नितीर्थ में स्नान करै औ उपवास करके ब्राह्मणों को भोजन करावै औ वस्त्र भूषण भूमिआदि उनको दान करके देवै औ उत्तम कन्याको वस्त्र भूषणआदि से अलंकृत कर दानकरै तो अवश्यही विष्णुलोक पावै अग्नितीर्थ के तटपर अन्नदान का बहुत फलहै अग्नितीर्थ के तुल्य न हुआ न होगा एक बड़ापातकी अग्नितीर्थ में स्नानकर घोर पिशाचपने से छूटा। पूर्वकाल में पशुमान् नाम एक वैश्य पाटलिपुत्रनगर में हुआ वह सदा धर्म में तत्पर रहता औ ब्राह्मणों की सेवा करता खेती करता गौ रखता औ बाजार में सुवर्ण चांदी बेंचता उस वैश्यके तीन स्त्रियांथीं उनमें बड़ी के सुपण्य पण्यवान् औ चारु-पण्य ये तीन पुत्र थे बिचली के सुकोश औ बहुकोश ये दो पुत्र थे औ तीसरी स्त्री के महापण्य महाकोश औ दुष्पण्य ये तीन पुत्र हुये इसभांति पशुमान् वैश्य के तीन पत्नियों में आठ पुत्र थे वे सब बालअवस्था में अपनी २ क्रीड़ा से माता पिता को आनन्ददेतेथे पांच२ वर्ष के जब हुये तो पशुमान्ने सबको खेती व्यापार गोरक्षा आदि कर्मों में लगाया उनमें सातपुत्र तो अपने पिताकी आज्ञापर चलते इससे सुवर्णआदि के व्यापार में बहुत प्रवीण होगये परंतु सबसे छोटा दुष्पण्य जो था सो पिता की आज्ञापर न चला औ कुमार्ग में प्रवृत्तहुआ जिनबालकोंके साथ खेलता उनको भी पीड़ादेता पिता उसका दुष्ट व्यवहार देखकर भी उसको कुछ नहीं कहता यह सोचता कि बालकहै औ मूर्ख है आपही समझ जायगा क्रमसे वे आठों वैश्यपुत्र तरुण अवस्थामें प्राप्तहुये तब दुष्पण्य यह काम करनेलगा कि नगर में जिसका बालक मिलता उसीको उठाकर गुपचुप कुयें में अथवा तालाब में फेंकआता औ उसके कुकर्मको कोई नहीं जानता उन बालकों के माता पिता बहुत ढूंढ़ते परन्तु बालकों का कहीं पता नहीं लगता जब कोई बालक तालाब आदिमें मरा हुआ मिलता तो

उसके मा बाप रो पीटकर रहजाते इसभांति दुष्पण्य नित्यही बालकों को मारता कुछ दिनों में नगर शून्य होनेलगा यह बात राजाने सुनी तब कोतवाल को बुलाकर आज्ञादी कि निश्चय करो बालकों को कौन मारताहै कोतवालने राजाकी आज्ञा पाय बहुत यत्नकिया परन्तु कुछ पता न लगा औ बालकभी नित्यमारे ही जाते थे कोतवालने राजासे प्रार्थना करी कि महाराज मैंने बहुत यत्नकिया परन्तु उसदुष्टका ठिकाना नहीं मिलता यहसुन राजा अतिव्याकुल हुआ औ नगरके लोग नित्य राजाके द्वार पर आय पुकारते एक दिन कमल तोड़ने के बहाने से पांच बालकों को साथ लेकर दुष्पण्य एक तालाब पर गया वहां इधर उधर देखा कि कोई मनुष्य नहीं है उन चिल्लातेहुये बालकोंको उठा उठा दुष्पण्यने तालाब में फेंकदिया औ उनको मरेजान अपने घरको चलाआया दैवयोगसे वे बालक डूबेनहीं दो चार गोते खाकर किनारे आलगे घरका मार्गनहीं जानते थे इसलिये तालाब के किनारे रोतेहुये फिरनेलगे इतने में उनके मा बापभी ढूंढ़ते ढूंढ़ते औ बालकों के नामोंसे पुकारते वहां आये बालकों ने अपने नाम सुन औ माता पिताकी बोली पहिचान शब्दकिया तब उनके माता पिता उनके समीप पहुँचे औ उनको जीतेहुये देख परमहर्षको प्राप्तहुये औ बालकों से वृत्तान्त पूंछा कि तुम यहां क्योंकर आये तब उनने दुष्पण्यका सब कुकर्म कहा वे सब बालकों समेत राजा के पास गये औ सब वृत्तान्त कहा तब राजा ने पशुमान्‌को बुलाय कर कहा कि हे पशुमान्! दुष्पण्य नाम तेरे पुत्र ने हमारा नगर शून्य करदिया देख ये पांच बालक भी उसने तालाब में डुबोदिये थे परन्तु ईश्वर की इच्छा से बचगये तू धर्मात्माहै इसलिये हम तुझसेही पूंछते हैं कि अब क्या करना चाहिये यह राजा का वचन सुन पशुमान् बोला कि महाराज जिस दुष्ट ने नगर के सब बालक मारडाले उसका अवश्यही वध करना

चाहियेइसमें कुछ विचार की बात नहीं वह मेरा पुत्र नहीं शत्रुहै शीघ्र आप उस दुरात्मा का वध करैं यह पशुमान् का वचन सुन नगर के सब मनुष्यों ने पशुमान् की बहुत प्रशंसा करी औ सबोंने मिलकर राजासे यह प्रार्थनाकरी कि महाराज आप उस दुष्टका वध न करैं नगर से उसको निकाल देवैं यह नगर वासियों का वचन सुन दुष्पण्य को बुलाय राजाने कहा कि हे दुष्ट! शीघ्र तू हमारे नगरसे निकल जा जो अब तू यहां रहेगा तो तेरा वध किया जायगा यह कहकर राजाने उसको नगर से निकालदिया वह भी वहांसे निकल वनमें गया जहां बहुतसे मुनि आश्रमों में रहतेथे वहां भी दुष्पण्यने एक मुनिबालकको जल में डुबोदिया तब और बालकों ने जो वहां खेलते थे उस बालक के पिता से जाकहा वह उग्रश्रवा नाम मुनिसुनतेही दौड़ाआया औ देखा कि बालक जलके ऊपर मराहुआ तैरता है यह देख औ योगबल से सब दुष्पण्य का कर्म जान उसको शाप दिया कि रे दुष्ट! तैंने मेरे पुत्र को जलमें डुबोकर मारा इसलिये तू भी जलमें डूबकर मरैगा औ मरकर पिशाच होगा यह शाप सुन उदास हो दुष्पण्य दूसरे वनको गया जहां बहुत से सिंह व्याघ्र आदि दुष्टजीव रहते थे उसके वनमें प्रवेश करतेही प्रचंड पवन चला वृक्ष टूट टूट कर गिरने लगे औ अतिघोर वृष्टि होनेलगी तब दुष्पण्य अतिदुःखी हुआ औ इधर उधर देखने लगा तब उसने देखा कि एक हाथी मरा औ सूखा हुआ पड़ा है वह प्राण बचाने के लिये हाथी के मुखमें घुसकर उसके पेटमें जा बैठा औ वृष्टि बहुत हुई औ एक जलका प्रवाह उधर बहकर आया उस में वह मराहाथी भी बहचला औ जलसे भरगया क्षणमात्र में दुष्पण्य समेत समुद्र में जापहुंचा परंतु दुष्पण्य के प्राण इतने में जातरहे औ वह पिशाच होगया औ क्षुधा तृषा करके पीड़ित हुआ एक वनमें रहनेलगा इसप्रकार दुःख भोगते करोड़ों वर्ष

उसको बीतगये देश २ और वन २में भटकता फिरता परंतु कहीं सुखनहीं मिलता एकदिन दण्डकारण्यमें अगस्त्यमुनिके आश्रम के समीप पहुंचा औ पुकारनेलगा कि हे तपस्वियो! आप दयालु हैं मेरे ऊपरभी दयाकरें मैं अतिदुःखीहूं पाटलिपुत्रनिवासी पशुमान् नाम वैश्यका पुत्र दुष्पण्य नाम मैं पूर्वजन्म में था मैंने बहुतसे बालक मारडाले तब राजाने मुझे अपने देशसे निकाल दिया मैं भी एक वनमें आया वहां आय मैंने उग्रश्रवामुनि का पुत्र जलमें डुबोया मुनिने मुझे शाप दिया कि तेरी भी जलमें मृत्युहोगी औ बहुतकाल तक तू पिशाच बनकर दुःख भोगेगा मुनिके शापसे पिशाचहुये मुझे कई करोड़वर्ष होगये शून्य वनों में दुःखभोगता फिरताहूं क्षुधा औ तृषासे मेरे प्राण जाते हैं आप मेरी रक्षाकरें औ ऐसा यत्न बतावैं जिससे पिशाचपना छूटजाय यह उसका वचन सब मुनियों ने जाकर अगस्त्यजी से कहा औ प्रार्थनाकरी कि महाराज इस दीन पिशाच का आप उद्धार कीजिये आपसमर्थ हैं यह मुनियों की प्रार्थनासुन परम-दयालु अगस्त्यमुनिने अपने प्रियशिष्य सुतीक्ष्ण को बुलाकर कहा कि हे सुतीक्ष्ण! गन्धमादनपर्वतमें अग्नितीर्थ है वहां जाकर संकल्पपूर्वक इसका पिशाचत्व छूटने के लिये तू स्नानकर तब यह इस योनि से छूट दिव्य देह होजायगा उस तीर्थ विना इसका उद्धार किसीप्रकार नहीं होसक्ता इसलिये हे सुतीक्ष्ण! तू इस दीन पिशाचकी रक्षाकर यह गुरुकी आज्ञा पाय सुतीक्ष्णमुनि अग्नितीर्थपर पहुँचे औ पिशाच के निमित्त संकल्प कर स्नानकिया इसभांति तीर्थ में तीनदिन स्नानकर रामनाथ के दर्शनकर अग्नितीर्थ का जल लेकर सुतीक्ष्णमुनि अपने आश्रममें आये औ उस पिशाचपर तीर्थ का जल छिड़का तीर्थ के जलका स्पर्श होतेही वह दिव्यदेह होगया औ अगस्त्य सुतीक्ष्ण औ उस आश्रम में रहनेहारे सब मुनियों को वारंवार

प्रणामकर दिव्यविमान में बैठ उत्तमनारियों करके सेवित स्वर्गको चलागया हे मुनीश्वरो! अग्नितीर्थ के प्रभाव से दुष्पण्यसा पापी पिशाचयोनि से छूट स्वर्ग को गया यह अग्नितीर्थ का प्रभाव हमने वर्णनकिया जो इस अध्यायको भक्तिसे पढ़ै अथवा सुनै वह बहुत दिन संसार सुख भोग सब पापों से छूट सद्गति पावै ॥

तेईसवां अध्याय ॥

चक्रतीर्थ की प्रशंसा देवताओं के यज्ञ करने का वर्णन औ सूर्य भगवान् को सुवर्ण के हस्त प्राप्त होनेका इतिहास ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! सब पाप हरनेहारे अग्नितीर्थ में स्नानकरके शुद्धचित्त हो चक्रतीर्थ को जाय जिस मनोरथ से चक्रतीर्थ में स्नानकरै वही मनोरथ सिद्ध होजाताहै पूर्वकालमें अहिर्बुध्न्यनामऋषि गन्धमादनपर्वतमें सुदर्शन की उपासना करतेथे उनको आकर राक्षस पीड़ा देनेलगे तब सुदर्शनचक्रने आय सब राक्षसोंको संहारकिया औ अहिर्बुध्न्य मुनि की प्रार्थना से उसतीर्थ में निवास किया जिसके तटपर अहिर्बुध्न्यमुनि तप करते थे उसदिन से उस तीर्थ का नाम चक्रतीर्थ पड़ा उस तीर्थ में स्नान करने से भूत प्रेतआदि की पीड़ा निवृत्त होजाती है पूर्वकाल में सूर्यभगवान् ने इस तीर्थ में स्नानकिया तब उनके कटेहुये हाथ पहिले की भांति होगये औ सुवर्ण के होगये यहसुन ऋषियों ने पूछा कि सूर्यभगवान् के हाथ क्योंकर कटे औ फिर किस भांति सुवर्णके हाथपाये यह आपवर्णन करैं तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! पूर्वकाल में इन्द्रआदि देवताओं को दैत्योंने बहुत पीड़ा दी तब सबोंने बिचार किया औ इन्द्रको आगेकर ब्रह्माजी के समीप गये वहां जाय ब्रह्माजी की भक्तिसे स्तुतिकर प्रार्थनाकी कि महाराज हम को दैत्यबहुतपीड़ा देतेहैं इसका आप कुछ उपाय बतावैं तब ब्र-

ह्माजी बोले कि हे देवताओ! डरोमत हम आपको उपाय बताते हैं असुरों के नाशके लिये माहेश्वरयज्ञका आरम्भ करो आप सब औ सब ऋषि मिलकर गन्धमादनपर्वत में यह यज्ञ करें और स्थान में यज्ञ करने से असुर विघ्न करेंगे गन्धमादनपर्वत में अहिर्बुध्न्यमुनिके तीर्थमें सुदर्शनचक्रने निवास कियाहै इसलिये वहां राक्षसों का भय नहीं है तुम सब गन्धमादन में चक्रतीर्थके समीप यज्ञ करो यह ब्रह्माजी की आज्ञापाय बृहस्पति को आगे कर सब देवता गन्धमादन में पहुँचे वहां जाय अहिर्बुध्न्यमुनि को प्रणामकर उनके आश्रमके समीप यज्ञ बाट बनाया औ यज्ञ कर्म में निपुण मुनियों सहित सब देवता असुरोंके नाशके लिये यज्ञ करने लगे उस यज्ञ में बृहस्पति होता हुये इन्द्र का पुत्र जयंत मैत्रावरुण बना आठवां वसु अच्छावाकहुआ पराशरमुनि ग्राव बने अष्टावक्र अध्वर्यु विश्वामित्र प्रतिप्रस्थाता वरुण नेष्टा कुबेर उन्नेता ब्रह्माजी सविता वशिष्ठमुनि ब्राह्मणाच्छंसी शुनःशेफ आग्नीध्र अग्निपोता वायु उद्गाता यमराज स्तोता अगस्त्यमुनि प्रतिहर्ता विश्वामित्र का पुत्र सुब्रह्मण्य मधुच्छन्दा व्यासजी के पुत्र शुकदेवजी उपद्रष्टा औ साक्षात् इन्द्र यजमान बने सब ऋत्विजोंने मिलकर इन्द्रको माहेश्वरयज्ञकी दीक्षादी औ गन्धमादनपर्वत में यज्ञ होनेलगा सुदर्शन के प्रभावसे वहां असुरोंका प्रवेश न होसका इससे निर्विघ्न यज्ञ होनेलगा अग्नि हविको भक्षण कर प्रज्वलित हुआ अध्वर्यु ने विधिवत् सब कर्म करके मंत्र पूत पुरोडाश का हवन किया उस पुरोडाश का शेष भाग अध्वर्यु ने सब ऋत्विजों को बांटदिया औ अतिउग्रतेज वाला प्राशित्रनाम पुरोडाश का भाग अध्वर्यु ने सूर्य को दिया सूर्यने उसको अपने दोनों हाथों में लिया हाथ में लेतेही दोनों हाथ सूर्यके कटकर गिरगये तब सूर्य बहुतव्यग्र हो सब ऋत्विजोंसे बोले कि हे ऋत्विजो! आप सबके देखते हमारे हाथ इस

पुरोडाश भागने काटदिये इसलिये आप सब हमारे हाथ ठीक करदेवें नहीं तो हम तुम्हारे यज्ञको नष्ट करदेंगे यह सूर्य का वचन सुन सब ऋत्विज व्याकुल हो चिन्तना करने लगे तब महातेजस्वी अष्टावक्रमुनि बोले कि हे ऋत्विजो! हमारी अवस्थामें सैकड़ों ब्रह्मा बीत गये सबका चरित्र हम जानते हैं लोकेस्वर ब्रह्मा के समय में श्यामलापुर के बीच एक हरिहर नाम ब्राह्मण रहता था एकदिन कोई व्याध बाण चला रहा था दैवयोग से वह ब्राह्मण बाण के आगे आगया इससे बाण लगकर उसके दोनों पैर कटगये तब सब मुनीश्वरों के कहने से वह ब्राह्मण गन्धमादनमें मुनितीर्थपर किसीप्रकार पहुंचा मुनितीर्थ में स्नान करतेही उसके दोनों पैर यथार्थ होगये वह मुनितीर्थ यही है अब इसका नाम चक्रतीर्थ पड़गया जो आप सबकी सम्मति होय तो सूर्य भी इस तीर्थ में स्नान करैं यह अष्टावक्र मुनि का वचन सुन सब ऋत्विज बोले कि हे सूर्य! आपभी इस तीर्थ में स्नान करैं जिससे आपके हाथ यथार्थ होजायँ तब ऋत्विजोंके कहने से सूर्यने उस तीर्थ में स्नान किया तब उनके हाथ पहिले से भी उत्तम सुवर्ण के बनगये उनके हस्त सुवर्ण के देख सब ऋत्विज प्रसन्नहुये इन्द्रादि देवता भी माहेश्वरयज्ञ समाप्त कर सब दैत्योंको मार प्रसन्नहो स्वर्ग को गये हे मुनीश्वरो! सब मनुष्यों को अपने मनोरथ सिद्ध होने के लिये इस तीर्थका सेवन करना चाहिये विशेष करके अन्धे काणे बहिरे लँगड़े लूले कुबड़े गूंगे टूटेआदि अंगहीन मनुष्यों को इस तीर्थका सेवन करना चाहिये इस तीर्थ के सेवन से हीन अंग पूरा होजाता है हे मुनीश्वरो! यह चक्रतीर्थ का माहात्म्य हमने कहा जहां सूर्य्य भगवान् ने सुवर्ण के हाथ पाये जो इस अध्यायको पढ़ै अथवा सुनै उसके हीनअंग भी सम्पूर्ण होजायँ मोक्ष की इच्छासे इस तीर्थका सेवन करै तो मुक्ति पावै॥

चौबीसवां अध्याय॥

शिवतीर्थ का माहात्म्य औ ब्रह्मा विष्णु के परस्पर कलह होनेकी कथा॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! चक्रतीर्थ में स्नानकर शिवतीर्थको जाय शिवतीर्थ में स्नानकरने से करोड़ों महापातक औ संसर्गदोष नष्ट होजातेहैं यहां स्नानकर कालभैरव ब्रह्महत्या से छूटे ऋषियों ने पूंछा कि हे सूतजी! कालभैरवरुद्रने ब्रह्महत्या क्योंकरी यह आप वर्णन करैं तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! हम यह प्राचीन वृत्तान्त वर्णन करते हैं जिसके सुनने से सब पातक दूर होजायँ पूर्वकाल में सब देवताओं के सम्मुख ब्रह्माजी औ विष्णुजी का परस्पर विवाद हुआ ब्रह्माजी ने कहा कि सब जगत् के कर्त्ता औ निग्रह अनुग्रह करने में समर्थ हम हैं हमारे तुल्य कोई देवता नहीं हम से अधिक तो कहां से हो सक्ताहै यह ब्रह्माजी का वचन सुन हँसकर विष्णुजी बोले कि हे ब्रह्माजी! यह अहंकार का वचन आपको न कहना चाहिये जगत् के कर्त्ता हम हैं हमारी इच्छा विना इस जगत् का जीवन नहीं होसक्ता हमारी अनुग्रह से तुमने जगत् रचा है इसप्रकार ब्रह्मा औ विष्णु विवाद कररहे थे उस अवसर में चारोंवेद देह धार वहां आये औ यह कहने लगे कि हे ब्रह्माजी! हे विष्णुजी! आप दोनोंही जगत् के कर्त्ता नहीं हैं जगत्कर्त्ता तो ईश्वर है उसकी मायासे यह स्थावर जंगमरूप जगत् उत्पन्न हुआहै वह शिवही जगत् के सृष्टि स्थित औ संहारकर्त्ता हैं यह वेदों का वचनसुन ब्रह्मा औ विष्णु बोले कि हे वेदो! शिवजी तो मूर्तिमान् हैं औ पार्वती करके युक्तहैं वे किसप्रकार सर्व्वसंग विवर्जित निर्गुण परमेश्वर होसक्ते हैं यह ब्रह्मा औ विष्णु का वचन सुन सब वेदों का मुख प्रणवरूपधार बोला कि हे देवताओ! शिवजी स्वप्रकाश निरंजन विश्वाधिक विश्वकर्त्ता सर्वात्मा स्वतंत्र औ

निर्गुणहैं औ पार्व्वती भी उनसे भिन्न नहीं हैं हे ब्रह्माजी! शिव जीही तुमको सृष्टि करने के लिये रजोगुण करके युक्त करते हैं औ हे विष्णुजी! रक्षा करने के लिये आपको सत्त्वगुण करके युक्त करते हैं औ जगत्के संहार के लिये तमोगुण करके कालरुद्रको युक्तकरते हैं इसलिये तुम स्वतंत्र नहींहौ स्वतंत्र शिवही हैं इस लिये जगत्के कर्त्ता हर्त्ता शिवही हैं औ पार्वती शिवकी शक्तिहैं औ आनन्दरूप हैं इसलिये शिव से पृथक् नहीं सब देवताओं करके वन्दनीय सबके कर्त्ता शिवहैं शिवका कर्त्ता कोई नहीं लोक में कोई शिवसे अधिक नहीं औ शिवके तुल्य भी नहीं इस लिये तुम दोनों वृथा अहंकार मतकरो यह प्रणवका वचनसुन कर भी ब्रह्मा औ विष्णुका अहंकार निवृत्त न हुआ इसीअवसर में एक बड़ातेज आकाशमें उत्पन्न हुआ जो कई करोड़ सूर्यों के समान था उसतेजके देखने के लिये ब्रह्माजीने एकमुख ऊपरकी ओर बनाया औ उस पांचवें मुखसे तेजको देखनेलगे उसतेज को देखतेही ब्रह्माजी का पांचवांमुख क्रोध से जलउठा जैसा प्रलय का अग्नि होय औ वह तेज भी नीललोहित पुरुष बन गया तब ब्रह्माजी ने उस पुरुष से कहा कि हे महादेव! मैं तुझको जानताहूं पहिले तू मेरे ललाट से उत्पन्न हुआ इसलिये मेरा पुत्र है यह ब्रह्माजी का अहंकार युक्त वचन सुन महादेव-जीने कालभैरव नाम पुरुष को भेजा वह शिवजी के अंशसे उ-त्पन्न हुये कालभैरव शूलटंक गदाआदि धारे जाकर ब्रह्माजी से युद्ध करने लगे बहुत दिन युद्धहुआ कालभैरव ने ब्रह्माजी के शुक्ल वर्ण पांचवें मुख को देखा कि बहुत गर्व करके युक्त है औ कालभैरव को देख पांचवेंमुख ने बड़ाक्रोध किया तब कालभै-रवने ब्रह्माजी का पांचवां शिर काटलिया शिर कटतेही ब्रह्माजी गिर पड़े औ मृत होगये तब शिवजी ने उनको फिर जीवदान दिया तब ब्रह्माजी ने उठकर शिवजी को देखा मस्तक पर

चन्द्रमा धारे वासुकिआदि नागोंके भूषण पहिने पार्वती सहित वृषभ पर चढ़े सम्मुख खड़े हैं उनको देखतेही ब्रह्माजीको ज्ञान प्राप्त हुआ औ हाथजोड़ शिवजी की प्रार्थना करने लगे कि हे भगवन्! आप मेरा अपराध क्षमाकरें इतना कह शिवजी के चरणोंको प्रणाम किया तब प्रसन्नहो शिवजी ब्रह्माजी से कहा भयमतकरो हमने तुम्हारा अपराध क्षमाकिया औ कालभैरवसे शिवजी ने कहा कि तुम ने ब्रह्माजीका शिरकाटलिया इसलिये ब्रह्महत्या दूरहोने के अर्थ ब्रह्माजी का कपाल हाथमें लिये भिक्षामांगते फिरो वास्तवमें तुमको कुछ हत्या नहीं परन्तु लोक मर्यादा के लिये प्रायश्चित्त करना चाहिये इतना कह वह ब्रह्माजीका कपाल शिवजी ने कालरुद्रको धारण करादिया औ ब्रह्महत्या नाम अतिभयंकर एक कन्या उत्पन्न कर शिवजीने कालरुद्र के पीछे लगादी औ यह कहा कि हे कालरुद्र! तुम इस ब्रह्महत्या निवृत्त होनेके लिये सब तीर्थों में स्नानकरो फिर काशीमें जाओ तब तीनभाग ब्रह्महत्या नष्ट होजायगी एक भाग रह जायगी उसके निवृत्त करने का यह उपाय है कि दक्षिण समुद्रमें गंधमादनपर्वतके बीच सब जीवोंके कल्याणके लिये हमने तीर्थ बनायाहै उस तीर्थ में जाकर तुम स्नानकरो तब तुमको ब्रह्महत्या छोड़देगी इतना कह शिवजी कैलास को गये औ शिवजीकी आज्ञानुसार कपाल हाथमें लेकर कालरुद्र सब लोकोंमें विचरने लगे औ ब्रह्महत्या उनके पीछे२ लगी फिरती सब पुण्यतीर्थों में स्नानकर कालरुद्र काशी में पहुँचे तब वह अति दुष्टा ब्रह्महत्या तीनभाग नष्ट होगई औ चौथाई रहगई तब कालरुद्र गन्धमादनपर्वत को चले औ वह चतुर्थांश हत्या भी पीछेलगी गन्धमादन में पहुँच शिवतीर्थ में कालरुद्र ने स्नान किया स्नान करतेही संपूर्ण हत्या दूरहुई इसी अवसरमें शिवजी वहां प्रकट हुये औ कालरुद्रसे कहा कि अब संपूर्ण ब्रह्म-

हत्या तुमसे निवृत्त हुई अब इस कपालको काशी में किसी स्थान में रखदो इतना कह शिवजी तो अन्तर्द्धान हुये औ कालरुद्र काशी में आये वहां एक स्थान में वह कपाल स्थापन किया वह स्थान कपालतीर्थ के नाम से प्रसिद्ध हुआ सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! मुक्तिके देनेहारे औ महापातक नरक क्लेश औ महादुःख के हरनेहारे शिवतीर्थका माहात्म्य हमने वर्णन किया जो इसको पढ़ै अथवा सुने वह सब दुःखों से छूटै ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

शंखतीर्थका माहात्म्य औ वत्सनाभमुनिकी अद्भुत कथा ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! शिवतीर्थ में स्नानकर शंखतीर्थ में जाना चाहिये शंखतीर्थ में स्नान करनेसे कृतघ्न औ माता पिता का अनादर करनेहारे दुष्टपुरुष भी शुद्ध होजाते हैं पूर्व कालमें शंखमुनिने विष्णुभगवान्की प्रसन्नता के लिये गंधमादनपर्वत में तपकिया औ अपने नामसे तीर्थ भी बनाया उसीका नाम शंखतीर्थहुआ वहां स्नान करनेसे कृतघ्न पुरुषभी शुद्धहोते हैं इसमें एक प्राचीन इतिहास हम कहते हैं जिसके सुनने से मनुष्य मुक्तिपावै पूर्वकाल में बड़ेतपस्वी दयालु शीलवान् औ ब्रह्मनिष्ठ वत्सनाभनाम एक मुनिहुये हैं उनने ऐसा उग्रतपकिया कि एक आसन बैठे सैकड़ोंवर्ष बीतगये औ शरीर के ऊपर बल्मीक अर्थात् सर्पकी बांबी बनगई परंतु मुनि आसनसे न हिले उनके तप भंग करने के लिये इन्द्रने सातदिन तक अतिघोर वृष्टि की परंतु वत्सनाभमुनि उस मूसलधार वर्षा को सहगये औ आसनसे न उठे तब इन्द्रने एक बिजुली डाली जिससे मुनि के ऊपरका बल्मीक बिखरगया परंतु तप के प्रभावसे मुनि बच गये फिर दिन राति मुनिके शरीरपर वृष्टि होनेलगी तब धर्मके मनमें दयाआई कि देखो यह मुनि बड़ामहात्मा है जो इस दा-

रुण वर्षा में भी तप नहीं छोड़ता इसलिये इसकी रक्षा करनी चाहिये यह मन में विचार बड़ेभारी महिष का रूपधार धर्म्मराजमुनि के ऊपर जाय खड़े हुये औ अपनी पीठपर वर्षाकी धार सहने लगे सातदिन प्रचंडवृष्टि करके इन्द्र चलेगये तब महिषरूप धर्म भी मुनि के ऊपरसे हटकर एक ओर जाय खड़े हुये मुनिकी समाधि खुली तब चारोंओर देखा कि वर्षासे पर्वतों के शिखर औ हजारों वृक्ष टूटे पड़े हैं मुनियों के आश्रम जलमें डूब रहे हैं चारोंओर जलहीजल दिखाई देता है यह देख वत्सनाभमुनि बहुत प्रसन्न हुये कि ऐसी वृष्टि में भी हमने तप न छोंड़ा फिर सोचा कि अवश्य किसी महात्मा ने इस विपत्ति में हमारी रक्षा करीहै नहीं तो जीव क्योंकर बचता यह विचार मुनि ने चारोंओर दृष्टि की तो देखा कि सम्मुख एक नीलवर्ण अति ऊंचा महिष खड़ा है उसको देख मुनि ने कहा कि देखो कोई २ पशुभी कैसे धर्मात्माहोते हैं इस महिषनेही मुझे इस महावृष्टि से बचाया परमेश्वर इसकी दीर्घआयुष् करै औ यह महात्मा महिष सदा सुखी रहै यह कहकर वत्सनाभमुनि फिर तप करने लगे यह मुनिकी तपमें निष्ठादेख धर्मरूप महिष के सब शरीर में आश्चर्य से रोमांच होगया वत्सनाभमुनि तपमें प्रवृत्त हुये परन्तु पहली भांति परमेश्वरमें चित्त न लगा तब मुनि विचारने लगे कि पापसे मन चंचल होताहै परन्तु हमने कोई पाप नहीं किया फिर हमारा मन क्यों चंचल होरहा है सोचते २ मनकी स्थिरता का कारण मुनि जानगये औ कहने लगे कि मुझ सरीखे कृतघ्न को धिक्कार है ऐसे दुरात्मा कृतघ्न का क्योंकर तप में मन लगै देखो इस महात्मा महिषने मेरे प्राण बचाये इसका पूजन विना किये मैं तपमें प्रवृत्त हुआ यह कृतघ्नता दोष मुझ पर लगा इसी पापसे मेराचित्त मलिन हुआ कृतघ्नपुरुष नरक को जाते हैं किसीप्रकार कृतघ्न का उद्धार नहीं होसक्ता माता

पिता की सेवा न करै गुरु को दक्षिणा न देवै औ कृतघ्नता करै उनके लिये प्राण त्यागके विना और कोई प्रायश्चित्त नहीं इस लिये मैं भी इस पापके प्रायश्चित्त के अर्थ प्राण त्यागताहूं यह मनमें निश्चय कर वत्सनाभमुनि एक पर्वत के ऊंचे शिखर पर चढ़े औ प्राण त्यागने के लिये वहां से गिरना चाहा तब धर्म्म महिष का रूप छोंड़ मुनि के समीप गये औ कहा कि हे वत्सनाभ! प्राण मतत्याग बहुत वर्ष जीतारह तेरे समान कोई धर्मनिष्ठ नहीं मैं धर्महूं औ तेरी निष्ठा देख बहुत प्रसन्नहुआ हूं यद्यपि प्राण त्यागने विना कृतघ्नकी निष्कृति नहीं होती परन्तु तू धर्मनिष्ठ है इसलिये तुझे एक सुगम उपाय बताता हूं गन्धमादनपर्वत में शंखतीर्थ है वहां जाय तू स्नानकर तब शुद्ध होजायगा औ चित्त भी निर्म्मल होजायगा तब तू दिव्यज्ञान पाय मुक्त होगा हे योगीन्द्र! मैं धर्महूं औ तुझसे सत्य कहता हूं यह धर्म का वचन सुन वत्सनाभमुनि गन्धमादनपर्वत को चले वहां पहुंच शंखतीर्थ में स्नान किया स्नान करतेही मन निर्मल होगया फिर बहुत कालतक वत्सनाभमुनि जीतेरहे अंत में दिव्यज्ञान पाय मुक्तहुये सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! यह शंखतीर्थ का वैभव हमने वर्णन किया जिस तीर्थ में स्नानकरने से कृतघ्नभी शुद्धहोजाय माता पिताका पोषण न करै गुरुदक्षिणा न देवै औ कृतघ्नता करै उनकी निष्कृत मरणके विना नहीं हो सक्ती परन्तु इसतीर्थ में स्नान करने से ये सब निष्पाप होजाते हैं शंखतीर्थ में स्नान करने से कृतघ्नता दूर होजाती है और पापों की तो कथाही क्या है जो पुरुष इस अध्याय को पढ़ै वह सब पापों से छूट शुद्ध चित्तहो सत्यलोक को जाताहै वहां बहुत काल ब्रह्माजी के समीप सुखपूर्वक निवास कर मुक्ति पाताहै ॥

छब्बीसवां अध्याय॥

गङ्गातीर्थ यमुनातीर्थ औ गयातीर्थ का माहात्म्य रैक्वमुनिका विचित्र इतिहास औ जातश्रुतिराजा की अद्भुत कथा॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! शंखतीर्थ में स्नानकर गंगातीर्थ यमुनातीर्थ औ गयातीर्थको क्रमसे जाय ये तीनतीर्थ तीनों लोकों में प्रसिद्धहैं औ स्नान करनेहारे मनुष्य को सब प्रकार के पाप रोग अज्ञानआदि हरकर मोक्षदेते हैं इनतीर्त्थों में स्नान कर जातश्रुतिनाम राजा ने रैक्वमुनि से दिव्यज्ञानपाया यह सूतजीका वचन सुन शौनकआदि मुनियोंने पूंछा कि हे सूतजी! गंगा यमुना औ गया गन्धमादनपर्व्वत में क्योंकर आईं औ इनतीनों में स्नानकर महाराज जातश्रुतिने रैक्वमुनि से दिव्यज्ञान किसविधि पाया यह आप वर्णनकरैं तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! पूर्वकालमें रैक्वमुनि गन्धमादनपर्वतमें तप करते थे वे मुनि जन्मसे पंगुथे इसलिये दूरके तीर्थों में नहीं जासक्ते थे केवल गंधमादन के तीर्थों में शकट अर्थात् गाड़ीपर चढ़कर जायाकरते औ तपोबल से उनने आयुष् भी बहुत पाया शकट का नाम युग्यभी है रैक्वमुनि शकट पर चढ़े फिरते इसलिये उनको लोग सयुग्यभी कहते ग्रीष्मऋतु में पंचाग्नि में वर्षाऋतु में कंठप्रमाण जल में तप करते करते शरीर शुष्क होगया औ संपूर्ण देहमें पामा अर्थात् खुजली होगई परन्तु मुनिने तप न छोड़ा खुजलीभी खुजलाते औ तपभी करते एक समय रैक्वमुनि की इच्छाहुई कि गंगा यमुना औ गयाके दर्शन औ इनमें स्नान करना चाहिये परन्तु हम जन्मके पंगु क्योंकर जायसकैं औ हमारा शकट भी इतनी दूरजाने के योग्य नहीं फिर विचारा कि हमको बड़ाभारी तपोबल है इसलिये इनतीर्थों को यहांहीं आवाहनकरते हैं यह मनमें निश्चयकर पूर्वाभिमुख बैठ तीन आचमनकर मंत्रबलसे तीनों तीर्थों का आवाहन किया क्षणमात्र में

भूमि को भेदनकर गया गङ्गा औ यमुना की तीन धारा पाताल से निकलीं औ तीनों मनुष्य का रूपधार रैक्कमुनि से बोलीं कि हे रैक्कमुनि! तुम्हारे मन्त्र से खिंचीहुई हमतीनों आगईं अब जो तुम कहो सो करैं यह उनका वचन सुन मुनिने ध्यानछोंड़ नेत्रखोले औ तीनों तीर्थोंको सम्मुख खड़े देख प्रसन्नहुये औ भक्ति से उन का पूजन कर यह प्रार्थनाकरी कि तुम तीनों इस गन्धमादन पर्वतमें निवासकरो भूमिको भेदनकर तुम तीनों जहां निकलीहो वे तुम्हारे नामसे बड़े तीर्थ होयँ यह मुनिका वचन सुन (तथास्तु) कहकर तीनों अन्तर्द्धान हुईं उस दिनसे तीनोंतीर्थ गन्धमादन पर्वतमें आये औ जहां २ वे निकलीं उनका नाम क्रम से गंगा-तीर्थ यमुनातीर्थ औ गयातीर्थ हुआ ये तीनों तीर्थ रैक्कमुनि के प्रभावसे गन्धमादन में प्रकट हुये जो पुरुष इन तीर्थों में स्नान करै वह अवश्यही दिव्यज्ञान पावै रैक्कमुनि भी अपने आवाहन किये तीर्थोंमें नित्यस्नान करते औ तप करते इसी अवसरमें बड़ाधर्मात्मा जातश्रुतिनाम राजाथा वह सदा ब्राह्मणों को धन औ अन्न बड़ीश्रद्धासे देता इसलिये उस राजाको लोक श्रद्धा-देयभी कहते औ अन्नआदि देनेके समय राजा बहुत मधुरवाक्य याचकोंसे कहता इसलिये उसको बहुवाक्यभी कहते वह राजा जातश्रुतिका पुत्र औ पुत्रनाम राजाका पौत्रथा नगर ग्राम वन चतुष्पथआदि सब स्थानों में उस राजाने अन्नके सदाव्रत लगा दिये सब देशोंमें यह घोषणा करादी कि जिसको अन्नपान चाहिये वह हमारे सदाव्रतों में आवै इसप्रकार अतिदानी राजाके गुण सर्वत्र प्रसिद्ध होगये तब राजाके ऊपर अनुग्रह करने के लिये देवर्षि हंसोंका रूपधार पंक्तिबांध ग्रीष्मऋतु में रात्रि के समय राजा के ऊपर से उड़ २ जाने लगे उनमें से पिछला हंस राजा को सुनाकर अगले हंस से हँसकर बोला कि हे भल्लाक्ष! आगे नहीं देखता औ उड़ाही चला जाता है राजाजातश्रुति आगे

महल पर है इसका पूजन बिना किये अन्धे की भांति चलाही जाताहै ब्रह्मलोक पर्यंत जिसका दुराधर्ष तेज व्याप्त होरहा है जो तू इस राजर्षि को उल्लंघन करके जायगा तो इसका अति जाज्वल्यमान तेज तुझे दग्ध करदेगा यह सुन अगला हंस कहनेलगा कि रे मूढ़! इस धूर्तकी तू क्यों प्रशंसा करताहै यह तो पशुके तुल्य है लोहार की धौंकनी की भांति वृथा श्वास लेताहै यह राजा धर्म्म का रहस्य कुछ भी नहीं जानता जिस प्रकार रैक्कमुनि जानताहै ऐसा धर्म्मतत्त्व और कोई नहीं जानता रैक्कमुनिके पुण्यकीइयत्ता कौन करसक्ताहै आकाश के तारे औ भूमि के पांशु भी गिनसक्के हैं परन्तु रैक्कमुनि के पुण्यकी गणना नहीं होसक्ती यज्ञ दानआदि धर्म्म सब नश्वर अर्थात् नाश होने वालेहैं केवल ब्रह्मज्ञानही स्थिर रहता है वह ब्रह्मज्ञान रैक्कमुनि ने पाया इसलिये वह प्रशंसा के योग्यहै औ इस राजाका धर्म भी कुछ प्रशंसा के योग्य नहीं ज्ञानकी तो बातही दूर है ज्ञान योगियोंको भी दुर्लभहै इसलिये इस तुच्छराजा की क्या प्रशंसा करता है रैक्कमुनिकी प्रशंसाकर रैक्कमुनि जन्मसे पंगु है इसलिये उसने अपने आश्रमके समीप गया गंगा औ यमुना का आवाहन मन्त्रसे किया रैक्कमुनि के धर्म में त्रैलोक्य के धर्म्म समा जाते हैं औ ब्रह्मवेत्ता रैक्कमुनिका धर्म्मसमूह तीनलोकके भी धर्मों में नहीं समासक्ता इसप्रकार कहतेहुये वे हंसरूप ऋषि ब्रह्मलोकको चलेगये राजाने भी सब प्रशंसा रैक्कमुनि की सुनी औ उदास होकर विचार किया कि देखो हंसने मुझे निकृष्ट कहा औ रैक्कमुनि की इतनी प्रशंसाकरी धन्यहै रैक्कमुनि जिसको पक्षी भी सराहते हैं अब मुझे भी यही उचित है कि राज्यछोड़ रैक्कमुनिकी शरणमें जाऊं वह दयालुमुनि शरण में प्राप्तहुये मुझको अवश्य ही ज्ञानोपदेश करैगा इसप्रकार शोचविचार करते किसीप्रकार वह रात्रि राजाने व्यतीत की औ प्रभात हुआ बन्दीलोग राज-

स्तुति पढ़नेलगे अनेकप्रकारके बाजे बाजनेलगे राजाभी शय्या से उठा औ सारथीको बुलाकर आज्ञादी कि क्षेत्र वन नदियों के तट औ तीर्थआदि सब स्थानों में जहां २ मुनियों के आश्रमहोयँ वहां २ सब धर्मोंके आश्रम ब्रह्मवेत्ता रैक्कमुनि को ढूंढ़ो रैक्कमुनि जन्मसे पंगुहैं इसलिये गाड़ीमें चढ़े तीर्थों में घूमते हैं उनकापता लगाय शीघ्र हमारे पास आवो यह राजाकी आज्ञापाइ सारथी रैक्कमुनि को ढूंढ़ने निकला पर्वतों की गुफाओं में नदियों के तटों पर मुनियों के आश्रमों में रैक्कमुनिको ढूंढ़ता २ गन्धमादनपर्वत में पहुंचा वहां देखा कि रैक्कमुनि शकटपर बैठेहुये पामा को खुजलायरहे हैं औ निरन्तर ब्रह्मानन्द में मग्नहैं सारथीने भी लक्षणोंसे पहिचाना कि येही रैक्कमुनि होंगे औ उनके समीप जाय प्रणामकर पूंछा कि रैक्कमुनि आपही हैं मुनिने कहा कि हां भाई मैंहीं रैक्कमुनिहूं सारथी ने मुनिकी बात चीतों से यह भी जाना कि कुटुम्बके पोषण के लिये इनको धनकी इच्छा है इसप्रकार सारथी ने रैक्कमुनिका ठिका ।लगाय सब वृत्तांत आकर राजा से कहा राजा भी सुनकर बहुत प्रसन्नहुआ औ छःसौ उत्तम गौ एकभार सुवर्ण औ एक बहुत उत्तम रथ जिसमें अश्वतरीं अर्थात् खच्चर जोत रक्खी थीं मुनिके लिये अपने संगलेकर चला कुछ दिनोंमें गन्धमादन में पहुंच रैक्कमुनि के समीप जाय प्रणामकर प्रार्थना की कि महाराज ये छःसौ बहुत उत्तम गौ एक भार सुवर्ण औ दो अश्वतरियोंके करके युक्त रथ आप ग्रहण करैं औ मुझे अद्वैत ब्रह्मज्ञान उपदेश करैं यह राजाका वचन सुन रैक्कमुनि बोले कि हे राजन्! इस धनको तूही रख इस थोड़े धनसे हमारा निर्वाह नहीं होसक्ता कई कल्प हमको जीना है इतने धन से हमारे कुटुम्बका निर्वाह क्योंकर होय यदि इससे सौगुणा धनभी होय तौ भी हमारे लिये थोड़ा है यह सुन राजा बोला कि महाराज मैं यह धन आपको ब्रह्मज्ञान का

मौल्य नहीं देता आप धनलेवैं चाहे मत लेवैं परन्तु कृपाकर मुझे निष्कल अद्वैत ज्ञानका उपदेश करैं यह राजा का वचन सुन मुनि कहने लगे कि हे राजन्! जो पुरुष संसार से विरक्त होय औ जिसके पाप पुण्यआदि प्रारब्ध नाशको प्राप्त होजायँ वह ज्ञानोपदेश का अधिकारी होताहै पुण्य पाप आदि से पुनर्जन्म होताहै यद्यपि तू संसार से विरक्त हुआहै परन्तु पुण्य पाप का क्षय नहीं हुआ भोगकिये विना उसका क्षयनहीं होता हे राजन्! तू हमारी शरणमें प्राप्तहुआ है इसलिये हम तुझे पुण्य औ पाप के क्षयका उपाय बताते हैं हमारे आवाहन किये ये तीनतीर्थ हैं इनमें स्नान करने से प्रारब्धकर्म्म का नाश होताहै इसलिये तू भी गंगातीर्थ यमुनातीर्थ औ गयातीर्थ में स्नानकर जिससे तू शुद्धचित्त होजाय तब हम ज्ञान उपदेश करैंगे यह मुनि की आज्ञापाय प्रसन्नहो राजा ने तीनों तीर्थों में स्नान किया स्नान करतेही राजाका चित्त निर्मल होगया औ स्नानकर रैक्वमुनि के समीप आया तब मुनिने राजाको दिव्यज्ञान का उपदेश किया राजा भी दिव्यज्ञान के पातेही ब्रह्मरूप होगया औ माया का आवरण दूरहो सर्वत्र घट कुड्य कुसूलआदि पदार्थों में भी ब्रह्मदृष्टि होगई इसप्रकार तीनोंतीर्थों में स्नानकर राजाने वह दिव्यज्ञान पाया जो मुनियों को भी दुर्लभहै हे मुनीश्वरो! यह तीन तीर्थोंका प्रभाव हमने वर्णन किया जो इस अध्यायको पढ़ै वह मायाको जीत ब्रह्मरूप होता है॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

कोटितीर्थका माहात्म्य औ श्रीकृष्णभगवान् करके कंसवधका वर्णन॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! गंगा आदि तीनोंतीर्थों में स्नानकर कोटितीर्थ को जानाचाहिये कोटितीर्थ सब पापों के विघ्न औ दुःस्वप्नका नाश करनेहारा है सब प्रकार की सम्पत्ति

पुण्य औ शांतिको देताहै कोटितीर्थके स्मरणमात्रसे सब पाप कट जाते हैं वह तीर्थ रामचन्द्रजीने अपने धनुष्की कोटि अर्थात् अ-ग्रभाग करके बनाया है रामचन्द्र रावण को मार कर आये तब ब्रह्महत्या निवृत्त होने के लिये गन्धमादनपर्वत में एक शिव-लिंग उनने स्थापन किया उस शिवलिंगके स्नानके लिये वहां जल न मिला तब रामचन्द्रजी ने गंगा का स्मरण कर ध-नुष् की कोटि करके भूमि को भेदन किया वह धनुष् का अग्र पाताल तक पहुँचा उसको रामचन्द्रजी ने भूमिसे खैंचा उसके साथही गंगाकी धारा निकली तब उस दिव्यजलसे रामचन्द्रजी ने अपने स्थापनकिये लिंगको स्नानकराया रामचन्द्रजी ने ध-नुष्की कोटिसे यह तीर्थ बनाया इसलिये कोटितीर्थ कहाया गन्ध-मादन के सब तीर्थों में स्नानकर शेषपाप की निवृत्ति के लिये कोटितीर्थ में स्नान करनाचाहिये अनेक जन्मके संचित बड़े बड़े पाप जो और तीर्थों में नहीं नष्टहोते वे कोटितीर्थ में स्नानकर-तेही निवृत्त होजातेहैं जो पुरुष प्रथम कोटितीर्थमेंही स्नानकरै उसको और तीर्थों में स्नानकरना वृथाहै यह सुन शौनकआदि मुनि बोले कि हे सूतजी ! हमको एक बड़ासंशय उत्पन्न हुआ उ-सको आप निवृत्तकीजिये कोटितीर्थ में स्नानकरे पीछे और तीर्थ वृथाहैं तो धर्मतीर्थआदिमें मनुष्य क्यों भटकते फिरैं सब तीर्थों को छोड़ पहिले कोटितीर्थमेंही सब स्नान कियाकरैं और तीर्थोंमें न जायँ फिर मनुष्य और तीर्थोंमें क्यों जातेहैं यह सन्देह आप निवृत्त करैं यह मुनियोंका प्रश्न सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मु-नीश्वरो ! आपने बड़े रहस्य की बात पूंछी जो शिवजीने नारद से कहा वह हम वर्णन करते हैं आप श्रद्धा से श्रवणकरो किसी तीर्थ को जाताहुआ मनुष्य मार्ग में जो तीर्थ देवालय आदि मिलैं उनका सेवन न करै तो वह नरकको जाय यह शास्त्रका निश्चय है इसीभांति कोटितीर्थ को जानेके समय जो गन्धमादनके और

तीर्थों में न स्नानकरै वह चांडाल के तुल्यहोय इसलिये हे मुनी-श्वरो! चक्रतीर्थआदि सब तीर्थोंमें स्नान करना चाहिये निष्पाप होकर कोटितीर्थ में स्नानकरे कोटितीर्थ में स्नानकर गन्धमादनपर्वत में क्षणमात्रभी न रहै निष्पाप होकर अपने स्थानको जाय रामचन्द्रजी भी कोटितीर्थ के जलसे स्नानकर और रामनाथको स्नानकराय ब्रह्महत्यासे मुक्तहो सुग्रीवआदि वानरों सहित पुष्पकविमान में बैठ तत्काल अयोध्याको चलेगये थे इस कारण कोटितीर्थ में स्नानकर निष्पापहो उसी क्षण अपने स्थान को जाना चाहिये यह कोटितीर्थ सब तीर्थों में उत्तमहै जो रामचन्द्र जीने रामनाथ लिंगके स्नानकेलिये बनाया जिसमें साक्षात् गंगा निवास करती हैं औ जिस तीर्थ में साक्षात् तारकब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी ने स्नानकिया जिस तीर्थ में स्नानकर श्रीकृष्ण भी अपने मातुल कंसकी हत्यासे छूटे उस कोटितीर्थकी महिमा कौन वर्णन कर सक्ताहै इतनी कथा सुन ऋषियों ने पूंछा कि हे सूतजी! श्रीकृष्णभगवान् ने अपने मातुल कंसको किसकारण मारा औ उसकी हत्यासे क्योंकर छूटे यह आप वर्णनकरैं तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! यदुके वंशमें शूरका पुत्र वसुदेव हुआ है वसुदेवने देवककी पुत्री औ कंसकी बहिन देवकी से विवाह किया विवाहके अनन्तर वसुदेव देवकी रथमें बैठे औ कंस रथको हांकने लगा उस अवसर में आकाशवाणी हुई कि हे कंस! जिस बहिनको तू रथमें बैठाये लियेजाताहै इसकी आठवींसंतान तुझे मारैगी यह आकाशवाणी सुन कंसने खड्ग निकाला औ देवकी को मारने की इच्छाकी तब वसुदेव बोले कि हे कंस! इसतेरी बहिन में जो सन्तान होगी हम सब तुमको देदेंगे उसीको वधकरना इसको मत मारो इससे तुमको कुछ भय नहीं यह वसुदेवका वचन मान कंसने देवकी को न मारा परन्तु वसुदेव औ देवकी को बेड़ी पहिनाय बंदीखाने में रखदिया देवकी में क्रमसे छःपुत्र

उत्पन्नहुये वे सब वसुदेव ने कंसके अर्पण किये औ कंसने भी उन सबको वध किया सातवांगर्भ देवकी के फिररहा उसमें शेषजीका अंशथा तब महामाया विष्णुभगवान् की प्रेरणा से उस गर्भको देवकी के उदर से निकाल नन्दगोप की पत्नी रोहिणी के उदर में रखआई औ लोकमें यह प्रसिद्ध हुआ कि देवकी का गर्भ गिरगया फिर देवकी के आठवांगर्भरहा उसमें साक्षात् विष्णुभगवान् थे दशमास पूरे होनेपर देवकी के गर्भ से विष्णु भगवान्का अवतार हुआ वह बालक चारोंभुजाओंमें शंख चक्र गदा खड्ग धारे मुकुट औ वनमाला से भूषित था उस विष्णुरूप बालकको देख अति हर्षितहो वसुदेवजी स्तुति करनेलगे॥

वसुदेवउवाच । विश्वंभवान्विश्वपतिस्त्वमेव विश्वस्ययोनिस्त्वयिविश्वमास्ते । महान्प्रधानश्चविराट्स्वराट्च सम्राडसित्वंभगवन्समस्तम् १ एवंजगत्कारणभूतधाम्ने नारायणायामितविक्रमाय। श्रीशार्ङ्गचक्रासिगदाधराय नमोनमःकृत्रिममानुषाय २॥

इसप्रकार स्तुतिसुन प्रसन्नहो श्रीभगवान् बोले कि हे पिता! हम कंसको मारेंगे आप कुछ भय मतकरो नन्दगोप की पत्नी यशोदामें कन्यारूप हमारी माया उत्पन्न हुईहै अब आप हमको यशोदाकी शय्यामें रखआवो औ उस कन्याको यहांलाय देवकी केसमीप सुलादो वसुदेवजीने भी इसीभांति सबबात करी कन्या को लाकर देवकीकी शय्यामें रखदिया थोड़ीदेर में कन्या रोदन करनेलगी उसका रोना सुन घबड़ाकर कंस वहां आया औ उस कन्याको उठाय एकशिलापर पटका परन्तु वह कन्या उसके हाथ से छूटकर आकाशमें गई औ कंससेकहा कि रे मूढ़ पातकी! तेरा शत्रु उत्पन्न होगया है उसको ढूंढ़कर मार इतना कह वह महामाया अपने स्थानको गई जो पूजन करनेसे मनुष्यों के मनोरथ

सिद्ध करती हैं कंस भी महामायाका वचनसुन बहुत व्याकुल हुआ औ पूतनाआदि बालग्रहोंको आज्ञादी कि बालकोंको मारो वे भी गोकुल में गये परन्तु कृष्णभगवान् ने सबको यमलोक पहुंचाया बलदेव औ कृष्ण दोनों भाई दिन २ वृद्धिको प्राप्त होनेलगे अनेकप्रकार की बालक्रीड़ा करते वंशी बजाते मोरमुकुट धारते गोपोंके साथ गौ चराते कंसभी उनके सब व्यवहार सुनकर भयभीतथा एक समय कंसने अक्रूर को भेज बलदेव औ श्रीकृष्णचन्द्रको बुलाया वे भी अक्रूर के साथ मथुरा में पहुंचे वहां मार्ग में देखा कि एक बड़ाभारी धनुष् है उसकी ज्या को सब चढ़ाते हैं परन्तु किसी से नहीं चढ़ती तब बलदेवजी ने उस धनुष् को उठाकर ऐसा खैंचा कि दो टुकड़े होगये तब वे धनुष् के रक्षक बलदेव औ श्रीकृष्णजी को मारने दौड़े परन्तु इन दोनों भाइयों ने उनसबका संहार किया औ धनुष्के दोनों खण्ड हाथ में ले आगे चले कंसके द्वारपर कुबलयापीड़ नाम मस्ताहाथी खड़ाथा वह इनको मारने आया परन्तु इनने उस हाथी को भी मार गिराया औ उसके दांत उखाड़ कर दोनों भाइयों ने हाथ में लिये आगे कंसके भेजेहुये बड़े बली कई मल्ल मिले उन सबको भी मारा औ कंसके समीप पहुंचे कंस भी एक बड़े ऊंचे सिंहासनपर सभामें बैठाथा श्रीकृष्णचन्द्रने जातेही कंसके पैर पकड़ सिंहासन से नीचे गिराया औ यमलोक को पहुंचाया कंसके आठभाई थे उनके बलदेवजी ने एक २ मूका मार प्राणलिये इसप्रकार कंसका संहार कर अपने माता पिता देवकी औ वसुदेवको बन्दीखानेसे छुटाया औ सबका आश्वासन किया औ उग्रसेन को मथुराका राज्य दिया इसप्रकार देवता औ ब्राह्मणों के शत्रु अपने मातुल कंसको मारा एकसमय नारद आदि देवऋषि श्रीकृष्णभगवान् के दर्शनों को आये उनको सत्कार से पूजनकर श्रीकृष्णचन्द्रने आसनपर बैठाया औ यह

पूंछा कि हे मुनीश्वरो! हमने अपने मातुल कंसका वधकिया इस लिये आप कोई प्रायश्चित्त हमको बताओ जिससे यह हत्या दूरहोय यह श्रीकृष्णभगवान् का बचन सुन नारदजी कहने लगे कि आप नित्य शुद्धबुद्धि सच्चिदानन्दस्वरूप साक्षात् परमात्माहैं आपको पुण्य औ पाप नहीं लगसक्ता तौ भी लोक मर्य्यादा के लिये आपको प्रायश्चित्त करना चाहिये दक्षिणसमुद्रमें रामसेतु के बीच गन्धमादनपर्वत में रामचन्द्रजी ने रामनाथ नाम शिवलिंग स्थापन किया औ उसके अभिषेक के लिये अपने धनुष् की कोटि करके तीर्थ रचा उस कोटितीर्थ में स्नान कर रावण के वध का पातक रामचन्द्रजीने निवृत्त किया उस तीर्थ में आपभी स्नानकरैं तो यह मातुलहत्या निवृत्त होगी कोटितीर्थ में स्नान करनेसे ब्रह्महत्याआदि पातक निवृत्त होते हैं औ आयुष् आरोग्य औ ऐश्वर्यकी प्राप्ति होती है यह नारद का बचन सुन उन मुनियों को सत्कारपूर्वक विसर्जनकर श्रीकृष्णचन्द्र कोटितीर्थ को चले वहां पहुंच संकल्प कर तीर्थ में स्नान किया औ अनेकदान दिये तब मातुलहत्या निवृत्त हुई श्रीकृष्णचन्द्रभी निष्पाप हो रामनाथका दर्शनकर मथुराको आये हे मुनीश्वरो! कोटितीर्थ का ऐसा प्रभाव है कोटितीर्थ के समान तीर्थ भूमण्डल में दूसरा नहीं है इस तीर्थ में स्नान करने से ब्रह्मा विष्णु शिवआदि सब देवता प्रसन्न होते हैं हे मुनीश्वरो! इस अध्याय को जो पढ़ै अथवा श्रवणकरै वह ब्रह्महत्याआदि पापों से छूट मुक्ति पाता है ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

साध्यामृततीर्थ का माहात्म्य औ उर्वशी पुरूरवा की विचित्रकथा ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! कोटितीर्थ में स्नानकर साध्यामृत नाम तीर्थ को जाय सब पाप दुःख औ दरिद्र का हरने

हारा औ सब मनोरथ सिद्ध करनेहारा वह तीर्थ गन्धमादन में है तप व्रत ब्रह्मचर्य यज्ञ दान आदि से वह गति नहीं प्राप्तहोती जो साध्यामृततीर्थ में स्नान करने से मिलती है उस तीर्थ का जल स्पर्श होतेही सब पाप नष्ट होजाते हैं जो पुरुष साध्यामृत के जलमें अघमर्षण करै वह निष्पाप होकर विष्णुलोक को जाता है पापीमनुष्य भी साध्यामृततीर्थ में स्नानकर नरक को नहीं जाते साध्यामृततीर्थ में जबतक अस्थि पड़ी रहै तबतक वह जीव शिवलोक में निवास करे जिस प्रकार सूर्य्य अंधकार को दूर करते हैं इसी भांति साध्यामृततीर्थ पापहरण में समर्थ है जिस तीर्थमें स्नानकर राजा पुरूरवा तुम्बुरु के शापसे छूटा औ फिर भी उसका उर्वशी से समागम हुआ यह सुन ऋषियों ने पूंछा कि हे सूतजी ! मनुष्य होकर राजापुरूरवा ने उर्वशी क्योंकर पाई औ तुम्बुरुने किस हेतु राजाको शाप दिया यह आप विस्तार से वर्णन करैं तब सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो ! पूर्वकाल में बड़ाप्रतापी औ धर्म्मात्मा पुरूरवा नाम राजा हुआ वह राजा बड़े २ यज्ञ करता औ दान देता था उसके राज्य करते २ उर्वशी नाम अप्सरा मित्रावरुण के शाप से मर्त्यलोक में आई औ राजापुरूरवा के नगर के समीप विचरने लगी औ एक उपवन में बैठ वीणा बजाती हुई मीठेस्वर से गानेलगी इस अवसरमें राजा भी घोड़े पर चढ़ उसी उपवनमें विहार करने गया उसने उर्व्वशी को देखा देखतेही राजा कामवश हुआ औ उर्वशी से कहा कि हे सुन्दरि ! मेरी भार्या होजा उर्वशी भी राजाका रूप देख मोहित होरही थी यह बोली कि जो आप मेरा एक नियम अंगीकार करैं तो मैं आप के समीप रहूं वह नियम यह है कि आप को कभी नग्न न देखूंगी कभी मुझे उच्छिष्ट मत देना औ केवल घृतही मैं भोजन करूंगी औ ये दो मेष अर्थात् भेड़े मेरे पुत्र के तुल्य हैं इनकी रक्षा करना

राजाने ये सब नियम स्वीकार किये औ उर्वशीको साथ लेकर राजधानी में आया औ उर्वशी के साथ आनन्द भोगने लगा उर्वशी का भी राजामें इतना अनुराग बढ़ा कि स्वर्गको भूलगई औ इकसठि वर्ष पुरूरवा के समीप बीत गये उर्व्वशी के विना स्वर्गभी शून्य दीखता था इसलिये विश्वावसुगन्धर्व्व ने विचार किया कि मैं उर्व्वशीको ले आऊं यह विचार कई गन्धर्व साथ ले विश्वावसु मर्त्यलोक में आया औ दोनों मेषों में एक मेष चुरा कर आकाश को उड़ा तब उर्वशी पुकारी कि मेरे पुत्र को कौन हरे लिये जाता है अब मैं क्या करूं राजापुरूरवा उर्वशी का पुकारना सुनकर भी न उठा कि मुझे नग्नको न देखै इतने में दूसरे मेष को भी एक गन्धर्व ले उड़ा उसका शब्द सुन उर्व्वशी बहुत व्याकुल हुई औ कहने लगी कि मैं अनाथहूं मेरे पुत्रको कोई लिये जाताहै अब मैं क्या करूं औ किसके शरण में जाऊं यह उर्व्वशीका दीन वचन सुन राजाने सोचा कि चारों ओर अन्धकार है मुझे नग्नको तो नहीं देख सकती इसलिये मेषों की रक्षा करनी चाहिये यह विचार खड्गलेकर खड़ा हुआ औ ललकारा कि रे दुष्ट! खड़ा रह भागने न पावेगा इसी अवसर में गन्धर्व्वों ने बिजली चमकाकर प्रकाशकर दिया तब उर्व्वशीने राजाको नग्न देखा देखतेही अपने नियमके अनुसार उर्वशी स्वर्गको चलीगई गन्धर्व भी दोनों मेष छोंड़कर उर्वशी के साथ गये राजा मेषों को लेकर प्रसन्न होताहुआ अपनी शय्या के समीप आया परन्तु उर्वशीको न पाया तब राजा विरह से व्याकुलहो उन्मत्त की भांति पृथिवी पर भ्रमण करने लगा कुछ कालमें कुरुक्षेत्र पर पहुंचा वहां देखा कि एक कमलों करके शोभित सरोवरमें चार अप्सराओं समेत उर्वशी जलक्रीड़ा कर रहीहै राजा देखतेही प्रसन्न होगया औ कहनेलगा कि हे प्राणप्यारी! मुझे छोंड़ कहां चलीआई तब उर्वशी बोली कि हे महा-

राज आपसे मुझमें गर्भ रहाहै इसलिये आप एक वर्षके अनन्तर इसी स्थानमें आना तब मैं आपके साथ एक रात्रि रहूंगी औ आपका पुत्र आपके अर्पण करूंगी यह सुन प्रसन्नहो राजा अपनी राजधानी को आया उर्वशी ने अपनी सखियों से कहा कि हे सखियो! यह वही उत्तम पुरुषहै जिसके समीप मैंने सुख पूर्वक कालक्षेप किया और अब भी जिसके विरह से व्याकुल रहतीहूं यह उर्वशीका वचन सुन सखियोंने भी कहा कि जो ऐसे पुरुष का समागम हमको होजाय तो कभी स्वर्ग्ग को न जायँ उसीके समीप रहैं एक वर्ष बीतने पर राजा भी वहां आया औ गंधर्वों सहित उर्वशी भी वहाँ आई उर्वशी ने एक बालक राजा को दिया औ एक रात्रि राजाके साथ रही औ फिर गर्भवतीहुई जिससे पांच पुत्र उत्पन्न होयँ ऐसा गर्भ धारण किया औ राजा से यह भी कहा कि इन गंधर्वों से वर मांगो ये आपको अवश्य वर देंगे तब राजाने गन्धर्वों से कहा कि सम्पूर्ण शत्रु मैंने जीत लिये खजाना पूर्ण है अब यही वर चाहता हूं कि उर्वशी के साथ रहूं तब गन्धर्वों ने प्रसन्नहो एक अग्निस्थाली राजाको दी औ कहा कि हे राजन्! वेदकीरीति से इस अग्निके तीन भागकर यज्ञकरो तब उर्वशी के साथ तुम्हारा निवास होगा यह उनका वचन सुन अग्निस्थाली लेकर राजा अपने नगरको चला मार्गमें राजाने विचार किया कि मैं बड़ामूढ़ हूं कि उर्वशी तो न मिली औ इस अग्निस्थाली को लिये जाताहूं इसका मैं क्या करूंगा यह मनमें विचार उस स्थालीको उसी वनमें रख अपनी राजधानी में आया वहां आय रात्रिके समय शय्यापर सोये फिर विचार किया कि उर्वशी की प्राप्ति का उपाय मुझे गंधर्वों ने बताया औ अग्निस्थालीदी उसको मैं वनमें रखआया यह अच्छा नहीं किया फिर वनमें जाकर उसको लेआऊं यह मनमें निश्चयकर प्रभात होतेही राजा वनमें गया परंतु वहां वह

स्थाली न पाई परन्तु जहां स्थाली रक्खीथी उस स्थानमें एक पीपल का पेड़ औ उसके बीचमें शमीका वृक्ष लगा देखा तब राजाने विचार किया कि अग्निस्थाली से यह वृक्ष उत्पन्नहुआ इससे इस अग्निरूप वृक्षके काष्ठसे अरणी बनाय अग्नि उत्पन्न कर यज्ञकरना चाहिये यह निश्चय कर उस वृक्ष का काष्ठ ले अपने नगर में आया औ अरणी बनवाई अरणीबनाने के समय राजा गायत्रीमंत्र पढ़ता रहा औ गायत्री मंत्रके जितने अक्षर हैं उतने अंगुलकी अरणी बनवाई उससे अग्नि उत्पन्नकर वेदोक्त विधिसे राजाने हवन किया औ बहुतसे यज्ञ किये उनके प्रभावसे राजा गंधर्वलोक में प्राप्तहो उर्वशीके साथ विहार करने लगा एकदिन स्वर्गमें कुछ उत्सवथा सब देवताओंकी सभा लगीथी उसमें राजापुरूरवा भी बैठाथा औ क्रम २ से सब अप्सरा इन्द्रके आगे नृत्य करतीथीं इतनेमें उर्वशीभी नाचने उठी औ बड़े गर्वसे नाचने लगी नाचते २ राजापुरूरवा की ओर देख उर्वशी ने मंदहासकिया औ राजा भी उर्वशीसे नेत्र मिलाय कुछ हँसा यह दोनोंकी चेष्टादेख नाट्यके आचार्य तुम्बुरुने कोपकिया औ कहा कि इस देवसभामें तुम दोनों विना कारण हँसे इसलिये तुम्हारा परस्पर वियोग होगा यह वज्रके तुल्य तुम्बुरुका शाप सुन राजा बहुत दुःखीहुआ औ इन्द्रकी शरणमें जाय प्रार्थना करनेलगा कि महाराज उर्वशीकी प्राप्ति के लिये मैंने अनेक यज्ञ किये तब मुझे प्राप्तहुई अब आप ऐसी अनुग्रहकरैं जिससे मुझे वियोग दुःख न भोगनापड़े यह राजाका दीनवचन सुन इन्द्रने कहा कि हे राजन्! भयमतकर शापके निवृत्तका तुझे एक उपाय बताताहूं दक्षिण समुद्र में गन्धमादनपर्वत के बीच साध्यामृत नाम एक तीर्थ है जिसको देवता सिद्ध चारण गंधर्व ऋषिआदि सब सेवन करते हैं वह तीर्थ भुक्ति मुक्ति औ शाप मोक्षके देने हाराहै उसतीर्थमें स्नान करनेहारोंको अमृत अर्थात् मोक्षसध्यहै

असाध्य नहीं इसलिये उस तीर्थ का नाम साध्यामृतहुआ वहां जाकर स्नान करनेसे उर्वशीका समागम औ निरन्तर हमारेलोक में वासहोगा यह इन्द्रका वचन सुन राजा गंधमादनपर्वत को चला वहांजाय साध्यामृततीर्थमें स्नान किया स्नानकरतेही शाप मुक्त हुआ औ विमानमें बैठ स्वर्गको गया वहांजाय आनंदसे उर्वशीके साथ विहार करनेलगा हे मुनीश्वरो! साध्यामृततीर्थका ऐसा प्रभावहै कि जिसमें स्नान करने से राजापुरूरवाको फिर उर्वशी का समागम हुआ इसतीर्थ में स्नान करनेसे सब मनोरथ सिद्ध होतेहैं औ स्वर्गकी प्राप्ति होती है औ निष्कामहो स्नानकरै तो मोक्षपावै जो इस अध्यायको पढ़ै अथवा सुनै वह भी विष्णुलोकको जाय हे मुनीश्वरो! यह साध्यामृततीर्थ का प्रभाव हमने श्रद्धा से विस्तारपूर्वक आपको श्रवण कराया जो पूर्व कालमें ब्रह्माजीने सनत्कुमारआदिकों को उपदेश कियाथा॥

उन्तीसवां अध्याय॥

सर्वतीर्थका माहात्म्य औ सुचरितमुनिकी कथा जो नेत्रहीन थे॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! साध्यामृततीर्थ में स्नानकर सब पाप हरनेहारे सर्वतीर्थ में जाय सर्वतीर्थ में स्नानकरतेही पातक महापातक सब दूरहोजाते हैं पापीपुरुष के देहमें पाप तब तकही रहतेहैं जबतक सर्वतीर्थ में स्नान न करै उस तीर्थ को जानेके समय सब पाप कांप उठते हैं कि अब हमारा नाश होगा गर्भवासादि दुःखभी तबतकही हैं जबतक सर्वतीर्थ में स्नान न करै यज्ञ दान नियम से गायत्री मंत्रका जप चारोंवेद की सौ आवृत्ति शिव विष्णु आदि देवताओंकी पूजा औ एकादशी को निराहारव्रत करनेसे जो फल प्राप्तहोय वह सर्वतीर्थ में स्नान करनेसे मिलता है यह सुन मुनियोंने पूंछा कि हे सूतजी! उस

तीर्थका नाम सर्वतीर्थ क्यों हुआ यह आप विस्तारसे वर्णनकरैं तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो ! पूर्वकालमें भृगुवंश में उत्पन्न सुचरितनाम मुनिहुआ है वह जन्मसेही अंधाथा जन्म भर तपकिया वृद्धावस्था में मुनिकी इच्छा हुई कि सर्व तीर्थों में स्नान करना चाहिये परंतु तीर्थों में जानेकी सामर्थ्य नहीं इस लिये शिवजी का आराधन करना चाहिये यह मनमें निश्चयकर गन्धमादनपर्वत में शिवजीकी अनुग्रह के अर्थ सुचरित नाम मुनि तप करनेलगा तीनकाल स्नानकरके शिवपूजन करताअतिथियोंका सत्कार करता जाबाल्युपनिषद्की रीति से भस्मोद्धूलन औ रुद्राक्ष धारण करताग्रीष्ममें पंचाग्नितापतावर्षामेंशरीर पर वृष्टि सहता शीतकाल में जलशय्या करताइसप्रकार उग्रतप करते २ दशवर्ष बीते तब शिवजी प्रसन्नहो प्रकटहुये मुनिनेदेखा कि वृषपरचढ़े वाम अंगमें पार्वतीजीको धारणकिये त्रिशूल हाथ में लिये कोटिसूर्य के समान जटाओं करके शोभित सर्वांग में भस्म धारण किये भूतगणों करके सेवित शेषनागआदि नागों के भूषण पहिने ये साक्षात् शिवजी हैं शिवजी के प्रकटहोतेही मुनिको दिव्यदृष्टि प्राप्तहोगई तब शिवजी का दर्शन पाय सुचरितमुनि भक्तिसे नम्रहो स्तुति करने लगा ॥

(सुचरितउवाच । जयदेवमहेशानजयशंकरधूर्जटे । जयब्रह्मादिपूज्यत्वंत्रिपुरघ्नयमांतक १ जयोमेशमहादेवकामांतकजयामल । जयसंसारपूज्यत्वं भूतपालशिवाऽव्यय २ त्रियम्बकनमस्तुभ्यं भक्तरक्षणदीक्षित । व्योमकेशनमस्तुभ्यं जयकारुण्यविग्रह ३ नीलकण्ठनमस्तुभ्यं जयसंसारमोचक । महेश्वरनमस्तुभ्यंपरमानन्दविग्रह ४ गंगाधरनमस्तुभ्यं विश्वेश्वरमृडाऽव्यय । नमस्तुभ्यंभगवते वासुदेवायशम्भवे ५ शर्वायोग्रायभर्गाय कैलासपतयेनमः । रक्ष

मांकरुणासिन्धो कृपादृष्टयवलोकनात्। ममवृत्तमनालोच्य त्राहिमांकृपयाहर ६) इति ॥

यह स्तुति सुन दयाके समुद्र श्रीमहादेवजी ने सुचरितमुनि से कहा कि हे मुने! जो वर चाहता है वह मांग हम तुझपर प्रसन्नहैं तब सुचरितमुनिने प्रार्थनाकरी कि हे नाथ! मेरी इच्छा सबतीर्थों में स्नान करनेकी है परन्तु मैं वृद्धहूं इसलिये तीर्थों में जा नहींसक्ता अब आप ऐसी अनुग्रहकरैं किसब तीर्थों में स्नान करने का फल मुझे प्राप्तहोजाय यह मुनिकी प्रार्थना सुन भक्तवत्सल श्रीमहादेवजी ने सब तीर्थों का आवाहन एक स्थान में किया औ मुनिसे कहा कि हे मुने! हमने सबतीर्थोंका आवाहन किया इसलिये यह तीर्थ गंधमादनपर्वत में सर्वतीर्थनाम से प्रसिद्ध होगा औ हमने मनसे तीर्थोंका यहां आकर्षण किया इसलिये मानसतीर्थ भी इसका नाम होगा हे सुचरित! महापातकों के दग्ध करनेहारे काम क्रोध लोभ रोग आदि दोषों के नाशक विना ब्रह्मज्ञान केही मोक्ष देनेहारे कुम्भीपाक आदि नरकों का भय निवृत्त कर संसार समुद्र के पार उतारनेहारे हमारे बनाये इस सर्वतीर्थ में तू स्नान कर यह शिवजी की आज्ञा पाय सुचरितमुनिने सर्वतीर्थ में स्नान किया स्नान करतेही अति सुंदर तरुण औ दिव्य देह होगया औ उस तीर्थकी प्रशंसा करनेलगा महादेवजी ने कहा कि हे सुचरित! इस तीर्थ में नित्य स्नानकर औ हमारा नाम स्मरणकर देशांतरके तीर्थों में जानेकी इच्छा दूरकर इसतीर्थ के माहात्म्य से अंत में हमारे लोक में निवास करैगा और भी जे पुरुष इस तीर्थमें स्नान करैंगे वे हमारे लोक में प्राप्तहोंगे इतना कह शिवजी अंतर्द्धानहुये औ सुचरितमुनि भी बहुत काल उस तीर्थ में स्नानकर अंत में शिवलोकको गया हे मुनीश्वरो! यह सर्वतीर्थ का प्रभाव हमने वर्णन किया जो इसका पढ़ै अथवा सुनै वह भी सब पापों से मुक्त होय ॥

तीसवां अध्याय॥

धनुष्कोटिका माहात्म्य नरकों का औ जिस २ पापोंके करने से उनमें गिरते हैं उनका वर्णन॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! सर्वतीर्थ में स्नान कर ब्रह्महत्या आदि पापों के हरण करनेहारा धनुष्कोटि को जाय धनुष्कोटि के स्मरणमात्रसे सब पाप निवृत्त होतेहैं जे पुरुष धनुष्कोटि के दर्शन करतेहैं औ उसमें स्नान करतेहैं वे अट्ठाईस प्रकार के महानरकों को नहीं देखते तामिस्र अंधतामिस्र रौरव महारौरव कुंभीपाक कालसूत्र असिपत्रवन कृमिभक्ष अन्धकूप शाल्मली सन्दंश सूर्मी वैतरणी प्राणरोध विशसन लालाभक्ष अवीचि सारमेयादन दन्दकणक क्षरकर्दमपातन रक्षोगणाशन शूलशंतवितोदन दन्तशूकाशन पर्यावर्त्तन तिरोधान सूचीमुख पूयश्रोणितभक्ष विषाग्निपरिपीड़न ये अट्ठाईस महानरकहैं धनुष्कोटिमें स्नान करनेहारा पुरुष इन नरकों में नहीं गिरता जो किसी के धन औ स्त्री पुत्रोंको हरै उनको भयंकर यमदूत कालपाशों से बांध बहुत कालतक तामिस्रनरक में डालते हैं जो स्वामी को मार उसका धनलेकर भोगकरै वह अंधतामिस्र में गिरता है जो और जीवों से द्रोहकर अपने कुटुम्बका पोषण करै वह रौरवनरक में डाला जाता है जहां बड़े विषधरसर्प्प काटते हैं जो केवल अपना पेटभरै कुटुम्ब का पालन न करै वह महारौरव में गिरता है औ नित्य अपना मांस खाता है जो निर्दयीपुरुष पशु पक्षी आदि को रोककर रक्खे उस पुरुष को कुंभीपाकनरक में औटतेहुये तेल के बीच यमदूत डालतेहैं जो पुरुष माता पिता औ ब्राह्मणों से द्वेषकरै वह कालसूत्रनरक में डालाजाता है कालसूत्रनरक में नीचे अग्नि जलताहै औ ऊपर प्रचंड सूर्य तपता है जिसमें पापीपुरुष दग्धहोते रहतेहैं जे वेदमार्ग को छोड़ कुमार्ग में चलतेहैं वे असिपत्रवन में गिरतेहैं

जो राजा अथवा राज्याधिकारी अदण्ड्यपुरुष को दंडदेवै औ ब्राह्मण को शरीरदंड देवै वह सूकरमुखनाम नरक में गिरता है औ यमदूत उसको ईखकी भांति कोल्हू में पेरते हैं जो ईश्व-राधीन वृत्तिवाले जीवों को पीड़ा देवै वह अँधेरेकुयें में डाला जाता है औ वेही जीव उनको वहां पीड़ा देतेहैं जे पंक्ति में बैठ आप उत्तम भोजन करें औ पंक्तिवालों को न देवैं औ जे पुरुष पंचमहायज्ञ किये विना भोजन करैं वे कृमिभोजननाम नरक में डाले जाते हैं वहां उनको कृमि खातेहैं औ वे कृमियों को भक्षण करते हैं जे राजा अथवा राजपुरुष ब्राह्मण का धन हरैं और भी जे पुरुष ब्राह्मण का धनचोरी करके अथवा बलात्कार से लेवैं वे संदंशनाम नरक में अग्निकुण्डों के बीच पड़तेहैं औ यमदूत उनको लोहे के संसोंसे पीड़न करतेहैं जो पुरुष पराई स्त्री से संग करै औ जो स्त्री परपुरुष से संग करै वे सूर्मिनाम नरक में गिरते हैं वहां उनको लोहकी तपाईहुई मूर्त्ति का आलिङ्गन करना पड़ता है जिस मूर्त्ति केशरीर में बड़े २ तीखे कांटे हैं औ जबतक सूर्य चन्द्र रहैं तबतक उसी मूर्त्तिका आलि-ङ्गन किये खड़े रहते हैं जे पुरुष अनेक प्रकारों करके जीवों को पीड़ा देते हैं वे बहुत कांटोंवाले शाल्मलिनाम नरक में डाले जाते हैं जो पुरुष पाखण्ड धर्म में चले औ धर्ममार्ग का खण्डन करै वह वैतरणीनाम नरक में गिरता है जो पुरुष सदाचार औ लज्जाछोड़ वृषलीस्त्री का संग करै औ शौच आचारसे हीन होय वह अति बीभत्सनरक में पूयविष्ठा रुधिर मूत्र आदि के कुण्डोंमें गिरता है जो पुरुष दम्भसे यज्ञमें पशुओं की हिंसाकरै औ विधि जाने नहीं वह वैशसनरक में जाता है वहां यमदूत उसको शस्त्रों से छेदन करते हैं अपनी स्त्री को जो मोहसे वीर्य पान करावै वह रेतःकुण्डमें गिरकर वीर्य पान करताहै जो पुरुष ग्राममें आग लगावै किसीको विषदेवै औ मार्ग चलनेवाले व्या-

पारियों को लूटै वह वज्रदंष्ट्रनाम नरक में डाला जाता है इस प्रकार और भी पापीपुरुष अनेक प्रकार के घोरनरकों में डाले जाते हैं परन्तु ये सब पाप करनेहारे यदि एकबार भी धनुष्कोटि तीर्थ में स्नानकरैं तो इन नरकों को कभी न देखें सद्गतिही पावैं धनुष्कोटि में स्नान करने से अश्वमेधयज्ञ का फल प्राप्तहोता औ आत्मज्ञान होता है औ चारप्रकार की मुक्ति मिलती है धनुष्कोटि में स्नान करने से बुद्धि निर्मल होजाती है कभी दुःख नहीं होता औ पाप में चित्त नहीं प्रवृत्त होता तुला पुरुष औ हजार गोदान करने से जो फल प्राप्तहोता है वह धनुष्कोटि में एकबार स्नानकरने से होताहै अर्थ धर्म काम मोक्षआदि जो पदार्थ चाहै वही धनुष्कोटि में स्नानकरतेही प्राप्त होताहै अनेक पातक महापातकों करके युक्त पुरुष भी धनुष्कोटि स्नान से शुद्ध होजाता है धनुष्कोटि स्नान से प्रज्ञा लक्ष्मी यश संपत्ति वैराग्य धर्मज्ञान मनःशुद्धि आदि सब पदार्थ प्राप्त होते हैं करोड़ों ब्रह्महत्या सुरापान गुरुदारागमन सुवर्णस्तेय आदि पातक धनुष्कोटिमें स्नान करने से निवृत्त होतेहैं और भी जो पातक ब्रह्महत्या आदि महापातकों के तुल्यहैं वे सब नष्ट होते हैं इनबातों में कभी संदेह नहीं करना इस माहात्म्य को जे अर्थवाद समझै वह नरक को जाता है मनुष्यों का बड़ा मूर्खपन है कि अद्वैतज्ञान देनेहारे सब पातक औ दुःख हरनेहारे धनुष्कोटितीर्थ को छोड़ और तीर्थों में भटकते फिरते हैं धनुष्कोटि में स्नान किये पीछे यमका भय नहीं रहता जे पुरुष धनुष्कोटिको नमस्कारकरैं दर्शनकरैं स्तुति औ प्रणाम करैं वे माता के स्तन नहीं पीते अर्थात् जन्म मरण से रहित होजाते हैं इतनी कथा सुन मुनियों ने पूंछा कि हे सूतजी! उस तीर्थका नाम धनुष्कोटि क्योंकर हुआ यह आप वर्णनकरैं तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! रावणको मार त्रिभीषण को लंका का राज्य देकर सीता लक्ष्मण सहित राम-

चन्द्रजी सुग्रीव आदि वानरों समेत गन्धमादन पर्वत में पहुंचे औ विभीषण भी साथ आया वहां पहुंच विभीषण ने प्रार्थनाकी कि महाराज इस आपके बांधेहुये सेतुके मार्गसे और भी प्रतापी राजा आकर मेरी पुरी लङ्काको पीड़ादेंगे इसलिये आप अपने धनुष् की कोटि अर्थात् अग्र करके इस सेतुका भेदन कर दीजिये यह विभीषण की प्रार्थना सुन अपने धनुष् के अग्रभाग से सेतुको तोड़दिया वहांहीं धनुष्कोटितीर्थ बना धनुष करके रेखा की हुई जो पुरुष देखै वह गर्भवास का दुःख नहीं भोगता धनुष्कोटि करके रामचन्द्रजी ने समुद्र में रेखाकी उसके दर्शन सेही मुक्ति होजाती है स्नान का फल तो कौन वर्णन करसके नर्मदा के तटपर तपकरै तो महापातक निवृत्त होयँ गङ्गातीरमें मरण से मोक्ष होता है औ कुरुक्षेत्र में दान देने से ब्रह्महत्या आदि पाप नष्ट होते हैं परन्तु धनुष्कोटिमें तप मरण औ दान तीनोंही मुक्ति के देनेहारे हैं पातक महापातक आदि का भय तबतक है जबतक धनुष्कोटि का दर्शन न करे धनुष्कोटि का दर्शन करतेही हृदय की ग्रन्थि भिन्न होजाती है औ सब संशय निवृत्त होजाते हैं औ पाप भी नष्ट होते हैं रामचंद्रजी ने विभीषण के कल्याण के लिये जो दक्षिण समुद्र में धनुष्कोटि करके रेखाकी वही स्वर्ग कैलास वैकुण्ठ ब्रह्मलोक आदिका मार्ग है धनुष्कोटि स्नान मन्त्रों के जप अनेक दान औ यज्ञों से भी अधिक है धनुष्कोटि में स्नान करनेहारे पुरुष को प्रयाग में स्नान औ काशी मरण से कुछ प्रयोजन नहीं धनुष्कोटिमें स्नान कर तीन दिन उपवास न करै औ ब्राह्मण को सुवर्ण गौ आदि दान न देवे वह पुरुष जन्मान्तरमें दरिद्री होता है धनुष्कोटि में स्नान करने से जो फलहोता है वह अग्निष्टोम आदि यज्ञ करने से भी नहीं प्राप्त होता है सब तीर्थों से धनुष्कोटितीर्थ अधिक है भूमण्डल में दशहजार कोटि तीर्थ हैं वे सब धनुष्कोटि में निवास

करते हैं आठवसु आदित्य रुद्र मरुत् साध्य गन्धर्व सिद्ध विद्याधरआदि सब देवता औ विष्णु लक्ष्मी शिव पार्वती ब्रह्मा औ सरस्वती भी धनुष्कोटि तीर्थ में निवास करते हैं धनुष्कोटिके तटपर तपकर अनेक देवता औ ऋषि उत्तमसिद्धिको प्राप्तहुये जो धनुष्कोटि में स्नानकर देवता औ पितरों का तर्पण करै वह ब्रह्मलोक को जाताहै जो धनुष्कोटि पर एक ब्राह्मण को भी भोजन करावै वह दोनोंलोकोंमें सुखपाताहै जो तप अथवा अश्वमेधआदि यज्ञ न करसके वह धनुष्कोटि में स्नान करै धनुष्कोटि में स्नान करनेहारे पुरुष निन्द्ययोनि में जन्म नहीं लेते माघमास मकर के सूर्य में जो पुरुष धनुष्कोटि में स्नानकरैं उनका पुण्य फल हम नहीं वर्णन करसक्ते माघमास में जो स्नान करै वह गङ्गाआदि सर्वतीर्थों के स्नानका फलपाय मोक्ष पाता है जन्मभरके किये पाप स्नान करतेही नष्ट होजाते हैं सब देवताओं में रामचन्द्र औ सब तीर्थों में धनुष्कोटि उत्तम है माघमहीने में तीनदिन धनुष्कोटि में स्नान करै औ जितेन्द्रिय रहकर एक बार भोजन करै वह ब्रह्महत्याआदि पापों से छूट मुक्तिपाता है माघमहीने में स्नानकरै औ शिवरात्रि को उपवासकर जागरण करै औ रात्रि को रामनाथ महादेवका भक्तिसे पूजनकर दूसरे दिन प्रभातही उठ धनुष्कोटि में स्नानकर फिर रामनाथ का विधिपूर्वक पूजनकर यथाशक्ति ब्राह्मणोंको भोजन कराय सुवर्ण गौ भूमिआदि दानकर ब्राह्मणों की आज्ञापाय आपभी भोजन करै इस विधिसे जो माघ स्नानकरै उसके सब पापों को निवृत्त कर श्रीमहादेवजी भुक्ति औ मुक्तिदेते हैं इसलिये हे मुनीश्वरो ! मोक्षकी इच्छा होय तो अवश्यही धनुष्कोटि में स्नान करना चाहिये अर्द्धोदय योगमें जो पुरुष धनुष्कोटि में स्नानकरैं उन के सब पाप नष्ट होते हैं अर्द्धोदय औ महोदय योगमें जो स्नान करैं उनको ब्रह्मा विष्णु शिवआदि देवता प्रसन्नहोकर भुक्ति औ

मुक्ति देते हैं इन दोनों योगोंमें जो पुरुष धनुष्कोटिमें स्नानकरैं वे सब यज्ञों के फल पाते हैं औ उनके सब पापों का प्रायश्चित्त भी होजाताहै चन्द्र औ सूर्य्य के ग्रहण में जो पुरुष धनुष्कोटि में स्नानकरै उसके पुण्यफल को शेषजीभी नहीं गिनसक्ते ग्रहण में स्नान करतेही ब्रह्महत्याआदि पाप निवृत्त होते हैं औ मुक्ति भी प्राप्त होती है इसकारण ग्रहण अर्द्धोदय औ महोदय में विशेष करके स्नान करना चाहिये हे मुनीश्वरो! सब व्यवहार छोंड़ धनुष्कोटितीर्थ को जावो औ पितरों को पिंडदान करो वहां पिंडदान करने से कल्पभर पितर तृप्त रहते हैं पितरोंकी तृप्तिकेलिये रामचन्द्रजीने तीन स्थान बनाये हैं सेतुमूल धनुष्कोटि औ गन्धमादनपर्वत इनतीनों स्थानोंका नाम ऋण मोक्ष है यहां पिण्ड देनेसे मनुष्य पितरों के ऋणसे मुक्तहोते हैं सब उपाय से धनुष्कोटि का सेवन करना चाहिये धनुष्कोटि में स्नानकर अश्वत्थामा महाघोर सुप्तमारण दोषसे छूटा हे मुनीश्वरो! यह हमने भुक्ति मुक्तिका देनेहारा धनुष्कोटि का माहात्म्य वर्णन किया ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

धनुष्कोटितीर्थका माहात्म्य औ अश्वत्थामाने जो सोतेहुये वीरोंको माराथा उसका वर्णन ॥

शौनकआदि ऋषि पूंछते हैं कि हे सूतजी! अश्वत्थामा ने क्योंकर सुप्तमारण किया औ धनुष्कोटि में स्नानकर किसप्रकार उस पाप से छूटा यह आप वर्णन करैं आपका वचनामृत पान करते २ हमको तृप्ति नहीं होती यह नैमिषारण्यवासी मुनियों का वचनसुन अपने गुरु श्रीवेदव्यासजी को प्रणामकर सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! कौरव औ पांडवोंका राज्यके निमित्त बड़ा युद्धहुआ उस युद्ध में दशदिन घोर संग्रामकर भीष्म शरशय्या पर सोये पांचदिन द्रोणाचार्य ने युद्ध किया दो दिन युद्ध करके कर्ण औ एक दिन युद्ध करके शल्यमारेगये अठारहवें दिन

भीमसेन ने गदायुद्ध से दुर्योधन के उरु तोड़ डाले तब धृष्टद्युम्न शिखंडीआदि सब पांडवों के पक्षके राजा विजयपाय प्रसन्न हो शंख बजाते अपने २ डेरेको गये औ श्रीकृष्णचन्द्र तथा सात्यकी सहित पाण्डव दुर्योधन के शून्य डेरोंमें प्रविष्ट हुये वहां दुर्योधनके वृद्ध मंत्री कंचुकी अंतःपुर के रक्षकआदि सब उनको प्रणाम करनेलगे पांडव भी दुर्योधन का सब धन ग्रहणकर उस रात्रिको वहांहीं रहे परन्तु श्रीकृष्णभगवान् ने कहा कि मंगलके लिये आजकी रात डेरोंमें नहीं रहना चाहिये इसलिये वे सब ओघवतीनाम नदी के तटपर जायरहे कृतवर्मा कृपाचार्य्य औ अश्वत्थामा ये तीनों जो कौरवोंके पक्षमें बचेथे सूर्यास्तसे पहिलेही दुर्योधन के पासगये देखा कि दोनों ऊरु दुर्योधन के टूटगये रुधिर से सब अंग भीग रहे हैं औ भूमिपर धूलिमें लोटता है यह अवस्था राजा दुर्योधनकी देख इन तीनोंने बड़ाशोच किया राजा इनको देख अश्रुपात करनेलगा यह दशा राजादुर्योधन की देख अश्वत्थामा क्रोधसे जलउठा औ दोनों हाथ पीस क्रोध से अश्रुपात करता हुआ दुर्योधन से बेला कि हे राजन्! मेरे पिताको युद्धमें दुष्टोंने छलसेमारडाला उसका मुझे इतना दुःख न हुआ जितना आज तुम्हारी यहदशा देखकर हुआहै इसलिये मैं शपथ खाकर कहताहूं कि आज रात्रिको पांडव औ संजयों को श्रीकृष्णके देखते २ मारूंगा आप मुझे आज्ञा दीजिये यह गुरुपुत्र का वचन सुन दुर्योधन ने कहा कि बहुत अच्छा जैसी आपकी इच्छा होय वैसा कीजिये औ कृपाचार्य से कहा कि आप अश्वत्थामाका अभिषेक कीजिये कि ये सेनापति बनें कृपाचार्य ने भी जल लाकर उसीक्षण अश्वत्थामाका अभिषेक किया अश्वत्थामा भी दुर्योधनको आलिंगनकर कृपाचार्य औ कृतवर्मा को साथले दक्षिणदिशा को चला औ सूर्यास्त होते २ पांडवों के डेरेके पास तीनोंवीर आय पहुंचे वहां पांडवोंका बड़ा कोला-

हल सुनकर पूर्वकी ओर तीनों भयसे चले जाते २ वनमें उनमेंसे एकने अति मनोहर सरोवर देखा कि जिसमें कमलआदि अनेक पुष्प फूले थे औ हंस कारंडवआदि पक्षी क्रीड़ा कर रहे थे उस सरोवरमें तीनोंने जलपिया औ अपने घोड़ोंको जल पिलाया औ श्रम निवृत्त करने के लिये घोड़ोंसे उतरकर एक वटवृक्षके नीचे बैठे औ सायंसंध्या भी की इतने में सूर्य अस्त हुआ अतिघोर अंधकार चारोंओर छागया दिनचारी जीव निद्रावश हुये औ रात्रिमें विचरनेवाले जीव इधर उधर घूमनेलगे वे तीनों भी वट वृक्षके नीचे बैठेथे उनमें कृपाचार्य औ कृतवर्मा तो निद्रावशहो भूमि हीमें सोगये औ अश्वत्थामा को मारेक्रोध औ शोकके निद्रा न आई तब अश्वत्थामा ने देखा कि अतिभयंकर एक उलूक अतिघोर शब्द करता हुआ बहुत उलूकों को साथ लिये वहां आया औ उस वट वृक्षकी शाखाओं में हजारोंकाक सोतेथे उन को मार २ गिराने लगा किसी काकके नेत्र फोड़दिये किसीकी टांग तोड़दी किसीके पर उखाड़लिये किसीका शिरही नोचलिया इस प्रकार उस उलूकने काकोंका संहारकिया औ अपने शत्रु काकों की यह गति देख बहुत प्रसन्नहुआ उलूकका यह व्यवहार देख अश्वत्थामाने विचार किया कि मैंभी इसीप्रकार शत्रुसंहारकरूं क्योंकि युद्धकरके तो पांडवों का जीतना कठिन है औ हमने दुर्योधनके आगे पांडवों के बधकी प्रतिज्ञा की है इसलिये रात्रि के समय कपटसेही पांडवोंका संहार करना चाहिये क्योंकि निंद्य कर्म करके भी शत्रुओंको मारना चाहिये पांडवोंने भी छलसेही जय पायी है औ नीतिशास्त्र जाननेवाले विद्वानों ने यह कहा है कि शत्रुकी सेना परिश्रांतहोय सोतीहोय भोजन करती होय शस्त्र छोड़ किसी व्यापारमें लगीहोय उससमय मारनीचाहिये यह मनमें शोच विचार अश्वत्थामा ने कृपाचार्य औ कृतवर्मा को जगाया औ उनसे यह कहा कि राजादुर्योधन धर्म से युद्ध

करतारहा औ पांडवों ने क्षुद्रकर्मों से उसको मारा भीमसेनने दुर्योधन के शिरपर पैर रक्खा यह सब बात आपभी जानते हैं अब मेरा यह निश्चय है कि इसी रात्रिमें सोये हुये पांडवों को छलसे मारदेवैं यह सुन कृपाचार्य बोले कि हे अश्वत्थामा! सोये हुये शत्रुओंको मारना कुछ धर्म नहीं शस्त्रहीन औ रथहीन शत्रुओं को मारना भी उचित नहीं इसलिये तुम ऐसा साहस मत बिचारो हम तीनों धृतराष्ट्र गान्धारी औ परमधर्मात्मा विदुर से सम्मति पूछें वे जैसाकहैंगे वैसाही कियाजायगा यह अपने मामा कृपाचार्य का वचन सुन अश्वत्थामा ने कहा कि मेरे पिता को युद्धमें छलसे माराहै वह दुःख मेरे हृदय को जलाता है औ धृष्टद्युम्न कहता है कि मैं द्रोणहन्ता हूं यह वचन मैं क्योंकर सुनूं पाण्डवोंनेही पहिले धर्म्मकी मर्य्यादा भंगकरी आप सबके देखते२ त्यक्तशस्त्र मेरे पिताको धृष्टद्युम्नने मारा औ शिखंडीको आगेकर छलसे वृद्धभीष्म को अर्जुनने मारा इसभांति और भी बहुतसे राजा पांडवोंने छलसेमारे इसीभांति हमभी छलसे सोते हुये पाण्डवों का संहार करें तो कुछ अनुचित नहीं यह निश्चय कर अश्वत्थामा अपने रथमें चढ़ क्रोधसे जलता हुआ पांडवोंके डेरेको चला कृपाचार्य औ कृतवर्मा भी उसके पीछे २ चले औ क्षणमें वहां आयपहुँचे सब मनुष्य युद्धसे थकेहुये अपने २ डेरों में सोतेथे डेरेके द्वारपर पहुंच अश्वत्थामा ने शिवजीका आराधन किया शिवजी ने प्रसन्नहो अश्वत्थामा को अतिउत्तम एक खड्ग दिया तब अश्वत्थामा प्रसन्नहो कृपाचार्य औ कृतवर्माको पाण्डवों के शिविर अर्थात् लश्करके द्वारपर खड़ाकर आप भीतर घुसा औ शिविर में विचरनेलगा पहिले धृष्टद्युम्न के तम्बूके समीप पहुंचा औ तम्बूके भीतर घुस देखा कि श्वेतवर्णकी शय्या के ऊपर युद्धसे थकाहुआ धृष्टद्युम्न सोताहै औ उसकी सेना तम्बू के चारोंओर डेराडाले पड़ी है अश्वत्थामाने एक लात मारकर

धृष्टद्युम्न को जगाया धृष्टद्युम्न ने जागकर देखा कि अश्वत्थामा सम्मुख खड़ाहै औ शय्या से उठना चाहा परन्तु अश्वत्थामा ने उसके केश पकड़कर वहांहीं गिरादिया औ आप उसकी छाती पर चढ़ बैठा धनुष् की ज्या से उसका कण्ठ बांधकर जिसप्रकार पशु को मारै उसी भांति धृष्टद्युम्न को अश्वत्थामा ने मारदिया धृष्टद्युम्न निद्रा से व्याकुल था औ अठारह दिन के युद्ध से थका हुआ था इसलिये कुछ पराक्रम न करसका फिर युधामन्यु उत्तमौजा द्रौपदी के पांचोंपुत्र सोमक जो युद्ध से बचेथे औ शिखंडी आदि और भी राजाओं को अश्वत्थामा ने खड्ग से मारा अश्वत्थामा के भयसे जो भगकर बाहर गये उनको कृपाचार्य औ कृतवर्माने मारा इस प्रकार क्षणमात्र में उनतीनोंने पाण्डवोंकी सेना का संहार किया औ तीनों उस शिविर से निकल भयसे इधर उधर भगे अश्वत्थामा नर्म्मदातीर पर पहुंचा वहां हजारों वेदवेत्ता ऋषि तप करतेथे उनके समीप अश्वत्थामा गया परंतु उन्होंने योगबलसे इसका सब कर्म्म जानलिया औ अश्वत्थामा से मुनियों ने यह कहा कि हे द्रोणपुत्र! तू ब्राह्मणों में अधम है तैंने ऐसा घोर पाप किया सोते हुये मनुष्योंको मारा तेरे दर्शन से हम पतित होते हैं औ तेरे साथ संभाषण करनेसे ब्रह्महत्या के तुल्य पाप लगता है इसलिये हे पापी! शीघ्र तू हमारे आश्रम से निकल जा यह मुनियोंका वचनसुन लज्जित हो अश्वत्थामा वहांसे चला औ काशीआदि तीर्थों में जहां २ गया वहांहीं ब्राह्मणोंने तिरस्कार किया तब प्रायश्चित्तकी इच्छासे बदरिकाश्रममें व्यासजी के पासगया औ व्यासजी को प्रणामकिया तब व्यासजी ने कहा कि हे अश्वत्थामा! शीघ्रही हमारे आश्रम से निकल तू बड़ा पातकी है तेरेसाथ वार्तालाप करने से हमको भी पातक लगता है यह व्यासजी का वचन सुन अतिदुःखी हो अश्वत्थामाने कहा कि महाराज सबने मेरा तिरस्कार किया तब

आपके शरणमें आया अब आप भी मुझे त्याग देवैं तो मैं किस के शरण जाऊं आप दयालु हैं मेरे ऊपर भी कृपा करैं औ इस पापका मुझे प्रायश्चित्त बतावैं आप सर्वज्ञ हैं यह अश्वत्थामा का दीन वचन सुन क्षणमात्र ध्यानकर व्यासजी ने कहा कि हे अश्वत्थामा! इस पापका प्रायश्चित्त किसी स्मृति में तो लिखा नहीं तो भी हम एक उपाय तुमको बताते हैं। दक्षिण समुद्र में रामसेतुके समीप धनुष्कोटि नामतीर्थ सब पातक हरने में समर्थ है उस तीर्थमें जाकर हे अश्वत्थामा! तू स्नान कर एक महीने स्नान करने से शुद्ध होजायगा यह व्यासजी की आज्ञा पाय अश्वत्थामा धनुष्कोटितीर्थपर पहुंचा औ संकल्पपूर्वक एकमास नियम से स्नानकिया नित्य तीनकाल रामनाथ का पूजन औ पंचाक्षर मंत्रका जप किया एक महीना पूरा होनेपर उसदिन उपवास रक्खा औ रामनाथ के समीप रात्रिको जागरण किया प्रभात होतेही धनुष्कोटि में स्नानकर रामनाथका पूजन किया औ भक्तिसे अश्रुपात करता हुआ शिवजी के आगे नृत्य करने लगा तब भक्तवत्सल श्रीमहादेवजी प्रसन्नहो प्रकट हुये उनको देख अश्वत्थामा स्तुति करनेलगा॥

द्रौणिरुवाच। नमस्तेदेवदेवेशकरुणाकरशंकर। आपदांबुधिमग्नानांपोतायितपदाम्बुज १ महादेवकृपामूर्त्तेधूर्जटेनीललोहित। उमाकांतविरूपाक्ष चन्द्रशेखरतेनमः २ मृत्युंजयत्रिनेत्रत्वं पाहिमांकृपयादृशा। पार्वतीपतयेतुभ्यं त्रिपुरघ्नायशंभवे ३ पिनाकपाणयेतुभ्यंत्र्यम्बकायनमोनमः। अनन्तादिमहानागहारभूषणभूषित ४ शूलपाणेनमस्तुभ्यं गंगाधरमृडाव्यय। रक्ष मांकृपयादेव पापसंघातपंजरात ५ इति॥

यह स्तुति सुन प्रसन्नहो श्रीमहादेवजी ने अश्वत्थामा से

कहा कि हे द्रोणपुत्र! धनुष्कोटि में स्नान करने से सुप्तमारण दोषसे तू मुक्तहुआ अब जो वर चाहै वह मांग यह शिवजी का वचन सुन अश्वत्थामा ने प्रार्थना की कि महाराज आपके दर्शन सेही मैं कृतार्थ हुआ आपका दर्शन पापी पुरुषों को कोटिजन्म में भी दुर्लभहै अब यही वर चाहताहूं कि आपके चरणारविन्द में दृढ़ भक्तिरहै शिवजीने उसको यही वर दिया औ अन्तर्द्धान हुये औ अश्वत्थामा निष्पाप होगया तब सब ऋषियों ने उस को अपनेमें मिलाया सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! धनुष्कोटि का यह वैभव हमने वर्णन किया जिसमें स्नान करतेही अश्वत्थामा शुद्धहुआ जो पुरुष इस अध्याय को पढ़ै अथवा सुने वह सब पापों से मुक्त होकर शिवलोक को जाताहै ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

राजा नन्द औ धर्मगुप्तकी अद्भुत कथा औ धनुष्कोटितीर्थका माहात्म्य ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! हम आपकी प्रीतिके लिये फिर भी धनुष्कोटिका वैभव वर्णन करतेहैं चन्द्रवंश में नन्दनाम एक बड़ाप्रतापी चक्रवर्त्ती राजा हुआ है उसका पुत्र धर्म्मगुप्त नामथा राजानन्द सब राज्यभार पुत्रको सौंप तपकरनेको वनमें गया औ धर्मगुप्त राज्य करनेलगा धर्म्मगुप्त ने बहुत यज्ञ किये ब्राह्मणों को सुवर्ण गौ भूमिआदि दानदिये उसके राज्य में सब प्रजा धर्म में तत्पर थी औ चौरआदि की पीड़ा किसी को नहीं थी किसीसमय धर्मगुप्त घोड़ेपर चढ़ आखेट के लिये वन को गया वह वन ताल तमाल हिंताल कुरबकआदि वृक्षों से पूर्ण कमल कुमुद कह्लार नीलोत्पलआदि से भरे तड़ागों करके शोभित था औ अनेक ऋषि उस वनमें तप करते थे वहां राजा धर्मगुप्त मृगया खेलने लगा एक मृग के पीछे लगा हुआ दूर चलागया औ सब सेना पीछे रहगई इतने में रात्रि होगई तब

राजा धर्मगुप्त एक सरोवरके तटपर उतरा वहां सन्ध्याकर रात्रि व्यतीत करने के लिये सिंह आदि जीवों के भयसे एक वृक्षपर चढ़गया इतनेमें एक रीछ भगाहुआ आया कि जिसके पीछे एक सिंह लगरहा था वह रीछ भी सिंह से भयभीत हुआ इसी वृक्षपर चढ़ा औ राजा को उसने देखा औ कहा कि हे महाभाग! मुझसे मतडर हम दोनों यहां रात्रि व्यतीत करदेंगे नीचे बड़ा भयंकर सिंह खड़ा है अब आधीरात्रि तक तू निद्राकर मैं तेरी रक्षा करूंगा पीछे मैं सोऊंगा तू मेरी रक्षा करना यह रीछ का वचन सुन धर्मगुप्त सोगया औ रीछ उसकी रक्षाकरनेलगा तब सिंहनेकहा कि हे रीछ! यह मनुष्य सोगयाहै इसको तू नीचे ढकेल दे तब रीछ ने कहा कि हे मृगराज! तू धर्म नहीं जानता विश्वासघाती पुरुषकी कभी सद्गति नहीं होती ब्रह्महत्या आदि पाप तो किसी प्रकार निवृत्त हो भी सक्तेहैं परन्तु मित्रद्रोह का पाप कोटिजन्मों में भी नहीं छूटता पृथिवी को जितनाभार विश्वासघातक पुरुषका लगता है उतना मेरुआदि महापर्वतों का नहीं यह रीछका वचन सुन सिंह चुपहुआ इतने में आधीरात हुई तब रीछ सोया औ राजा उसकी रक्षामें बैठा तब सिंह ने राजासे कहा कि इस रीछ को नीचे डालदे यह सिंह का वचन सुन राजा ने उस रीछ को धीरे से ढकेल दिया परन्तु वह रीछ भूमिपर न गिरा उसनेवृक्षकी एकशाखा पकड़ली औ फिर ऊपर चढ़ा औ राजासे बोला कि हे राजन्! मैं भृगुकुलमें उत्पन्न ध्यानकाष्ठाभिधमुनि हूं मैंने अपनी इच्छा से रीछ का रूप धरा है तैंने विना अपराध मुझे नीचे डालना चाहा इस लिये उन्मत्त होजा यह शाप राजा को दे सिंह से कहा कि हे सिंह! तू कुबेर का मन्त्री भद्रनाम यक्षहै एक समय अपनी भार्याको संगले हिमालयपर्व्वत में गौतमऋषि के आश्रम के समीपजाय विहार करनेलगा इतनेमें गौतमऋषि समिधा लानेको अपनी पर्णकुटी

से निकले गौतममुनि ने तुझको नग्न देख शापदिया कि रे मूढ़! हमारे आश्रम के समीप तू विवस्त्र हुआ इसलिये सिंह होजा इसभांति तू गौतममुनिके शापसे सिंहहुआहै कुबेर बड़े महात्मा हैं औ उनके मन्त्री भी धर्मात्माहैं फिर तुम हमको क्यों मारना चाहते हो यह ध्यानकाष्ठमुनि का वचन सुनते ही सिंहरूप छोड़ वह दिव्ययक्षका रूपधार मुनिको प्रणाम कर बोला कि हे मुने! आज मुझे पूर्वजन्म का वृत्तान्त स्मरण आया गौतम ने मेरा शापांत यह किया था कि जब ऋक्षरूप ध्यानकाष्ठमुनिसे तेरा संवाद होगा तब तू सिंहरूप को छोड़ यक्ष होगा वह संवाद आज हुआ औ आपके प्रभावको मैंने जाना इतना कह मुनिको प्रणामकर विमानपर चढ़ यक्ष तो अलकापुरीको गया औ मुनि भी अपनी इच्छानुसार चलदिये धर्मगुप्त भी उन्मत्त हो वन में विचरने लगा इतने में उसकी सेना औ सब मंत्री आय मिले औ राजाकी यह अवस्था देख किसी प्रकार राजधानी को लाये औ वहां से नर्मदा नदीके तटपर राजा धर्मगुप्त को लेगये जहां उसका पिता नन्द तप करता था नन्दसे सब वृत्तान्त कहा तब राजानन्द अपने पुत्र को जैमिनिमुनि के पासलाया औ प्रार्थना की कि महाराज यह मेरा पुत्र उन्मत्त होगया है आप इस के आरोग्य होनेका कोई उपाय बतावें यह राजानन्द का वचनसुन जैमिनिमुनि कुछकाल ध्यानधर बोले कि हे राजन्! तेरे पुत्रको ध्यानकाष्ठमुनि ने शापदिया है उस शाप की निवृत्त का हम उपाय कहते हैं दक्षिणसमुद्र के तटपर रामसेतु में सब पाप औ शाप हरनेवाला धनुष्कोटि नाम तीर्थहै वहां अपने पुत्रको ले जाकर स्नान कराइये तब यह आरोग्य होजायगा यह जैमिनि मुनिका वचन सुन राजानन्द अपने पुत्रको धनुष्कोटितीर्थ पर लेआया औ स्नान कराया स्नान करातेही उसका उन्माद नि-वृत्तहुआ राजानन्द ने भी धनुष्कोटि में स्नान किया औ एक

दिन उपवासकर रामनाथ का पूजनकर राजानन्द तो तप करने चलागया पीछे से धर्म्मगुप्त ने ब्राह्मणों को दान दिये औ भक्तिसे रामनाथ का पूजन किया कुछ दिन वहां रहकर अपने मन्त्रियोंसमेत राजधानी को आया औ धर्म्मसे राज्य करनेलगा सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! जो पुरुष भूत राक्षस ग्रह अपस्मार उन्माद आदिसे पीड़ितहोय उसको धनुष्कोटिमें अवश्य स्नान करना चाहिये जो पुरुष धनुष्कोटितीर्थ को छोड़ और तीर्थ को ढूंढ़ता फिरै वह गोदुग्ध छोड़ थूहर के दुग्ध को ढूंढ़ने वाले मनुष्य के समान मूढ़ होताहै जे मनुष्य तीनकाल अथवा स्नान केही समय नित्य धनुष्कोटिका स्मरण करैं वे ब्रह्मलोक को जाते हैं हे मुनीश्वरो! इस धर्मगुप्त की कथा श्रवण करने से ब्रह्महत्या सुवर्णस्तेय आदि सब पाप नष्ट होते हैं॥

तेंतीसवां अध्याय॥

परावसु ब्राह्मण की कथा औ धनुष्कोटितीर्थका माहात्म्य॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! फिरभी हम धनुष्कोटि का प्रभाव वर्णन करते हैं जिसके श्रवण करतेही सब पातक दूरहोजायँ पूर्वकाल में परावसु नाम वेदवेत्ता ब्राह्मण अज्ञान से अपने पिताको मार धनुष्कोटितीर्थ में स्नानकर उस घोर हत्यासे छूटा यह सुन ऋषियों ने पूछा कि हे सूतजी! परावसुने अपने पिताको क्यों मारा औ फिर उस हत्यासे किसविधि छूटा यह आप वर्णन करैं तब सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो! बड़ा धर्म्मात्मा बृहद्युम्न नाम चक्रवर्त्ती राजा पूर्वकालमें हुआहै जिसने अनेक यज्ञ किये औ उसके यज्ञ करानेहारे रैभ्यमुनि थे उनके अर्वावसु औ परावसु ये दो पुत्रथे दोनों पुत्र वेदवेदांग श्रौत स्मार्त्त न्याय मीमांसा सांख्य योगशास्त्र आदि में निपुण थे रैभ्यमुनि ने एक समय इन दोनों को यज्ञ कराने के लिये राजा बृहद्युम्न के पास

भेजा औ रैभ्यमुनि अपनी बड़ी स्नुषा अर्थात् अर्वावसु की स्त्री सहित अपने आश्रम में रहे वे दोनों भाई भी पिताकी आज्ञासे राजा को यज्ञ करानेलगे सबकर्म सांगोपांग उनने कराये कहीं चूके नहीं उस यज्ञमें राजा के निमंत्रण से वशिष्ठ गौतम अत्रि जाबालि कश्यप क्रतुदक्ष पुलस्त्य पुलह नारद मार्कण्डेय शतानंद विश्वामित्र पराशर भृगु कुत्स बाल्मीकि व्यास धौम्य आदि अपने २ हज़ारों शिष्य प्रशिष्यों को साथ लिये आये औ चारों दिशाओं से बड़े २ राजा भांति २ की भेंट लेकर उस यज्ञ में आये औ चारोंवर्ण चारोंआश्रम के मनुष्य उस यज्ञ में एकत्र हुये राजा बृहद्युम्नने सबका सत्कार किया औ अनेकप्रकार के उत्तम २ भोजन वस्त्र रत्न सुवर्ण गौ आदि देकर सबको संतुष्ट किया औ रैभ्यके पुत्रों ने सब यज्ञकर्म ऐसी चतुरता से कराया कि वशिष्ठआदि मुनीश्वरों ने भी उनकी बहुत प्रशंसा करी तीसरे सवनके अंतमें परावसु अपने घरको सम्हालने आया औ अर्वावसु यज्ञ में रहा परावसु रात्रि के समय अपने आश्रम में पहुंचा आगे से मृगचर्म ओढ़े रैभ्यमुनि आते थे परावसुने जाना कि कोई दुष्ट मृग मुझे मारने आताहै इसलिये पहिले मैंही इसको मारडालूं यह विचार परावसु ने अपने पिताको मारदिया अन्धकार था औ परावसु निद्रासे पीड़ित था इसलिये उसको यह धोखाहुआ मारकर समीप आया जब देखा कि यह तो मेरा पिताहै तब बहुत विलाप किया औ अपने पिताकी सब प्रेतकृत्य किया औ फिर यज्ञ में आय सब वृत्तान्त अपने छोटे भाई अर्वावसु से कहा वह भी सुन शोकसे रोदन करनेलगा फिर उससे परावसु ने कहा कि राजाका यज्ञ होरहा है तू इसका भार नहीं उठासक्ता औ मुझसे ब्रह्महत्या होगई उसका प्रायश्चित्त करना चाहिये मैं अकेला भी यज्ञका भार उठासक्ताहूं औ तू बालक है तुझ अकेले से यहांका काम न चलेगा इसलिये मेरीहत्या निवृत्त

के लिये तू व्रत धारणकर औ मैं यज्ञ कराऊंगा अर्वावसु ने भी अपने ज्येष्ठ भ्राताकी आज्ञा अंगीकारकरी औ अपने बड़ेभाई परावसुको यज्ञमेंछोड़ आप चलागया बारहवर्षतक ब्रह्महत्या निवृत्तका व्रत औ तीर्थाटन अर्वावसु ने किया बारह वर्ष के अन्त में अर्वावसु फिर यज्ञमें आया उसको देखतेही परावसुने कहा कि हे राजन्! यह ब्रह्महत्याकिये तुम्हारे यज्ञमें आयाहै इसको शीघ्रही बाहर निकलवाइये नहीं तो यज्ञभ्रष्टहोजायगा यहसुनतेही राजा बृहद्युम्न ने अपने सेवकों को आज्ञादी कि बहुत शीघ्र अर्वावसु को यज्ञ से बाहर निकालो तब अर्वावसु ने कहा कि मैंने ब्रह्महत्या नहीं की ब्रह्महत्या तो मेरे ज्येष्ठ भ्राता परावसु ने करी है औ इसके बदले मैंने बारहवर्ष पर्यन्त प्रायश्चित्त किया है यह अर्वावसु का वचन किसी ने न माना औ उसको निकाल दिया औ सब ब्राह्मणों ने उसको धिक्कार दिया वह भी इसभांति अनादर पाय तपोवन में जाय उग्रतप करनेलगा उसने सूर्य भगवान् की प्रसन्नता के लिये ऐसा तप किया कि थोड़ेही काल में सूर्यनारायण प्रसन्नहो प्रकट हुये औ इन्द्रआदि सब देवताभी वहां आये औ अर्वावसु से कहा कि हे अर्वावसु! तू तप ब्रह्मचर्य वेद आचार शास्त्रज्ञान आदि करके श्रेष्ठ है परावसु ने तेरा निराकरण किया तौभी तूउसपर क्रोध नहीं करता परावसु ने पिता को मारा औ तैंने उसके बदले प्रायश्चित्त किया इसलिये हम तुझे स्वीकार करते हैं औ परावसु को त्यागते हैं फिर सूर्यआदि देवताओं ने कहा कि हे अर्वावसु! और जो चाहै सो वर मांग तब अर्वावसु बोला कि महाराज वही वर चाहता हूं कि मेरा पिता फिर जी उठै औ पिता के वधका वृत्तान्त सब भूल जावै देवताओंने यही वर अर्वावसुको दिया औ कहा कि और भी वरमांग तब अर्वावसु ने कहा कि यह वर मिलै कि मेरा भ्राता परावसु पिताकी हत्यासे छूटै यह सुन देवताओं ने कहा कि हे अर्वावसु!

ब्राह्मण तिसमें भी पिता उसको मारने से बड़ी हत्या परावसुको लगी है औ पंचमहापातकों में और की द्वारा प्रायश्चित्त करने से पातक निवृत्त नहीं होता तिसमें ब्राह्मण पिताको मारनेवाला तो आप भी प्रायश्चित्त करे तौ भी शुद्ध नहीं होसक्ता इसलिये परावसु किसीप्रकार शुद्ध नहीं होसक्ता यह देवताओं का वचन सुन फिर अर्वावसु ने प्रार्थना की कि महाराज आप अनुग्रह करके कोई उपाय बतावैं जिससे मेरे भ्राता का उद्धार होय यह आप मुझ पर कृपा करैं तब देवताओं ने बहुतकाल विचारकर कहा कि हे अर्वावसु ! एक उपाय हम बताते हैं दक्षिण समुद्र के तीर रामसेतुमें धनुष्कोटि नाम एक बड़ातीर्थहै उसमें स्नान करतेही सब पातक महापातक आदि निवृत्त होजाते हैं औ दुःस्वप्न ऋण दरिद्र अमंगल आदि का नाश होकर धन सन्तान आदि की वृद्धि होती है जे पुरुष निष्काम होकर स्नान करैं वे मोक्ष पाते हैं जो धनुष्कोटि नामको भी स्मरण करता रहै वह भी स्वर्ग औ मोक्ष का अधिकारी होताहै उस तीर्थ में जाकर तेरा भ्राता स्नान करै तो उसीक्षण ब्रह्महत्या से छूटजाय यह अति गुप्त बात हमने तुझ को बतादी है इतना कह सब देवता अपने २ धाम को गये औ अर्वावसु भी अपने भ्राता को साथले धनुष्कोटि पर पहुंचा वहां दोनों भ्राताओं ने संकल्पपूर्वक धनुष्कोटि में स्नान किया स्नान के अनन्तर आकाशवाणी हुई कि हे परावसु ! अब तू पिताकी हत्या से छूटगया यह सुन परावसु बहुत प्रसन्न हुआ औ अर्वावसु को साथले धनुष्कोटिको प्रणाम कर औ भक्तिसे रामनाथ महादेव का पूजन कर निष्पापहो अपने आश्रम को आया आश्रममें आकर देखा कि रैभ्यमुनि बैठे हैं उनको दोनों भाइयों ने प्रणाम किया रैभ्यमुनि भी अपने पुत्रों को देख बहुत प्रसन्न हुआ औ परावसु को निष्पाप जान सब मुनियों ने भी ग्रहण करलिया हे मुनीश्वरो ! इसप्रकार धनुष्कोटि

के प्रभाव से परावसु पितृहत्या से छूटा और भी महापातक धनुष्कोटि में स्नान करतेही निवृत्त होतेहैं जो पुरुष इस अध्याय को पढ़ै अथवा श्रवणकरै वहभी सब पातकोंसे मुक्त होजाताहै ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

एक वानर औ जम्बुक की कथा सुमतिनामक एक महापापी ब्राह्मण का इतिहास ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! फिर भी हम धनुष्कोटि का प्रभाव वर्णन करतेहैं पूर्वकाल में एक वानर औ एक जम्बुक दोनों मित्र थे पहिले जन्म में वे दोनों मनुष्य थे तब भी उनका बड़ा स्नेहथा औ वानर जम्बुकहुये तब भी दोनों परस्पर स्नेह रखते औ दोनों जातिस्मरथे एक दिन वह जम्बुक श्मशान के बीच किसी मृतकके शरीरको खाताथा तब वानरने कहा कि हे मित्र ! तैंने पूर्वजन्म में क्या पाप कियाथा कि श्मशाममें दुर्गंध युक्त मनुष्यमांस तू भक्षण कररहा है तब जम्बुक कहनेलगा कि हे मित्र ! मैं पूर्वजन्म में वेद शास्त्र के जाननेवाला देवशर्म्मा नाम ब्राह्मणथा मैंने ब्राह्मण को धनदेना कहकर फिर न दिया उसी पापसे मैं जम्बुक हुआ औ उसी पापसे यह मनुष्यमांस खाताहूं जे दुष्ट पुरुष स्वीकार करके फिर ब्राह्मणको नहीं देतेवे अवश्य जम्बुक योनि में प्राप्त होते हैं औ उनके दशजन्मके किये पुण्य उसीक्षण नष्ट होजातेहैं औ वह पाप सौ अश्वमेध करने से भी निवृत्त नहीं होता अब मैं नहींजानता कि इसपापसे कब छूटूंगा ब्राह्मण को देना स्वीकार करके अवश्य देना चाहिये नहीं तो जम्बुक योनिमें अवश्यही जन्म लेना पड़ता इतना कह जम्बुकने पूंछा कि हे मित्र ! तैंने क्या पाप किया जिससे वानरहुआ औ विना अपराध वनचर पक्षियों को मारता फिरता है तब वानर कहनेलगा कि पूर्वजन्ममें मैंभी वेदनाथ नाम ब्राह्मण था औ मेरे पिताकानाम विश्वनाथ औ माताका नाम कमलाथा पूर्व

जन्ममें भी तेरेसाथ मेरी मैत्रीथी यह तूभी जानता है मैंने शिवजी
काइतना आराधनकिया कि मैं त्रिकालज्ञ हुआ परन्तु एक दिन
किसी ब्राह्मणका शाक मैंने हरलिया उसी पापसे मुझे वानर
होनापड़ा इसलिये कभी ब्राह्मणकी कोई वस्तु न हरनी चाहिये
विष तो खानेवाले कोही मारताहै औ ब्राह्मणका धन समेत कु-
लके नाश करता है ब्राह्मण के धनको हरनेवाला पुरुष बहुत
दिन कुंभीपाक नरकमें रहकर वानर होताहै ब्राह्मणचाहे बालक
दरिद्र कृपण मूर्ख चाहेजैसाहो उसका अनादर न करना चाहिये
और तो मुझे सब ज्ञान है परन्तु इस पाप के निवृत्त होने का
उपाय नहीं जानता तूभी जातिस्मर है परन्तु किसी प्रतिबन्ध
से भूत औ भविष्य तू नहीं जानता अब हे मित्र! यह दोनों नहीं
जानते कि इन पापयोनियों से कब छूटैंगे इसप्रकार दोनों वा-
र्तालाप कररहेथे इतने में वहां सिन्धुद्वीपऋषि आ निकले जो
रुद्राक्ष औ विभूति से भूषित औ शिवजीका नाम लेते मानो
साक्षात् शिवही थे उनको देख वानर औ जम्बुकने भक्तिसे
प्रणाम किया औ प्रार्थना करी कि महाराज हमको कोई ऐसा
उपाय कृपा करके बतावें जिससे हम दोनों दुष्ट योनियों से छूटैं
आप जैसे महात्मा अनाथ कृपण मूर्ख बालक रोगी दुःखीआदि
जीवों की रक्षा करते हैं यह उनका दीन वचन सुन बहुत काल
ध्यानकर सिन्धुद्वीप मुनि बोले कि हे शृगाल! तैंने एक सेर धान
ब्राह्मण को देने को कहिके फिर न दिये इससे तू जम्बुक हुआ
औ हे वानर! तैंने ब्राह्मण के घर में शाक चोराया इसलिये सब
पक्षियों को भय देनेहारी वानर योनिमें प्राप्त हुआ अब तुम्हारे
उद्धारके लिये हम उपाय बतातेहैं दक्षिणसमुद्र में धनुष्कोटि
तीर्थहै उस तीर्थ में जाकर स्नान करो तब इस पापयोनिसे मुक्त
होगे पूर्वकाल में सुमतिनाम ब्राह्मणने एक किराती स्त्री अर्थात्
भीलनी के संग में सुरापान किया तब धनुष्कोटि में स्नानकर

शुद्धहुआ यह सुन जम्बुक औ वानरने पूंछा कि महाराज सुमति कौनथा औ उसने किरातकी स्त्रीके संगमें क्योंकर सुरापान किया यह आप वर्णन करैं तब सिन्धुद्वीपमुनि कहनेलगे कि महाराष्ट्र देशमें वेद औ शास्त्रका जाननेहारा यज्ञदेवनाम एक ब्राह्मण था वह सदा अतिथियों का पूजन औ शिवार्चन किया करता उसके सुमति नाम एक पुत्रथा वह अपने माता पिता औ पतिव्रता भार्याको छोड़ बिटोंके साथलग उत्कलदेश को चलागया उस देश में एक युवती किराती रहती थी जो तरुण पुरुषों को अपने रूपसे वश करके उनका धन हरती थी सुमति ब्राह्मण भी उसके घरगया परन्तु इसके पास धन न था इसकारण उस स्त्री ने इसका कुछ आदर न किया तब यह उदास हो चलाआया परन्तु वह मनमें बसगई थी इसलिये नित्य चोरी करनेलगा कुछ कालमें थोड़ाधन एकत्र करके उसके पासगया औ वह धन उसको दिया तब वह प्रसन्न हुई उसदिन से सुमति उसीके घर में रहनेलगा औ नित्य उसके साथ भोजन करता औ दोनों एक ही चषक अर्थात् प्याले में मद्य पीते औ रात्रिको एकत्र सोते इसप्रकार सुमति वहांही आसक्त होगया माता पिता औ अपनी पतिव्रता पत्नीको भूलगया एक दिन वह किरातों के साथ लग कर चोरी करने निकला वे सब लाटदेश में पहुँचे रात्रिको चोरी करने के लिये एक ब्राह्मण के घरमें घुसे वह ब्राह्मण जगउठा तब सुमति ने खड्ग से उसके दो टुकड़े करडाले औ बहुतसा धन वहांसे ले किराती के घरको चला परन्तु अतिभयंकर नीलेवस्त्र पहिने लाल जिसके केश गर्जती औ भूमि को कँपाती ब्रह्महत्या उसके पीछेलगी उसके भयसे सुमति सब देशों में दौड़ता फिरा परन्तु वह हत्या पीछे लगी रही तब वह अपने ग्राम में पहुँचा औ पिताके पासजाकर पुकारा कि हे पिता! मेरी रक्षाकर यह पुत्र का दीन वचन सुन पिताने कहा कि मतडर मैं तेरी रक्षाकरता

हूं तब ब्रह्महत्या बोली कि हे ब्राह्मण! इसकी रक्षाका यत्न मतकर यह बड़ा पातकी है इसने माता पिता औ पतिव्रता पत्नी का त्याग किया फिर किराती का संगकर सुरापान किया चोरीकी औ ब्राह्मणका वध किया इसलिये इसको मैं नहीं छोड़ती औ तेरे सम्पूर्ण कुटुम्ब को भक्षण करूंगी इस पुत्रको जो तू छोड़ देगा तो तेरा कुटुम्ब बच जायगा औ तुझे भी एक पुत्रके लिये सब कुटुम्बका नाशकरना उचित नहीं इसलिये तू इसको त्याग दे यह ब्रह्महत्या का वचनसुन यज्ञदेव ब्राह्मण बोला कि पुत्रका स्नेह बहुत बलवान् है इसलिये मैं इसका त्याग नहीं करसक्ता तब फिर हत्याने कहा कि इस पतितका मोह मतकर इसके दर्शन से भी पाप लगता है इतनाकह हत्या ने एक थप्पड़ सुमति के मारा कि वह रोनेलगा औ हे माता! हे पिता! कहकर चिल्लानेलगा तब उसके माता पिता औ भार्या भी दुःखसे रोदन करनेलगे उसी अवसर में शिवजी के अवतार दुर्वासामुनि वहां आ निकले तब यज्ञदेव ने उनको प्रणाम किया औ बहुत सी स्तुति करके प्रार्थना करी कि महाराज आप साक्षात् शिवजी का अंश हैं आपका दर्शन पापी पुरुषोंको कभी नहीं होसक्ता यह मेरा पुत्र बड़ा दुराचारी है औ ब्रह्महत्या इसके पीछे लगी है वह इसको मारना चाहती है अब आप कृपाकर ऐसा उपाय बतावैं जिससे यह इस हत्या से छूटै यह एकही मेरा पुत्र है इसके मरजाने से मेरा वंश उच्छिन्न होजायगा औ पितरोंको पिंडदेने वाला कोई न रहैगा इसलिये आप कृपाकरैं यह ब्राह्मणका वचनसुन दुर्वासामुनि ने बहुत काल ध्यानकर कहा कि हे यज्ञदेव! यह तेरा पुत्र बड़ापातकी है इसके पातक निवृत्त करनेहारा कोई प्रायश्चित्त नहीं परन्तु हम एक उपाय बताते हैं, सावधान होकर सुनो दक्षिण समुद्र में रामधनुष्कोटितीर्थ में जो तेरा पुत्र स्नान करे तो तत्क्षणही पातकों से मुक्त होजाय उस तीर्थ में

स्नान करने से दुर्विनीत नाम ब्राह्मण गुरुदारागमन पातक से मुक्त हुआ वह रामचन्द्रजी का बनाया धनुष्कोटितीर्थ सब पातक हरने में समर्थ है उसी तीर्थ के स्नान करने से तेरा पुत्र शुद्ध होजायगा ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

दुर्विनीत नाम ब्राह्मणकीकथा धनुष्कोटितीर्थका माहात्म्य ॥

यज्ञदेवने पूंछा कि महाराज दुर्विनीत कौन था और उसने गुरुस्त्रीगमन क्योंकर किया औ धनुष्कोटि में स्नान कर उस महापातक से क्योंकर छूटा यह आप कृपाकर मुझसे कथनकरैं तब दुर्वासामुनि कहने लगे कि हे यज्ञदेव! पांड्यदेश में बहुत शास्त्रोंका जाननेहारा इध्मबाहुनाम एक ब्राह्मण था औ उसकी रुचिनाम भार्य्याथी उसके दुर्विनीत नाम एक पुत्र हुआ वह बालकहीं था तब इध्मबाहु मृतकहोगया दुर्विनीतने अपने पिता का और्द्ध्वदैहिक कृत्यकिया कुछ दिन तो अपने घर में रहा पीछे बारह वर्षका दुर्भिक्ष पड़ा तब अपनी माता समेत देशान्तर को निकला औ गोकर्ण में पहुँचा वहां सुभिक्षथा इसकारण वहांही दोनों रहने लगे कुछ काल में दुर्विनीत तरुण होगया एकदिन ऐसा काम के वश हुआ कि बलात्कार से अपनी माता को पकड़ उसके साथ मैथुन किया औ वह पुकारती रही परंतु यह काम करके अन्धा होरहाथा इसलिये कुछ न सुना औ यह महापातक कर शोचने लगा कि मैंने बड़ाघोर पातककिया अब मेरा उद्धार क्योंकर होगा मैंने अपनी जननी से मैथुन किया यह शोचकर रोदन करनेलगा बहुत काल दुःखसे रोदन कर अपनी निन्दा करता हुआ मुनियोंकी समाज में गया औ मुनियों से प्रार्थना करी कि महाराज मुझको गुरुदारागमन पातक प्रायश्चित्त बताइये जो शरीर त्यागने से मेरी शुद्धता होय तो

मैं करूं अथवा और कोई प्रायश्चित्त आप कहैं तो वह करूं यह उसका वचन सुन कोई मुनि तो मौन होगये कि इस के साथ वार्त्ता करने से पातक लगता है औ कोई मुनि उससे कहने लगे कि रे पातकी! तैंने मातृगमन किया है इसलिये हमारे सम्मुख मत खड़ा हो जल्दी चलाजा उन सब मुनियों को निवारण कर परमदयालु श्रीवेदव्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणपुत्र! तू अपनी मातासहित धनुष्कोटि तीर्थ पर जा औ जितेन्द्रिय जितक्रोध औ निराहार होकर मकर के सूर्य्य में एकमासपर्य्यन्त नित्य स्नान करो तब तुम दोनों निष्पाप होजावोगे ऐसा कोई पाप नहीं जो धनुष्कोटि में स्नान करने से निवृत्त न होय श्रुतिस्मृति औ पुराणों में धनुष्कोटि की बड़ी प्रशंसा लिखीहै वह तीर्थ महापातक निवृत्त करने में समर्थहै हे ब्राह्मणपुत्र! हमारे वाक्यको वेदके तुल्य मान औ शीघ्रही धनुष्कोटि तीर्थ पर जा करोड़ों महापातक भी उस तीर्थमें स्नान करने से निवृत्त होते हैं यह व्यासजी का वचन सुन उनको प्रणामकर अपनी माता को संगले दुर्विनीत धनुष्कोटि पर पहुँचा वहां जाय निराहार औ जितेन्द्रिय रहकर दोनों माता पुत्र स्नान करने लगे सङ्कल्प पूर्व्वक एक महीनेपर्यंत स्नान किया औ नित्य त्रिकाल रामनाथ का पूजन किया इसविधि मकर के सूर्य्य में स्नान कर महीनेके अन्तमें पारणकिया औ दोनों फिर व्यासजीके पासआये औ प्रणामकर व्यासजी से प्रार्थनाकी कि महाराज आपकी आज्ञानुसार माघमास में निराहार रहकर हमने धनुष्कोटिमें स्नान किया औ नित्य रामनाथका पूजन किया अब और जोआज्ञा आप करैं वह कीजाय यह उसका वचनसुन व्यासजी बोले कि हे दुर्विनीत! अब तुम दोनों निष्पाप होगये इसमें कुछ संदेह मतकरो अब तुम्हारे बांधव औ ब्राह्मण तुमको ग्रहण करलेंगे हे दुर्विनीत! हमारे प्रसादसे तू कुटुम्ब अब जाकर विवाहकर औ गृहस्था-

श्रममें रहकर धर्मका सेवनकर जीवहिंसा मतकर औ भक्ति से सज्जनों का सेवनकर संध्या वन्दनआदि कर्मोंको कभी मतछोड़ जितेन्द्रियहो नित्य शिव औ विष्णुका पूजन कर द्वेषमतकर औ किसी की निंदा करने में प्रवृत्त मतहो दूसरे का ऐश्वर्य देख मन में संताप मतकर परस्त्री को माताके समान समझ पढ़ेहुये वेदों को मत भूल अतिथियों का अनादर मतकर पितृ दिनमें श्राद्ध कर किसीका पैशुन्य अर्थात् चुगुली स्वप्नमें भी मतकर इतिहास पुराण धर्मशास्त्र वेदांत वेद वेदांग आदि नित्य देखतारह शिव और विष्णुके नाम सदा उच्चारण करतारह जाबालोपनिषद् के मंत्रों से भस्मोद्धूलन औ त्रिपुंड्कर रुद्राक्ष धारणकर शौच औ आचारमें तत्परहो तुलसी औ बिल्वपत्र करके त्रिकाल दोकाल अथवा एकही काल नित्य नारायण औ सदाशिवका अर्चनकर औ तुलसीदल करके युक्त औ चरणोदक से प्रोक्षित नैवेद्य सदा भोजनकर अन्न की शुद्धि के लिये बलिवैश्वदेव कर ब्रह्मचारी भिक्षुक वृद्ध रोगीआदि जो घरमें आवे उसको भोजनआदि से संतुष्ट कर नित्य माताकी शुश्रूषा कर पंचाक्षर षडक्षर अथवा अष्टाक्षर मंत्रका नित्य जपकर इस प्रकार और भी श्रुतिस्मृति प्रोक्त धर्मों का सेवनकर इस आचरण से देहांत होनेपर अवश्यही मुक्तिपावेगा यह व्यासजी की आज्ञापाय अपने घरगया औ बहुत काल गृहस्थ धर्मका सेवनकर अंतमें मुक्तहुआ औ उसकी माताने भी धनुष्कोटिके प्रभाव से सद्गति पाई इतनी कथा सुनाय दुर्वासामुनिने कहा कि हे यज्ञदेव! यह दुर्विनीतकी कथा हमने तुझको सुनाई अब तूभी इस अपने पुत्रको साथले धनुष्कोटिको जा सिंधुद्वीपऋषि कहतेहैं कि हे जम्बुक! हे वानर! दुर्वासामुनि की आज्ञा पाय यज्ञदेव अपने पुत्र को धनुष्कोटि तीर्थ पर लेगया वहां दोनों छःमहीने रहे यज्ञदेव नित्य अपने पुत्रको धनुष्कोटिमें स्नान कराता छःमहीने के अंतमें आकाश-

वाणी हुई कि हे यज्ञदेव! तेरे पुत्रकी ब्रह्महत्या निवृत्त हुई औ चोरी सुरापान किराती संग आदि सब पापों से छूटगया इसमें तू संशय मतकर यह आकाशवाणी सुन यज्ञदेव बहुत प्रसन्न हुआ औ रामनाथ का पूजनकर धनुष्कोटि की प्रशंसा करता हुआ अपने पुत्रको साथले अपने घर आया औ सुखसे रहने लगा इतनाकह सिंधुद्वीपऋषि ने जम्बुक औ वानरसे कहा कि तुम दोनों भी धनुष्कोटि में स्नान करो तब निष्पाप होगे और कोई उपाय तुम्हारे निष्पाप होने का नहीं है सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! सिन्धुद्वीपऋषि से यह उपदेश पाय जम्बुक औ वानर किसी प्रकार धनुष्कोटि तीर्थपर पहुँचे वहां जाय दोनोंने स्नान किया स्नान करतेही दिव्य देह होगये औ विमानमें बैठ उत्तम भूषण वस्त्रआदि से शोभित हो स्वर्ग को गये हे मुनीश्वरो! धनुष्कोटिके प्रभावसे इस प्रकार वानर औ जम्बुक सद्गति को प्राप्तहुये इस अध्यायको जो पढ़ै अथवा सुनै वह धनुष्कोटि तीर्थ स्नानके फलको पाय उस गतिको पाताहै जो योगियों को भी दुर्लभ है॥

छत्तीसवां अध्याय॥

दुराचारनामब्राह्मणकीकथा महालयश्राद्धकेमाहात्म्यका विस्तारसेवर्णन॥

सूतजी कहतेहैं किहे मुनीश्वरो! धनुष्कोटिका माहात्म्य कहां तक वर्णनकरें जहां स्नानकर एक बड़ापातकी दुराचार नाम ब्राह्मण पापसे मुक्तहुआ यह सुन मुनियोंने पूंछा कि हे सूतजी! दुराचार कौनथा औ उसने क्या पाप किया औ फिर धनुष्कोटि में स्नानकर क्योंकर निष्पापहुआ यह आप वर्णनकरें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! दुराचार नाम एक ब्राह्मण बड़ा क्रूर औ पापी गोदावरी नदीके तटपर रहताथा वह सदा महापातकी मनुष्यों का संग रखता इससे वह भी महापातकी होगया औ

ब्राह्मणपना जातारहा जो ब्राह्मण एक दिन महापातकी का संग करै उसका ब्राह्मणत्व चतुर्थांश जाता रहता है दो दिन महापातकी के साथ शयन भोजन सहवास आदि करने से आधा ब्राह्मणत्व रहजाता है तीन दिनके संसर्ग से तीन भाग ब्राह्मणत्व नष्ट होजाता है औ चौथे दिनभी महापातकीका संसर्ग करै तो सम्पूर्ण ब्राह्मणत्व नष्ट होजाताहै चारदिन के अनन्तरभी उनका संग करतारहै तो वहभी महापातकी होजाताहै महापातकी मनुष्यों के संगसे दुराचारका सब ब्राह्मणपना जातारहा औ वह भी महापातकी होगया तब उसको एक भयंकर वेताल ने आक्रांत करलिया वह भी वेतालाविष्ट हुआ २ देश २ औ वन वनमें भटकने लगा दैवयोग से कुछ काल में धनुष्कोटितीर्थ में कूद पड़ा तीर्थका जल स्पर्श होतेही वेताल ने उसको छोड़ दिया दुराचार भी तीर्थ से बाहर निकल विचार करनेलगा कि यह कौन देश है समुद्र का तीर देख पड़ता है मैं गौतमी नदी के तटपर रहनेवाला यहां क्योंकर आया इतने में वहां दत्तात्रेय मुनि देखे दुराचार उन के चरणों पर गिरा औ प्रार्थना करने लगा कि महाराज मैं गोदावरी तट निवासी दुराचार नाम ब्राह्मणहूं मैं इस देश में क्योंकर आया औ यह कौन देश है आप कृपाकर मेरा संशय निवृत्त करैं यह उसका वचन सुन क्षणमात्र विचार कर परमदयालु दत्तात्रेयमुनि बोले कि हे दुराचार! तैंने महापातकी मनुष्यों का संसर्ग किया इससे तेरा ब्राह्मणत्व नष्ट होगया तब तुझे वेतालने ग्रहण किया वही तुझे यहां ले आया औ धनुष्कोटितीर्थ में भी तुझे उसी ने डुबाना चाहा परन्तु तीर्थ का जल स्पर्श होते ही तू निष्पाप होगया इसलिये उस वेताल ने तुझे छोड़ दिया धनुष्कोटितीर्थ में स्नान करने से सब पातक निवृत्त होजाते हैं इसी से तेरा भी संसर्ग दोष निवृत्त हुआ औ वेतालने तुझे छोड़ा जिस वेतालने तुझे ग्रहण

किया वह भी पूर्व्वजन्म में ब्राह्मण था उसने महालय पक्ष में पितरों का श्राद्ध नहीं किया इसलिये पितरों के शाप से वह वेताल हुआ वह भी धनुष्कोटि का दर्शन करतेही वेतालत्व से छूट विष्णुलोक को गया जो पुरुष आश्विनकृष्णपक्ष में श्राद्ध नहींकरते वे लोभी पितरों के शापसे वेताल होते हैं औ जो पुरुष उस पक्ष में पितरों के निमित्त ब्राह्मणों को उत्तम उत्तम भोजन देते हैं वे कभी दुर्गति को नहीं प्राप्त होते सामर्थ्य के अनुसार एक दो तीन अथवा बहुत ब्राह्मणोंको अवश्यही भोजन कराना चाहिये पितरों का श्राद्ध इसने नहीं किया इससे वेताल हुआ औ तुझे महापातकी जान इसने ग्रहण किया भाद्रपद से लेकर वृश्चिकपर्यन्त महालयका काल तत्त्वदर्शी मुनीश्वरों ने कहा है उसमें भी आश्विनमास औ आश्विनमास में कृष्णपक्ष उत्तमहै आश्विनकृष्णपक्ष प्रतिपदा को जो मनुष्य भक्ति से श्राद्ध करै उसके ऊपर अग्निदेवता प्रसन्न होता है औ श्राद्ध करनेहारा पुरुष अग्निलोकमें जाकर अग्निके समीप सुखपूर्वक निवास करताहै औ अग्निके अनुग्रहसे प्रतिपदाको श्राद्ध करनेहारा सब ऐश्वर्य पाता है जो प्रतिपदा को महालय श्राद्ध न करै उसके गृह क्षेत्र औ ऐश्वर्य आदि को अग्नि दग्धकरता है प्रतिपदाके दिन एक वेदवेत्ता ब्राह्मणको भी भोजन करावे तो दशदशकल्प तक पितर तृप्त रहते हैं द्वितीया के दिन जो महालय श्राद्ध करै वह शिवजी के अनुग्रहसे बड़ी सम्पत्ति पाताहै औ शिवजी प्रसन्न होकर उसको कैलास में वास देते हैं द्वितीया के दिन जो श्राद्ध न करै उसके ब्रह्मवर्चसको शिवजी कोप करके नाश करते हैं औ वह पुरुष रौरव कालसूत्र आदि नरकों में निवास करता है द्वितीया को एक ब्राह्मणको भी भोजन करावै तो बीस कल्पपर्यन्त उसके पितर तृप्त रहते हैं औ पितरों के अनुग्रह से सन्तान की वृद्धि होती है तृतीया के दिन श्राद्ध करने से कुबेर

तृप्त होता है औ महापद्मआदि निधि देता है जो तृतीया को श्राद्ध न करै वह दरिद्री औ दुःखी रहता है औ तृतीया को श्राद्ध करने से तीसहजार कल्पतक पितर तृप्त रहते हैं चतुर्थी को श्राद्ध करनेसे गणेशजी प्रसन्न होतेहैं औ सब विघ्न निवृत्त करते हैं जो चतुर्थी को श्राद्ध न करै उसकेसब कार्यों में गणेश जी विघ्न करते हैं औ वह पुरुष चण्ड कोलाहलनाम नरक में गिरता है चतुर्थी को श्राद्ध करने से चालीसहजार कल्प पर्य्यन्त पितर तृप्त रहते हैं औ श्राद्ध करनेहारे को बहुत पुत्र देते हैं पञ्चमी को श्राद्ध करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है औ बहुत संपत्ति देतीहै दिन दिन उस पुरुषकी कीर्त्ति बढ़ती है जो पुरुष पञ्चमी को श्राद्ध न करै उसके घरको लक्ष्मी त्यागदेती है औ अलक्ष्मी का निवास होताहै पंचमी को श्राद्ध करने से पचास हजार कल्पतक पितर तृप्त रहते हैं औ उसके वंश का विच्छेद नहीं होता औ पार्वती भी प्रसन्न होती हैं षष्ठीको श्राद्ध करने से स्वामिकार्त्तिकेय प्रसन्न होतेहैं औ उसके पुत्र पौत्रों को ग्रह औ बालग्रह कभी पीड़ा नहीं देते औ जो श्राद्ध न करै उसके बालकों को जन्म लेतेही पूतना आदिग्रह हरलेतेहैं औ वह पुरुष वह्निज्वालाप्रवेश नामक नरक में गिरता है षष्ठी को श्राद्ध करने से साठहजार कल्पतक पितर तृप्तरहतेहैं औ पुत्र तथा संपत्तिको देते हैं सप्तमी को श्राद्ध करने से सुवर्णहस्त श्रीसूर्य भगवान् प्रसन्न होकर अपने हाथ से सुवर्ण देते हैं औ आरोग्य भी देते हैं जो पुरुष सप्तमीको श्राद्ध न करै वह अनेकरोगों कर के पीड़ित रहताहै औ तीक्ष्णधारास्त्रशय्या नाम नरक में गिरताहै औ सप्तमीको श्राद्ध करनेसे सत्तरहजार कल्पतक पितर तृप्तरहतेहैं औ अविच्छिन्न संतान भी देतेहैं अष्टमीको श्राद्ध करनेसे मृत्युञ्जय सदाशिव प्रसन्न होतेहैं शिवजी के प्रसन्न होनेसे कोई पदार्थ भी दुर्लभ नहीं मुक्ति तो हाथ परही रक्खी

है जो अष्टमी को श्राद्ध न करै उसका कोई मनोरथ सिद्ध नहीं होता औ वह संसारसागर में डूबाही रहता है कभी मुक्ति नहीं पाता औ वैतरणी में गिरता है अष्टमी को श्राद्ध करने से अस्सीहजार कल्पतक पितर तृप्तरहते हैं औ अविच्छिन्न संतान देते हैं औ सब विघ्न निवृत्त करते हैं नवमी को श्राद्ध करने से दुर्गाभगवती प्रसन्न होती हैं औ क्षय अपस्मार कुष्ठभूत प्रेत पिशाच आदि को निवृत्त करती हैं जो पुरुष नवमी को श्राद्ध न करै वह अपस्मार आदि रोग औ ब्रह्मराक्षस अभिचार कृत्या आदि करके पीड़ित होता है उसदिन श्राद्ध करने से नब्बे कल्पतक पितर तृप्तरहते हैं औ अविच्छिन्न सन्तान देते हैं दशमी को श्राद्ध करने से चन्द्रमा प्रसन्न होते हैं औ उसकी खेती अच्छी लगती है औ दशमी को श्राद्ध न करने से खेती निष्फल होती है दशमी को श्राद्ध करने से सौहजार कल्पतक पितर तृप्तरहते हैं औ अविच्छिन्न सन्तान देते हैं एकादशी को श्राद्ध करने से सब लोकका संहार करनेहारे रुद्रभगवान् प्रसन्न होते हैं रुद्रभगवान् के प्रसन्न होने से सब शत्रुओं को जीतता है ब्रह्महत्या आदि पातक निवृत्त होतेहैं औ अग्निष्टोम आदि यज्ञोंका फल प्राप्त होता है औ जो पुरुष श्राद्ध न करै वह शत्रुओं करके पीड़ित रहताहै औ उसके सब यज्ञ निष्फल होते हैं एकादशी को श्राद्ध करने से दोसौहजार कल्पतक पितर तृप्त रहतेहैं औ अविच्छिन्न संतान देते हैं द्वादशी को श्राद्ध करनेसे विष्णुभगवान् प्रसन्न होतेहैं विष्णुभगवान् के प्रसन्न होने से चराचर जगत् संतुष्ट होता है दिन २ संपत्ति बढ़ती है भगवान् की कौमोदकी गदा उसके सब रोगोंका नाश करती है सुदर्शनचक्र शत्रुओंका संहार करताहै औ पांचजन्य शंख अपनी ध्वनि से भूत प्रेत राक्षस आदि के भय को निवृत्त करताहै इसप्रकार सब पीड़ा को विष्णुभगवान् हरतेहैं जो द्वादशी को श्राद्ध न

करे उसकी संपत्ति नष्ट होजातीहै औ अपस्मार आदि रोग भूत प्रेत राक्षस शत्रु आदि पीड़ा देते हैं औ अस्थिभेदननाम नरक में गिरता है द्वादशी को श्राद्ध करने से छःसौहजार कल्पतक पितर तृप्त रहतेहैं औ अविच्छिन्न संतान देते हैं त्रयोदशी को श्राद्ध करने से कामदेव प्रसन्न होताहै उत्तम २ स्त्री वस्त्र भूषण मालाआदि प्राप्त होती हैं औ जन्मभर सुखी रहता है जो त्रयोदशीको श्राद्ध न करै वह कोई भोग नहीं पाता औ अंगारशय्या नाम नरकमें गिरता है जो त्रयोदशी को महालयश्राद्ध करै उस के पितर हजार कल्पतक तृप्त रहते हैं औ अविच्छिन्न सन्तान देते हैं चतुर्दशी को श्राद्ध करने से शिवजी प्रसन्न होते हैं औ सब मनोरथ सिद्ध करते हैं औ ब्रह्महत्या सुरापान सुवर्णस्तेय आदिपातक तत्क्षण निवृत्त होजाते हैं औ अश्वमेध पौंडरीकआदि यज्ञों का फल प्राप्तहोताहै जो पुरुष चतुर्दशीको महालय न करै वह करोड़ों वर्ष संसाररूप अन्धकूपमें पड़ा रहता है कभी उसकी निष्कृति नहीं होती औ महापातक विना कियेही महापातकों से लिप्त होताहै औ उसके यज्ञ आदि सब कर्म निष्फल होते हैं जो पुरुष चतुर्दशी को भक्तिसे महालयश्राद्ध करै उसके पितर नरकमें होयँ तो स्वर्गको जायँ औ करोड़ों कल्पतक तृप्त रहैं औ अविच्छिन्न संतानदेवैं अमावास्याको श्राद्धकरै तो अनन्त कालतक उसके पितर तृप्त रहैं अमृतपानसे जैसी तृप्ति देवताओं को होती है वैसीही तृप्ति अमावास्या को श्राद्ध करने से पितरों को होती है यह तिथि महापुण्या है औ देवता तथा पितरों की प्रिया है औ शिवजी को भी बहुत प्रिया है अमावास्या को श्राद्ध करनेसे शिवजी प्रसन्न होते हैं ब्रह्महत्या आदि पातक निवृत्त होजाते हैं औ सबकर्म सफल होते हैं औ श्राद्ध करने हारा पुरुष मोक्षको प्राप्तहोता है जो पुरुष अमावास्या को श्राद्ध न करै उसके पितर ब्रह्मलोक में होयँ तो भी नरकको चलेजाते हैं

औ वंश भी विच्छिन्न होजाता है यह बड़ा अनर्थ है कि महालय की अमावास्या को श्राद्ध न करै औ ब्राह्मणों को भोजन न करावे आश्विनकी अमावास्याको पितर नृत्य करतेहैं कि आज हमारे पुत्र ब्राह्मण भोजन करावेंगे जिससे हम नरक क्लेश से छूट स्वर्गको जायँगे आश्विन कृष्णपक्ष में पितरों की तृप्ति के लिये नित्यही ब्राह्मणभोजन करावै उसके मातृकुल औ पितृकुलके पितर कई कल्पपर्यन्त अमृतपान करके तृप्त रहते हैं सप्तमी से लेकर अमावास्यापर्यन्त नित्य तीन २ ब्राह्मणों को भोजनकरावै द्वादशी से अमावास्या पर्यन्त तो अवश्यही ब्राह्मण भोजन करावै जो ब्राह्मण भोजन न करावै उसका ऐश्वर्य भंग होजाता है औ वह महादरिद्र को प्राप्त होताहै इसलिये धनका लोभ छोड़ अनेकप्रकार के भोजन वेदवेत्ता ब्राह्मणोंको करावै औ उनको सन्तुष्टकरै ब्राह्मणों के तृप्तहोने से ब्रह्मा विष्णु शिव इन्द्र आदि देवता औ अग्निष्वात्ता आदि पितर तृप्तहोते हैं औ तीनों लोक तृप्तहोते हैं पार्वणविधानसे महालयश्राद्ध करना चाहिये औ यथाशक्ति दक्षिणा देनीचाहिये दक्षिणामें वित्तशाठ्य न करै दक्षिणा से यज्ञ सफलहोता है विधवा औ अपुत्रा स्त्री भी अपने पतिके उद्देश्यसे महालयश्राद्ध में ब्राह्मण भोजन करावै नहीं तो धर्मकी हानि होतीहै औ वह स्त्री नरकको जातीहै आश्विनमास में जो पुरुष महालयश्राद्ध नहीं करते उनका वंश उच्छिन्न होजाताहै औ ब्रह्महत्याको वे पुरुष प्राप्तहोते हैं औ जो पुरुष भक्तिसे श्राद्ध करते हैं उनका वंश कभी उच्छिन्न नहीं होता औ संपत्ति भी स्थिर रहती है मह नाम कल्याण का है औ आलय स्थान को कहते हैं कल्याण का स्थान होने से महालय कहाता है इससे कल्याण प्राप्ति के लिये महालयश्राद्ध अवश्यही करना चाहिये महालयश्राद्ध न करै तो अमङ्गल होता है जो माता पिता की क्षयाहश्राद्ध न करै तो भी महालयश्राद्ध तो अवश्यही करै

कभी न भूलै जो महालयश्राद्ध करने की सामर्थ्य न होय तो याचना करके भी महालयश्राद्ध करै परन्तु उत्तम ब्राह्मणों से धन धान्य लेवै पतितोंसे कभी याचना न करै ब्राह्मण से धन न मिलै तो क्षत्रिय से क्षत्रिय से भी धन न मिलै तो वैश्य से याचना करै औ वैश्य से भी नहीं प्राप्तिहोय तो पितरों की तृप्ति के लिये गोग्रासदेवै औ गोग्रासदेने की भी सामर्थ्य न होय तो जंगल में जाय ऊंचेस्वर से रोदन करै औ आंसू डालताहुआ दोनों हाथों से अपने पेटको पीटकर यह कहै कि हे पितरो ! मैं निर्लज्ज कृपण दरिद्री औ क्रूरकर्म्म करने हारा हूं महालयश्राद्ध करने का मेरा सामर्थ्य नहीं सम्पूर्ण पृथिवी पर याचना करने से भी मुझे कुछ न मिला इसलिये तुम्हारा महालयश्राद्ध मैं नहीं करसक्ता आप सब मुझपर क्षमा करैं ये वाक्य ऊंचेस्वर से रोदन करताहुआ निर्जन वनमें कहै उसका रोदन सुनतेही पितर तृप्त होजाते हैं जिस प्रकार अमृतपान से देवता तृप्त होयँ महालयश्राद्ध में ब्राह्मण भोजन कराने से जो तृप्ति पितरों को होती है वही दरिद्रीपुरुष के गोग्रास औ अरण्य रोदन से भी होती है महालयपक्ष में सूतकआदि कोई विघ्न होजाय तो सूतकान्त में वृश्चिक के सूर्य्यपर्यंत भी श्राद्धकरै महालयश्राद्ध में नौ ब्राह्मणों को निमन्त्रण देवै पिता १ पितामह २ प्रपितामह ३ ॥ मातामह १ प्रमातामह २ वृद्धप्रमातामह ३ ॥ इनके उद्देश्य से एक एक ब्राह्मणों को विश्वेदेवों के उद्देश्यसे दो ब्राह्मणों को औ विष्णुभगवान् के उद्देश्य से एकब्राह्मण को निमन्त्रण देवै इसप्रकार नौ ब्राह्मणों को वरै अथवा पिता आदिके निमित्त एक ब्राह्मण मातामह आदि के उद्देश्य से एक ब्राह्मण विश्वेदेवों के निमित्त एक औ विष्णुभगवान् के उद्देश्य से एक ब्राह्मण वरै इस प्रकार चारही ब्राह्मणों को वरै परन्तु ब्राह्मण वेदवेत्ता कुलीन औ सदाचारहोने चाहिये दुःशील ब्राह्मणों को वरनेवाला

श्राद्ध का घातक होता है जो पुरुष आश्विनकृष्णपक्ष में श्राद्ध से महालयश्राद्ध करै वह सब तीर्थों के स्नान का फल अग्निष्टोम आदि यज्ञ करने का फल तुलापुरुषआदि महादान करने का फल चांद्रायण आदि व्रत करनेका फल सांग चारों वेदों के पारायण का फल गायत्री आदि महामन्त्रों के जपका फल औ इतिहास पुराण आदि के श्रवणका फल पाता है महालयश्राद्ध के तुल्य कोई पुण्यकर्म्म नहीं है महालयश्राद्ध करने से विष्णुलोक ब्रह्मलोक औ शिवलोककी प्राप्ति होती है महालयश्राद्ध नित्य है औ काम्यभी है इसी से उसके न करनेसे प्रत्यवाय होता है औ करने से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं महालयश्राद्ध करने से भूत वेताल अपस्मार ग्रह शाकिनी डाकिनी राक्षस पिशाच वेताल और भी अनेकभूत तत्क्षण नाश को प्राप्त होते हैं औ बहुत संपत्ति मिलती है महालयश्राद्ध करने से राजा दशरथ ने रामचन्द्र आदि चारपुत्र पाये औ उत्तमकीर्त्ति भी पाई ययातिराजाने भी महालयश्राद्ध के प्रभाव से यदु आदि उत्तम उत्तम पुत्र औ स्वर्ग में वासपाया दुष्यन्तराजा ने महालयश्राद्ध कर भरत नामक पुत्र पाया राजानल महालयश्राद्ध के प्रभाव से बड़ीविपत्ति से छूट फिर राज्यको प्राप्तहुआ औ अपने शत्रु कलियुग औ पुष्कर का निग्रह किया औ इन्द्रसेन नामक उत्तम पुत्र पाया हरिश्चन्द्र राजाभी महालय विधान से विश्वामित्र के दियेहुये घोरदुःख से टरा औ फिर भी अपनी भार्या चन्द्रवती औ पुत्र रोहिताश्व पाये औ अठारह द्वीपका प्रभुहुआ दण्डकारण्य में महालयश्राद्धकर रामचन्द्रजी ने रावण को मारा औ सीतापाई राजायुधिष्ठिर ने महालयश्राद्ध के प्रभाव से सब शत्रुमारे वशिष्ठ अत्रि भृगु कुत्स गौतम अंगिरा कश्यप भरद्वाज विश्वामित्र अगस्त्य पराशर मार्कण्डेय आदि मुनि महालयश्राद्ध करने से अणिमा आदि आठसि-

द्धियों को प्राप्तहो जीवन्मुक्त हुये इसलिये कल्याण की इच्छा वाले पुरुषों को अवश्यही महालयश्राद्ध करना चाहिये जो महालयश्राद्ध न करै उसको भूत वेताल आदि से भय होताहै इतना कह दत्तात्रेयजी बोले कि हे दुराचार ! कुशस्तलनाम ग्राम में वेदनिधि ब्राह्मण था उसने महालयश्राद्ध न किया इसलिये पितरों के शापसे वेतालहुआ वही वेताल तेरे शरीर में आविष्ट हुआ था हे दुराचार ! महालयश्राद्ध कर औ ब्राह्मणों को षट्रसभोजन करावे तो तू सदा सुखी रहेगा औ कभी दरिद्री न होगा औ आजसे कभी महापातकी पुरुषका संग मतकरना एकबार करने से तैंने बड़ादुःख भोगा अब तू हमारी आज्ञासे अपनेदेश को जा यह दत्तात्रेयमुनिकी आज्ञापाय दुराचार प्रसन्न हो अपनेदेश को गया औ अपनेघर में जाय गृहस्थाश्रमके धर्म्म सेवन करने लगा फिर उसने कभी महापातकी का संसर्ग नहीं किया औ रामचन्द्रके धनुष्कोटि में स्नान करने के प्रभावसे अन्त में मुक्तहुआ इतनी कथासुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! यह दुराचारके मुक्तहोनेका वृत्तांत हमने वर्णनकिया धनुष्कोटि सब पातक हरने में समर्थ है जहां स्नान करने से दुराचार मुक्त हुआ धनुष्कोटिके प्रभाव को कौन वर्णन करसक्ताहै जिन पापोंका प्रायश्चित्त नहीं है औ किसी प्रकार से भी जे महापातक निवृत्त नहीं होसक्ते वे सब धनुष्कोटि में स्नान करतेही बिलाय जातेहैं शूद्रकरके स्थापित शिवलिंग औ विष्णु मूर्त्तिको जो प्रणामकरै उस पाप का कहीं प्रायश्चित्त नहीं लिखा धनुष्कोटि में स्नान करने से वह पाप भी निवृत्त होजाता है ब्राह्मण का निन्दक विश्वासघाती कृतघ्न भ्रातृ स्त्री गामी शूद्रान्नभोजी वेदनिन्दक कन्याविक्रयी घोड़े गौ देवमूर्त्ति धर्म्म तीर्थ फल आदि बेचनेहारे मातृ पितृ द्रोही संन्यासियों से द्रोह करने हारे शिव विष्णु गुरु ब्राह्मण यती आदि के निन्दक औ सत्कथा

में दूषण लगानेहारे मनुष्यों के शुद्धहोनेके लिये कोई प्रायश्चित नहीं कहा परन्तु वे भी धनुष्कोटि में स्नान करने से शुद्ध हो जाते हैं हे मुनीश्वरो ! यह धनुष्कोटि का वैभव हमने वर्णन किया जिसके श्रवण करने से मनुष्य मुक्त होजाताहै ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

क्षीरकुण्डका माहात्म्य औ मुद्गलमुनि की कथा ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! चक्रतीर्थ से लेकर धनुष्कोटि पर्यंत चौबीस तीर्थोंका हमने माहात्म्य वर्णन किया अब आप क्या श्रवण किया चाहते हैं यह सूतजीका वचन सुन नैमिषारंण्य वासी शौनक आदि मुनिबोले कि हे सूतजी ! आपने पहिले कहाथा कि क्षीरकुंण्ड के समीप चक्रतीर्थ है सो चक्रतीर्थ का माहात्म्य तो श्रवण किया अब आप क्षीरकुण्डका माहात्म्य विस्तार से वर्णन करैं औ क्षीरकुण्ड के नाम का कारण भी कहैं यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो ! जो आपने पूछा उसका हम वर्णन करते हैं आप श्रद्धा से श्रवणकरैं देवीपत्तन से पश्चिमदिशा में थोड़ी दूरपर पुलग्रामनाम पुण्य क्षेत्रहै जहां से रामचन्द्रजीने सेतु का आरम्भ किया उसी स्थान में क्षीरकुण्ड है जिसके ध्यान करने से दर्शन से औ स्पर्श से मनुष्य के पातक निवृत्त होते हैं पूर्व्वकाल में नारायणकी प्रीति के लिये मुद्गलमुनिने पुलग्राम में यज्ञकिया तब प्रसन्नहो विष्णु भगवान् प्रकटहुये कि नीलमेघ के समान जिनका वर्ण पीताम्बर पहिने शङ्ख चक्र गदा पद्म धारे कौस्तुभमणि करके शोभित भक्तोंको आनन्द देनेहारे औ वामांग में लक्ष्मी करके शोभित थे उनको देख भक्ति से मुद्गलमुनि स्तुति करने लगे ॥

मुद्गलउवाच । प्रथमंजगतःस्रष्ट्रेपालकायततःपरम् । संहर्त्रेचततःपश्चान्नमोनारायणायते १ नमश्शंकररूपाय

कमठायचिदात्मने। नमोवराहवपुषेनमःपंचास्यरूपिणे २ वामनायनमस्तुभ्यंजमदग्निसुतायते ॥ राघवायनमस्तु भ्यंबलभद्रायतेनमः ३ कृष्णायकल्कयेतुभ्यंनमोविज्ञान रूपिणे। रक्षमांकरुणासिंधोनारायणजगत्पते ४ निर्लज्जं कृपणंक्रूरंपिशुनंदाम्भिकंशठम् ॥ परदारपरद्रव्यपरक्षेत्रैक लोलुपम् ॥ असूयाविष्टमनसंमांरक्षकृपयाहरे ५ ॥

यह मुद्गलमुनि के मुख से स्तुति सुन प्रसन्नहो भगवान् कहनेलगे कि हे मुद्गल! हम तेरी भक्ति स्तुतिसे प्रसन्न होकर यज्ञ भाग ग्रहण करनेको साक्षात् आये हैं यह भगवान् का वचन सुन प्रसन्नहो मुद्गलमुनि ने प्रार्थना की कि महाराज आज मेरा जन्म तप वंश औ शरीर सफलहुआ जो आप मेरे यज्ञमें हवि ग्रहण करने के लिये साक्षात् आये जिनको योगी पुरुष ध्यान से देखते हैं उनका मैं साक्षात् दर्शन कररहाहूं इस प्रकार प्रार्थनाकर मुद्गलमुनिने पाद्य अर्घ्य आचमन आसन चन्दन पुष्प आदि से भगवान् का पूजनकर पुरोडाश आदि हवि उनके अर्पणकिया भगवान् ने भी उस हविको अपने हाथसे ग्रहण कर भक्षण किया भगवान् के हवि भक्षण करने से अग्नि सहित सब देवता ब्राह्मण ऋत्विक् यजमान औ सम्पूर्ण चराचर जगत् तृप्त होगया भगवान् ने कहा कि हे मुद्गल! हम प्रसन्न हैं वर मांग तब मुद्गलने प्रार्थनाकी कि महाराज आपने मेरे यज्ञ में हवि ग्रहणकिया इसीसे मैं कृतार्थ हूं तौभी यह चाहताहूं कि आपके चरणारविन्द में निष्कपट औ निश्चल मेरी भक्ति होनी चाहिये औ यह भी मेरी इच्छा है कि सायंकाल औ प्रातःकाल गौके दुग्धसे आपकी प्रीति के लिये हवन कियाकरूं वेदमें दोनों काल दुग्ध करके हवन करना लिखाहै औ मुझसरीखे निर्द्धन तपस्वी के पास गौ कहां से आवे यह मुद्गलका वचन सुन भक्त-

वत्सलु श्रीविष्णुभगवान् ने विश्वकर्म्मा को बुलाकर एक उत्तम सरोवर बनवाया औ स्फटिक आदि उत्तम पाषाणों का प्राकार उसके चारों ओर बनवाया औ कामधेनु को बुलाकर भगवान् ने आज्ञादी कि हे सुरभि! यह हमारा भक्त मुद्गलमुनि हमारी प्रीति के लिये हवन किया चाहता है इसलिये दोनोंकाल आयकर इस सरोवरको दुग्धसे भरदे उसी दुग्धसे यह हवन कियाकरेगा कामधेनु ने भगवान् की यह आज्ञा अङ्गीकार करी तब भगवान् ने मुद्गल से कहा कि हे मुद्गल! इस सरोवर से कामधेनु का दुग्ध नित्य लेकर हमारी प्रसन्नताके लिये सायंकाल औ प्रातःकाल हवन कियाकर जिससे हमारी प्रसन्नता होय हमारी प्रसन्नता होनेसे तुझे सम्पूर्ण सिद्धियां प्राप्तहोंगी औ यह क्षीरसर नाम तीर्थ होगा जिसमें स्नान करने से पातक महापातक सब निवृत्त होजायँगे औ हे मुद्गल! तू भी देहके अन्तमें हमारे समीप प्राप्त होगा इतनाकह मुद्गलको आलिंगन कर विष्णुभगवान् अन्तर्द्धान होगये मुद्गल ने भी सैकड़ों वर्ष उस सरोवर से दुग्धलेकर हवनकिया औ अन्त में मुक्तिपाई इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! यह क्षीरसर की उत्पत्ति हमने कही यह तीर्थ सबलोक में प्रसिद्ध है कश्यपमुनि की पत्नी कद्रूने छलसों अपनी सपत्नी विनताको जीता इससे इसको बड़ा पाप लगा तब कश्यपजी की आज्ञासे कद्रू ने क्षीरसरोवर में स्नान किया तब वह पाप निवृत्त हुआ इस तीर्थ में जे पुरुष स्नान करें उनको यज्ञ दान तप तीर्थसेवन वेदपाठ आदि कर्मों से कुछ प्रयोजन नहीं क्षीरकुण्डका पवन जिसके देहमें लगे वह ब्रह्मलोक में प्राप्त होता है औ वहां बहुत काल निवास करके मुक्ति पाता है क्षीरकुण्डमें स्नान करनेहार पुरुष अग्निके तुल्य देदीप्यमान होहो कर यमराजके भी मस्तकपर विराजमान होते हैं औ सब नरक उनके लिये व्यर्थ होजाते हैं औ वैतरणी नदी भी

शीतल होजाती है क्षीरकुण्ड को छोड़ और तीर्थ में जाना गोदुग्धको छोड़ अर्कदुग्धके लिये भटकने के तुल्यहै क्षीरकुण्ड में स्नान करनेहारे पुरुषों को कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं मुक्ति भी हाथपरहीधरी है यह हम भुजा उठाकर सत्य कहतेहैं कभी इस बातमें संदेह मतकरो जो इस अध्यायको भक्तिसे पढ़े वह क्षीर कुण्ड के स्नान के फलको प्राप्त होताहै ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

विनताकद्रूकीकथा औ गरुड़का विचित्रइतिहासक्षीरकुण्डका माहात्म्य ॥

शौनक आदि ऋषि पूंछते हैं कि हे सूतजी ! कद्रू कौनथी औ उसने अपनी किस सपत्नी को छलसे जीता क्या छलकिया औ फिर किस प्रकार क्षीरकुण्ड में स्नान कर निष्पापहुई यह आप कृपाकर वर्णन करैं तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो ! प्रजापतिकी कन्या विनता औ कद्रू दोनों कश्यपकी भार्याथीं विनता के पुत्र अरुण औ गरुड़ हुये कद्रू के पुत्र वासुकि अनन्त आदि हज़ारोंसर्पहुये एकदिन कद्रू औ विनता ने इन्द्र के घोड़े उच्चैःश्रवाको देखा तब कद्रू ने कहा कि हे विनते ! इस घोड़े के बाल नीलेहैं कि श्वेत तब विनता बोली कि हे कद्रू ! मुझे तो इस के बाल श्वेत देखपड़ते हैं कद्रू ने कहा कि जो इसके श्वेत बाल होयँ तो मैं तेरी दासीबनूं औ नील होयँ तो तू मेरी दासी होगी यह प्रण दोनोंने किया कद्रू ने सर्पोंको बुलाकर सब बातकही औ अपने पुत्र वासुकि आदिकों से यहकहा कि तुम उच्चैःश्रवा के श्वेत बालोंको आच्छादनकरो जिससे मुझे विनता की दासी न बनना पड़े यहबात सर्पोंने अंगीकार न करी तब कद्रूने क्रोध कर उनको शापदिया कि जन्मेजय के यज्ञ में तुम्हारा नाश होगा यह शाप सुन व्याकुलहो कर्कोटक नागने कद्रूसे कहा कि हे माता ! मैं उच्चैःश्रवा को कृष्णवर्ण करदूंगा तू कुछभय मत कर

यह कह कर्कोटक नाग उच्चैःश्रवाके लिपटगया उसकी देहकांतिसे उच्चैःश्रवा का रंग नील अंजनके समान होगया तब कद्रू विनताको संगले उच्चैःश्रवा को देखने चली औ चन्द्र ऐरावत आदिरत्नों के उत्पत्ति स्थान समुद्र को लंघन कर इन्द्रके वाहन उच्चैःश्रवा के समीप पहुँची वहां देखा कि उच्चैःश्रवाका रंग कालाहै तब विनता बहुत व्याकुलहुई कद्रूने उसको अपनी दासी बनालिया इतने में विनता का पुत्र गरुड़भी अंडेको फोड़ पर्वत के समान औ अग्निज्वाला के तुल्य देदीप्यमान निकला गरुड़ का रूप देख तीनोंलोक भयभीत होगये देवता स्तुति करने लगे तब गरुड़ने अपने उस भयंकर रूपको त्यागदिया औ अपने बड़ेभाई अरुणको पीठपर चढ़ाय गरुड़ अपनी माता के समीप पहुँचा कद्रूने विनतासे कहा कि हे दासी ! मैं पाताल को जाया चाहती हूं इसलिये तू मुझे उठाले औ तेरापुत्र गरुड़ मेरे पुत्र नागोंको उठाके लेचलै विनताने यह बात गरुड़से कही गरुड़ने माताकी आज्ञाअंगीकार करी औ सब सर्पोंको पीठपर चढ़ाकर उड़ा कद्रू विनतापर चढ़कर चली गरुड़ बहुत ऊंचा उड़ा इस लिये सूर्यके तेजसे सर्प दग्ध होनेलगे तब कद्रूने इन्द्रकी स्तुति की इन्द्रने वृष्टि करके सर्पोंका ताप शांतकिया गरुड़ भी क्षणमात्र में नागलोक में जा पहुँचा वहां सर्पोंने फिर गरुड़ से कहा कि हे दासीपुत्र ! हम द्वीपान्तर देखने जाया चाहते हैं इसलिये शीघ्रही हमको उठा लेचल तब गरुड़ने अपनी माता विनतासे पूछा कि हे माता ! मैं सर्पोंको उठाये फिरताहूं औ तू कद्रूका वाहन होरही है औ सर्प मुझे बार बार दासीपुत्र कहते हैं इसमें क्या कारण है यह सब तू मुझे यथार्थ बतादे तब विनता ने कहा कि हे पुत्र ! मुझको कद्रूने छलसे जीतकर अपनी दासी बनाया इससे तुझे दासीपुत्र कहते हैं औ इसीकारण मैं औ तू इनके वाहन बनरहे हैं यह सब वृत्तांत विनताके मुखसे सुनकर गरुड़ ने

पूंछा कि हे माता! इस दासपनेसे हम क्योंकर छूटैं तब विनताने कहा कि हे पुत्र! सर्पोंसे औ कद्रूसे पूंछ गरुड़ने सर्पोंसे पूंछा कि मेरी माता दासभाव से क्योंकर छूट सक्ती है सर्पोंने कहा कि हे गरुड़! स्वर्ग से जो तू हमको अमृत लादेवै तो आजही तेरी माताको छोड़देवैं यह सुन गरुड़ अपनी माताके समीप आया औ कहनेलगा कि हे माता! मैं देवताओं से अमृत लेनेको जाताहूं कुछ मुझे खाने को दे विनता ने कहा कि हे पुत्र! समुद्र में एक समूह म्लेच्छों का रहता है उनको तू भक्षणकर औ अमृत ले आ उन म्लेच्छों में एक ब्राह्मणभी एक म्लेच्छस्त्री में अनुरक्त होकर रहता है उसको मत भक्षण करना उसके भक्षण करने से कंठमें दाह होगा हे पुत्र! शीघ्र जाकर अमृत लेआ इन्द्र आदि देवता तेरे अंगोंकी रक्षाकरैं गरुड़ भी माता से बिदा हो समुद्र में पहुँचा औ पर्वत की कंदरा के समान अपना मुखफैलाय म्लेच्छों को भक्षणकरनेलगा उनके साथ वह ब्राह्मणभी गरुड़ के मुखमें आगया परंतु कंठदाह होने से गरुड़ ने जाना औ उस ब्राह्मणसे कहा कि हे ब्राह्मण! है तो तू पातकी परंतु ब्राह्मण होने से अवध्य है इसलिये मेरे मुखसे निकलजा ब्राह्मणने कहा कि मेरी स्त्री भी निकले तो मैं निकलूं उसके विना मैं क्षणभर भी नहीं रहसक्ता गरुड़ने ब्राह्मणको औ उसकी स्त्री को भी अपने मुखसे निकालदिया ब्राह्मण अपनी स्त्री समेत वहां को चला गया औ गरुड़ भी सब म्लेच्छों को भक्षणकर अपने पिता कश्यपजीके समीपआया कश्यपजीने पूंछा कि हे पुत्र! कहां जाताहै गरुड़ने कहा कि महाराज माताका दासीभाव निवृत्तकरने के लिये अमृतलेने जाताहूं बहुतसे म्लेच्छ भक्षणकरके भी मुझे तृप्तिनहीं हुई क्षुधाके मारे प्राण जाते हैं इसलिये मुझे कुछ भोजन आप बतावैं उस भोजनके करने से मैं अमृत लानेको समर्थ होजाउंगा यह गरुड़ का वचन सुन कश्यपजी बोले कि

हे पुत्र ! पूर्वकाल में विभावसु नाम एकमुनिथा औ उसका छोटा भाई सुप्रतीकनाम था उन दोनोंने आपुस में विवादकर परस्पर शापदिया उसशाप से सुप्रतीक तो छःयोजन ऊंचा हाथी होगया औ विभावसु दशयोजन चौड़ा औ तीन योजनऊंचा कूर्म अर्थात् कछुवा होगया वे दोनों इस सरोवरमें पूर्व वैरको स्मरण करते हुये अब भी युद्ध करते हैं उन दोनों को तू भक्षण करले गरुड़ भी पिताकी आज्ञा पाय वहां गया औ उन दोनोंको अपने पंजों में उठाय ले उड़ा औ विलम्बनाम तीर्थपर गया वहां एक पुराना बटवृक्षथा उसने गरुड़से कहा कि हे गरुड़ ! तू मेरी शाखापर बैठकर इनको भक्षणकर ले बटवृक्षका यह वचनसुन गरुड़ उसकी शाखापर बैठा गरुड़के बैठतेही भारसे वह शाखा टूटी उसमें साठहजार बालखिल्य ऋषि तप करने को लटक रहेथे गरुड़ने देखा कि शाखा भूमिपर गिरैगी तो इनको क्लेश होगा इसलिये गरुड़ अपनी चोंचमें उस शाखाको भी लेउड़ा तब गरुड़ से कश्यपजी ने कहा कि हे पुत्र ! निर्जनवन में जाकर इस शाखाको रखदे गरुड़ने भी पिताकी आज्ञासे निर्जनवन में जाय वह शाखा रक्खी औ हाथी तथा कच्छपको भक्षण किया इस अवसर में स्वर्ग के बीच उत्पात होने लगे तब इन्द्रने बृहस्पतिसे पूछा कि हे देवगुरो ! उत्पात क्यों होते हैं तब बृहस्पति कहनेलगे कि हे देवराज ! पूर्वकाल में कश्यपमुनि ने यज्ञ करना चाहा तब अंगुष्ठ प्रमाण बालखिल्य ऋषियों को यज्ञ की सामग्री इकट्ठी करने के लिये भेजा मार्गमें गौके खुरके गढ़े में जल भराथा उसमें वे डूबने लगे उनको देख तुमने हास्य किया तब क्रोधकर उनने यज्ञाग्नि में इस कामना से हवन किया कि कश्यपके ऐसा पुत्रहोय जो इन्द्रको भय देवै वह कश्यप का पुत्र गरुड़ हुआहै औ अब अमृत हरने के लिये यहां आताहै इसीसे ये घोरतम उत्पात होतेहैं यह बृहस्पति का वचन

सुन इन्द्र ने सब देवताओं को बुलाकर कहा कि गरुड़ अमृत हरने आताहै तुमसे रक्षा कीजाय तो करो यह इन्द्रका वचन सुन अस्त्र शस्त्र धारण कर सब देवता अमृत की रक्षाकरने लगे इतने में गरुड़ भी वहां आय पहुँचा उसको देख सब देवता भयसे कांपउठे देवताओं के साथ गरुड़ का युद्ध होनेलगा गरुड़ ने अपनी चोंचसे देवताओं को भेदन किया देवताओं ने भी गरुड़ को शस्त्रों से बहुत पीड़ा दी तब गरुड़ ने अपने पंखोंके पवनसे देवताओंको उड़ाकर दूर फेंकदिया देवता बड़ा क्रोधकर गरुड़ के ऊपर बाण भिन्दिपाल तोमर आदि शस्त्रोंकी वर्षा करने लगे गरुड़ ने अपने पंखों से इतनी धूलि उड़ाई कि देवताओं के नेत्र फूटने लगे तब देवताओं ने वायु करके उस धूलिको शांत किया औ गरुड़नेभी वसु रुद्र आदित्य मरुत् आदि देवताओं को अपने तीखे नख औ चोंचसे घायलकिया तब देवता भागगये गरुड़ अमृत के समीप चला तो देखा कि अमृत के चारोंओर प्रचण्ड अग्नि प्रज्वलित होरहाहै तब गरुड़ ने हजार चोंच करली औ बड़ी बड़ी नदियों का चोंचों में भर भर उस अग्नि को बुझाया आगे जाकर देखा तो बड़ा तेजस्वी औ तीखी धारवाला चक्र अमृत के चारों ओर भ्रमताहै तब गरुड़ ने छोटी देहकिया औ चक्रके बीच से निकलकर पार होगया आगे देखा तो दोसर्प अमृत की रक्षाकरते हैं जिनकी दृष्टिसेही सब भस्म होजायँ गरुड़ ने अपने पंख औ चोंचसे उनसर्पों को मूर्च्छित करादिया औ अमृत के घटको लेकर उड़ा तब विष्णु भगवान्ने कहा कि हे गरुड़ ! तेरा पराक्रम देख हम बहुत प्रसन्न हुये वरमांग गरुड़ने कहा कि तुम्हारे ऊपर मेरी स्थितिहोय औ अजर अमर होजाऊं औ तुमको जो वर चाहिये वह मुझसे भी मांगो तब विष्णुभगवान् ने कहा कि हमारे वाहन तुम होजावो गरुड़ ने भी यह बात अङ्गीकार करी विष्णुभगवान् ने गरुड़

को वरदिया अपने रथकी ध्वजापर स्थापन किया औ वाहनभी बनाया इन्द्रने देखा कि गरुड़ अमृत को लियेजाता है तो बड़ा क्रोधकर वज्रमारा परन्तु गरुड़ने हँसकर कहा कि हे इन्द्र! तेरे वज्रप्रहार से मुझे कुछभी व्यथा न हुई परन्तु तेरे आदर के लिये एक पंख मैं अपना गिरायेदेताहूं यह कह गरुड़ ने एक छोटासा पर डालदिया उस सुन्दर परको देख देवताओं ने गरुड़ का नाम सुपर्ण रक्खा गरुड़ ने कहा कि हे इन्द्र! तीनोंलोक को मैं उठा सक्ताहूं औ हज़ार इन्द्र भी आवें तो मेरा क्या कर सक्तेहैं यह गरुड़ का वचनसुन इन्द्रने कहा कि हे गरुड़! तू अमृत को क्या करेगा हमको देदे जिनसर्पों को तू अमृत दिया चाहता है वे अमृत पानकर अजर अमर होजायँगे तो देवताओं को औ सब जगत्को पीड़ादेंगे यहसुन गरुड़ने कहा कि हे इन्द्र! जहां मैं इस अमृत को स्थापन करूं वहां से तुम हर लाना गरुड़ का यह वचन सुन प्रसन्न हो इन्द्र ने कहा कि हे गरुड़! तुमसे हम प्रसन्नहैं वरमांग तब गरुड़ ने कहा कि हे इन्द्र! जिन सर्पोंने मेरी माता को छलसे दासी बनाया वे मेरे भक्ष्य होयँ इन्द्रने गरुड़ को यही वरदिया गरुड़ अमृत लेकर चला इन्द्र उसके पीछे पीछेगये गरुड़ ने माताके समीप पहुँच सर्पोंसे कहा कि यह अमृत मैं ले आयाहूं औ कुशाओं के ऊपर इस अमृत घटको रखताहूं तुमभी स्नानकर पवित्र हो इस अमृत को पान करना अब मेरी माताको छोंड़दो सर्पभी अमृतघट देख प्रसन्न होगये औ गरुड़ की माता विनता को छोंड़ दिया औ आप सब स्नान करने गये इस अवसर में इन्द्र आकर अमृत को उठा ले गये इतने में सर्पभी स्नान कर आये तो देखा कि अमृत नहीं है तब उन कुशाओं को चाटने लगे जिनपर अमृतघट रक्खा था कुशाओं के चाटने से सर्पों की जिह्वा चीरीगई उसी दिन से सर्प द्विजिह्व कहाये औ अमृत के स्पर्श होनेसे कुशभी

पवित्र मानेगये इसप्रकार अपनी माताको दासीभाव से छुटाय गरुड़ने कद्रूको शापदिया कि तैंने मेरी माताको छलसे दासी बनाया इसलिये तू पतिकी सेवाके योग्य न होगी यह शापदेकर गरुड़ चलागया कद्रू औ विनता दोनों कश्यपजी के समीपगईं कद्रू को देख कश्यपजी क्रोधकर बोले कि हे कद्रू! तैंने छल से विनता को जीता इसलिये हमारी सेवाके योग्य तू नहीं है जो स्त्री पुरुष छलसे जीते वह महापातकी होता है औ उसके साथ भाषण करने से भी पातक लगता है इसलिये तेरेसाथ सम्भाषण करने से हमभी पातकी होजायँगे छली मनुष्य जिस पंक्ति में भोजनकरै वह पंक्ति नरक को जाती है छली पुरुष का मुख देख सूर्य्य जल अथवा अग्नि को देखै तब शुद्ध होताहै छली पुरुष के समीप रहने से अवश्य नरक में वास होताहै इसलिये हे दुष्टे! शीघ्रही हमारे आश्रमसे चलीजा इतना कह कश्यपजी ने विनता को अङ्गीकार करलिया कद्रू भी पतिका यह रूक्ष वचन सुन रोती हुई उनके चरणों पर गिरी परन्तु कश्यपजी ने उसका अपराध क्षमा नहीं किया तब विनता ने प्रार्थना करी कि महाराज आप इस मेरी बहिन का अपराध क्षमाकरैं इसने भूल से यह अपराध किया इसलिये आपको कृपाकर क्षमाही करना चाहिये साधु पुरुष दयालु होते हैं यह विनता का वचन सुन कश्यपजी बोले कि हे विनते! तेरी शपथ खाकर कहते हैं कि जबतक यह दुष्टा इस पातक का प्रायश्चित्त न करैगी हम ग्रहण न करैंगे तब विनता ने फिर प्रार्थना करी कि महाराज आपही प्रायश्चित्त बतावैं जिससे यह आपकी सेवा के योग्य होय तब क्षणमात्र ध्यानकर कश्यपजी ने कहा कि दक्षिण समुद्र के तीर पुल्लग्राम के समीप क्षीरसरोवर नाम तीर्थ है वहां जाकर यह स्नानकरै तब शुद्धहोगी और चाहे हज़ार प्रायश्चित्त करै तो भी शुद्ध नहीं होसक्ती यह पतिका वचन सुन अपने पुत्रों

को संग लेकर कद्रू क्षीरसरोवर को चली औ कुछ दिनों में वहां पहुँच उपवास कर संकल्पपूर्व्वक तीन दिन स्नान किया चौथे दिन स्नान करनेलगी तब आकाशवाणी हुई कि हे कद्रू! इस तीर्थ के प्रभाव से तू छलदोषसे निवृत्त हुई औ गरुड़का शाप भी जाता रहा अब जाकर पतिकी शुश्रूषा कर पतिभी तुझे ग्रहण करैगा यह आकाशवाणी सुन प्रसन्न हो तीर्थकी प्रदक्षिणा कर अपने पुत्रों समेत कद्रू कश्यपजी के समीप आई कश्यपजी ने भी उसको शुद्ध जान अंगीकार किया इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! यह क्षीरकुण्ड का प्रभाव हमने वर्णन किया जो इस अध्याय को पढ़ै अथवा सुनै वह क्षीरकुण्ड के स्नान फल को प्राप्त होता है औ अश्वमेधआदि यज्ञ करने का सहस्र गोदान का औ गङ्गा आदि तीर्थों में स्नान करने का फल पाय उत्तमगति पाता है॥

उन्तालीसवां अध्याय॥

कपितीर्थका माहात्म्य औ रंभा अप्सरा की कथा॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! अब हम कपितीर्थ का माहात्म्य वर्णन करते हैं वह तीर्थ लोकों के कल्याण के लिये वानरों ने बनाया है रावण को मार गन्धमादनपर्व्वत में जब हनुमान्‌आदि वानर आये तब उनने यह तीर्थ बनाय उसमें सब ने स्नान किया औ तीर्थ को यह वर दिया कि इस तीर्थ में जे पुरुष स्नान करैं वे सब पातकों से छूट मुक्तिपावैं औ उनको नरक दरिद्र आदि का भय नहीं होवै जो यह विचार करै कि मैं कपितीर्थ को जाऊंगा औ इस निमित्त सौ कदमभी चलै वह सद्गति पावै यह वर देकर सब वानरोंने रामचन्द्रजी से प्रार्थना करी कि आपभी इस हमारे तीर्थ को उत्तम वर देवैं तब अपने भक्त वानरों की प्रार्थना सफल करने के लिये रामचन्द्रजी ने

वर दिया कि इसतीर्थमें स्नान करनेसे गंगा प्रयागआदि तीर्थों के स्नान का फल गोसहस्रदान अग्निष्टोम आदि यज्ञ गायत्री आदि मंत्रों के जप चारोंवेद के पारायण औ शिव विष्णुआदि देवताओंके पूजन का फल प्राप्तहोगा रामचन्द्रजीके यह वर देने के अनन्तर शिव ब्रह्मा इन्द्र यम वरुण कुबेर वायु चन्द्रमा आदित्य निर्ऋति साध्य वसु विश्वेदेवआदि सब देवता सनकआदि योगी नारदआदि देवर्षि अत्रि भृगु कुत्स गौतम पराशर कण्व अगस्त्य सुतीक्ष्ण विश्वामित्रआदि सब मुनीश्वर उस तीर्थकी प्रशंसा करने लगे औ सबने भक्ति से उस कपितीर्थ में स्नान किया औ सबने यह कहा कि यह कपितीर्थ सब लोकमें प्रसिद्ध होगा इतना कह सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! मोक्ष की इच्छा वाले पुरुषोंको अवश्यही कपितीर्थ में स्नान करना चाहिये इस तीर्थ का माहात्म्य हम कहांतक वर्णनकरैं विश्वामित्रमुनि के शापसे शिलाहुई रंभा इस तीर्थके प्रभाव से फिर अपने रूपको प्राप्तहुई यह सुन मुनीश्वरोंने पूंछा कि हे सूतजी! रंभाको विश्वामित्रमुनि ने क्यों शाप दिया औ शिला होकर कपितीर्थ में क्यों कर पहुँची यह आप वर्णन करैं तब सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो! पूर्वकाल में कुशिकवंशके बीच विश्वामित्र नाम एक राजा हुआहै वह एक समय बहुतसी सेना साथले अपने राज्य को देखने निकला बहुत देश देखताहुआ वशिष्ठजी के आश्रम में पहुंचा वशिष्ठजीने भी कामधेनु के प्रभावसे राजाका औ उस की सेनाका भलीभांति सत्कार किया भांति २ के भोजन सबको कराये कामधेनु का प्रभाव देख राजा विश्वामित्र ने वशिष्ठजी से कामधेनु की याचना की परन्तु वशिष्ठजी ने कामधेनु न दी तब राजा ने बलात्कार से कामधेनु को हरना चाहा परन्तु कामधेनुके शरीर से इतने म्लेच्छगण उत्पन्न हुये कि उनने विश्वामित्र की सेनाका संहार किया तब राजा विस्मित वशिष्ठ जी

से पराजित हो हिमालयमें जाय तप करनेलगा औ शिवजी को प्रसन्नकर उनसे सब अस्त्रपाये फिर वशिष्ठजीके आश्रम में आय राजा विश्वामित्र वशिष्ठजी पर अस्त्र छोंड़नेलगा परन्तु वशिष्ठ जीने अपने ब्रह्मदण्ड करके सब अस्त्रोंको निष्फल करदिया तब विश्वामित्र बहुत लज्जित हुआ औ ब्राह्मण बनने के लिये तप करने में प्रवृत्त हुआ पूर्व आदि तीन दिशाओंमें जहां तप करने लगा वहांहीं विघ्न हुआ तब उत्तर दिशा में हिमालयपर्व्वत के बीच कौशिकी नदीके तटपर तप करनेलगा निराहार जितेन्द्रिय औ जितश्वास होकर दिव्य हज़ारवर्षपर्यन्त तप किया ग्रीष्म ऋतु में पंचाग्नि तापता शिशिरऋतु में जलशय्या में सोता औ वर्षाऋतु में निरावरणस्थान में रहता इसप्रकार ऊपरको भुजा उठाय एकहज़ार दिव्य वर्ष तक अत्युग्र तप विश्वामित्रने किया तब देवता बहुत व्याकुल हुये औ सबने रंभाको बुलाकर कहा कि हे रंभे! हिमालयपर्वतमें जाकर विश्वामित्रको अपनेकटाक्षों से मोहितकर जिसप्रकार उसके तप में विघ्नहोय ऐसा उपायकर यह देवताओं का वचन सुन हाथ जोड़ भय से कांपतीहुई रंभा कहने लगी कि महाराज विश्वामित्रमुनि महाक्रूर हैं वह मुझे अवश्यही शापदेगा इसलिये आप सब मुझे ऐसे क्रूरकर्ममें आज्ञा न देवें मैं आपकी दासीहूं मेरी रक्षाकरैं यह रंभाका वचन सुन इन्द्रने कहा कि हे रंभे! भय मतकर तेरी सहायके लिये वसंत औ कामदेवको साथले मैं भी आताहूं तू चलकर अपने रूपसे विश्वामित्रको वशकर रंभा इन्द्र की आज्ञापाय विश्वामित्रके आश्रमको गई वहां जाय विश्वामित्र के सम्मुख खड़ी होकर हाव भाव करनेलगी औ वसंतऋतु चारों ओर छागया कोकिल मीठे मीठे शब्द बोलनेलगे यह सब देख विश्वामित्र के मनमें संशय हुआ फिर योगबलसे जाना कि यह सब कर्म इन्द्रका है औ रंभाको देख विश्वामित्रमुनिने कहा कि हे रंभे! तू हमारे तप में

विघ्न करने आई है इसलिये शिला होजा औ बहुत कालतक शिलाभाव को प्राप्तहोकर एक ब्राह्मण करके इस शापसे मुक्त होगी इतना कहतेही रंभा शिला होगई विश्वामित्रमुनि भी बहुत काल तपकर वशिष्ठजी के वाक्य से ब्राह्मण हुये औ रंभा को भी शिला हुये बहुत काल व्यतीत हुआ उसी आश्रम में अगस्त्यमुनिका शिष्य श्वेतमुनि मोक्षकी इच्छासे तप करने लगा उसके तपमें एकअंगारका नाम राक्षसी नित्य विघ्नकरती मूत्र विष्ठा आदि लाकर आश्रम में डालदेती और अनेकप्रकार के उपद्रव करके नित्यही मुनिको त्रासदेती एक दिन श्वेतमुनि ने क्रोधकर वह शिला जो रंभा होगई थी उठाई औ वायव्यास्त्र मंत्र पढ़ उस राक्षसी पर चलाई आगे २ राक्षसी औ पीछे पीछे शिला सब दिशाओंमें घूमी अन्त में राक्षसी व्याकुलहो दक्षिण समुद्रके तीर कपितीर्थ में घुसी परंतु वह शिलाभी उसके ऊपर तीर्थ में गिरी गिरतेही वह राक्षसी चूर्ण होगई औ शिला भी तीर्थ का जल स्पर्श होते ही रंभाहोगई औ उसके ऊपर देवताओंने पुष्पवृष्टिकरी इतनेमें आकाश से विमान आया रंभा भी वस्त्र भूषण आदि से अलंकृत हो उर्वशीआदि अपनी सखियों समेत विमानमें बैठ कपितीर्थ की प्रशंसा करती हुई स्वर्ग को गई वह राक्षसी भी पूर्वजन्म में घृताची नाम अप्सरा थी औ अगस्त्यमुनि के शापसे राक्षसी होगई थी वह भी कपितीर्थ में प्राण त्यागने से अपने रूपको प्राप्तहो रंभाके साथही विमान में बैठ स्वर्ग को गई इसभांति शिला औ राक्षसी अगस्त्यजी के शिष्य श्वेतमुनि के प्रसाद करके औ कपितीर्थ के प्रभावसे अपने पूर्वरूप को प्राप्त हुईं इसकारण हे मुनीश्वरो! सबप्रकारसे कपितीर्थ में स्नान करना चाहिये जे पुरुष भक्तिसे इस अध्याय को पढ़ैं अथवा श्रवण करैं वे कपितीर्थ के स्नानफल को प्राप्त होकर सद्गति पाते हैं॥

चालीसवां अध्याय ॥

गायत्रीतीर्थ औ सरस्वतीतीर्थ का माहात्म्य औ ब्रह्माजी की कथा ॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! महापुण्यको देनेहारा औ नरक क्लेशका नाशकरने हारा गायत्री औ सरस्वती का माहात्म्य हम वर्णन करते हैं जिसके पढ़ने औ सुनने से महापातककी निवृत्ति होय गायत्री औ सरस्वती में जे मनुष्य स्नान करें वे कभी गर्भ-वास का दुःख नहीं भोगते औ मुक्तहोते हैं गन्धमादन पर्वत में ब्रह्मपत्नी गायत्री औ सरस्वती के सन्निधान से दो तीर्थ हैं इतना सुन मुनीश्वरोंने पूछा कि हे सूतजी! गन्धमादन पर्वत में किस कारण से गायत्री औ सरस्वती का सन्निधान हुआहै यह आप वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! पूर्वकाल में ब्रह्माजी ने कामके वशहो अपनी पुत्री सरस्वतीको चाहा वहभी अपने पिता का दुस्संकल्प जान लज्जासे हरिणी होगई ब्रह्मा जीभी हरिणका रूपधार उसके पीछेलगे तब सब देवता ब्रह्मा जीकी बहुत निंदा करनेलगे शिवजी भी ब्रह्माजी का यह दुरा-चार देख क्रोध से धनुष् बाण ले व्याध का रूपधार उनके पीछे लगे औ एक बाण ऐसा मारा कि हरिणरूप ब्रह्माजी भूमि पर गिरे औ उनके देह से एक तेजःपुंज निकलकर आकाशको गया वही मृगशिरानक्षत्र होगया औ आर्द्रानक्षत्र के रूप से शिवजी स्थित हुये जो अबतक भी मृगशिरानक्षत्र के पीछे मृग व्याधरूपसे आकाश में देख पड़ते हैं इसप्रकार ब्रह्माजी के मृतक होने के अनन्तर अतिशोकातुरहो गायत्री औ सरस्व-ती विचार करके ब्रह्माजीके पुनर्जीवन के लिये शिवक्षेत्र गन्ध-मादनपर्वत में जाय तप करनेलगीं उन्हों ने स्नान के लिये अपने अपने नामसे एक एक तीर्थ बनाया तीनकाल उनतीर्थों में स्नानकर काम क्रोधआदि त्याग जितेन्द्रिय हो शिवजी का

ध्यान करतीहुई दोनों पंचाक्षर मन्त्र का जप करतीं इस भांति अपने पति ब्रह्माजी के जीवन के लिये बहुत कालतक उग्रतप किया तब श्रीमहादेवजी प्रसन्न हुये औ गणेश कार्त्तिकेय नन्दी भृङ्गी आदि सहित गायत्री औ सरस्वती के सम्मुख प्रकट हुये उनको देख भक्ति से दोनों स्तुति करने लगीं॥

गायत्रीसरस्वत्यावूचतुः। नमोदुर्वारसंसारध्वान्तध्वंसैकहेतवे॥ ज्वलज्ज्वालावलीभीमकालकूटविषादिने १ जगन्मोहनपञ्चास्त्रदेहनाशैकहेतवे॥ जगदन्तकरक्रूरयमान्तकनमोस्तुते २ गङ्गातरङ्गसंपृक्तजटामण्डलधारिणे॥ नमस्तेस्तुविरूपाक्षबालाशीतांशुधारिणे ३ पिनाकभीमटङ्कारत्रासितत्रिपुरौकसे॥ नमस्तेविविधाकारजगत्स्रष्टृशिरश्छिदे ४ शान्तामलकृपादृष्टिसंरक्षितमृकण्डुज॥ नमस्ते गिरिजानाथरक्षावांशरणागते ५ महादेवजगन्नाथत्रिपुरान्तकशङ्कर॥ वामदेवमहादेवरक्षावांशरणागते ६ इति॥

यह स्तुति सुन प्रसन्नहो श्रीमहादेवजीने कहा कि हे गायत्रि! हे सरस्वति! हम तुमसे प्रसन्न हैं जो वर चाहतीहो मांगो तब उन दोनोंने यह प्रार्थना करी कि हे नाथ! आप हमारे पिता औ हम दोनों आपकी पुत्री हैं अब आप ऐसी अनुग्रह करें जिससे हमारे पति ब्रह्माजी जी उठैं औ फिर हमारा उनका समागम होजाय यह उनकी प्रार्थना सुन शिवजीने अपने गणों के हाथ ब्रह्माजीका शरीर वहां मँगवाया औ शिरभी मँगवाया फिर गायत्री औ सरस्वती के सम्मुखही शिवजी ने ब्रह्माजी का शिर धड़से जोड़कर उनको जिलादिया औ ब्रह्माजी उठ खड़े हुये जैसे सोकर उठैं औ भक्तिसे शिवजीकी स्तुति करने लगे॥

ब्रह्मोवाच। नमस्तेदेवदेवेशकरुणाकरशंकर। पाहि

मांकृपयाशम्भोनिषिद्धाचरणात्प्रभो । माप्रवृत्तिर्भवेन्नूयोर त्वमांत्वंतथासदा ॥

यह ब्रह्माजीकी प्रार्थना सुन शिवजीने कहा कि हे ब्रह्माजी! अब ऐसा प्रमाद कभी मत करना जे पुरुष उत्पथ में चलैं उन को हम दण्ड देते हैं इसीलिये आपको भी दण्ड दिया इतनी बात ब्रह्माजी से कह गायत्री औ सरस्वती से कहा कि तुम्हारे तप के प्रभाव से ब्रह्माजी का पुनर्जीवन हुआ अब तुम सब ब्रह्मलोक को जावो औ तुम्हारे सन्निधानसे इन दोनों कुण्डों में स्नान करनेवाले पुरुषों की मुक्तिहोगी तुम दोनों के नाम से ये दोनों तीर्थ प्रसिद्ध होंगे ये दोनों तीर्थ सब तीर्थोंको भी शुद्धकरने वाले होंगे इन तीर्थों में स्नान करने से महापातकों का नाश सब मनोरथों की सिद्धि हमारा औ विष्णुजीका प्रसादभी होगा इन दोनों तीर्थों के तुल्य न कोई तीर्थ हुआ न होगा गायत्री जपसे रहित वेदाभ्यास पंचयज्ञ नित्यानुष्ठान आदि से वर्जित पुरुष भी इन कुण्डों में स्नान करने से उनकर्मों के फलको प्राप्त होंगे औरभी पातकी पुरुष इनमें स्नानकर शुद्धहोजायँगे इतना कह शिवजी तो अन्तर्द्धानहुये औ गायत्री सरस्वती सहित ब्रह्मा जी ब्रह्मलोक को गये इतना कह सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! इसप्रकार गन्धमादनपर्वत में गायत्री औ सरस्वती का सन्निधान हुआ है जो पुरुप इस अध्याय को भक्तिसे पढ़ै अथवा सुनै वह दोनों तीर्थों के स्नानफल को प्राप्तहो सद्गति पाताहै ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

राजापरीक्षित औ कश्यपनाम ब्राह्मणकी कथा औ गायत्रीतीर्थ व सरस्वतीतीर्थका माहात्म्य ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! गायत्रीतीर्थ औ सरस्वती तीर्थका प्रभाव हम औरभी वर्णन करते हैं कश्यपनाम ब्राह्मण नरकप्रद बड़ेपापसे इनतीर्थों में स्नानकर छूटा मुनियोंने पूछा

कि हे सूतजी! कश्यप कौनथा उसने क्यापापकिया औ फिर क्यों कर पापसे मुक्त हुआ यह आप कृपाकरके वर्णनकरैं आपका वचनरूप अमृतपान करते करते हमको तृप्ति नहीं होती यह सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! गायत्री औ सरस्वती के माहात्म्यका एक इतिहास हम वर्णन करते हैं जिसके सुनने से सब पातक नाश होयँ अभिमन्युका पुत्र राजापरीक्षित धर्म से हस्तिनापुर में राज्य करताथा वह साठवर्ष की अवस्था में एक दिन आखेटके लिये वनमें गया वहां एक मृगके पीछे लगाहुआ अपनी सेनासे अलग होकर दूर चलागया और क्षुधा तृषासे भी बहुत व्याकुलथा आगे एक मुनि समाधिलगाये बैठाथा उससे राजाने पूंछा कि हे मुने! मेरे बाणसे बिधाहुआ मृग तुमने देखा कि नहीं यह राजा का वचन सुनकरभी मुनि ने कुछ उत्तर न दिया तब धनुष् के अग्रभाग से एक मरासर्प उठाकर राजा ने मुनिके गले में डालदिया औ आप अपनी राजधानी को चला आया उस मुनिका पुत्र शृङ्गी नाम था उसके मित्र कृशाख्य ने शृङ्गी से कहा कि तेरा पिता गले में मरासर्प डाले बैठा है अब तू झूंठा अहंकार मत कियाकर यह सुन शृङ्गीने बड़ा कोप किया औ राजा परीक्षित को शाप दिया कि जिसदुष्ट ने मेरे पिता के गले में सर्प डाला है उसको सातदिन के भीतर तक्षकनाग ड-सैगा औ वह मरजायगा इसप्रकार मुनिपुत्र ने शापदिया यह बात उसके पिता शमीकऋषिने समाधि खुलने के अनन्तरसुनी तब अपने पुत्रसे कहा कि तैंने सब प्रजाके रक्षक राजाको क्यों शापदिया बिना राजा के राज्यमें हम क्योंकर रहसकेंगे क्रोधसे बड़ा पाप होता है दयासे सुख मिलता है जो उत्पन्न हुये क्रोध को क्षमासे निवृत्त करताहै वह दोनों लोकों में सुख पाताहै क्षमा वाले पुरुष सदा सुख पाते हैं इतना कह शमीकऋषिने अपने शिष्य गौरमुख से कहा कि तू जाकर राजा परीक्षित से कह आ

कि मेरे पुत्रने तुमको शाप दिया है यह गुरुकी आज्ञा पाय गौर-मुखने जाकर राजा परीक्षितसे कहा कि हे राजन्! तुम शमीक मुनिके गले में मरासर्प डाल आये इसलिये उनके पुत्रने शाप दिया है कि सातदिन के भीतर तक्षकनाग के डसने से तुम्हारी मृत्यु होगी यह बात कहने के लिये मेरे गुरुने मुझको भेजा है इतना कह गौरमुख अपने आश्रम को गया औ राजाभी अति व्याकुल हुआ राजाने गंगाके बीच अति ऊंचे एक स्तम्भ के ऊपर एक मण्डप अर्थात् बँगला बनवाया औ आप उसमें बैठा अनेक गारुड़ी मांत्रिक चिकित्सक आदि अपने समीप रक्खे औ बहुतसे ब्रह्मवेत्ता ऋषि राजाके समीपबैठे उस अवसर में कश्यप नाम एक ब्राह्मण यह बात सुन राजापरीक्षित के पासको चला वह सब मांत्रिकों में उत्तमथा औ इस अभिप्राय से आया कि तक्षक के विषसे राजाकी रक्षाकर बहुतसा धन पाऊंगा। उसी अवसर में तक्षक भी ब्राह्मण का रूपधार हस्तिनापुर को चला आताथा उसने मार्ग में कश्यपको देखा औ पूंछा कि हे ब्राह्मण! तू कहांजाता है तब कश्यप ने कहा कि राजापरीक्षित को आज तक्षकनाग डसैगा। उसका विष निवृत्त करने के लिये मैं जाता हूं तब तक्षकने कहा कि हे ब्राह्मण! तक्षक मैंहीं हूं औ मेरे डसे के ऊपर किसी का मन्त्र तन्त्र नहीं चलसक्ता जो तुझमें सामर्थ्य होय तो इस वटवृक्षको डसकर मैं भस्म करता हूं औ तू इसका उज्जीवन कर इतना कह तक्षकने उस वृक्षको डसा डसतेही वह वृक्ष भस्म होगया एक मनुष्य भी उस वृक्षपर पहिले से चढ़ाथा वह भी भस्म होगया उसको तक्षक औ कश्यप दोनों नहीं जानते थे कश्यपने कहा कि अब मेरे मन्त्रकी शक्ति को सब देखैं इतना कह कश्यपने वटवृक्षको मन्त्र के प्रभाव से फिर जीता करदिया वह मनुष्य भी जो वृक्षके साथ जल गया था जी उठा तब तक्षक ने कहा कि हे कश्यपमुनि! कुमार का

वचन मिथ्या न होय ऐसा करना चाहिये राजासे तू जितना धन चाहताहै उससे भी द्विगुणधन मुझीसे लेले औ अपने घर को लौटजा इतना कह तक्षकने बहुत से उत्तम रत्न कश्यप को दिये कश्यपने भी ज्ञानदृष्टि से जाना कि राजापरीक्षित का आयुष् समाप्त होचुकाहै इस धनको क्यों छोंड़तेहो यह विचार तक्षक का दिया बहुतसा धनले अपने आश्रम को चला आया तक्षकने अपने सर्पों से कहा कि तुम मुनिवेष धारकर राजा परीक्षित के पास जावो औ उत्तम उत्तम फल राजाको दो यह तक्षक की आज्ञापाय वे सर्प मुनिवेष धार राजाके समीप पहुँचे औ अनेक उत्तमफल राजाको दिये उनमें एक फलके बीच तक्षक भी छोटे से कीटका रूपधार बैठगया था राजाने वे फल मन्त्रियों को बांटदिये औ सबसे बड़ाफल अपने हाथ में रक्खा इतने में सूर्य्य अस्त होनेलगे राजाने उस फलमें एक रक्तवर्ण का कीट देखकर कहा कि आज सातदिन पूरेहोगये ऋषिका वचन मिथ्या न होना चाहिये इसलिये यह छोटासा कीट मुझे काटलेवै यह कहकर राजाने वह कीट अपनी ग्रीवापर रखलिया रखतेही वह कीट तक्षक होगया औ राजाके सब शरीरको लपेट कर ऐसा दंशकिया कि उस महलसमेत राजा भस्म होगया आसपास के लोग तक्षक को देखतेही भाग गये थे इससे बच गये राजाकी मृत्युके अनन्तर सब और्ध्वदैहिक कृत्य कराय मन्त्रियों ने परीक्षित के पुत्र जनमेजय को गद्दीपर बैठाया कश्यप भी अपने आश्रम में गया परन्तु सब ब्राह्मणों ने उसका तिरस्कार किया कि ऐसे धर्म्मात्माराजा की तैंने रक्षा न करी औ धनलोभ से लौटआया कश्यप भी बड़ा व्याकुलहुआ जिस नगर ग्राम आश्रम आदि में जाय वहांहीं उसको सब धिक्कार देवैं तब अतिदुःखीहो शाकल्यमुनिकी शरण में गया औ प्रार्थना करी कि महाराज सब ब्राह्मण मुनि बन्धु मित्र आदि

मेरी निन्दा करते हैं इसका मैं कारण नहीं जानता ब्रह्महत्या सुरापान गुरुस्त्रीगमन सुवर्ण की चोरी आदि कोई महापातक मैंने नहीं किया औ महापातकी पुरुषों का कभी मैंने संसर्ग भी नहीं किया और भी कोई उपपातक मैंने नहीं किया फिर मेरी निन्दा क्यों करते हैं जो आप इसका कारण जानते होयँ तो मुझसे कृपाकर कहो कश्यप का यह वचन सुन क्षणमात्र ध्यान कर शाकल्यमुनि बोले कि हे कश्यप! राजापरीक्षित की रक्षाके लिये तू चला औ तक्षक से धन लेकर मार्गसेही चला आया जो चिकित्सा करने को समर्थ होकर भी विष रोग आदि करके पीड़ित मनुष्य की रक्षा न करै वह ब्रह्मघातक होताहै क्रोध से कामसे भयसे लोभसे मात्सर्य्य से मोहसे जो समर्थ होकर विष शस्त्र रोगआदि करके पीड़ित मनुष्य की रक्षा न करै वह ब्रह्मघातक सुवर्णस्तेयी गुरुदारागामी सुरापान करनेहारा औ संसर्ग दोष दुष्ट भी गिनाजाताहै कन्या बेचनेवाले रस बेचनेवाले घोड़े हाथी बेचनेवाले कृतघ्न विश्वासघातक आदि सब का प्रायश्चित्त है परन्तु जो समर्थ होकर आतुर की रक्षा न करै उसका कुछ प्रायश्चित्त नहीं उस मनुष्य के साथ पंक्ति में भोजन न करै सम्भाषण न करै औ उसका मुख भी न देखै उसके साथ सम्भाषण करने से महापातक लग जाताहै राजा परीक्षित परमविष्णुभक्त धर्म्मात्मा महायोगी औ चारोंवर्णों की रक्षा करनेहारा था तैंने तक्षक का वचन माना औ राजा की रक्षा न करी इसीकारण सब तेरी निन्दा औ तिरस्कार करते हैं यद्यपि राजापरीक्षित का आयुष् समाप्त होगया था तो भी जबतक श्वासरहै तबतक उपाय करना चाहिये क्योंकि काल की गति विलक्षण है कदाचित् बचजाय यह प्राचीन वैद्यों का निश्चयहै तू चिकित्सा करने में समर्थ होकर भी मार्ग से लौटगया औ राजाकी रक्षा न की इसलिये राजाका पाप

तुझको लगा यह शाकल्यमुनिका वचन सुन कश्यपने प्रार्थना की कि महाराज कोई ऐसा उपाय बतावें जिससे यह पातक निवृत्त होय आप दयालु हैं औ मैं आपकी शरण में प्राप्त हुआ हूं यह कश्यपकी प्रार्थना सुन क्षणमात्र ध्यानकर शाकल्यमुनि बोले कि हे कश्यप! इस पातक के निवृत्त होने के लिये हम एक उपाय कहते हैं उसको शीघ्रही कर दक्षिण समुद्र के बीच सेतु के मध्य गन्धमादन पर्वत में गायत्री औ सरस्वती नामक दो तीर्थ हैं वहां तू स्नान करतेही शुद्ध होजायगा उन तीर्थों का पवन लगतेही सब पाप निवृत्त होजाते हैं इसलिये तू भी शीघ्र ही जाकर स्नानकर कश्यप यह शाकल्यमुनि की आज्ञा पाय उनको प्रणामकर गन्धमादन पर्वतको चला वहां जाय गायत्री सरस्वती औ दण्डपाणि भैरवको प्रणामकर संकल्पपूर्वक दोनों तीर्थों में स्नान किया स्नान करतेही कश्यप निष्पाप होगया औ तीर्थ के तीरपर बैठ जप करनेलगा थोड़े काल के अनन्तर सब आभरणों से भूषित गायत्री औ सावित्री प्रकट हुईं उनको देख कश्यपने भक्तिसे प्रणाम किया औ पूंछा कि तुम दोनों कौन हो तब वे बोलीं कि हे कश्यप! हम दोनों गायत्री औ सरस्वती हैं नित्य तीर्थरूप करके यहां निवास करती हैं इन दोनों तीर्थों में स्नान करने से हम तुझपर प्रसन्न हुई हैं जो वर तू चाहै वह माँग इन तीर्थों में जो स्नान करै उसको हम अभीष्ट वर देती हैं यह उनका वचन सुन कश्यप स्तुति करनेलगा॥

कश्यपउवाच॥ चतुराननगेहिन्यौजगद्धात्र्यौनमाम्यहम्॥ विद्यास्वरूपेगायत्रीसरस्वत्यौशुभेउभे १ सृष्टिस्थित्यन्तकारिण्यौजगतांवेदमातरौ॥ हव्यकव्यस्वरूपेचचन्द्रादित्यविलोचने २ सर्वदेवाधिपेवाणीगायत्र्यौसततंभजे॥ गिरिजाकमलाचापियुवामेवजगद्धिते ३ युष्मद्दर्शनमात्रेण

जगत्सृष्ट्यादिकल्पनम् ॥ युष्मन्निमेषेसततंजगतांप्रलयो भवेत् ४ उन्मेषेसृष्टिरभवद्धोगायत्रिसरस्वति ॥ युवयोर्दर्शनादद्यकृतार्थोभवमाशुवै ५ इति ॥

यह स्तुति कर कश्यप ने प्रार्थना की कि सब मुनि औ उत्तमब्राह्मण मुझे निष्पाप जान अङ्गीकार करलेवें औ अब कभी मेरी बुद्धि पापकृत्य में न लगे सदा धर्ममेंही तत्पर रहे यह वर मुझे आप दोनों कृपाकरके दो यह वचन सुन दोनों बोलीं कि हे कश्यप! यह सब बात तुझको हमारी अनुग्रह से प्राप्तहोगी इतना कह अपने अपने तीर्थ में दोनों अन्तर्द्धान होगईं औ कश्यपभी कृतार्थ हो अपने देश को आया औ सब ब्राह्मणों ने उसको निष्पाप जान अङ्गीकार किया सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! इसप्रकार गायत्री औ सरस्वती में स्नानकर कश्यप बड़े पातक से छूट गया जो पुरुष भक्ति से इस अध्यायको पढ़े अथवा सुनै वह गायत्री औ सरस्वती के स्नान फल को प्राप्त हो सब पापों से छूटताहै ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

गन्धमादनपर्वत के ऋणमोचनआदि सब तीर्थों का माहात्म्य ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! सेतुके बीच औरभी जे तीर्थ हैं उनका वैभव हम वर्णन करते हैं ऋणमोचननाम एकतीर्थ है जिसमें स्नान करनेसे तीनप्रकारका ऋण निवृत्तहोता है ब्राह्मण क्षत्रिय औ वैश्य इन तीनवर्णोंपर ऋषि देवता औ पितरोंकाऋण होताहै ब्रह्मचर्य का अनुष्ठान न करै तो ऋषियोंका ऋण रहता है यज्ञ न करै तो देवताओं का ऋण औ पुत्र उत्पन्न न करनेसे पितरों का ऋण रहता है ब्रह्मचर्य यज्ञ औ पुत्रोत्पादन विनाही ऋणमोचन तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्य ऋषि देवता औ पितरों के ऋणसे छूटजाता है ऋषि देवता औ पितर ब्रह्मचर्य आदिसे

वैसे सन्तुष्ट नहीं होते जैसे ऋणमोचनमें स्नान करनेसे होतेहैं औ दरिद्री पुरुष जो धनवानों के ऋण से ग्रस्त होय वह भी इस तीर्थ में स्नान करै तो उसका ऋण निवृत्त होजाय औ वह आप धनाढ्य होजाय यहां स्नान करने से ऋणमुक्ति होती है इसीसे इसका नाम ऋणमोचन है ऋणी पुरुषों को अवश्यही इस तीर्थ में स्नान करना चाहिये इस तीर्थ के समान तीर्थ न हुआ न होगा यहां एक तीर्थ पाण्डवों का बनायाहै पांचोंपाण्डवोंने भोग औ मोक्षके लिये वहां यज्ञ किये इसलिये उस तीर्थ का नाम पञ्चपाण्डवहुआ दशहजारकोटि तीर्थ सदा पञ्चपाण्डव तीर्थमें निवास करतेहैं आदित्य वसु रुद्र साध्य मरुद्गणआदि सब देवता उस तीर्थ में निवास करते हैं इस तीर्थ में स्नानकर जो पुरुष देवता औ पितरों का तर्पण करै वह सब पापोंसे छूट ब्रह्मलोक को जाताहै जो पुरुष इस तीर्थके तटपर एक ब्राह्मण को भी भोजन करावे वह दोनों लोकों में सुखी रहता है चारों वर्णों में से कोई मनुष्य इस तीर्थ में स्नान करै वह फिर वियोनि में नहीं जन्म लेता पर्वदिनों में जो मनुष्य पाण्डवतीर्थ में स्नान करैं वे कभी नरक को नहीं देखते जो सायंकाल औ प्रातःकाल इस तीर्थ का स्मरण करै वह गङ्गाआदि सब तीर्थों के स्नानफल को प्राप्त होता है गन्धमादनपर्वत में इन्द्र आदि देवताओं ने दैत्योंका नाश होनेके लिये एक देवतीर्थ बनाया है उसमें स्नान करने से सब पाप निवृत्त होते हैं औ अक्षय स्वर्ग वास होता है स्त्री अथवा पुरुष ने जन्मभर पाप किये होयँ वे सब पाप देवतीर्थ में स्नान करतेही नष्ट होजाते हैं सब देवताओं में जैसे विष्णुभगवान् प्रधान हैं इसीप्रकार सब तीर्थों में देवतीर्थ मुख्यहै सौ वर्ष पर्यन्त अग्निहोत्र करनेसे जो पुण्य होता है वह देवकुण्ड में एकबार स्नान करने से होता है देवतीर्थ पर निवास करना दानदेना जप आदि कर्म करने औ भक्तिसे देव-

तीर्थमें स्नान करना ये सब बातें बहुत दुर्लभहैं देवतीर्थ में जाने से अश्वमेध का फल प्राप्तहोताहै वहां दोचार दिन निवासकरै तो उत्तमसिद्धिको प्राप्त होताहै औ जन्म मरण से छूटजाताहै तीनदिन स्नान करनेसे वाजपेययज्ञका फलप्राप्त होताहै देवतीर्थ के स्मरण करने से ये सब पाप निवृत्त होजाते हैं इस तीर्थपर देवता औ पितरों का अर्चन करनेसे सब मनोरथ सिद्ध होते हैं औ सब यज्ञोंका फल प्राप्तहोताहै इस तीर्थके तुल्य कोई तीर्थ न हुआ न होगा दोनोंलोकों में कल्याणकी इच्छावाले पुरुषों को विशेष करके मुमुक्षु पुरुषोंको देवतीर्थ में अवश्यही स्नानकरना चाहिये यह देवतीर्थ का माहात्म्य हमने संक्षेप से वर्णन किया विस्तार से तो कहांतक वर्णन करें अब रामसेतु में सुग्रीवतीर्थ का माहात्म्य कहते हैं सुग्रीवतीर्थ में स्नान करनेसे अश्वमेधका फल प्राप्त होकर सूर्यलोक में निवास होताहै औ हजार गोदान का फलहोताहै ब्रह्महत्या आदि पाप निवृत्त होते हैं वेदपारायण का फलहोताहै वहां स्नानकर देवता पितरोंका तर्पणकरै तो आठ अग्निष्टोमयज्ञ का फल होताहै सुग्रीवतीर्थ में स्नान करने से मनुष्य जातिस्मर होताहै इसलिये अवश्यही सुग्रीवतीर्थ में स्नान करना चाहिये यह सुग्रीवतीर्थ का माहात्म्य कहा अब नलतीर्थ का वैभव वर्णन करते हैं नलतीर्थ में स्नान करने से मनुष्य सब पापोंसे निवृत्तहो अग्निष्टोम आदि यज्ञोंकाफल पाय स्वर्ग में निवास करता है तीन दिन उपवास करै औ नल-तीर्थ में देवता औ पितरों का तर्पण करै तो अतिरात्र अश्वमेध आदि यज्ञके फलको पाय सूर्य के तुल्य प्रकाशित होता है अब नीलतीर्थ का माहात्म्य कहते हैं अग्नि के पुत्र नीलने वह तीर्थ बनाया है नीलतीर्थ में स्नान करनेसे मनुष्य सब पापों से मुक्त हो बहुत स्वर्णयज्ञ का सौगुणा फलपाय अग्निलोक को जाता है गवाक्षतीर्थ में स्नानकरै तो कभी नरक का भय न होय अङ्गद

तीर्थ में स्नान करनेसे मनुष्य देवत्वको प्राप्त होताहै इसप्रकार गज गवय शरभ कुमुद पनसआदि वानरों के बनाये तीर्थ गन्धमादन में हैं उनमें स्नान करनेसे मोक्ष प्राप्तहोताहै विभीषणके बनाये तीर्थ में स्नानकरै तो पाप दुःख रोग कुम्भीपाक आदि नरकोंका भय दुःस्वप्न दारिद्र्य आदि नाशको प्राप्तहोतेहैं वहां स्नान करनेहारा मनुष्य सर्वपापों से छूट वैकुण्ठ को जाता है विभीषणके मंत्रियों ने चारतीर्थ बनाये हैं उनमें स्नान करने से सब पाप निवृत्त होतेहैं गन्धमादन पर्वतमें रामनाथ महादेव का सेवन करनेके लिये सरयूनदी वहां निवास करतीहै उस में स्नान करनेसे सब यज्ञ तप तीर्थ दान आदिका फल प्राप्तहोता है दशहज़ार कोटितीर्थ गन्धमादनमें निवास करतेहैं गंगाआदि नदी सातों समुद्र ऋषियों के आश्रम पुण्यवन शिव विष्णुआदि क्षेत्र सब गन्धमादन में निवास करते हैं तेंतीसकोटि देवता पितर मुनि यक्ष किन्नर आदि सब रामसेतु में निवास करतेहैं सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! यह गन्धमादन के सब तीर्थों का माहात्म्य हमने वर्णन किया इस अध्यायको जो पुरुष पढ़ै अथवा सुनै वह सब पापोंसे छूट मोक्षको प्राप्त होताहै ॥

तेंतालीसवां अध्याय ॥

रामेश्वरका माहात्म्य अष्टविधि भक्तिका वर्णन रामेश्वर के पूजनआदि का फल ॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! अब हम रामनाथ का माहात्म्य वर्णन करतेहैं जिसके सुनने से मनुष्य सब पापोंसे छूट जायँ रामचन्द्रजी के स्थापन किये लिंगका जो मनुष्य दर्शन करै वह मुक्तिपाता है सत्ययुग में जो पुण्य दशवर्ष में साधन करसक्ते थे वह त्रेतायुग में एक वर्ष करके द्वापर में एक मास करके औ कलियुग में एकदिन करके सिद्ध होसक्ताहै वह पुण्य

कोटिगुण एक२ निमेष में रामनाथ के दर्शनसे प्राप्त होता है रामेश्वर लिंगमें सब तीर्थ सब देवता ऋषि पितर मुनि आदि निवास करतेहैं नित्य त्रिकाल जो रामेश्वर का स्मरण अथवा कीर्त्तन करतेहैं वे सब पापोंसे छूट सच्चिदानन्द स्वरूप साम्ब शिवमें लीन होतेहैं कभी उन मनुष्योंको यमयातना नहीं होती जो रामनाथ लिंगका एकवार भी पूजनकरैं वे मनुष्य नहीं साक्षात् रुद्रहैं जो रामेश्वरका पूजन न करैं वे कभी संसारके दुःखसे नहीं छूटते जो रामेश्वरका स्मरण करतारहै उसको दान व्रत तप यज्ञ आदि करने की कुछ अपेक्षा नहीं जो रामेश्वर का स्मरण न करैं वे अज्ञानी जड़ मूक बधिर अन्धआदि होतेहैं और उन के धन संतान क्षेत्रआदि की सदा हानि होती है रामेश्वरलिंग के दर्शन किये पीछे गया प्रयाग काशी आदि तीर्थों में जानेका कुछ प्रयोजन नहीं जो पुरुष अतिदुर्लभ मनुष्यजन्म पाय रामेश्वरका दर्शन और पूजन करते हैं उनका जन्म सफल है रामेश्वरलिंग का पूजन करनेहारे मनुष्यको ब्रह्मा विष्णु इन्द्रआदि देवता की कुछ आकांक्षा नहीं रहती रामेश्वर को जो मनुष्य प्रणाम प्रदक्षिणा आदि करैं वे कभी दुःख नहीं देखते औ यमलोकको भी नहीं जाते हजारों ब्रह्महत्याआदि पाप रामेश्वरका दर्शन करतेही विलय को प्राप्तहोजाते हैं जो मनुष्य स्वर्गसुख भोगना चाहैं वे सदा रामेश्वर का पूजन करैं करोड़ों जन्मों के किये पाप रामेश्वर के दर्शन करतेही नाश को प्राप्त होजाते हैं लोभ से भय से संसर्ग से जो मनुष्य एकबार भी रामेश्वर का स्मरण अथवा पूजन करते हैं वे कभी दोनों जन्मों में दुःख नहीं पाते रामेश्वर का कीर्त्तन औ पूजन करने से अवश्यही शिवसायुज्य प्राप्त होताहै जिस भांति अग्नि काष्ठको दग्ध कर देताहै इसीप्रकार रामेश्वर का दर्शन पापों को भस्म करताहै रामेश्वरकी भक्ति आठ प्रकार की है रामेश्वर के भक्तोंमें स्नेह

रखना पूजा देखकर प्रसन्नहोना आप पूजन करना रामेश्वर के अर्थ देहकी चेष्टा करना रामेश्वर कथा सुनने में आदर रामेश्वर स्मरण से शरीरमें रोमांच औ अश्रुपातआदि होना रामेश्वरका स्मरण करते रहना औ रामेश्वर के आश्रय से जीना यह आठप्रकार की भक्ति म्लेच्छमें भी हो तो वह मुक्तिका भागी होताहै देवतामें अनन्यभक्ति ब्रह्मज्ञान औ वेदान्त शास्त्र श्रवण से जितेन्द्रिय मुनीश्वरों को प्राप्तहोती है वह मुक्ति विना ज्ञान विना वैराग्य औ विना कायक्लेशके सब वर्ण औ सब आश्रम के मनुष्यों को रामेश्वरके दर्शन मात्र से मिलसक्तीहै कृमि कीट देवता मनुष्य बड़े तपस्वी मुनि रामेश्वर का दर्शन करने से तुल्यही गति पाते हैं पापी पुरुष पाप का भय न करैं औ पुण्य करनेहारे पुण्य का गर्व न रक्खैं रामेश्वर दर्शन किये पीछे सब समान हैं जो भक्ति से रामेश्वर का दर्शन करै उसकी तुल्यता चारवेद जाननेहारा ब्राह्मण भी नहीं करसक्ता रामेश्वरका भक्त चण्डाल भी मिलै तो वेदवेत्ता ब्राह्मणको छोड़ सब दान उसको देने चाहिये जो गति ऊर्ध्वरेता योगीश्वरों की होती है वही रामेश्वर दर्शन करनेहारों की होती है रामेश्वर में बसने वाले सब मनुष्य मरणके अनन्तर साक्षात् शिव स्वरूप होतेहैं रामेश्वर को जो मनुष्य यात्राकरैं उनके एक एक पद में अश्वमेध का फल होता है रामेश्वर में जो एक ग्रास भर अन्न भी ब्राह्मण को देवे वह सप्तद्वीपवती भूमि के दान फलको पाताहै रामनाथ को जो पुरुष भक्तिसे पत्र फल जल अर्पणकरै उसकी सदा रामनाथ महादेव रक्षाकरतेहैं रामनाथका पूजनभक्ति स्मरणस्तुति आदि सब अति दुर्लभहैं जो पुरुष भक्ति से रामनाथ की शरण में प्राप्तहोते हैं वे दोनोंलोकों में लाभ औ जय पाते हैं जिसका चित्त दिन रात रामनाथ में लगारहै वह धन्य है जो रामेश्वरका पूजन नहीं करते वे भोगमोक्ष नहींपाते पूजन करनेहारेही मुक्ति

औ मुक्ति पातेहैं रामेश्वर पूजन से अधिक कोई पुण्य नहीं है जो पुरुष रामेश्वरके साथ द्वेष करे वह दश हजार ब्रह्महत्याओं से लिप्त होता है औ उसके साथ सम्भाषणमात्र करने से नरक में वास होताहै सब देव औ यज्ञ रामनाथके ही हैं इस कारण सबको छोड़ रामनाथ के शरणमें जाना चाहिये रामनाथ के शरणमें प्राप्तहुये पुरुष सब पापोंसे छूट शिवलोक को जातेहैं सब यज्ञ तप दान तीर्थस्नान आदि करनेसे जो फल मिलताहै उस से कोटिगुण फल रामेश्वर के दर्शनसे होताहै दोघड़ी रामनाथ का स्मरणकरै तो सौपीढ़ी समेत शिवलोक में प्राप्तहोता है जो दिनभर रामनाथका दर्शनकरै वह सब संसार सुखभोग अन्तमें रुद्र बनताहै जो प्रभातउठ रामनाथका स्मरण करै उसको साक्षात् शिव जानना चाहिये रामनाथ के दर्शन करनेहारे पुरुषके दर्शन करनेसे सब पाप निवृत्त होजाते हैं मध्याह्न को रामनाथ का दर्शनकरै तो हजारों सुरापान पातक नष्ट होतेहैं सायङ्काल को दर्शन करनेसे गुरुदारगमन पातक निवृत्त होतेहैं सायङ्काल के समय उत्तम स्तोत्रों से रामेश्वर की स्तुति करै तो हजार सुवर्णस्तेय पातक नाशको प्राप्त होतेहैं धनुष्कोटि में स्नान औ रामेश्वर का दर्शन एकबार भी करलेवै तो गंगाआदि तीर्थोंकी कुछ अपेक्षा नहीं रहतीहै जो वस्तु रामनाथ की सेवासे न प्राप्त होयवहकिसीप्रकार सेभी नहीं प्राप्त होसक्तीहै जो कभी रामनाथ का दर्शन न करै उसको वर्णसंकर जानना चाहिये जो प्रभात उठ तीनबार रामनाथ शब्दकोउच्चारण करै उसका पूर्व्व दिन का किया पाप निवृत्त होजाताहै रामनाथ के होते भी मनुष्य क्यों याचना करते फिरते हैं रामनाथ की कृपा होने से सब क्लेश निवृत्त होजाते हैं जिसप्रकार सूर्य्योदय होतेही अंधकार प्राणत्यागके समय जो पुरुष रामनाथ का स्मरणकरै वह फिर जन्म नहीं लेता औ साक्षात शिव होजाता है जो पुरुष (हे रामनाथ !

हेकरुणानिधे!हेभक्तवत्सल!) इत्यादि वाक्य उच्चारण कियाकरै उसको कभी कलियुग की बाधा नहीं होती औ वह माया में भी लिप्त नहीं होता औ काम क्रोध आदि भी उसको पीड़ा नहीं देते जो पुरुष काष्ठसे रामनाथ का मन्दिर बनावे वह तीनकोटि कुलसहित स्वर्गको जाताहै ईटोंसे बनावे तो वैकुण्ठपावै पत्थर से मन्दिर बनावे तो ब्रह्मलोक को जावे औ स्फटिकआदि उत्तम शिलाओं से रामनाथका मन्दिर बनावे तो उत्तम विमानमें बैठ शिवलोक को जावे ताम्र करके रामनाथ का मन्दिर बनावे तो शिवसालोक्य पावै चांदी करके बनावे तो शिवसायुज्य मिलै औ सुवर्ण का मन्दिर बनवावे तो शिवसारूप्य पावै धनवान् सुवर्ण का बनवावे औ दरिद्री पुरुष मृत्तिका का मन्दिर बनवावै तो भी दोनों को तुल्यही फल मिलता है रामनाथ के स्नान करानेके समय औ तीनकाल आरती के समय जो पुरुष अनेक प्रकार के बाजे बजावें वे सब पापों से छूट रुद्रलोक को प्राप्त होते हैं जो पुरुष रामनाथ के स्नान समय में रुद्राध्याय चमक पुरुषसूक्त त्रिसुपर्ण पंचशान्ति पावमान आदि का पाठकरै वह कभी नरक नहीं देखता गोदुग्ध दधि घृत पंचगव्यसे जो रामनाथ को स्नान करावै वह नरक नहीं देखता घृत से स्नान करावे तो करोड़ोंजन्मके पापनिवृत्त होते हैं दुग्धसे स्नान करावै तो इक्कीस कुलसहित शिवलोकको जाय दहीसे स्नानकरावे तो विष्णुलोकमें प्राप्तहोय तिलतैलसे जो रामेश्वर लिंगको अभ्यंग करावै वह कुबेरके समीप निवास करताहै इक्षुरस से जो भक्तिपूर्वक एकबार भी रामनाथ को स्नान करावे वह चन्द्रलोक को जाताहै बड़हर औ आम्रके रससे स्नान करावै वह पितृलोकमें निवास करताहै नारिकेल के जलसे स्नान करावे तो ब्रह्महत्या आदि पाप निवृत्त होतेहैं पकेकेलोंसे रामनाथ लिंगको लेपनकरै तो सब पापोंसेछूट वायुलोकको जाय वस्त्रसे छनेहुये जलकरके

रामनाथको स्नान करावै तो वरुणलोकमें निवासकरै चंदनयुक्त जलसे स्नानकरावै तो गन्धर्वलोक पावै कमलआदि पुष्पोंकरके सुगन्धित औ सुवर्णयुक्त जलसे स्नान करावै तो इन्द्रके समीप निवास करै पाटला उत्पल कल्हार आदि से वासित जलकरके स्नान करावै तो सब पापोंसे छूटै और भी सुगन्धपुष्पों करके वासित जलसे स्नान कराने करके शिवलोक की प्राप्ति होती है इलायची कपूर आदि से सुगन्ध जल करके रामेश्वर को स्नान करावै तो अग्निलोक में जाय सुखपूर्वक निवास करै रामनाथके अभिषेक के लिये जो मृत्तिका के घटदेवै वह सुखपूर्वक सौ वर्ष आयुष् भोगताहै ताम्रके घटदेवै तो स्वर्गकोजाय चांदीके कुम्भ देवै तो ब्रह्मलोकपावै सुवर्णके कलश देनेसे शिवलोक मिलै औ रत्नकुम्भ अभिषेकके लिये देवै तो शिवजी के समीप निवासकरै जो दूध देनेहारी गौ रामेश्वर के अर्पणकरै वह अश्वमेधयज्ञका फलपाय शिवलोकमें निवास करता है स्नानके समय रामनाथ औ धनुष्कोटि का स्मरण करै वह सेतुस्नान का फलपाताहै जो रामनाथ के मन्दिरको कली पुतवाकर श्वेत करदेवै उसके पुण्य फलको हम सौ वर्ष में भी नहीं वर्णन करसक्के जो रामनाथ के मन्दिर का जीर्णोद्धार करै वह ब्रह्महत्या आदि पापोंसे छूटताहै औ नया मन्दिर बनानेसे भी सौगुणा अधिक पुण्यपाताहै रामनाथके आगे जो दीप जलावै वह अविद्यारूप अन्धकार से छूट ब्रह्मसायुज्य को प्राप्तहोता है घृत तेल मूंग चावल गुड़ खांड़ आदि जो रामेश्वरके अर्पणकरै वह इन्द्रके समीप निवासकरता है रामनाथके दर्शन स्पर्श स्मरण पूजन आदिसे सब पाप नाश को प्राप्तहोते हैं जो पुरुष दर्पण औ घण्टा रामनाथको चढ़ावै वह उत्तम विमानमें बैठ शिवलोक को जाताहै भेरी मृदंग पणव वंशी आदि बाजे जो रामनाथके अर्पणकरै वहभी उत्तम विमान में बैठ शिवलोक को जाय रामनाथ के निमित्त थोड़ा भी देवै

वह अनन्तगुण होजाताहै जन्मभर जो रामेश्वर क्षेत्रमें रहै वह अवश्यही मुक्ति पाता है आयुष् यौवन सम्पत्ति पुत्र स्त्री आदि कोई पदार्थ जगत् में स्थिर नहीं राजा धन क्षेत्रआदिको हरलेते हैं इसलिये इन सबका मोह छोड़ रामेश्वर के शरण में प्राप्त-होय जो पुरुष उत्तमग्राम रामेश्वर के अर्पण करै वह साक्षात् शिवस्वरूपही होजाता है सब पात्रों में उत्तमपात्र रामेश्वर हैं इसलिये सब पदार्थ रामेश्वर के अर्पण करने चाहिये रामनाथ के दर्शन पर्यन्तही सब पातक रहते हैं पंखा ध्वजा छत्र चामर चन्दन गुग्गुल ताम्र चांदी सोने आदि के घट और भी उत्तम उत्तम सामग्री जो पुरुष रामेश्वर के अर्पण करैं वे जन्मान्तर में चक्रवर्ती राजा होते हैं रामेश्वर के पूजन के लिये जो भक्ति से पुष्प लाते हैं वे अश्वमेधादि यज्ञों का फल पाते हैं रामेश्वर का दर्शन श्रवण पूजन स्मरण आदि करनेहारे पुरुषों को कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं जो पुरुष रामनाथ को जाय उसके पातक भयभीत होजाते हैं रामनाथ का दर्शन करनेहारे पुरुषों को वेद शास्त्र तीर्थ यज्ञ आदिसे कुछ प्रयोजन नहीं चन्दन केसरि कस्तूरी गुग्गुल रालआदि धूप जो पुरुष रामेश्वर के अर्पणकरै वह धनाढ्य औ वेद शास्त्र का जाननेहारा होता है मोतियों के हार औ उत्तम उत्तम वस्त्र जो रामनाथके अर्पणकरे वह कभी दुर्गति नहींभोगता गंगाजलसे जो रामनाथको स्नानकरावै उ-सका शिवजी भी सत्कार करते हैं जबतक वृद्धावस्था न प्राप्त-होय इन्द्रिय शिथिल न होजायँ औ मृत्यु न आयपहुँचे तबतक रामेश्वर के शरण में प्राप्त होजानाचाहिये सब पुराण औ धर्म-शास्त्रों में रामेश्वर की पूजा के तुल्य कोई धर्म्म नहीं लिखा रामेश्वर का सेवन करनेहारे पुरुष बहुत कालतक संसार सुख भोगकर अन्त में मुक्तिपाते हैं सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! यह रामनाथ का थोड़ासा वैभव हमने वर्णन किया जो पुरुष

इसको भक्तिसे पढ़ै अथवा श्रवणकरै वह धनुष्कोटि स्नान औ रामनाथके दर्शन करनेका फल पाय सद्गतिको प्राप्तहोताहै॥

चवालीसवां अध्याय॥

रावणआदि के वधकी कथा व रामेश्वर के स्थापनका कारण॥

शौनकआदि ऋषि पूँछते हैं कि हे सर्वपुराणज्ञ सूतजी! आप के मुखकमल से यह सेतु माहात्म्य औ रामेश्वर का वैभव सुन हम कृतार्थ हुये अब आप यह वर्णन करैं कि श्रीरामचन्द्रजी ने रामेश्वर का स्थापन किस प्रकार किया औ किस समय किया यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! जिसलिये गंधमादन पर्वतमें रामचन्द्रजीने रामेश्वरका स्थापन किया हम वर्णन करते हैं रामचन्द्रजी की भार्य्या सीता को रावण हरलेगया तब बानरों की सेनासहित रामचन्द्रजी महेंद्र पर्वत पर पहुँचे औ समुद्रको देखा औ सेतु बाँध पूर्णमासी के दिन सायंकाल के समय समुद्र पार वेलापर्व्वतपर पहुँचे रावण भी लंका में अपने महल के ऊपर बैठाथा सुग्रीव ने जाकर रावणका मुकुट उतारलिया रावण भी मुकुट उतरने से लज्जित हो महल के भीतर चलागया रामचन्द्रजी ने सेनाका डेराकिया तब रावण के अनुचर पर्वण पूतना जंभ खर क्रोधवश हरिप्रारुज चारुज प्रहस्त आदि अदृश्य होकर रामचन्द्रजीकी सेनामें आये परन्तु विभीषण ने उनको प्रकट करदिया इसलिये वे सब वानरों के हाथसे मारे गये यह बात रावण न सहसका इससे युद्ध करने निकला तब रामचन्द्रभी रावण के साथ युद्ध करने निकले औ युद्ध होनेलगा लक्ष्मण मेघनादका सुग्रीव विरूपाक्ष का अंगद खर्वटका नल पौंड्रका पनस पुटशका परस्पर युद्धप्रवृत्त हुआ और भी वानर औ राक्षसों का द्वन्द्व युद्ध होनेलगा वानरों ने बहुत से राक्षस मारे तब रावण के पुत्र इन्द्रजित् ने

रामचन्द्र औ लक्ष्मण को नागपाशसे बांधा उस समय गरुड़ ने आय उनको छुटाया प्रहस्त औ विभीषण का युद्ध होताथा प्रहस्त ने बड़े वेगसे विभीषण पर गदाका प्रहार किया परन्तु विभीषण हिमालयपर्व्वत की भांति स्थिर रहा फिर विभीषणने आठ घंटाओं करके शोभित शक्ति प्रहस्तपर चलाई उसके लगतेही प्रहस्तका शिर उड़गया औ वृक्षकी भांति भूमिपर गिरा उसको गिरेदेख धूम्राक्ष नाम दैत्य वानरसेना की ओर चला उसको देख भयसे वानरसेना भगी तब हनुमान्‌जी ने उसको मारगिराया यह सब वृत्तान्त राक्षसोंने रावण से कहा तब रावण ने कुम्भकर्ण को जगाया औ युद्ध करने भेजा उसको लक्ष्मण ने ब्रह्मास्त्रसे मारा दूषण के छोटेभाई वज्रवेग औ प्रमाथी हनुमान् और नीलने मारे जो रावण के तुल्य पराक्रमी थे वज्रदंष्ट्र को विश्वकर्म्मा के पुत्र नल ने औ अकंपनको कुमुदनाम वानर ने यमलोक को भेजा अतिकाय औ त्रिशिराको लक्ष्मण ने देवान्तक औ नरान्तक को सुग्रीवने कुम्भकर्ण के दोनों पुत्रों को हनुमान् ने मकराक्ष को विभीषण ने मारा तब रावण ने अपने पुत्र इन्द्रजित् को युद्धकी आज्ञादी वहभी जाकर अदृश्य हो आकाशमें स्थित होकर वानरों का संहार करने लगा कुमुद अंगद सुग्रीव नल जाम्बवान् आदि सहित वानर भूमिपर गिरे रामचन्द्रजीको भी बड़ा क्षोभहुआ तब विभीषण ने प्रार्थना करी कि महाराज कुबेर का भेजा हुआ एक यक्ष जल लेकर आया है उस जल को नेत्र में लगाने से अदृश्यभूत देख पड़ते हैं यह विभीषण का वचन सुन वह जल रामचन्द्रजी ने लिया और लक्ष्मण सुग्रीव हनुमान् अंगद मैन्द द्विविद आदि सबको दिया उन सबने नेत्र धोये तब आकाश में इन्द्रजित् को देखा लक्ष्मण औ इन्द्रजित्‌का घोरयुद्ध होनेलगा जैसा इन्द्र औ प्रह्लादका पूर्व्वकाल में हुआ था तीसरे दिन लक्ष्मणने इन्द्रजित् को मारा

और उसके साथ जो सेना थी उसका वानरों ने संहार किया प्रिय पुत्र के मरजाने पर क्रोध औ शोक करके पीड़ित रावण रथमें बैठ युद्ध करने आया रावण ने जानकी को मारनाचाहा था परन्तु विन्ध्य ने उसको निवारण किया इतने में इन्द्र का सारथि मातलि रामचन्द्रजी के लिये रथलाया तब रामचन्द्रजी इन्द्रके भेजेहुये उस रथमें बैठ रावणसे युद्ध करनेलगे औ ब्रह्मास्त्र से रावण को मारा रावणके मारने से सब ऋषि रामचन्द्रजी को आशीर्वाद देनेलगे देवता सिद्ध विद्याधर स्तुति औ पुष्पवृष्टि करने लगे रामचन्द्रजी भी लंका का राज्य विभीषण को दे सीता औ लक्ष्मण सहित पुष्पकविमान पर चढ़ गन्धमादन पर्व्वत में पहुँचे वहां आय सीता का अग्नि में शोधन किया वहांही सीता लक्ष्मण हनुमान् विभीषण सुग्रीव अंगद आदि सहित रामचन्द्रजी स्थित थे तब दण्डकारण्य के सब मुनि अगस्त्यमुनि सहित वहां आये औ रामचन्द्रजी की स्तुति करने लगे ॥

मुनयऊचुः ॥ नमस्तेरामचन्द्रायलोकानुग्रहकारिणे ॥ अरावणंजगत्कर्तुमवतीर्णायभूतले १ ताटकादेहसंहर्त्रेगाधिजाध्वररक्षिणे ॥ नमस्तेजितमारीच सुबाहुप्राणहारिणे २ अहल्यामुक्तिसंदायिपादपङ्कजरेणवे ॥ नमस्तेहरकोदण्ड लीलाभञ्जनकारिणे ३ नमस्तेमैथिलीपाणिग्रहणोत्सवशालिने ॥ नमस्तेरेणुकापुत्रपराजयविधायिने ४ सहलक्ष्मणसीताभ्यांकैकेय्यास्तुवरद्वयात् ॥ सत्यंपितृवचःकर्तुंनमोवनमुपेयुषे ५ भरतप्रार्थनादत्तपादुकायुगलायते ॥ नमस्तेशरभंगस्यस्वर्गप्राप्त्येकहेतवे ६ नमोविराधसंहर्त्रेगृध्रराजसखायते ॥ मायामृगमहाक्रूरमारीचाङ्गविदारिणे ७ रावणापहृतासीतायुद्धत्यक्तकलेवरम् ॥ जटायुषंतुसंदह्य तत्कैवल्यप्र

दायिने८नमःकबन्धसंहर्त्रे शबरीपूजितांघ्रये ॥ प्राप्तसुग्रीव
सख्याय कृतबालिवधायते ९ नमःकृतवनेसेतुं समुद्रेवरु
णालये ॥ सर्वराक्षससंहर्त्रे रावणप्राणहारिणे १० संसाराम्बु
धिसंतारपोतपादाम्बुजायते ॥ नमोभक्तार्तिसंहर्त्रेसच्चिदा
नन्दरूपिणे ११ नमस्तेरामभद्राय जगतामृद्धिहेतवे ॥ रा
मादिपुण्यनाम्नेच जगतांपापहारिणे १२ नमस्तेसर्वलोका
नां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे ॥ नमस्तेकरुणामूर्त्ते भक्तरक्षण
दीक्षित १३ ससीतायनमस्तुभ्यं विभीषणसुखप्रद ॥ लंके
श्वरवधाद्राम पालितंहिजगत्त्वया १४ रक्षरक्षजगन्नाथ
पाह्यस्माञ्जानकीपते ॥

इसप्रकार मुनियों ने स्तुति की सूतजी कहते हैं कि हे मुनी-श्वरो! जो पुरुष इस स्तोत्रको तीनकालपढ़े वह भोग औ मोक्ष पाता है यात्रा के समय पढ़े तो मार्ग में किसीप्रकार का भय नहीं होता इसस्तोत्र के पाठसे भूत वेताल रोग पाप दुःख आदि क्षयको प्राप्त होते हैं औ पुत्र धन मोक्ष आदि सब पदार्थ इस स्तोत्र के पाठसे मिलते हैं मुनियों की कीहुई स्तुति सुन राम-चन्द्रजीने कहा कि हे मुनीश्वरो! सब जीव शुद्धि के लिये हमारी प्राप्ति चाहते हैं औ जो हमारे दर्शन पावे वह मुक्त होजाता है तौ भी हम भक्ति करके शान्तचित्त औ जगत् के हितमें प्रवृत्त साधुओं को प्रणामही करते हैं हम ब्राह्मणों के भक्तहैं इसलिये सदा ब्राह्मणों का सेवन करते हैं अब एक बात आपसे पूछतेहैं आपसब कृपाकरि हमसे कहैं पुलस्त्यमुनि के पुत्र रावण के वध से जो पाप हमकोहुआ उसका आप प्रायश्चित्त बतावैं जिसके करने से हम निष्पाप होजायँ यह रामचन्द्रजी का वचन सुन मुनि बोले कि महाराज आप जगत्प्रभुहैं आपको कुछ पातक

नहीं तौ भी लोकों के कल्याण के लिये औ पापकी शंका निवृत्त करने के अर्थ इस गन्धमादनपर्व्वत में आप शिवलिङ्ग स्थापन करैं शिवलिङ्गस्थापनके फलको ब्रह्माजी भी नहीं वर्णन करसक्ते मनुष्यकी तो क्या कथाहै आपके स्थापन किये लिङ्ग के दर्शन का फल काशीविश्वनाथ के दर्शन फल से कोटिगुणित होगा औ आपके नामसे यह लिङ्ग प्रसिद्धहोगा इसलिये आप विलम्ब न करैं यह मुनियों का वचन सुन हनुमान् को रामचन्द्रजी ने आज्ञादी कि हे वायुपुत्र! शीघ्रही कैलास में जाय एक उत्तम शिवलिङ्ग लेआवो हनुमान्‌जी भी रामचन्द्रजी की आज्ञा पाय भुजाओं का शब्दकर गन्धमादन को कँपाय आकाश को उड़े औ क्षणमात्र में कैलासपर्व्वत पर पहुँचे परन्तु वहां लिङ्गरूप महादेव न मिले तब लिङ्गप्राप्ति के लिये हनुमान्‌जी ऊर्ध्वबाहु जितेन्द्रिय हो श्वास रोककर तप करने लगे कुछ काल के अनन्तर प्रसन्नहो शिवजीने हनुमान् को एक उत्तम लिङ्ग दिया परन्तु हनुमान्‌जीके आगमनमें विलम्बहोनेसे मुनीश्वरोंने रामचन्द्रसे कहा कि मुहूर्त्तकाल आगया औ हनुमान् शिवलिङ्ग लेकर आया नहीं इसलिये सीताजी ने लीला करके जो बालू का शिवलिङ्ग बनाया है उसको आप स्थापन कीजिये यह मुनियों का वचन रामचन्द्रजी ने अंगीकार किया औ ज्येष्ठमास शुक्लपक्ष दशमी तिथि बुधवार हस्तनक्षत्र व्यतीपातयोग गरकरण आनन्दयोग कन्याके चन्द्र औ वृषके सूर्य्य में सीतासहित रामचन्द्रजी ने रामेश्वर लिङ्ग का स्थापन किया औ भक्ति से पूजन किया तब पार्वती सहित शिवजीने प्रत्यक्षहो रामचन्द्रजी से कहा कि हे रामचन्द्रजी! आपके स्थापन किये इस लिङ्गका जो पुरुष दर्शन करैंगे वे महापातकों से निवृत्त होंगे धनुष्कोटि तीर्थ में स्नान कर जो रामेश्वर का दर्शन करैंगे उनके अनेक जन्मों के पाप नाश को प्राप्त होंगे यह शिवजी ने दिया रामेश्वर के आगे

रामचन्द्रजीने नन्दिकेश्वर को स्थापन किया औ धनुष् के अग्र करके भूमिको भेदनकर शिवजी के अभिषेकके लिये एक कूप बनाया उसका नाम धनुष्कोटि हुआ जिसका माहात्म्य पहिले वर्णन करचुकेहैं उस तीर्थ के जलसे शिवजी को स्नान कराया फिर सब देवता ऋषि गन्धर्व अप्सरा औ वानरोंने एक २ शिवलिंग स्थापन किया सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! जिस प्रकार रामचन्द्रजीने शिवलिंग स्थापन किया वह हमने वर्णन किया जो इस अध्यायको पढ़ै अथवा सुनै वह रामेश्वरके दर्शन का फलपाय शिवसायुज्य पाताहै ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

हनुमान्‌जी की अद्भुतकथा व हनुमान्‌जी के प्रति रामचन्द्रजी का ब्रह्मज्ञान उपदेश ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! उसीअवसरमें हनुमान्‌जी भी उत्तम शिवलिंग लेकर आयपहुँचे औ रामचन्द्र सीता लक्ष्मण सुग्रीव आदि को प्रणाम किया औ देखा कि रामचन्द्रजीने शिवलिंग स्थापन करदिया तब हनुमान्‌जी को बड़ा क्रोध हुआ औ कहने लगे कि हे रामचन्द्रजी! मेरा जन्म वृथाहै मेरा ऐसा पुत्र किसी स्त्रीके न होय जो इतना दुःख भोगता फिरै पहिले तो आप की सेवा में खिन्नहुआ फिर राक्षसों के साथ युद्ध में अतिदुःख भोगा औ सबसे यह अधिक क्लेश हुआ कि आपने मेरा अनादर किया सुग्रीवने भार्या के लिये आपकी सेवा करी औ विभीषण ने राज्यके लिये परन्तु मैंने किसी प्रयोजन के लिये आप का सेवन नहीं किया विना हेतु दिन रात आप का सेवन करता हूं हजारों वानरों के बीच आपने मुझे आज्ञादी तब मैं कैलास में गया वहां तपकर शिवजी को प्रसन्न किया औ अतिउत्तम शिवलिंग लेकर आपके समीप पहुँचा परन्तु आपने औरही लिंग

स्थापन करदिया औ हमारा यह परिश्रम वृथाहुआ यह मेरा शरीर केवल भूमिका भारहै मैं मन्दभाग्य इस दुःख को नहीं सहसक्ता क्याकरूं औ कहां जाऊं मैं शरीर त्यागताहूं तब यह अनादर का दुःख निवृत्त होगा यह कहकर हनुमान्‌जी रामचन्द्रजी के चरणों पर गिरपड़े तब उनका दुःख निवृत्त करने के लिये हँस कर रामचन्द्रजी कहनेलगे कि हे हनुमान्‌जी! हम अपना औ पराया सब व्यवहार जानते हैं अपने कर्मसेही जीव उत्पन्न होते हैं औ मरते हैं अपने कर्मोंसेही जीव नरकको जाते हैं औ परमात्मा निर्गुण है हे हनुमन्! इसप्रकार तत्त्वका निश्चयकर शोक को त्याग दे लिंगत्रय से मुक्त निराश्रय निराकार निरञ्जन ज्योतिःस्वरूप आत्माको देख तत्त्वज्ञान के बाधक शोकको मतकर सदा तत्त्वज्ञान में निष्ठा रख स्वयंप्रकाश आत्मा का सदा ध्यान कर देहमें ममता छोड़ धर्म को भज हिंसाको त्याग साधु पुरुषों का सेवनकर इन्द्रियों को जीत परनिन्दाको छोड़ शिव विष्णु आदि देवताओं का सदा पूजनकर सत्यबोल शोकका त्यागकर प्रत्यक् ब्रह्मकी एकताजान भलेबुरे की भ्रांति छोड़ पदार्थों को उत्तम जानने से उनमें राग उत्पन्न होताहै औ पदार्थों को बुरासमझने से द्वेष होताहै राग द्वेषके वशमें होकर जीव अनेकप्रकार के धर्मअधर्म करते हैं जिनसे देवता मनुष्य पशु पक्षी वृक्षआदि योनियों में जन्म लेते हैं औ स्वर्ग नरक को जाते हैं जिस शरीर के स्पर्शसे चन्दन अगुरु कर्पूर आदि सुगन्ध द्रव्य मल होजातेहैं वह शरीर क्योंकर उत्तम मानाजाय भक्ष्य भोज्य पदार्थ जिस के संगसे विष्ठा होजाते हैं उत्तम शीतलजल जिसके संगसे मूत्र होजाता है वह शरीर क्योंकर शोभन होसक्ता है श्वेत वस्त्र जिसके संग से मलिन होजाते हैं वह शरीर शोभन किसभांति होय हे हनुमन्! इस संसारसमुद्र में कोई सुख नहीं है पहिले जीव जन्मलेकर बालक होताहै पीछे तरुण औ वृद्ध होकर मृत्यु

वश होताहै औ फिर जन्म लेताहै अज्ञानसे जीव दुःख भोगता है औ ज्ञान से सुख पाताहै अज्ञान का नाश कर्मसे नहीं होता केवल ज्ञानसे होताहै ज्ञानभी वेदान्तवाक्यों करके विरक्त पुरुष को होता है और को नहीं होसक्ता ज्ञान के अधिकारी को भी गुरुकृपासेही ज्ञान होताहै जिसके हृदय से सब संकल्प निवृत्त होजायँ वह परब्रह्म को पाता है औ जीवन्मुक्त होता है जागते सोते बैठे चलते भोजन करते सब अवस्थाओं में काल जीवों का ग्रास करताहै सबसंग्रहोंका अंत क्षयहै सब उच्चताका अंत गिरना है सब समागमों का अंत वियोग है इसीप्रकार जीवनका अंत मरणहै पकेहुये फलोंको जिसप्रकार गिरनेका भय होताहै इसी भांति जीवोंको मरणका भयहै जिसप्रकार बहुत दृढ़भी घर कुछ कालमें जीर्ण होकर गिरजाताहै इसीप्रकार शरीर भी जीर्ण होकर मृत्युवश होताहै हे हनुमन्! नित्य दिन रात्रि व्यतीत होनेसे मनुष्योंका आयुष् बीतता चलाजाताहै इसलिये आत्माका शोच कर और बातोंका क्या शोच करताहै बैठेरहो चाहै दौड़ते फिरो आयुष् तो क्षीण होताहीहै मृत्यु जीवोंके साथही चलताहै साथ ही बैठता है दूरदेश को जावो तो भी साथही जाताहै शरीर में बलि पड़जाती है शिरके बाल श्वेत होजातेहैं वृद्धावस्थामें श्वास कास आदि अनेक रोग देहको जीर्ण करडालते हैं जिसप्रकार समुद्रमें अनेक काष्ठ इकट्ठे होजातेहैं औ फिर इधर उधर बिखर जाते हैं इसीप्रकार संसार में पुत्र स्त्री धन बन्धु गृह क्षेत्र आदि पदार्थ इकट्ठे होजातेहैं औ फिर चलेभी जातेहैं जिसभांति मार्ग में कई पथिक साथहोजातेहैं औ थोड़ीदूर साथ चलके अपने २ रास्ते लगतेहैं इसीप्रकार पुत्र स्त्रीआदि का समागम है शरीर के साथही मृत्यु भी नियत कियाजाता है मृत्युसे बचनेका कोई उपाय नहींहै जीव कर्मके वश होकर एक शरीरको त्याग दूसरे को धारताहै कभी प्राणियोंका वास एक स्थान में नहीं रहसक्ता

है सब अपने अपने कर्मवश से वियोग को प्राप्त होते हैं शरीर केही जन्म मरण होतेहैं आत्माके नहीं होते आत्मा सदा निर्विकार है इसलिये हे कपीश्वर! सद्रूप निर्मल ब्रह्मका चिंतनकर तेरे किये औ हमारे किये कर्म में कुछभेद मत समझ हमने जो लिंग स्थापन किया उसको तू अपने लाये लिंगका स्थापन समझ तेरे आगमनमें विलम्ब होनेसे हमने सीताका बनाया बालूका लिंग स्थापन करदिया इसमें तू कुछ दुःख औ शोक मतकर कैलास से लायेहुये लिंगको तू स्थापनकर यह लिंग तीन लोकमें तेरेनाम से प्रसिद्ध होगा प्रथम तेरे स्थापन किये लिंगका दर्शन करके सब मनुष्य रामेश्वर का दर्शन करैंगे बहुत से ब्रह्मराक्षस तैंने मारे हैं उस पापकी निवृत्ति के लिये अपने नामसे इस लिंगको स्थापनकर साक्षात् शिवजी के दिये इस लिंग का दर्शनकर जे रामेश्वरका दर्शन करैंगे वे कृतकृत्य होंगे जे दूरदेशमें रहकर भी इनदोनों लिंगोंका स्मरण करेंगे वे सायुज्य मुक्तिपावैंगे जे पुरुष हनुमदीश्वर औ रामेश्वरका दर्शन करैंगे वे सब यज्ञ औ तपका फलपावैंगे हमने सीताने लक्ष्मण ने तैंने सुग्रीव ने नलने नील ने जाम्बवान्ने विभीषणने इंद्रादि देवताओंने औ शेषनागादि नागोंने जे लिंग स्थापनकिये इन ग्यारहलिंगों में सदा सदाशिवका सन्निधान रहैगा इसलिये अपने पापकी शुद्धिके लिये तूभी लिंग स्थापनकर औ जो तू हमारे स्थापनकिये लिंगको उखाड़सके तो हम तेरेलाये लिंगको स्थापन करैं परन्तु हमारे स्थापनकिये लिंग को कौन उखाड़ सक्ताहै इस लिंगकी जड़ सातों पाताल भेदनकर नीचे चलीगई है इसलिये अपने लाये लिंग को तू शीघ्रस्थापन कर शोक मतकर यह रामचन्द्रजी का वचन सुन हनुमान्जी ने विचार किया कि इस बालू के लिंग को उखाड़ देना क्या बड़ी बात है इसलिये इसको उखाड़ अभी अपने लायेहुये लिंग को स्थापन करताहूं यह मनमें विचार सब देवता मुनि वानर आदि

के औ रामचन्द्र लक्ष्मण सीताजी के देखते देखते हनुमान्जी ने दोनों हाथों से उस लिङ्ग को पकड़ा औ उखाड़ने के लिये बहुत बलकिया परन्तु वह लिङ्ग न हिला तब किलकिला शब्द करके औ पूंछको भूमि में पटककर सब बल लगाया तौभी वह लिङ्ग न हिला फिर पूंछ में लिङ्ग को लपेटा औ दोनोंहाथ भूमि पर रख आकाश को हनुमान्जी उछले तब सातों द्वीपों सहित पृथ्वी कांपउठी परन्तु लिङ्ग नहीं उखड़ा औ हनुमान्जी का पुच्छ लिङ्ग से छूटगया इसलिये एक कोसपर हनुमान्जी गिरे औ उनके आंख नाक कान मुख औ गुदा से रुधिर गिरनेलगा उस रुधिर से रक्तकुण्ड बना हनुमान्जीको इसप्रकार गिरे देख सब जगत् में हाहाकारहुआ औ रामचन्द्रजी लक्ष्मण सीता औ वानरों सहित दौड़कर हनुमान्जीके समीपगये उससमय गन्धमादन पर्वत में राम लक्ष्मण ऐसे शोभित थे मानों रात्रि के समय तारागणों करके युक्त सूर्य औ चन्द्रमा शोभितहोयँ जाय के हनुमान्जी को देखा कि मूर्च्छितहुये पड़े हैं औ मुखसे रुधिर बहताहै शरीर चूर्ण होगया है उनको देख सब वानर हाहाकर कर मूर्च्छितहुये सीता ने अपने हाथ से हनुमान्जीको स्पर्श किया औ रामचन्द्रजी हनुमान्को अपनी गोदमें सुलाय अश्रुपात करतेहुये हनुमान्जीके अंगोंपर हाथ फेरने लगे ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

हनुमान्जीको रामचन्द्रजीने जिसप्रकार आश्वासन किया उसका वर्णन हनुमान्जीका किया रामस्तोत्र औ सीतास्तोत्र हनुमत्कुण्ड औ हनुमदीश्वर महादेव का माहात्म्य वर्णन ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! रामचन्द्रजी कहनेलगे कि हे हनुमन् ! पंपासर के तटपर हम दीनदशा को प्राप्त होरहे थे उस समय तैंने हमारा आश्वासन किया औ सुग्रीवसे मैत्री कराई तेरेको देख हम माता पिता का भी स्मरण नहीं करते तैंने

हमारे ऊपर अनेक उपकार किये हमारे प्रयोजन के लिये समुद्र उतरा मैनाकपर्वत को तलप्रहार किया नागों की माता सुरसा को जीता महाक्रूरा छाया ग्रहण करनेवाली राक्षसी को मारा सायंकाल के समय सुवेल पर्वतपर पहुँच लंका को जीत रावण के महल में गया निर्भय होकर सारी रात्रि लंका में सीता को ढूंढ़ा कहीं सीता न देखी तब अशोकवनिका में गया वहां सीता को संदेश दे औ हमारे लिये सीतासे चूड़ामणि लेकर अशोक-वनिका के वृक्षों को तोड़ा औ अस्सीहज़ार किन्नर नाम राक्षसों को हमारे अर्थ मारा जो राक्षस अति बली थे फिर प्रहस्त के पुत्र जम्बुमाली को सात मन्त्रिपुत्रों को पांच सेनापतियों को औ रावण के पुत्र अक्ष को तैंने युद्ध में मारा तब इन्द्रजित् तुझे बांधकर रावण की सभा में लेगया वहां तैंने रावण का अति अनादर किया औ लंकापुरी को भस्म करके फिर ऋष्यमूक पर्व्वत में पहुँचा हे हनुमन्! हमारे अर्थ तैंने बहुत क्लेश भोग अब तू भूमिपर गिरा है इसलिये हमको बहुत शोक है हे हनुमन्! जो तू मरजायगा तो हम भी अभी प्राण त्यागेंगे फिर हमको सीता से औ लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न से तथा राज्य से कुछ प्रयोजन नहीं है वत्स! शीघ्र उठ हमारे भोजन के लिये कन्दमूल लेआ स्नानके लिये जलका कलशला औ हमारे शयन के लिये शय्या बिछाय मृगचर्म औ दर्भ हमारे लिये लेआ ब्रह्मास्त्र से बँधेहुये हमको तैंने छुटाया औषध लाकर लक्ष्मणको जीवदान दिया तेरी सहाय से हमने रावण कुंभकर्ण आदि बड़े पराक्रमी राक्षसों को मारा औ सीता प्राप्त हुई हे वायुपुत्र! हे सीताशोकनाशक! हमको लक्ष्मण को औ जानकीको अयोध्या में पहुँचाये विनाही क्यों त्याग करता है इसभांति हनुमान्का मुख देखतेहुये औ दीनवचन कहतेहुये रामचन्द्रजी अश्रुपात करनेलगे औ इतना अश्रुपात किया कि हनुमान्का शरीर आर्द्र

होगया धीरेधीरे हनुमान्‌की भी मूर्च्छा खुली औ देखा कि साक्षात् नारायण रावणके भयसे लोकरक्षा के अर्थ मनुष्यरूप धारे जानकी लक्ष्मण करके सहित वानरों करके वेष्टित नील मेघके समान जिनका वर्ण कमल से नेत्र जटा मण्डल करके शोभित देवता ऋषि पितर आदि करके स्तुत अतिदयालु श्रीरामचन्द्रजी मुझे गोदमें लिये बैठे हैं तब हनुमान्‌जी उठे और रामचन्द्रजी के चरणों में दण्डवत् प्रणाम करके हाथ जोड़ भक्तिसे स्तुति करने लगे॥

हनुमानुवाच। नमोरामायहरये विष्णवेप्रभविष्णवे॥ आदिदेवायदेवाय पुराणायगदाभृते १ विष्टरेपुष्पकेनित्यंनिविष्टायमहात्मने॥ प्रहृष्टवानरानीक जुष्टपादाम्बुजायते २ निष्पिष्टराक्षसेन्द्राय जगदिष्टविधायिने॥नमःसहस्रशिरसे सहस्रचरणायच ३ सहस्राक्षायशुद्धाय राघवायचविष्णवे॥ भक्तार्त्तिहारिणेतुभ्यंसीतायाःपतयेनमः ४ हरयेनारसिंहाय दैत्यराजविदारिणे॥ नमस्तुभ्यंवराहायदंष्ट्रोद्धृतवसुंधर ५ त्रिविक्रमायभवते बलियज्ञविभेदिने॥नमोवामनरूपाय महामन्दरधारिणे६नमस्तेमत्स्यरूपाय त्रयीपालनकारिणे॥ नमःपरशुरामाय क्षत्रियान्तकरायते ७ नमस्तेराक्षसघ्नाय नमोराघवरूपिणे॥ महादेवमहाभीम महाकोदण्डभेदिने८क्षत्रियान्तकरक्रूर भार्गवत्रासकारिणे॥ नमोस्त्वहल्या सन्तापहारिणेचापहारिणे ९ नागायुतबलोपेत ताटकादेहदारिणे॥ शिलाकठिनविस्तार वालिवक्षोविभेदिने १० नमोमायामृगोन्माथकारिणेऽज्ञानहारिणे॥ दशस्यंदनदुःखाब्धिशोषणागस्त्यरूपिणे ११ अनेकोर्मिसमाधूत समुद्रमदहारिणे॥मैथिलीमानसांभोज भानवेलोकसाक्षिणे १२

राजेन्द्रायनमस्तुभ्यं जानकीपतयेहरे॥तारकब्रह्मणेतुभ्यंन मोराजीवलोचन १३ रामायरामचन्द्राय वरेण्यायसुखा त्मने॥ विश्वामित्रप्रियायेदं नमःखरविदारिणे १४ प्रसीद देवदेवेश भक्तानामभयप्रद॥ रक्षमांकरुणासिंधो रामचन्द्र नमोस्तुते १५ रक्षमांवेदवचसामप्यगोचरराघव॥ पाहिमां कृपयाराम शरणंत्वामुपैम्यहम् १६ रघुवीरमहामोहम पाकुरुममाधुना॥ स्नानेचाचमनेभुक्तौ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु १७सर्वावस्थासुसर्वत्रपाहिमांरघुनन्दन॥ महिमानन्तवस्तो तुं कःसमर्थोजगत्त्रये १८ त्वमेवत्वंमहत्त्वंवै जानासिरघु नन्दन॥ इति॥

इसप्रकार रामचन्द्रजी की स्तुति करके हनुमान्जी सीता जीकी स्तुति करने लगे॥

हनुमानुवाच। जानकित्वांनमस्यामि सर्वपापप्रणा शिनीम्॥ दारिद्र्यदुःखसंहर्त्रीं भक्तानामिष्टदायिनीम् १ वि देहराजतनयां राघवानन्दकारिणीम्॥ भूमेर्दुहितरंविद्यां न मामिप्रकृतिंशिवाम् २ पौलस्त्यैश्वर्यसंहर्त्रीं भक्ताभीष्टांसर स्वतीम्॥ पतिव्रताधुरीणांत्वां नमामिजनकात्मजाम् ३ अ नुग्रहपरामृद्धिमनघांहरिवल्लभाम्॥ आत्मविद्यात्रयीरूपा मुमारूपांनमाम्यहम् ४ प्रासादाभिमुखांलक्ष्मीं क्षीराब्धि तनयांशुभाम्॥ नमामिचन्द्रभगिनीं सीतांसर्वाङ्गसुन्द रीम् ५ नमामिधर्मनिलयां करुणांवेदमातरम्॥पद्मालयांप द्महस्तांविष्णुवक्षस्स्थलालयाम् ६ नमामिचन्द्रनिलयां सीतांचन्द्रनिभाननाम्॥ आह्लादरूपिणींसिद्धिं शिवांशि वकरींसतीम् ७ नमामिविश्वजननीं रामचन्द्रेष्टवल्ल

माम्॥ सीतांसर्वानवद्यांगीं भजामिसततंहृदा ८॥ इति॥

सूतजी कहते हैं किहेमुनीश्वरो! इसप्रकार भक्तिसे हनुमान्जी सीता औ रामचन्द्रजीकी स्तुति कर आनन्द से अश्रुपात करते हुये मौन होगये हनुमान्जी के किये इन दोनों स्तोत्रों को जो पुरुष भक्तिसे पढ़े वह बड़ा ऐश्वर्य पाताहै धन धान्य क्षेत्र दूध देनेहारी गौ आयुष् विद्या पुत्र उत्तम स्त्री औ सद्गति इस स्तोत्र के पाठ से प्राप्त होती हैं इस स्तोत्रके पाठ से ब्रह्महत्याआदि पाप निवृत्त होते हैं नरकका भयनहीं होता देहान्त होनेपर मुक्ति मिलती है रामचन्द्रजी हनुमान्जीकी कीहुई स्तुति सुन प्रसन्न हो कहने लगे कि हे वायुपुत्र! तुमने अज्ञान से यह साहस किया इस लिंग को ब्रह्मा विष्णु इन्द्रआदि देवता भी नहीं उखाड़ सक्ते महादेवजी की अवज्ञा करने से तुम मूर्च्छित होकर गिरे फिर कभी सदाशिव से द्रोह मतकरना आजसे लेकर यह कुण्ड तुम्हारे नाम से प्रसिद्धहोगा इस कुण्ड में स्नान करने से महा पातकों का नाश होगा महादेवजी की जटा से गोदावरी नदी निकली है उसमें स्नान करने से हज़ार अश्वमेध का फल होता है उससे सौगुणा अधिक पुण्य सरस्वती यमुना औ गंगा में स्नान करने से होताहै जहां ये तीनों मिली हैं अर्थात् प्रयाग में वहां स्नान करनेसे सहस्रगुण पुण्य होताहै उतनाही पुण्य इस तुम्हारे कुण्डमें स्नान करनेसे प्राप्तहोगा मनुष्यजन्म पाय हनुमत् कुण्डके तीरजो पुरुष श्राद्ध न करै उसकेपितर निराशहोकर जाते हैं औ उस पुरुष पर देवता ऋषि औ पितरों का कोप होता है हनुमत्कुण्ड के तीरपर जो हवन औ दान न करै उसका जीवन वृथाहै औ वह दोनों लोकों में दुःख पाताहै जो पुरुष हनुमत्कुण्डके तीर जल औ तिलोंसे पितरोंका तर्पणकरैउसके पितर आनन्दको प्राप्तहोते हैं औ घृतकुल्या पीते हैं। सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! रामचन्द्रजी का यह वचनसुन औ उनकी आज्ञा पाय

रामेश्वरके उत्तरभागमें हनुमान्जी का लायाहुआ लिङ्ग स्थापन किया रामेश्वरलिङ्ग में हनुमान्जीकी पूंछ लपेटनेके तीन चिह्न अद्यापि देखपड़ते हैं सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! जिसप्रकार रामचन्द्रजीने रामेश्वर का स्थापनकिया वह हमने वर्णन किया जो पुरुष इस अध्याय को पढ़ै अथवा सुनै वह सब पापोंसे छूट शिवलोक को जाताहै ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

रावणके जन्मआदि का वर्णन और रामचन्द्र जी को रावणके वध करनेसे ब्रह्महत्या लगने का वर्णन ॥

शौनक आदि ऋषि पूंछते हैं कि हे सूतजी ! रावण राक्षस के मारनेसे रामचन्द्रजीको ब्रह्महत्या क्यों लगी ब्रह्महत्या तो ब्राह्मण के वध करने से लगती है रावण तो ब्राह्मण थाही नहीं फिर क्योंकर उसके वध से रामचन्द्रजी को हत्यालगी यहआप वर्णन करैं तब सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो ! ब्रह्माजी के पुत्र पुलस्त्य औ पुलस्त्य के पुत्र विश्रवाहुये विश्रवामुनि ने बहुतकाल अति दुष्कर तप किया उस कालमें बड़ा पराक्रमी सुमाली नाम दैत्य अतिरूपवती अपनी कन्याको साथलिये पातालसे आय भूमिपर विचरता था उसने विश्रवा के पुत्र कुबेर को पुष्पकविमान में बैठे देखा औ मनमें विचार किया कि ऐसा भाग्यशाली पुत्र हमारे भी होय तो हमारीवृद्धि सबप्रकार से होय यह मनमें विचार कर अपनी पुत्री कैकसीसे कहा कि हे पुत्री ! अब तू यौवन में प्राप्तहुई इसलिये तेरा विवाह होना चाहिये तरुण कन्या का विवाह न करने से मातापिता दुर्गति को प्राप्त होते हैं प्रत्याख्यान के भयसे कोई तुझे मांगता नहीं कौन वर तुझे बरैगा यह मैं नहीं जानता अब ब्रह्माजी के पौत्र औ पुलस्त्यमुनि के पुत्र विश्रवामुनि को तू आप जायके बरले

जिससे कुबेर के तुल्य पुत्र तेरे भी होय यह पिता का वचन सुन कैकसी विश्रवामुनि की कुटीमें गई औ लज्जासे मुख नीचे कर बैठगई उस संध्याकालमें विश्रवामुनि अग्निहोत्र करतेथे उनने अतिरूपवती कैकसी को देख पूंछा।कि हे भद्रे! तू किसकी पुत्री है औ किसकार्य्य के लिये यहां आई है यह सब यथार्थ कह तब कैकसी बड़ी विनयसे हाथजोड़ नम्रहो कहनेलगी कि महाराज आप तपके प्रभावसे मेरा सब अभिप्राय जानते हैं मैं सुमाली दैत्यकी कन्या कैकसीहूं औ पिताकी आज्ञासे आप के समीप आईहूं और मेरा अभिप्राय आपजानलेवें यह कैकसी का वचनसुन क्षणमात्र ध्यानकर विश्रवामुनि ने कहा कि हे कैकसि! तेरा अभिप्राय हमने जाना तू पुत्र के लिये हमारे पास आई है परन्तु तू इस अतिदारुण संध्याकाल में हमारे समीप आई इसलिये अतिक्रूर राक्षस तेरे पुत्र उत्पन्न होंगे यह मुनिका वचनसुन फिर कैकसीने विनयसे प्रार्थनाकी कि महाराज आप के संगसे तो ऐसे पुत्र न उत्पन्न होने चाहिये तब फिर मुनि ने कहा कि अच्छा सबसे पिछला पुत्र हमारे वंशके योग्य धर्मात्मा औ शास्त्रवेत्ता होगा यह मुनिका वचन सुन प्रसन्नहो कैकसी वहांरही औ कुछ कालके अनन्तर उसके एक अतिभयंकर पुत्र उत्पन्न हुआ जिसके दश शिर बीसभुजा बड़ी २ दाढ़ लालरंग के केश अतिकृष्ण वर्ण बड़ा शरीरथा उसका नाम विश्रवामुनि ने रावणरक्खा फिर कुंभकर्ण उत्पन्नहुआ वह रावणसेभी अधिक क्रूरथा पीछे शूर्पणखा नाम अतिक्रूरा राक्षसी कैकसीके गर्भ से उत्पन्न हुई सबके पीछे बड़ा धार्मिक औ शास्त्रवेत्ता विभीषण उत्पन्न हुआ रावण कुंभकर्ण आदि विश्रवामुनिके पुत्रथे इसलिये उनके मारने से रामचन्द्रजीको ब्रह्महत्या लगी उस हत्या की निवृत्तिकेलिये रामचन्द्रजीनेवैदिकविधानसे रामेश्वरका स्थापन किया रामचन्द्रजीने भी रामेश्वर लिंगको स्थापनकर अपने को

कृतार्थ माना जहां रामचन्द्रजी की ब्रह्महत्या निवृत्तहुई वहां ब्रह्महत्याविमोचननाम तीर्थहुआ वहां स्नान करनेसे ब्रह्महत्या निवृत्त होतीहै उस तीर्थके समीप छायारूप रावण अबतक देख पड़ताहै उसके आगे एक नागलोक का बिल है रामचन्द्रजी ने उस हत्याको नागलोकके बिलमें प्रवेशकरादिया औ उस बिलके ऊपर मण्डप बनाय भैरवको स्थापन किया भैरवके भयसे ब्रह्महत्या बिलके बाहर न निकलसकी निरुद्यम होकर बैठगई रामेश्वर लिंगके दक्षिणभागमें पार्वतीजी हैं लिंगके दोनों ओर सूर्य औ चन्द्र हैं सम्मुखभाग में अग्नि निवास करता है आठों दिक्पाल अपनी२दिशा में रामनाथ के सेवन के लिये स्थित हैं गणपति कार्त्तिकेय औ वीरभद्रआदि गण रामेश्वर के आस पास विद्यमान हैं सब देवता मुनि नाग सिद्ध गन्धर्व अप्सरा आदि रामेश्वरकी सेवाकेलिये भक्तिपूर्वक वहां निवास करते हैं बहुतसे वेदवेत्ता ब्राह्मण रामचन्द्रजीने रामेश्वरका पूजन करने के लिये वहां नियुक्त किये उन ब्राह्मणों का भोजन वस्त्र दक्षिणा आदि से अवश्य पूजन करना चाहिये उन ब्राह्मणों के प्रसन्न होनेसे देवता मुनि औ पितर सन्तुष्ट होतेहैं उन ब्राह्मणों को बहुतसे ग्राम रामचन्द्रजी ने दिये औ रामेश्वरके भोगके लिये बहुतसा धन औ हजारों ग्राम भूषण वस्त्र रत्न वाहनआदि रामचन्द्रजीने दिये सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! रामेश्वर का प्रभाव कहांतक वर्णन करैं गंगा यमुना भी अपना पाप निवृत्त करने के अर्थ निरन्तर जिनका सेवन करती हैं। इसअध्यायको जो पुरुष भक्तिसे पढ़ै अथवा सुनै वह विष्णुसायुज्य पाता है॥

अरतालीसवां अध्याय॥

पाण्ड्यदेशके शंकरनाम राजा औ शाकल्यमुनिकी कथा रामेश्वरप्रशंसा॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! रामनाथकेप्रभावकी एककथा

हम वर्णन करते हैं जिसके श्रवण करने से सब पातक दूर हो-जायँ पूर्व्वकाल विषे पांड्य देश में एक शङ्कर नाम राजा हुआ है वह बड़ाधार्मिक ब्रह्मण्य यज्ञकरनेहारा सत्यप्रतिज्ञ वेदवेदांग जाननेहारा वैदिकधर्म्म में तत्पर चारोंवर्ण औ आश्रमोंकी रक्षा में सावधान शिव विष्णु आदि देवताओं का पूजक औ बड़ा दानी था वह एक दिन सिंह व्याघ्र महिष सूकर आदिजीवों से भरे बनमें मृगया खेलने गया औ सेनासहित बनमें जाय मृगों को मारने लगा सेनाके मनुष्य भी सिंह आदि जीवोंको मारते थे उस बनमें गुफाकेबीच एक शांतचित्त मुनि व्याघ्रचर्म ओढ़े समाधि लगाये बैठे थे औ उनकी पत्नी भी सेवाके लिये मुनि के समीपथी राजा ने जाना कि कोई व्याघ्र गुफामें बैठाहै यह जान एक बाण ऐसा मारा कि मुनि औ मुनिपत्नी की देहमें पारहोगया तब उनका एक बालकथा वह विलाप करनेलगा कि हे माता! हे पिता! मुझको छोंड़ तुम कहांगये मैं किसके शरणजाऊं मुझे कौन पढ़ावेगा भोजन कौन देगा आचार कौन सिखावेगा औ हे माता! तेरीभांति मेरा लालन कौन करैगा विना अपराध किस दुष्टने तुमको मारदिया इस प्रकार ऊंचेस्वर से विलाप करने लगा उसका शब्दसुन राजा वहां गया औ सबमुनि वहां आय एकत्रहुये मुनीश्वरों ने देखा कि मुनि औ मुनिपत्नी मरेपड़े हैं औ बालक विलाप कररहा है तब सब उसका आश्वासन करने लगे कि हे बालक! धनवान् दरिद्र मूर्ख पण्डित पुष्ट कृश दुर्जन सज्जन आदि चाहे जैसा पुरुषहोय मृत्युसे कोई नहीं बचता वन पर्व्वत नगर ग्राम आदि किसी स्थलमें रहो वहीं मृत्यु जाय पहुँचती है हे वत्स! गर्भमें स्थित कोई मृत्युवश होते हैं कोई जन्मतेही मरजाते हैं कितने बालावस्था में मृतक होते हैं कोई तरुण होकर औ कोई वृद्धहोकर यमलोक को जातेहैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ औ यति सब मृत्यु

के वश होते हैं कोई बच नहीं सक्ता ब्रह्मा विष्णु शिव आदि देवता गन्धर्व नाग राक्षस और भी सब जीव विलयहोजाते हैं इसलिये हे बालक! तू माता पिताके मरने से शोक मतकर एक सच्चिदानन्द परब्रह्म का जन्ममरण नहीं होता औ वह न घटता है न बढ़ता यह देह नौ छिद्रों करके युक्त मलकाभांड है रुधिर पूय विष्ठा मूत्र आदि से भराहै जल बुद्बुद के तुल्य क्षणभंगुरहै कामक्रोध लोभ मोह मात्सर्य हिंसा असूया अशौच आदि का निवास स्थान है इस देहको जे पुरुष उत्तम समझैं वे मूढ़ औ दुर्बुद्धि हैं अनेक छिद्रों करके युक्त घटके तुल्य यह देहहै इसमें प्राणरूप पवन इतने दिन रुकारहा यही आश्चर्य है हे बालक! माता पिताका शोक मत कर वेतो अपने कर्म्म के वशहो देहको त्यागगये औ तू कर्म्म वशसे यहां विद्यमान है जब तेरे कर्म्म क्षयहोंगे तब तू भी मृत्युके वशहोगा जिसकालमें तेरे माता पिता उत्पन्नहुये उस समय तू नहीं उत्पन्न हुआथा इसलिये तेरा गमन उनके साथ क्योंकर होसक्ता है जो तेरी उनकीगति तुल्यहोय तो जहां वे गये वहां तू भी जासक्ता है मृतक पुरुषों के बांधव जो अश्रुपातकरते हैं वह परलोक में मृतक पुरुषों को पानकरने पड़ते हैं इस कारण रोदन मतकर धैर्य्यधर औ इनका प्रेतकार्य वैदिकविधानसे कर इनदोनों की मृत्यु बाण लगने से हुई है इस लिये इनकेअस्थि रामेश्वर क्षेत्रमें रामसेतुके समीप डाल औ वहां हीं इनका सपिण्डीकरण आदिकर तब यह अपमृत्यु दोष निवृत्तहोगा यह वचन सब मुनियों का सुन उस शाकल्यमुनि के पुत्र जांगलने अपने माता पिताका पितृमेधकिया दूसरे दिन उनके अस्थि लेकर हालास्य क्षेत्रमें पहुँचा औ कुछ दिनमें रामेश्वर क्षेत्रमें जाय पहुँचा वहां रामसेतु के समीप माता पिताके अस्थिडाले औ एक वर्ष वहां रहकर सब कृत्यकिया वर्ष समाप्ति में मुनिपुत्र ने स्वप्न देखा कि उसके माता पिता चतुर्भुजहो शङ्ख

चक्र गदा पद्म धारे गरुड़परचढ़े तुलसीकी माला औ कौस्तुभ मणि से भूषित देखपड़े उनको देख मुनिपुत्र बहुत प्रसन्न हुआ औ अपने आश्रम में पहुँच सब वृत्तान्त उन मुनीश्वरोंसे कहा मुनिभी सुनकर प्रसन्न हुये परन्तु सबने राजा शंकर से कहा कि हे पांड्यदेशके राजा! तैंने क्रूरता औ मूर्खता से स्त्रीहत्या औ ब्राह्मणहत्या की इसलिये तू अग्नि में प्रवेशकर और किसी प्रकारसे तेरी शुद्धि नहीं चाहै जितने प्रायश्चित्तकर तेरे सम्भाषणसे हज़ारों ब्रह्महत्यालगती हैं इसलिये हे दुष्ट! तू हमारे आगे से चलाजा यह मुनियों का वचनसुन राजाबोला कि हे मुनीश्वरो! आप मुझपर अनुग्रहकरो मैं अभी अग्नि में प्रवेश करताहूं इतनाकह राजाने अपने मन्त्रियोंको बुलाकर कहा कि हे मन्त्रियो! मुझसे ब्रह्महत्या औ स्त्रीहत्या अज्ञान से बनपड़ी उसकी निवृत्ति के लिये मुनियों की आज्ञासे मैं अग्निमें प्रवेश करूंगा इसलिये काष्ठ लाकर मुझे चिता बनादो औ मेरेपुत्र सुरुचिको गद्दीपर बैठा दो इस बातका कुछ शोकभी मतकरो दैव बलवान् है यह राजाका वचन सुन मन्त्री रोदन करनेलगे औ बोले कि हे महाराज! आपने हमको पुत्रवत् पालन किया अब आपके विना हम नगर में प्रवेश न करेंगे हमभी आपके आगे ही अग्निमें प्रवेश करेंगे यह मन्त्रियों का वचन सुन राजाने कहा कि हे मन्त्रियो! मुझ ऐसे महापातकी के साथ दग्धहोना उचित नहीं औ मैं अब राजसिंहासनके योग्य नहीं अब तुमसुरुचि को सिंहासनपर बैठाय उसकी सेवामें रहो औ मेरे लिये शीघ्रही चिता बनादो विलम्ब मतकरो यह राजाकी दृढ़ आज्ञा पाय मन्त्रियों ने चिताबनाय अग्नि प्रज्वलित करी राजा ने अग्नि को प्रज्वलित देख स्नान किया औ अग्नि तथा मुनीश्वरों की प्रदक्षिणाकर हृदय में साम्ब सदाशिवका ध्यान करता हुआ राजा अग्नि में प्रवेश करने लगा तब आकाशवाणी हुई कि हे राजन्!

अग्नि में प्रवेश मतकर ब्रह्महत्या निवृत्ति के लिये मैं तुझे उपाय बताता हूं सावधान होकर सुन दक्षिण समुद्रके तीर गन्धमादन पर्वत में रामचन्द्रजीके स्थापन किये रामेश्वरके लिंग का एक वर्ष पर्यन्त तीनकाल सेवन कर प्रदक्षिणा नमस्कार महाभिषेक आदि कर भांति भांति के नैवेद्य लगाय चन्दन अगर कर्पूर आदि से लिंगका पूजन कर दोभार गोघृत दोभार गोदुग्ध औ द्रोणभर शहद से नित्य रामेश्वरका अभिषेक कर पायसका नैवेद्य लगाय औ तिलतैलसे नित्य दीपक प्रज्वलित कर इस प्रकार रामेश्वर का सेवन करने से स्त्रीहत्या औ ब्रह्महत्या निवृत्त होजायगी रामेश्वरका दर्शन करने से सौ भ्रूणहत्या औ सुरापान सुवर्णस्तेय गुरुस्त्री गमन ब्रह्महत्या आदि हजारों महापातक तत्क्षण निवृत्त होजाते हैं रामेश्वर की सेवा न बनपड़े तो गया प्रयाग आदि तीर्थों से कुछ प्रयोजन नहीं इसलिये हे राजन् ! शीघ्रजाकर रामनाथ की सेवाकर विलम्ब मतकरो इतनाकह आकाशवाणी बन्दहोगई सब मुनिनों ने राजा से कहा कि हे महाराज ! आप शीघ्र रामेश्वर को जावो हमने रामेश्वर का माहात्म्य विना जाने आपको यह प्रायश्चित्त बतलाया यह मुनियों का वचन सुन प्रसन्न हो थोड़ीसी सेना साथ ले राजा रामेश्वर को चला वहां पहुँच जितेन्द्रिय औ जितक्रोध हो एकबार भोजनका नियमकर तीनकाल रामेश्वर का सेवन करनेलगा दशभार सुवर्ण रामनाथ के अर्पण किया नित्य रामेश्वर का महापूजन करता औ नियम से धनुष्कोटि में स्नान कर ब्राह्मणों को दान देता इस प्रकार आकाशवाणी की आज्ञानुसार एक वर्ष पर्यन्त राजाने उग्रतपकिया वर्षके अन्त में भक्ति पूर्वक राजा शंकर शिवजी की स्तुति करनेलगा ॥

शंकरउवाच। नमामिरुद्रमीशानंरामनाथमुमापतिम् ॥ पाहिमांकृपयादेवशरणागतवत्सल ॥ १ ॥ निर्गुणमहादेवका

लकूटविषादन ॥ रक्षमांत्वंदयासिंधोब्रह्महत्यांविमोचय २
गङ्गाधरविरूपाक्षरामनाथत्रिलोचन ॥ मांपालयकृपा
दृष्ट्याछिंधिमत्पातकंविभो ३ कामारेकामसंदायिन्भक्ता
नांशघरेश्वर ॥ कटाक्षंपातयमयिशुद्धंमांकुरुधूर्जटे ४ मा
र्कण्डेयभयत्राणमृत्युञ्जयशिवाऽव्यय ॥ नमस्तेगिरिजा
र्द्धायनिष्पापंकुरुमांसदा ५ रुद्राक्षमालाभरणचंद्रशेखरशं
कर ॥ वेदोक्तसम्यगाचारयोग्यंमांकुरुतेनमः ६ सूर्यदंतभि
देतुभ्यंभारतीनासिकाच्छिदे ॥ रामेश्वरायदेवायनमोमेशु
द्धिदोभव ७ आनंदंसच्चिदानंदंरामनाथंवृषध्वजम् ॥ भू
योभूयोनमस्यामिपातकंमेविनश्यतु ८ इति ॥

इसप्रकार स्तुति करते२ राजा के मुखसे अतिभयङ्कर ब्रह्महत्या निकली जिसका नीलवस्त्र रक्तकेश अतिक्रूर स्वरूप था उस ब्रह्महत्या को शिवजीकी आज्ञासे भैरवजीने मारदिया औ रामेश्वर भगवान् ने प्रसन्न होकर राजासे कहा कि हे राजन्! तेरे इस स्तोत्र से हम बहुत प्रसन्नहैं जो वर चाहै मांग जो दोष स्त्रीहत्या औ ब्रह्महत्या का तुझको लगाथा वह निवृत्त होगया अब पूर्ववत् राज्यकर जो पुरुष हमारी सेवा करते हैं हम उनके ब्रह्महत्याआदि पातक निवृत्त करदेते हैं हमारे सेवन करनेहारे मनुष्य जन्म मरण से छूटजाते औ अन्त में सायुज्यमुक्ति पाते हैं औ जो इस स्तोत्र से हमारी स्तुति करैंगे उनके सब पातक निवृत्त करदेंगे हे राजन्! तेरी भक्ति औ स्तुति से हम प्रसन्नहुये वर मांग यह शिवजी की आज्ञापाय राजाने प्रार्थना करी कि हे नाथ! आपके दर्शन सेही मैं कृतार्थ हुआ अब क्या वर मांगूं मार्कण्डेयका भय हरनेहारे आपके चरणारविन्दका दर्शन किया अब और वर नहीं चाहता आपके चरणोंमें दृढ़ भक्ति होय औ

जन्म मरण से छूटजाऊं औ जो मनुष्य मेरे किये इस स्तोत्र को पढ़ें वे आपकी सेवाका फल पाय सब पापोंसे छूटें सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! शिवजीने ये सब वर राजाको दिये औ रामनाथ लिंगमें आप अन्तर्द्धान हुये राजा भी कृतार्थहो रामनाथ को प्रणामकर अपनी सेना सहित राजधानी को चला मार्ग में सब मुनीश्वरों से यह वृत्तान्त कहा तब मुनीश्वरों ने राजा का अभिषेक किया राजा भी राजधानी में आय पुत्र औ मन्त्रियों सहित धर्मराज्य करने लगा बहुत काल राज्यकर अन्त में रामनाथ के सायुज्य को प्राप्त हुआ हे मुनीश्वरो! राजा का चरित और रामनाथ का प्रभाव हमने वर्णन किया इस अध्याय को जो भक्तिसे पढ़े अथवा श्रवण करे वह रामनाथ के सायुज्य को प्राप्त होता है ॥

उन्नासवां अध्याय ॥

रामचन्द्र लक्ष्मणआदि के किये रामेश्वर महादेव के अनेक स्तोत्र ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! अब हम रामनाथ के स्तोत्र वर्णन करते हैं आप श्रद्धा से श्रवण करो रामेश्वर का स्थापन कर रामचन्द्रजी ने लक्ष्मण ने सीता ने सुग्रीवआदि वानरों ने अगस्त्यआदि ऋषियों ने औ ब्रह्माआदि देवताओंने जो स्तुति कीहै हम क्रम पूर्वक कथन करते हैं जिनके श्रवणमात्र से मनुष्य मुक्त होजाय ॥

श्रीरामउवाच। नमोमहात्मनेतुभ्यं महामायायशूलिने ॥ स्वपादाम्बुजभक्तार्तिहारिणे सर्पहारिणे १ नमोदेवाधिदेवाय रामनाथायसाक्षिणे ॥ नमोवेदान्तवेद्याय योगिनांतत्त्वदायिने २ सर्वदानन्दपूर्णाय विश्वनाथायशंभवे ॥ नमोभक्तभयच्छेद हेतुपादाब्जरेणवे ३ नमस्तेखिलनाथाय नमःसा

त्वात्परात्मने ॥ नमस्तेद्भुतवीर्याय महापातकनाशिने ४ कालकालायकालाय कालातीतायतेनमः ॥ नमोऽविद्या निहंत्रेते नमःपापहरायच ५ नमःसंसारतप्तानां तापनाशैकहेतवे॥नमोमद्ब्रह्महत्याविनाशिनेचविषाशिने६नमस्ते पार्वतीनाथ कैलासनिलयाऽव्यय ॥ गङ्गाधरविरूपाक्ष मांर क्षसकलापदः ७ तुभ्यंपिनाकहस्ताय नमोमदनहारिणे ॥ भूयोभूयोनमस्तुभ्यं सर्वावस्थासुसर्वदा ८ इति ॥

यह स्तोत्र रामचन्द्रजी ने किया अब लक्ष्मणजी का किया स्तोत्र कहते हैं ॥

लक्ष्मणउवाच। नमस्तेरामनाथायत्रिपुरघ्नायशंभवे। पार्वतीजीवितेशाय गणेशस्कन्दसूनवे १ नमस्तेसूर्यचंद्राग्निलोचनायकपर्दिने। नमःशिवायसोमायमार्कण्डेयभयच्छिदे २ नमःसर्वप्रपंचस्यसृष्टिस्थित्यंतहेतवे। नमःउग्रायभीमायमहादेवायसाक्षिणे ३ सर्वज्ञायवरेण्याय वरदाय वरायते। श्रीकंठायनमस्तुभ्यं पञ्चपातकभेदिने ४ नमस्तेस्तुपरानन्द सत्यविज्ञानरूपिणे। नमस्तेभवरोगघ्नस्तायूनांपतयेनमः ५ पतयेतस्कराणांतेवनानांपतयेनमः। गणानांपतयेतुभ्यं विश्वरूपायसाक्षिणे ६ कर्मणाप्रेरितःशंभो जनिष्येयत्रयत्रतु। तत्रतत्रपदद्वन्द्वे भवतोभक्तिरस्तुमे ७ असन्मार्गेमतिर्माभूद्भवताकृपयामम। वैदिकाचारमार्गेच रतिःस्याद्भवतेनमः ८ इति ॥

यह लक्ष्मणजी ने स्तुति की अब सीताजी का किया स्तोत्र कहते हैं ॥

सीतोवाच। परमकारणशंकरधूर्जटेगिरिसुतास्तनकुंकु

मशोभित । ममपतीपरिदेहिमतिंसदानविषमांपरपूरुषगोचराम् १ गङ्गाधरविरूपाक्ष नीललोहितशंकर । रामनाथ नमस्तुभ्यं रक्षमांकरुणाकर २ नमस्तेदेवदेवेश नमस्तेकरुणालय । नमस्तेभवभीतानां भवभीतिविमर्द्दन ३ नाथ त्वदीयचरणाम्बुजचिन्तनेन निर्द्धूयमाहकरसुताङ्घ्रयमाशु शम्भो॥ नित्यत्वमाशुगतशन्सम्रकण्डुपुत्रःकिंवानसिद्ध्यतितवाश्रयणात्परेश ४ परेशपरमानन्दशरणागतपालक॥ पातिव्रत्यंममसदा देहितुभ्यंनमोनमः ५ इति ॥

अब हनुमान् का किया स्तोत्र कहते हैं ॥

। देवदेवजगन्नाथ रामनाथकृपानिधे । त्वत्पादाम्भोरुहगतानिश्चलाभक्तिरस्तुमे १ यंविनानजगत्सत्ता तद्ज्ञानमपिनोभवेत् ॥ नमःसज्ञानरूपाय रामनाथायशंभवे २ इति ॥

अब अंगद आदि के किये स्तोत्र कहते हैं ॥

अंगदउवाच । यस्यभासाजगद्भानं यत्प्रकाशंविनाजजत् । नभासतेनमस्तस्मै रामनाथायशंभवे १ इति ॥ जाम्बवानुवाच । सर्वानन्दस्सदानन्दो भासतेपरमार्थतः ॥ नमो रामेश्वरायास्मै परमानन्दरूपिणे १ इति ॥ नीलउवाच । यद्देशकालदिग्भेदैरभिन्नंसर्वदाद्वयम् ॥ तस्मैरामेश्वरायास्मै नमोभिन्नस्वरूपिणे १ इति ॥ नलउवाच । ब्रह्मविष्णुमहेशाना यदविद्याविजृम्भिताः ॥ नमोऽविद्याविहीनायतस्मै रामेश्वरायते १ इति ॥ कुमुदउवाच । यत्स्वरूपापरिज्ञानात्प्रधानंकारणत्वतः ॥ कल्पितंकारणायास्मैरामनाथायशंभवे १ इति ॥ पनसउवाच । जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादियदविद्याविजृम्भितम् ॥ जाग्रदादिविहीनाय नमोस्मैज्ञानरूपिणे १

इति ॥ गजउवाच । यत्स्वरूपापरिज्ञानात्कार्याणांपरमाण
वः। कल्पिताःकारणत्वेन तार्किकापसदैर्यथा १ तमहंपर
मानन्दं रामनाथंमहेश्वरम् ॥ आत्मरूपतयानित्यमुपास्ये
सर्वदाक्षिणम् २ इति ॥ गवाक्षउवाच । अज्ञानपाशबद्धा
नांपशूनांपाशमोचकम्॥रामेश्वरंशिवंशांतमुपैमिशरणंस
दा १ इति॥ गवयउवाच। स्वाधयस्तंजगदाधारं चन्द्रचूड
मुमापतिम् ॥ रामनाथंशिवंवंदेसंसारामयभेषजम् १ इति॥
शरभउवाच । अन्तःकरणमात्मेतियदज्ञानाद्विमोहितैः ॥
भण्यतेरामनाथंतमात्मानंप्रणमाम्यहम् १ इति ॥ गंधमा
दनउवाच। रामनाथमुमानाथं गणनाथंत्रियम्बकम् ॥ सर्व
पातकशुद्ध्यर्थमुपास्येजगदीश्वरम् १ इतिं ॥ सुग्रीवउवा
च। संसारांभोधिमध्येमांजन्ममृत्युजलेभये ॥ पुत्रदारध
नक्षेत्रवीचिमालासमाकुले १ मज्जद्ब्रह्मांडखण्डेचपति
तंनाशपारकम् ॥ क्रोशंतमवशंदीनं विषयव्यालकातरम् २
व्याधिनक्रसमुद्विग्नतापत्रयभषार्दितम् ॥ मांरक्षगिरिजा
नाथ रामनाथनमोस्तुते ३ इति॥ विभीषणउवाच। संसार
वनमध्येमां विनष्टनिजमार्गके ॥ व्याधिचौरेऽघसिंहेच ज
न्मव्याघ्रेलयोरगे १ बाल्ययौवनवार्द्धक्यमहाभीमांधकूप
के ॥ क्रोधेर्ष्यालोभवह्नौच विषयक्रूरपर्वते २ त्रासभूकंटका
द्येचसीदंतंमामनाथकम्॥शोभनांपदवींशंभोनयरामेश्वरा
धुना ३ इति॥ सर्वेवानराऊचुः। निन्द्यानिन्द्यासुसर्वत्र जनि
त्वायोनिषुप्रभो। कुंभीपाकादिनरके पतित्वाचपुनस्तथा १
जनित्वाचपुनर्योनौकर्मशेषेणकुत्सिते ॥ संसारेपतितान
स्मान्रामनाथदयानिधे २ अनाथान्विवशान्दीनान्क्रोश

तःपाहिशंकर॥नमस्तेस्तुदयासिंधोरामनाथमहेश्वर३ इति
ब्रह्मोवाच। नमस्तेलोकनाथाय रामनाथायशंभवे॥ प्रसी
दममसर्वेश मदविद्याविनाशय १ इति॥ इन्द्रउवाच। य
स्यशक्तिरुमादेवीजगन्मातात्रयीमयी॥ तमहंशंकरंवंदेरा
मनाथमुमापतिम् १ इति॥ यमउवाच। पुत्रौगणेश्वरस्कंदौ
वृषोयस्यचवाहनम्॥ तंवैरामेश्वरंसेवे सर्वाज्ञाननिवृत्तये १
इति॥ वरुणउवाच। यस्यपूजाप्रभावेण जितमृत्युर्मृकं
डुजः॥ मृत्युंजयमुपास्येहं रामनाथंहृदातुतम् १ इति॥
कुबेरउवाच। ईश्वराय लसत्कर्णकुण्डलाभरणाय ते॥
लालारुणशरीराय नमोरामेश्वरायवै १ इति॥ आदि
त्यउवाच। नमस्तेस्तुमहादेव रामनाथात्रियम्बक॥ द
क्षाध्वरविनाशाय नमस्तेपाहिमांशिव १ इति॥ सोमउ
वाच। नमस्तेभस्मदिग्धाय शूलिनेसर्पमालिने॥ राम
नाथदयांभोधेश्मशाननिलयायते १ इति॥ अग्निरुवाच।
इन्द्राद्यखिलदिक्पालसंसेवितपदांबुज॥ रामनाथायशुद्धा
यनमोदिग्वाससेसदा १ इति॥ वायुरुवाच। हरायहरिरू
पाय व्याघ्रचर्माम्बरायच॥ रामनाथनमस्तुभ्यं ममाभी
ष्टप्रदोभव १ इति॥ बृहस्पतिरुवाच। अहंतासाक्षिणेनित्यं
प्रत्यगद्वयवस्तुने॥ रामनाथममाज्ञानमाशुनाशयतेनमः १
इति॥ शुक्रउवाच। वंचकानामलक्ष्यायमहामंत्रार्थरूपि
णे॥ नमोद्वैतविहीनाय रामनाथायशंभवे १ इति॥ अ
श्विनावूचतुः। आत्मरूपतयानित्यं योगिनांभासतेहृदि॥
अनन्यमानवेद्याय नमस्तेराघवेश्वर १ इति॥ अगस्त्य
उवाच॥ आदिदेवमहादेव विश्वेश्वरशिवाव्यय॥ राम

नाथाम्बिकानाथ प्रसीदवृषभध्वज १ अपराधसहस्रंमेक्ष
मस्वपरमेश्वर॥ममाहमितिपुत्रादावहंतांममभोचय२इति॥
सुतीक्ष्णउवाच । क्षेत्राणिरत्नानिधनानिदारा मित्राणिव
स्त्राणिगजाश्वपुत्राः॥ नैवोपकारायहिरामनाथ मह्यंप्रयच्छ
त्वमतोविरक्तिम् १ इति ॥ विश्वामित्रउवाच । श्रुतानि
शास्त्राण्यपिनिष्फलानि त्रय्यप्यधीताविफलैवनूनम्। त्व
यीश्वरेचेन्नभवेद्धिभक्तिः श्रीरामनाथेशिवमानुषस्य १इति॥
गालवउवाच । दानानियज्ञानियमास्तपांसिगंगादितीर्थेषु
निमज्जनानि॥रामेश्वरंत्वांननमंतियेतुव्यर्थानितेषामिति
निश्चयोत्र १ ॥ वशिष्ठउवाच । कृत्वापिपापान्यखिलानि
लोकस्त्वामेत्यरामेश्वरभक्तियुक्तः॥ नमेतचेत्तानिलयंव्रजे
युर्यथांधकारारवितेजसाद्धा १ इति ॥ अत्रिरुवाच। दृष्ट्वा
तुरामेश्वरमेकदापि स्पृष्ट्वानमस्कृत्यभवंतमीशम् ॥ पुन
र्नगर्भसनरःप्रयायात्किंत्वद्वयंतेलभतेस्वरूपम् १ इति॥ अं
गिराउवाच । योरामनाथंमनुजोभवंतमुपेत्यबंधून्प्रणमन्
स्मरेत्॥ संतारयेत्तानपिसर्वपापात् किमद्भुतंतस्यकृतार्थ
तायाम् १ इति ॥ गौतमउवाच । श्रीरामनाथेश्वरगूढमे
तद्रहस्यभूतंपरमंविशोकम् ॥ त्वत्पादमूलंभजतांनृणांये
सेवांप्रकुर्वंतिहितेपिधन्याः १ शतानंदउवाच । वेदान्तवि
ज्ञानरहस्यविद्भिर्विज्ञेयमेतद्धिमुमुक्षुभिस्तु॥ शास्त्राणिसर्वा
णिविहायदेव त्वत्सेवनंयद्रघुवीरनाथ १ इति ॥ भृगुरुवाच ।
रामनाथतवपादपंकजद्वंद्वचिन्तनविधूतकल्मषः ॥ निर्भयं
व्रजतिसत्सुखाद्वयं त्वांस्वयंप्रभममोघचिद्घनम् १ इति ॥
कुत्सउवाच। रामनाथतवपादसेवनंभोगमोक्षवरदंनृणाम

दा॥रौरवादिनरकप्रणाशनंकः पुमान्नभजतेरसग्रहः १इति॥
काश्यपउवाच। रामनाथतवपादसेविनांकिंव्रतैरुततपोभिर
ध्वरैः॥ वेदशास्त्रजपचिंतयाचकिं स्वर्गसिंधुपयसापिकिंफ
लम् १ श्रीरामनाथत्वमागत्यशीघ्रं ममोत्क्रांतिकालेभवा
न्याचसाकम्॥ मांप्रापयस्वात्मपादारविन्दंविशोकंविमोहं
सुखंचित्स्वरूपम् २ इति॥ गंधर्वाऊचुः॥रामनाथत्वमस्माकं
भजतांभवसागरे॥ अपारदुःखकल्लोले नत्वत्तोन्यागतिर्हि
नः १ इति॥ किन्नराऊचुः। रामनाथभवारण्यव्याधिव्याघ्र
भयानके॥ त्वामंतरेणनास्माकंपदवीदर्शकोभवेत् १ इति॥
यक्षाऊचुः। रामनाथेन्द्रियारातिबाधानोदुःसहाःसदा॥ ता
विजेतुंसहायस्त्वमस्माकंभवधूर्जटे १ इति॥ नागाऊचुः॥
अचिन्त्यमहिमानंत्वां रामनाथवयंकथम्॥ स्तोतुमल्पधि
यःसक्ता भविष्यामोम्बिकापते१इति॥किंपुरुषाऊचुः॥नाना
योनौचजननं मरणंचाप्यनेकशः॥ विनाशयतथाज्ञानं रा
मनाथनमोस्तुते १ इति॥ विद्याधराऊचुः॥ अम्बिकापतयेतु
भ्यमसंगायमहात्मने॥ नमस्तेरामनाथाय प्रसीदवृषभ
ध्वज १ इति॥ वसवऊचुः॥ रामनाथगणेशायगणवृन्दार्चि
तांघ्रये॥ गंगाधरायगुह्याय नमस्तेपाहिनःसदा १ इति
विश्वेदेवाऊचुः॥ ज्ञप्तिमात्रैकनिष्ठानां मुक्तिदायतुयोगिना
म्॥ रामनाथायसाम्बाय नमोस्मान्रक्षशंकर १ इति॥ म
रुतऊचुः॥ परतत्त्वायतत्त्वानां तत्त्वभूतायवस्तुतः॥ नम
स्तेरामनाथाय स्वयंभानायशंभवे १ इति॥ साध्याऊचुः॥
स्वातिरिक्तविहीनाय जगत्सत्ताप्रदायिने॥ रामेश्वरायदेवा
य नमोऽविद्याविभेदिने १ इति॥ सर्वेदेवाऊचुः॥सच्चिदान

न्दसम्पूर्णंद्वैतवस्तुविवर्जितम् ॥ ब्रह्मात्मानंस्वयंभानमा
दिमध्यांतवर्जितम् १ इति ॥ अविक्रियमसंगंच परिशुद्धंस
नातनम् ॥ आकाशादिप्रपंचानां साक्षिभूतंसनातनम् २
प्रमातीतंप्रमाणानामपिबोधप्रदायिनम् ॥ आविर्भावतिरो
भावसंकोचरहितंसदा ३ स्वस्मिन्नध्यस्तरूपस्य प्रपंच
स्यास्यसाक्षिणम् ॥ निर्लेपंपरमानंदं निरस्तसकलक्रिय
म् ४ भूमानंदंमहात्मानं चिद्रूपंभोगवर्जितम् ॥ रामनाथंव
यंसर्वे स्वपातकविशुद्धये ५ चिन्तयामःसदाचित्ते स्वात्मा
नंदबुभुत्सवः ॥ रक्षास्मान्करुणासिंधो रामनाथनमोस्तुते
६ रामनाथायरुद्राय नमःसंसारहारिणे ॥ ब्रह्मविष्ण्वादिरू
पेण विभिन्नायस्वमायया ७ इति ॥ विभीषणसचिवाऊचुः ॥
वरदायवरेण्याय त्रिनेत्रायत्रिशूलिने ॥ योगिध्येयायनि
त्याय रामनाथायतेनमः १ इति ॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! रामचन्द्र लक्ष्मण आदि के मुखसे स्तुति सुन प्रसन्नहो रामेश्वरप्रभुने कहा कि हे रामचन्द्र जी! हे लक्ष्मणजी! हे सीते! हे सुग्रीवआदि वानरो! आप सबके किये इस स्तोत्राध्यायको जे पढ़ें सुनें औ सुनावें वे सब हमारेपूजन का फल पावेंगे धनुष्कोटि तीर्थ में स्नान करने का औ एक वर्ष पर्यन्त रामसेतु के वासका भी फल प्राप्त होताहै गन्धमादन के सबतीर्थों में स्नान करनेसे जो फल प्राप्त होताहै वह इस अध्याय के पठनसे होगा इस अध्यायको पठन करनेहारा मनुष्य जन्म मरण जरा रोगआदिके भयसे छूट हमारे सायुज्यको प्राप्त होगा॥

पचासवां अध्याय ॥

सेतुमाधवके वैभवका वर्णन गुणनिधि राजा औ लक्ष्मीजीकी अद्भुत कथा॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! अब हम सब पाप हरनेहारा

सेतुमाधव का वैभव वर्णन करतेहैं आप भक्ति से श्रवण करैं
पूर्वकालमें चन्द्रवंशमें उत्पन्न पुण्यनिधि नाम राजा हालास्येश्वर
करके भूषित मथुरापुरी में हुआहै वह एक समय अपने पुत्रको
राज्य सौंप चतुरंगिणी सेना औ अपने अन्तःपुर समेत स्नानके
लिये रामसेतुको चला वहांपहुँच संकल्पपूर्वक धनुष्कोटिमें स्नान
किया और भी वहांके सब तीर्थों में स्नानकर भक्तिपूर्वक राजा
पुण्यनिधि रामेश्वर का सेवन करनेलगा वहां राजाने विष्णुभग-
वान् की प्रीति के लिये यज्ञ किया यज्ञांत स्नान धनुष्कोटि में
कर औ रामेश्वर का पूजन आदि कर अपनी राजधानीमें आय
राज्य करनेलगा कुछ कालके अनन्तर लक्ष्मी विष्णु भगवान्
के साथ विनोद से विवाद कर राजाकी भक्ति परीक्षा के लिये
आठ वर्ष की कन्या बन धनुष्कोटि तीर्थपर आय स्थित होगई
उस अवसर में राजाभी वहां स्नान करने आयाथा राजा स्नान
कर तुला पुरुष आदि सब दान दिये औ राजधानी को चलने
लगा तब उस परमसुन्दरी कन्याको देखा औ पूंछा कि हे कन्ये!
तू किसकी पुत्री है औ हे वत्से! यहां अकेली किस कामके लिये
आई है औ कहां से आई है यह राजा का वचन सुन कन्या ने
कहा कि मेरे माता पिता बांधव आदि कोई नहीं औ मैं अनाथा
हूं इसलिये हे महाराज! आपकी पुत्री होकर आपके घरमें रहना
चाहती हूं परन्तु जो मुझे हठसे आकर्षण करै उसको आप दंड
देवैं राजाने कन्या का यह वचन सुन कहा कि हे पुत्रि! जो तू
कहैगी वह सब करूंगा मेरे भी केवल एक पुत्रहै कन्या नहीं है
इस लिये मेरी पुत्री होकर रह जिस वर में तेरी रुचिहोगी उसी
को तुझे देदूंगा यह राजा का वचन सुन प्रसन्नहो कन्या उसके
साथगई राजा ने अपनी रानी विन्ध्यावली से कहा कि हे प्रिये!
यह हम दोनों की पुत्री है इसको अपने समीप रक्खो सब
प्रकार से इसकी रक्षा करना यह राजा की आज्ञा पाय रानी ने

उस कन्या को अपने समीप रक्खा औ पुत्री की भांति उसका पालन पोषण करनेलगी विष्णुभगवान् भी गरुड़परचढ़ लक्ष्मी को ढूंढ़ने निकले बहुत देशोंमें घूमे परन्तु कहीं लक्ष्मी न मिलीं तब रामसेतुपर पहुँचे इस अवसर में वह कन्या भी अपनी सखियों समेत उपवन में पुष्प बीनने आईथी विष्णु भगवान् भी ब्राह्मण का रूप धारे गंगाजल की कांवड़ कन्धे पर रुद्राक्ष औ विभूति धारे शिव नाम जपते वहां आये औ उस कन्याको देखा कन्याभी उनको देख स्तब्ध होगई ब्राह्मण रूपधारी विष्णु भगवान् ने उस कन्याका हाथ पकड़कर खींचा तब वह कन्या ऊंचे स्वरसे पुकारी कन्या का पुकारना सुन राजाभी वहां दौड़ा आया औ कन्यासे पूंछा कि हे पुत्रि! तुझे किसने छेड़ा तब कन्याने कहा कि हे पिता! एक ब्राह्मणने मुझे हठसेपकड़ा तब मैंने आक्रोश किया अब वह ब्राह्मण निर्भय होकर एक वृक्षके नीचे बैठाहै यह राजाने कन्याका वचनसुन क्रोधकर उस ब्राह्मण को पकड़वाया औ हथकड़ी बेड़ी पहिनाय रामनाथके समीप एक मंडप में क़ैद करादिया औ कन्या को आश्वासन कर अपने साथलेगया रात्रि के समय स्वप्नमें राजाने उस ब्राह्मण को देखा कि शंख चक्र गदा पद्म कौस्तुभमणि पीताम्बर औ भांति २ के भूषणधार शेषशय्या पर सोताहै औ नारद गरुड़ विष्वक्सेनआदि किंकर सेवा में खड़े हैं औ अपनी कन्या को भी देखा कि कमल के ऊपर बैठी हाथमें कमल लिये है सुवर्ण कमलों की माला औ भांति २ के रत्न जटित भूषणोंसे अलंकृतहै दिग्गज जिसका अभिषेक कर रहेहैं यह स्वप्न में देख राजा उठा औ कन्या के घरमें गया वहां देखा तो कन्या उसीरूप में बैठी है जो राजाने स्वप्न में देखाथा प्रभात होतेही राजा कन्या को साथले रामनाथ के मंदिर के समीप गया जहां ब्राह्मणको क़ैद कर रक्खाथा ब्राह्मणको भी उसी रूपमें देखा जो स्वप्नमेंदेखाथातबराजा विष्णुभगवान्कोजान स्तुतिकरनेलगा॥

पुण्यनिधिरुवाच॥ नमस्तेकमलाकांत प्रसीदगरुडध्व
ज॥ शार्ङ्गपाणेनमस्तुभ्यमपराधंक्षमस्वमे १ नमस्तेपुंड
रीकाक्ष चक्रपाणेश्रियःपते॥ कौस्तुभालंकृतांगाय नमःश्री
वत्सलक्षण २ नमस्तेब्रह्मपुत्राय दैत्यसंघविदारिणे॥ अ
शेषभुवनावास नाभिपंकजशालिने ३ मधुकैटभसंहर्त्रे रा
वणान्तकरायते॥ प्रह्लादरक्षिणेतुभ्यं धरित्रीपतयेनमः ४
निर्गुणायाप्रमेयाय विष्णवेबुद्धिसाक्षिणे॥ नमस्ते श्रीनिवा
साय जगद्धात्रेपरात्मने ५ नारायणायदेवाय कृष्णायमधु
विद्विषे॥ नमःपंकजनाभाय नमःपंकजचक्षुषे ६ नमःपंकज
हस्ताय नमस्तेपंकजांघ्रये॥ भूयोभूयोजगन्नाथ नमःपंक
जमालिने ७ दयामूर्त्तेनमस्तुभ्यमपराधंक्षमस्वमे॥ मया
निगडपाशाभ्यां यःकृतोमधुसूदन॥ अनयस्त्वंस्वरूपंतान्दै
त्यांस्त्वदपराधिनः॥अतोमदपराधोयंक्षंतव्योमधुसूदन ९॥

इसप्रकार विष्णुभगवान्‌की स्तुतिकर राजा पुण्यनिधि महा-
लक्ष्मी की स्तुति करनेलगा॥

राजोवाच॥नमोदेविजगद्धात्रिविष्णुवक्षस्स्थलालये॥न
मोऽब्धिसंभवेतुभ्यंमहालक्ष्मिहरिप्रिये १ सिद्ध्यैपुष्ट्यैस्वधा
यैचस्वाहायैसततंनमः॥ संध्यायैचप्रभायैचधात्र्यैभूत्यै
नमोनमः २ श्रद्धायैचैवमेधायैसरस्वत्यैनमोनमः॥ यज्ञ
विद्येमहाविद्येगुह्यविद्येतिशोभने ३ आत्मविद्येचदेवेशिमु
क्तिदेसर्वदेहिनाम्॥ त्रयीरूपेजगन्मातर्जगद्रक्षाविधायि
नि ४ त्वमांत्वंकृपादृष्ट्यासृष्टिस्थित्यंतकारिणि॥ भूयोभू
योनमस्तुभ्यं ब्रह्ममात्रेमहेश्वरि ५॥

इसप्रकार लक्ष्मीजी की स्तुतिकर राजा भगवान् से प्रार्थना करनेलगा कि हे भगवन्! मैंने बड़ा अपराध किया कि आपके चरणों में बेड़ी डाली परन्तु यह अपराध मैंने अज्ञान से किया इसलिये आप क्षमाकरें सब जगत् आपका पुत्रहै औ आप सब के पिताहैं पिताको पुत्रोंका अपराध क्षमा करना चाहिये आपने बड़े अपराधी दैत्यों को अपना स्वरूप दिया इसलिये मेरा अपराधभी आप क्षमाकरैं पूतना आपके मारनेके लिये आई उस को आपनेसद्गतिदी इसकारण मेरे ऊपरभी कृपादृष्टिकीजिये सूत जी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! राजा का यह वचन सुन विष्णुभगवान् बोले कि हे राजन्! भय मतकर हम भक्तोंके वशहैं हमारी प्रीतिके लिये तैंने बड़ा यज्ञकिया इसलिये हे राजन्! तू हमारा भक्तहै औ हम तेरे वशहैं भक्तोंके अपराध हम सदा क्षमाकरतेहैं तेरी भक्तिकी परीक्षाके लिये हमने लक्ष्मी को भेजा तैंने लक्ष्मी की भलीभांति रक्षाकी इसलिये हम तुझपर प्रसन्नहैं लक्ष्मी हमारा रूपहै जो इसका भक्तहोय वह हमाराभक्त होताहै जो इससे विमुखहोय वह हमारा द्वेषी है तैंने इसका भक्तिसे पूजन किया उससे हमाराभी पूजनहुआ इसलिये हे राजन्! तैंने हमारा कोई अपराध नहीं किया तैंने लक्ष्मी की रक्षाके लिये हमारा बन्धनकिया इसलिये हम बहुत प्रसन्नहैं यह लक्ष्मी जगन्माता है इसकी रक्षाके लिये हमारा बन्धनकिया यह हमको अति प्रिय है इसलिये हे राजन्! कुछभय मतकर यह लक्ष्मी तेरी कन्या है यहतो भगवान्ने कहा औ लक्ष्मीजी बोलीं कि हे राजन्! मैं तुझ से बहुत प्रसन्नहूं मैं औ विष्णुभगवान् दोनों विनोद कलह कर के यहां आये औ तेरे योगसे तथा भक्तिसे बहुत प्रसन्न हुये हमारी कृपासे हे राजन्! सदा तुझको सुख होगा तू चक्रवर्ती राजाहोगा औ हमारे चरणों में दृढ़भक्तिहोगी सदा धर्म में बुद्धि रहैगी पापमें कभी आसक्त न होगी औ देहांत में हमारा सा-

युज्यमिलैगा विष्णुभगवान्‌ने कहा कि हेराजन्! जिसप्रकार तैंने हमको निगड़ से बांधा अब हम इसी रूपसे यहां निवास करैंगे हमनेही सेतु बांधा है इसकी रक्षाके लिये हम सेतुमाधव नामसे यहां रहैंगे रामनाथ शिवजी औ ब्रह्माजीभी सेतुकी रक्षाके लिये यहां निवास करैंगे इन्द्रादि लोकपाल यहां निवास करैंगे सब उपद्रव निवृत्त करने के लिये औ सबके मनोरथ सिद्ध करनेके अर्थ सेतुमाधव नामसे हम यहां स्थित होंगे तेरी निगड़से बँधे हमको जो सेवन करैंगे वे हमारा सायुज्य पावैंगे हमारे औ लक्ष्मीके इस चरितको जो पढ़ैंगे वे कभी दारिद्र्यको नहीं प्राप्त होंगे औ ऐश्वर्य पावेंगे तेरेकिये हमारे स्तोत्रको जो पढ़ैंगे सुनैंगे औ लिखकर घरमें रक्खैंगे वे जन्म मरणके क्लेशके छुटैंगे इतना कह विष्णुभगवान् वहां पूर्णरूप से स्थित होगये राजाभी विष्णु भगवान् का महापूजन कर औ रामनाथ का सेवनकर अपने स्थानकोगया औ मथुराका राज्य अपने पुत्रको सौंप आप रामनाथ क्षेत्रमें निवास करनेलगा औ देहके अन्तमें मुक्तिपाई रानी विन्ध्यावली राजाके साथ सतीहुई औ अपने पतिके समीप पहुँची सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! जो पुरुष भक्तिसे सेतुमाधव का सेवन करते हैं वे सदा कैलासमें निवास करते हैं जो सेतुमाधवका सेवन विना किये रामेश्वरकी सेवा करै उसकी सब सेवा व्यर्थ होतीहै जो पुरुष सेतुके बालूरेत लेकर गंगामें डालैं वे सदा वैकुण्ठ में वासकरते हैं गंगाको जाने लगै तब सेतुमाधव के समीप सङ्कल्प करके जाय नहीं तो यात्रा निष्फल होती है गंगासे कांवर भरकर रामनाथक्षेत्र में लावै औ रामेश्वर पर गंगाजल चढ़ाय उस कांवरको सेतुके समीप समुद्र में डालै वह पुरुष ब्रह्मसायुज्य को प्राप्तहोता है हे मुनीश्वरो! यह सेतुमाधव का वैभव हमने वर्णन किया इसको जो पढ़ै अथवा सुनै वह वैकुण्ठ वास पाताहै ॥

इक्यावनवाँ अध्याय॥

सेतु यात्राके क्रम का वर्णन औ विधान॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! अब हम सेतुयात्राका क्रम कहते हैं जिसके श्रवण करने से मनुष्य मुक्तहोताहै स्नान आचमन कर शुद्धहो रामेश्वर औ रामचन्द्रजी की प्रसन्नताके लिये वेदवेत्ता ब्राह्मणों को भोजन कराय मस्तक में भस्मका त्रिपुण्ड्र अथवा गोपीचन्दन का ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण कर रुद्राक्षमाला औ कुशके पवित्रधार (सेतुयात्रामहंकरिष्ये) यह संकल्पकर अष्टाक्षर अथवा पञ्चाक्षर मन्त्रको जपता हुआ घरसे यात्रा करै मार्ग में एकबार हविष्य भोजनकरै जितेन्द्रिय औ जितक्रोध रहै पादुका छत्र तांबूल तैलाभ्यंग स्त्री संग आदिका तीर्थयात्रा में निषेधहै शौच आचार करके युक्तरहै तीनकाल संध्यावन्दन गायत्रीजप औ रामेश्वर का चिन्तनकरै मार्ग्ग में नित्य सेतु माहात्म्य रामायण अथवा और कोई पुराण पढ़ै अथवा श्रवण करै व्यर्थ वाक्य उच्चारण न करै प्रतिग्रह न लेवै आचार में रहै मार्ग में यथाशक्ति शिव औ विष्णुकापूजन करताजाय वैश्वदेव ब्रह्मयज्ञ अग्निहोत्र आदि करताजाय अतिथियों को अन्नदेवै औ संन्यासियों को यथाशक्ति भिक्षा देतारहै वित्तशाठ्य न करै शिव विष्णु आदिके स्तोत्र नित्य पढ़ै सदा धर्म्म सेवन करै औ निषिद्ध कर्म्म को त्यागै इस नियमसे सेतु पर पहुँच पहिले एक पाषाण समुद्र को देकर समुद्रका आवाहन करै फिर प्रणामकर अर्घ्यदेकर समुद्रकी आज्ञा ले स्नानकरै औ मुनि देवता पितर औ वानरों का तर्पण करै सात पाषाण अथवा एक पाषाण॥

(पिप्पलादसमुत्पन्नेकृत्येलोकभयंकरे॥ पाषाणंतेमया दत्तमाहारार्थंप्रकल्पताम्) यह मन्त्रपढ़ समुद्र में डालै तब स्नान सफलहोताहै (विश्वाचिरंघृताचिरवंपिरवयोनेवि

शांपते ॥ सान्निध्यंकुरुमेदेवसागरेलवणाम्भसि) यह आवाहन का मन्त्र है (नमस्तेविश्वगुप्तायनमोविष्णोह्यपांपते ॥ नमोहिरण्यश्रृंगायनदीनांपतयेनमः) यह नमस्कार का मन्त्रहै (सर्वरत्नमयश्रीमन्सर्वरत्नाकरप्रभो ॥ सर्वरत्नप्रधान स्त्वंगृहाणार्घ्यमहोदधे) यह अर्घ्यका मन्त्र है (अशेषजगदाधारशंखचक्रगदाधर ॥ देहिदेवममानुज्ञांयुष्मत्तीर्थ निषेवणे) यह आज्ञा लेनेकामन्त्रहै फिर पूर्व दिशामें सुग्रीव दक्षिण में नल पश्चिम में मयंद औ उत्तर में द्विविदका स्मरण कर मध्यमें राम लक्ष्मण सीता हनुमान् अंगद औ विभीषणका स्मरण कर (पृथिव्यांयानितीर्थानिप्राविशंस्त्वांमहोदधे ॥ स्नानस्यमेफलंदेहिसर्वस्मात्त्राहिमैनसः) यह मन्त्रपढ़हिरण्यश्रृंग इत्यादि वैदिक मन्त्र पढ़ै औ नाभिमें नारायण का स्मरण करै स्नान आदि कर्मोंमें नारायणका स्मरण करता रहै तो ब्रह्मलोक को प्राप्तहोय औ सब पापोंका प्रायश्चित्त भी हो जाय फिर प्रह्लाद नारद व्यास अम्बरीष शुकदेव आदि भगवद्भक्तोंका स्मरणकर (वेदादिर्योवेदवशिष्ठयोनिःसरित्पतिःसागररत्नयोनिः अग्निश्चतेजेजइलाचतेजोरेतोधाविष्णुरमृतस्यनाभिःइदंतेअन्याभिरस्यमानमद्भिर्याकाश्चसिंधुंप्रविशंत्यापः ॥ सर्पोजीर्णामिवत्वचंजहामिपापंशरीरात्) यह मन्त्र पढ़ स्नान करै समुद्रावयूनां इत्यादि मन्त्रपढ़ नमस्कार कर (सर्वतीर्थमयंशुद्धं नदीनांपतिमंबुधिम्) यह मन्त्र औ द्यौसमुद्रौ इत्यादि मन्त्र पढ़ फिर स्नानकरै फिर (ब्रह्माण्डोदरतीर्थानिकरस्पृष्टानितेरवे ॥ तेनसत्येनमेसेतौतीर्थंदेहिदिवाकर) यह मन्त्र पढ़ पूर्व आदि दिशाओंमें सुग्रीव आदिका पूर्व

वत् स्मरणकर तीसरा स्नान करै जो देवीपत्तन होकर जाय
तो पहिले नव पाषाणके मध्य में समुद्र के बीच स्नानकरै दर्भ-
शय्याके मार्ग से जाय तो पहिले समुद्रमें स्नानकरै फिर पि-
प्पलाद कपि कण्व कृतांत मृत्यु काल रात्रि विद्या अर्हगणेश्वर
पराशर वशिष्ठ वामदेव बाल्मीकि नारद बालखिल्यमुनि नल
नील गवाक्ष गवय गंधमादन मयंद द्विविद शरभ ऋषभ सु-
ग्रीव हनुमान् औ राम लक्ष्मण सीताका तीन २ बार तर्पण
कर देवता ऋषि पितरों का तिल जलसे तर्पण करै चतुर्थ्यन्त
अथवा द्वितीयांत नाम उच्चारणकर जलके बीच खड़ा रहकर
तर्पण करै समुद्र के बीच तर्पण करने से सब तीर्थों में तर्पण
करने का फल प्राप्त होता है इसभांति सबका तर्पणकर जलसे
निकल वस्त्र धारण कर पवित्रहो आचमनकर श्राद्धकरै धनाढ्य
होय षड्रस अन्नसे पिंड देकर गौ भूमि सुवर्ण आदि दान कर
ब्राह्मणों को देवै औ निर्द्धन होय तो तिल चावलसे पिण्डदान
करदेवै इसीभांति पाषाण दानसे लेकर श्राद्ध पर्यंत सब विधान
राम धनुष्कोटिमें भी करै चक्रतीर्थ में जाकर स्नानकर वहांके
अधिपति नारायणका दर्शन करै पश्चिम मार्गसे जाय तो उस
दिशाके चक्रतीर्थ में स्नानकर दर्भशायी नारायण का दर्शनकरै
फिर कपितीर्थ सीतातीर्थ औ ऋणमोचनतीर्थ में स्नान कर
रामचन्द्रजीको प्रणामकरै फिर कंठसे ऊपर वपनकराय लक्ष्मण
तीर्थमें स्नानकरै फिर रामतीर्थ पापविनाशनतीर्थ गंगा यमुना
सावित्री गायत्री सरस्वती हनुमत्कुंड ब्रह्मकुंड औ नागकुंड में
स्नानकरै गंगा आदि सब तीर्थ नागकुंड में निवास करते हैं यह
तीर्थ अनन्त आदि आठ नागोंने रचाहै फिर अगस्त्यकुंड में
स्नानकर अग्नितीर्थ में स्नानकरै औ विधिपूर्वक श्राद्धकर गौ
भूमि सुवर्ण अन्न आदि ब्राह्मणोंको देवै तो सब पापोंसे मुक्तहोय
चक्रतीर्थ आदि जिस क्रमसे वर्णन किये उसी क्रमसे स्नानकरै

अथवा जैसी रुचिहोय उसप्रकार तीर्थों में स्नानकरै सब तीर्थों में स्नान औ श्राद्धकर पीछे रामेश्वर महादेव सेतुमाधव राम लक्ष्मण सीता हनुमान् औ सुग्रीव आदि वानरों का सेवन करै सब तीर्थोंमें स्नानकर रामनाथ औ रामचन्द्र को प्रणाम कर रामचन्द्र धनुष्कोटिमें स्नानकरै वहांभी पाषाण दान आदि नियम सब करै धनुष्कोटितीर्थ में क्षेत्र गौ वस्त्र अन्न आदि वेदवेत्ता ब्राह्मणोंको यथाशक्ति देवै फिर नियम पूर्वक कोटितीर्थ में स्नान कर रामेश्वरदेव को प्रणाम करै सामर्थ्य होय तो ब्राह्मणों को सुवर्ण दक्षिणादेवै औ तिल धान्य गौ क्षेत्र वस्त्र अन्नभी ब्राह्मणों को देवै वित्तशाठ्य न करै धूप दीप नैवेद्य आदि पूजाके उपकरण वित्तानुसार रामेश्वरदेव के अर्पणकरै रामेश्वरदेव की स्तुति औ प्रणामकर सेतुमाधवके समीप जाय वहांभी सब पूजाके उपचार समर्पण कर पूर्वोक्त नियमों करके युक्त अपने घरको आवै वहां आय षड्रस भोजन ब्राह्मणोंको करावै इसप्रकार यात्रा करै तो रामेश्वरदेव सब मनोरथ सिद्ध करते हैं औ धन संतान की वृद्धि होती है नरक औ दरिद्र का भय नहीं रहता औ अंत में मुक्ति प्राप्त होती है जो यात्रा करने की सामर्थ्य न होय तो सेतु के माहात्म्य का कोई ग्रन्थ श्रवण करै अथवा इसी सेतुमाहात्म्य को श्रवण करै तोभी सेतुयात्रा का फल प्राप्त होताहै परन्तु यह बात लँगड़े लूले अन्धे आदि के लिये कही है हे मुनीश्वरो ! यह सेतु यात्रा का क्रम हमने कहा इस को जो पढ़ै अथवा भक्ति से श्रवण करै वह सब दुःखों से छूटता है ॥

बावनवां अध्याय ॥

सेतुका श्री गन्धमादन पर्वतके तीर्थोंका माहात्म्य अर्द्धोदय आदि पर्वदिनों में सेतुस्नान का माहात्म्य सेतुमाहात्म्य के पठन औ श्रवणका विस्तार से माहात्म्य व्यासजीका नैमिषारण्यमें आगमन सेतुमाहात्म्य की प्रशंसा औ ग्रन्थ समाप्ति ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! अब आपकी प्रीतिके लिये फिर भी हम सेतुका वैभव वर्णन करते हैं आप प्रीति से श्रवण करो सब स्थानों में यह स्थान उत्तम है इस स्थान में कियेहुये जप तप हवन दान आदि कर्म अक्षय होतेहैं धनुष्कोटिमें स्नान करने से दशवर्ष तक किये काशीवास का फल प्राप्त होता है धनुष्कोटि में स्नान कर तीन दिन रामेश्वर का दर्शन करै तो पुण्डरीकपुर के दशवर्ष वासका फल प्राप्तहोता है अष्टोत्तर सहस्र जप षडक्षर मन्त्रका इस क्षेत्र में करै तो शिव सायुज्य पावै मध्यार्जुन कुम्भकोण मायूरश्वेत कानन हालास्य गजारण्य वेदारण्य नैमिष श्रीपर्वत श्रीरंग वृद्धगिरि चिदंबर वल्मीक शेषाद्रि वरुणाचल दक्षिणकैलास वेंकटाद्रि हरिस्थल कांचीपुर ब्रह्मपुर वैद्येश्वरपुर आदि शिवक्षेत्र औ विष्णुक्षेत्रों में वर्षभर निवास करने से जो फल होता है वह धनुष्कोटि में माघमास भर स्नान करने से प्राप्त होता है सेतु के उद्देश से द्यौसमुद्रौ इत्यादि अदोयद्दारु इत्यादि विष्णोःकर्माणिपश्यन्ते इत्यादि तद्विष्णोःइत्यादि कई श्रुतिहैं औ अनेक स्मृति इतिहास पुराण आदि सेतुमाहात्म्य को कहते हैं दशवर्ष पर्यंत काशीवास कर गङ्गास्नान नित्य करने से जो फल होताहै वह चन्द्र सूर्य ग्रहण में सेतु स्नान से प्राप्त होताहै सेतु स्नान करतेही कोटिजन्ममें किये पाप तत्क्षण नष्टहोजाते हैं औ हजार अश्वमेध का फल प्राप्त होताहै बिषुव अयन सोमबार औ पर्व दिनों में सेतु स्नान

करै तो सात जन्म के पाप निवृत्त होतेहैं औ स्वर्ग्ग प्राप्त होता है मकरके सूर्य्य औ माघमास में सूर्य्योदय होने के अनन्तर तीनदिन धनुष्कोटि में स्नान करै तो गंगादि सब तीर्थोंके स्नान का फल प्राप्तहोय पांचदिन स्नानकरै तो अश्वमेध आदि सब यज्ञों का फल पावै चान्द्रायणआदि व्रत औ चारों वेद के पारायण का फल प्राप्त होता है माघमास में दशदिन धनुष्कोटिमें स्नान करै तो निश्चयही ब्रह्मलोक प्राप्तहोय पन्द्रहदिन स्नान करै तो वैकुण्ठ प्राप्तहोय बीसदिन स्नान करै तो शिवलोक में वास होय पचीसदिन स्नानकरै तो सारूप्यमुक्ति पावै तीनदिन स्नान करै तो सायुज्य मिलै इसलिये माघमासमें अवश्यही धनुष्कोटि में स्नान करनाचाहिये चन्द्र सूर्य ग्रहण अर्द्धोदय महोदय आदि पर्व दिनों में स्नान करै तौ कभी गर्भवास न होय ब्रह्महत्या आदि पाप निवृत्तहोयँ नरक क्लेश न होय सब सम्पत्ति मिलै इन्द्रादि लोकों में निवास होय रावण के बधके लिये रामचन्द्रजीने सेतु बनाया है जिसको देवता सिद्ध चारण गन्धर्व देवर्षि राजर्षि पितर किन्नर नागआदि सब सेवतेहैं उससेतु का स्नानके समय स्मरण करै औ चाहै जहां तड़ाग आदि में स्नान करै तो भी सब पाप निवृत्त होजायँ सेतु क्षेत्रमें एकमुट्ठी अन्न देने से भी सब रोग औ भ्रूणहत्या आदि पाप निवृत्त होते हैं रामचन्द्रजीके धनुष् से कीहुई रेखा को जो देखै वह अक्षय वैकुण्ठ वासपावै बिभीषणकी प्रार्थनासे रामचन्द्रजीने धनुष्कोटितीर्थ बनाया है उस में भक्तिसे स्नान करै गौ भूमि सुवर्ण क्षेत्र तिल चावल धान्य दूध दही छाछ उड़द वस्त्र भूषण घृत जल शाक भात शर्करा मधु लड्डू अपूप आदि सब पदार्थों का दान करै धनका लोभ न करै तो सब मनोरथ सिद्ध होते हैं दान जप तप हवन आदि सबकर्म धनुष्कोटितीर्थ पर कियेहुये अनन्तफल देनेहारे होते हैं धनुष्कोटिमें स्नान करने से मनुष्य

पवित्र होताहै और देवता पितर मुनि ब्रह्मा विष्णु शिव नाग किम्पुरुष यक्ष सब संतुष्ट होतेहैं उसके सब कुल सद्गति को प्राप्त होतेहैं रामधनुष्कोटि में स्नान करने से पांचकरोड़ महापातक नष्टहोतेहैं जहां सीताने अग्निमें प्रवेशकिया उसकुंड में स्नान करने से सौ भ्रूणहत्या क्षणमात्र में नष्ट होजातीहैं रामचन्द्र सेतु गंगा औ विष्णु इनमें कुछभेदनहीं स्नानके समय इनका स्मरणकरै तो परमगति पावै अर्द्धोदयपर्वमें सेतुस्नानकर सर्षपके तुल्य पिंड पितरोंको देवै तो जबतक सूर्यचन्द्ररहैं तबतक पितर तृप्तरहते हैं शमीपत्रके तुल्य पिंडदेवै तो पितर स्वर्गमें होयँ तो मुक्तिपावैं औ नरकमें होयँ तो सब पापोंसे छुट स्वर्गको जायँ सेतुपद्मनाभ गोकर्ण पुरुषोत्तम इन क्षेत्रोंमें सदा समुद्रके बीच स्नानकरना लिखा है शुक्र भौम औ शनिवारकेदिन संतानकी इच्छावाला पुरुष सेतुकेविना अन्यत्र समुद्रमें स्नान न करै गर्भिणीपति औ प्रेतकृत्य न करचुकाहोय वह पुरुष सेतुके विना समुद्रमें स्नान न करै बार तिथि नक्षत्र आदिका नियम और क्षेत्रोंमेंहै सेतुमें सदाही स्नान करना चहिये जीवतेहुये बांधवोंके निमित्त सेतुस्नान करै मृतहुवोंके उद्देश से न करै कुशाका पुतला बनाय उसको स्नान करावै औ यहमंत्र पढ़ै (कुशोसित्वंपवित्रोसिविष्णुनाविधृतःपुरा । त्वयिस्नातेसचस्नातो यस्यैतद्ग्रंथिबन्धनम्) और स्थानों में पर्वके बीचसमुद्र पवित्र होताहै सेतुमें गंगासागरमें गोकर्णमें पुरुषोत्तमक्षेत्र में औ किसी नदी से समुद्रका संगमहुआहोय वहां सदाही पवित्रहै वहां सबकाल में स्नान करना चाहिये और स्थानों में पर्वदिनके विना समुद्रको स्पर्श नकरै पितर देवता औ मुनियों के सन्मुख रामचन्द्रजीने यह प्रतिज्ञा करीहै कि हमारे सेतुमें जो स्नानकरैं वे जन्ममरणसे छुटजाते हैं रामनाथका माहात्म्य औ सेतुका वैभव हम कोटिवर्ष में भी नहीं वर्णन करसक्तेहैं यह रामचन्द्रजी का वचनसुन सब

देवता औ मुनि बहुत प्रसन्नहो प्रशंसा करनेलगे सेतुकी रक्षाके लिये मध्यमेंब्रह्माजी निवास करतेहैं औ सेतुमाधवनामक विष्णु सेतुमें विराजमान हैं और भी देवता पितर धर्मशास्त्रके प्रवर्तक महर्षि गंधर्व किन्नर नाग यक्ष विद्याधर चारण किम्पुरुष आदि सब सेतु में निवास करतेहैं रामसेतुका दर्शन स्पर्शन श्रवण स्मरण आदि सबपापोंसे रक्षाकरता है अर्द्धोदयमें स्नान करनेसे आनंदकी प्राप्ति औ मुक्तिकी प्राप्तिहोती है माघमास अमावास्या तिथि रविवार श्रवणनक्षत्र व्यतिपातयोग होय औ श्रवणनक्षत्र का सूर्यहोय तब अर्द्धोदययोग होताहै उसयोगमें स्नानकरने से सायुज्यमुक्ति मिलतीहै हजार व्यतिपातके तुल्य अमावास्या अर्कवार करके युक्त होय तो दशहज़ार अमावास्या के तुल्य होती है श्रवण नक्षत्र होय तो बहुतही पुण्य होताहै इनमें एक२ भी स्नान दान जप पूजन आदिका अनन्तफल देनेहारा है पांचोंका योग होजाय तो क्याकहनाहै नक्षत्रोंमें श्रवण तिथियोंमें अमावास्यावारोंमें रविवार औ योगोंमें व्यतिपातयोग श्रेष्ठहै इनचारों का योग मकरके सूर्यमें होय औ उसकाल में सेतुस्नानकरै तो जन्म मरण के भयसे छुट मुक्तिपावै अर्द्धोदय तुल्य कोई पर्व न हुआ न होगा ऐसाही महोदयपर्व भीहै इनपर्वकालोंमें सेतुक्षेत्रके बीच यथाशक्ति दान करनाचाहिये आचार तप वेद वेदांत शिव विष्णु आदि देवताओंकीभक्ति जिस ब्राह्मणमें होय वह दानपात्र होताहै उसीको सबदान देने चाहिये जो सत्पात्र ब्राह्मण न मिलै तो सब दानवस्तु इकट्ठी कररक्खै औ जब उत्तम पात्र मिलै तब देदेवै परंतु अधमपात्र को न देवै इस प्रसंगमें एक इतिहास हम कहतेहैं जो वशिष्ठजीने राजादिलीपको सुनायाथा सब पात्रोंमें उत्तमपात्र वेदके आचारमें तत्पर ब्राह्मणहै औ उनमें भी उत्तम वह है जिसके उदरमें शूद्रका अन्न न गयाहोय जो ब्राह्मण वेद औ पुराण जाने शिव विष्णु आदि का पूजन करै वर्णाश्रम

धर्मों के अनुष्ठान में तत्पर होय दरिद्री औ कुटुम्बी होय वह उत्तमपात्र होता है ऐसे पात्र को दान देने से धर्म अर्थ काम औ मोक्ष प्राप्त होते हैं उत्तम क्षेत्र में तो विशेष करके सत्पात्र कोही दान देना चाहिये अपात्र को दान देनेवाला मनुष्य दश जन्मतक कृकलास तीनजन्म गर्दभ दो जन्मतक मंडूक एक जन्म चाण्डाल होकर फिर क्रमसे शूद्र वैश्य क्षत्रिय औ ब्राह्मण होता है परन्तु दरिद्री औ रोगी होता है इसभांति और भी अनेक दोष अपात्र के दान देने से होतेहैं इसलिये सत्पात्रकोही दान देना चाहिये जो सत्पात्र न मिलै तो संकल्पकर भूमि में जल छोड़देवै सत्पात्र न मिलै तो सत्पात्र के पुत्रको देवै वहभी न मिलै तो महादेव के अर्पण करै परन्तु अपात्र को कभी न देवै सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो ! यह वशिष्ठजीका उपदेश मान उस दिनसे राजादिलीप सत्पात्र को दान देने लगा सेतु आदि पुण्य क्षेत्रों में सत्पात्र कोही दान देवै जो तीर्थपर पात्र न मिलै तो वहां दान करके घरमें आय वह वस्तु सत्पात्र को देदेवै नहीं तो धर्म का लोप होता है इसप्रकार दान देने से कभी दुःख नहीं होता औ सायुज्य मुक्ति मिलती है अर्द्धोदय के समान कोई उत्तमकाल नहीं है कुम्भकोण सेतुमूल गोकर्ण नैमिष अयोध्या दण्डकारण्य विरूपाक्ष वेंकट शालग्राम प्रयाग कांची द्वारावती मथुरा पद्मनाभ काशी सब नदी समुद्र पर्वत आदि तीर्थों पर मुण्डन औ उपवास करना चाहिये जो पुरुष लोभ अथवा मोह से मुण्डन औ उपवास विना किये घरको चला आवै उसके सब पाप साथही चलेआते हैं गन्धमादन में चौबीस तीर्थ मुख्यहैं उन में लक्ष्मण तीर्थपर मुण्डन कराना लिखा है परन्तु कण्ठ से ऊपर वपन करना चाहिये वहां वपन कराय लक्ष्मण तीर्थ में स्नानकर ब्राह्मण को दक्षिणा देवे औ लक्ष्मणेश्वर महादेवका दर्शन करै तो सब पापों से छुट शिवलोक को

जाय सेतु के तुल्य तीर्थ तप पुण्य औ उत्तमगति कोइ नहीं है हजार ग्रहण के तुल्य अर्द्धोदय पर्व होता है अर्द्धोदय के समान संसार मोचक कोई काल नहीं है अर्द्धोदय में रामसेतु के बीच स्नान करने से जो पुण्य होता है उसके तुल्य कोई पुण्य शास्त्र में नहीं कहा है साठिहज़ार वर्ष गंगा स्नान करने से जो पुण्य होता है वह सेतु स्नान एकबार करने से होता है अर्द्धोदय महोदय के पुण्य की तो क्या गणना है मकर मास में प्रयाग स्नान करने से सब पातक निवृत्त होतेहैं उससे सहस्रगुण अधिक पुण्य सेतु में एकबार अर्द्धोदय के बीच स्नान करने से होताहै तीन लोकों के सब तीर्थों में स्नान करने से जो पुण्य होता है वह अर्द्धोदय में एक बार सेतु स्नान करनेसे होताहै ब्रह्मज्ञान से हीन कृतघ्न दुरात्मा महापातकी आदि सब अर्द्धोदयमें सेतु स्नान करने से शुद्ध होजाते हैं कृतघ्न का उद्धार और किसी तीर्थ में स्नान करने से नहीं होता परन्तु सेतु स्नानसे उस की भी सद्गति होजाती है जो अर्द्धोदय में मोहवशहो सेतु स्नान न करैं वे अन्धे की भांति सदा संसारकूप में डूबते हैं अर्द्धोदय में सेतु स्नान करनेहारे मनुष्य सूर्य मण्डलको भेदन कर ब्रह्मलोक को जाते हैं इसमें कुछ संदेह नहीं है अर्द्धोदय में सेतु स्नान कर रामचन्द्र सीता लक्ष्मण रामेश्वर सुग्रीव आदि वानरों का ध्यान कर अपना दारिद्र्य निवृत्त होने के लिये देवता ऋषि पितरों का तर्पण करै औ अर्द्धोदय नामक जगन्नाथका पूजन करै तो विष्णुभगवान् प्रसन्न होतेहैं ॥

दिवाकरनमस्तेस्तुतेजोराशेजगत्पते। अत्रिगोत्रसमुत्पन्नलक्ष्मीदेव्याःसहोदर ॥ अर्घ्यंगृहाणभगवन्सुधाकुम्भनमोस्तुते। व्यतिपातमहायोगिन्महापातकनाशन ॥ सहस्रबाहोसर्वात्मन् महामार्घ्यंनमोस्तुते। तिथिनक्षत्रवा

राणामधीशपरमेश्वर ॥ मासरूपगृहाणार्घ्यंकालरूपन मोस्तुते ॥

इन मन्त्रों स अर्द्धोदय में अर्घ्य देवै ब्राह्मणों को वित्तके अनुसार सब पदार्थ देवै चौदह बारह आठ सात छः अथवा पांच ब्राह्मणों का पृथक् २ मन्त्रों से पूजनकरै कांस्यका अथवा काष्ठका नया पात्र खीर से भरकर फल गुड़ घृत तांबूल औ दक्षिणा सहित ब्राह्मणों के आगे रक्खै औ प्रत्येक ब्राह्मण को दूध देनेहारी गौ औ यज्ञोपवीत देकर ॥

श्रवणर्क्षेजगन्नाथजन्मर्क्षेतवकेशव॥ यन्मयादत्तमर्थिभ्यस्तदक्षयमिहास्तुते १ नक्षत्राणामधिपतेदेवानाममृतप्रद ॥ त्राहिमांरोहिणीकान्तकलाशेषनमोस्तुते २ दीनानाथजगन्नाथ कालनाथकृपाकर ॥ त्वत्पादपद्मयुगलेभक्तिरस्त्वचलामम ३ व्यतीपातनमस्तेस्तुसोमसूर्यसुतप्रभो । यद्दानादिकृतंकिञ्चित्तदक्षयमिहास्तुते ४ अर्थिनांकल्पवृक्षोसिवासुदेवजनार्दन ॥ मासर्क्षव्ययनकालेश पापंशमय मेहरे ५ ॥

ये मन्त्र पढ़ै इस प्रकार ब्राह्मणों का पूजनकर पार्वण श्राद्ध कर हिरण्यश्राद्ध आमश्राद्ध अथवा पाकश्राद्धकरै वित्तशाठ्य न करै पीछे वस्त्र भूषण आदि से आचार्य का पूजनकर प्रतिमा गौ छत्र उपानत् वस्त्रआदि उसको देवै इसप्रकार अर्द्धोदयपर्व्व में सेतुके बीच व्रतकरै वह कृतकृत्य होजाता है फिर उसको कुछ करना शेष नहीं रहता और क्षेत्रोंमें भी अर्द्धोदय पर्व्व के बीच यही विधान करना चाहिये रामचन्द्रजी ने गन्धमादन पर्व्वत के बीच समुद्र में सेतुबांधा है स्नान के समय सेतुका स्मरण करने से करोड़ों पाप तत्क्षण नाशको प्राप्त होते हैं औ विष्णुलोक

की प्राप्तिहोती है जो पुरुष निमेष मात्र भी सेतुके समीप निवासकरे उसके सम्मुख कभी यमदूत नहींआते रामसेतु धनुष्कोटि रामचन्द्र सीता लक्ष्मण रामनाथ हनुमान् सुग्रीव आदि वानर विभीषण नारद विश्वामित्र अगस्त्य वशिष्ठ वामदेव जाबालि काश्यप आदि रामभक्तोंका जो सदा चिन्तनकरै वह सब दुःखों से छुट परमपदको प्राप्तहोता है सत्यक्षेत्र हरिक्षेत्र कृष्णक्षेत्र नैमिष शालग्राम बदरी हस्तिगिरि वृषाचल शेषाद्रि लक्ष्मीक्षेत्र चित्रकूट कुरंगक कांची कुंभकोण मोहिनीपुर ऐंद्र श्वेताचल पद्मनाभ महास्थल फुल्लग्राम घटिकाद्रि सारक्षेत्र हरिस्थल श्रीनिवास भक्तनाथ आलिंदक्षेत्र शुकक्षेत्र बारुणक्षेत्र मथुरा श्रीगोष्ठी पुरुषोत्तम श्रीरंग आदि शिव विष्णुक्षेत्रों में स्नान करने से जो पातक नाशको प्राप्त होते हैं वे केवल सेतु स्नान सेही निवृत्त होजाते हैं जो पुरुष सेतु स्नान नहीं करते वे कभी संसार से मुक्त नहीं होते जो मनुष्य कभी शिवपञ्चाक्षर नारायणाष्टाक्षर औ रामषडक्षरका कभी जप स्मरण आदि नहीं करते वे भी सेतु स्नानसे निष्पाप होजाते हैं जो पुरुष एकादशी व्रत नहीं करते जाबालोपनिषद् के मंत्रों करके भस्म नहीं धारते वेदोक्त मार्ग करके शिव विष्णुआदि देवताओंका पूजन नहीं करते उनसबके भी पाप सेतु स्नान करने से नाशको प्राप्तहोते हैं जो पुरुष शिव विष्णुआदि देवताओं का गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदि उपचारों करके पूजन नहींकरते औ रुद्राध्यायचमक पुरुषसूक्त पावमानीसूक्त त्रिमधुरसूक्त सुपर्ण पञ्चशान्ति आदि करके कभी अभिषेक नहींकरते उन पापियोंके पाप धनुष्कोटि स्नान करने से तत्क्षण निवृत्त होजाते हैं शिव विष्णुआदि देवताओं को जो नमस्कार प्रदक्षिणा आदि नहीं करते औ धनुर्मास में प्रभातही पूजन कर महानैवेद्य नहीं लगाते वे भी रामसेतु में स्नान करनेसे निष्पाप होजाते हैं जो पुरुष शिवके अथवा विष्णु

के नाम उच्चारण नहीं करते शालग्राम शिवनाभ अथवा द्वारका चक्रका पूजन नहीं करते गंगाकी मृत्तिका तुलसी की मृत्तिका अथवा गोपीचन्दनको मस्तकमें छाती में औ दोनों भुजाओंमें नहीं धारते औ कभी रुद्राक्ष अथवातुलसीकाष्ठकोजो धारणनहीं करते वे सब धनुष्कोटि में स्नान करनेसे निष्पाप होजाते हैं जो पुरुष प्रभात उठ शिवविष्णुके नाम स्तोत्र अथवा कोई मंत्र चिंतन नहीं करते वे धनुष्कोटिमें स्नान करनेसे निष्पाप होजाते हैं जो पुरुष प्रभात उठ जलाशय पर जाय स्नान संध्यावन्दन कर गायत्री का सेवन नहीं करते जो प्रातःकाल सायंकाल औ मध्याह्न के कर्म नहीं करते ब्रह्मयज्ञ वैश्वदेव अतिथि पूजन नहीं करते संन्यासियों को भिक्षा नहीं देते जो ब्राह्मण वेदत्रयी पढ़कर भूल जाते हैं अथवा वेद वेदांग पढ़तेही नहीं माता पिता का प्रति बर्ष श्राद्ध नहीं करते महालय में अष्टका श्राद्ध औ नैमित्तिक श्राद्ध नहीं करते चैत्रकी पूर्णमासी को चित्रगुप्त की प्रसन्नता के लिये पान व कदली शर्करा सहित पायस गुड़ आम्र पनस ताम्बूल पादुका छत्र वस्त्र पुष्प चंदनआदि ब्राह्मणों को नहींदेते उनके सब पातक धनुष्कोटि स्नानसे निवृत्त होते हैं दुराचार होय चाहे सदाचार जो धनुष्कोटि का सेवन करै वह संसारसे मुक्तिपाताहै जोमुक्ति चाहे वह शीघ्रही धनुष्कोटि को जाय हे मुनीश्वरो! हम सत्यहित औ सार कहते हैं कि शीघ्र धनुष्कोटि तीर्थको जाओ धनुष्कोटि स्नान विना मुक्तिका कोई उपाय नहीं है वहां स्नानकरनेवालोंको संसार का भय नहीं होता धनुष्कोटि स्नान करनेसे सत्यज्ञान अनंत परब्रह्मकी प्राप्तिहोती है सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो! यह सेतु माहात्म्य हमने वर्णन किया इसके पढ़ने औ श्रवण करने से महादुःख महारोग दुःस्वप्न अपमृत्यु आदिका नाश होताहै औ सब प्रकार से शांति होती है स्वर्ग औ मोक्षभी मिलताहै इसको पढ़ने औ सुननेसे अग्निष्टोम

आदि यज्ञोंका औ चारोंवेदों के सौपरायण का फल प्राप्त होता है इसका एक अध्याय पढ़ै तो अश्वमेधका फलपावै दो अध्याय पढ़ै अथवा सुनै तो गोमेधयज्ञका फल प्राप्तहोताहै दश अध्याय पढ़ै तो स्वर्ग जाय इन्द्रकेसाथ आनन्द भोगता हैं बीस अध्याय पढ़ने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है तीस अध्याय पढ़ै तो विष्णु लोकको जाय चालीस अध्याय पढ़ै तो रुद्रलोक की प्राप्ति होय जो पुरुष पचास अध्याय पढ़ै वह साम्ब सदाशिवके समीप निवास करताहै जो इस सम्पूर्ण माहात्म्यको एकबारपढ़ै वह शिव सालोक्य पावै दोबार इस माहात्म्य को सुनै वह विमान में बैठ शिवजी के समीप जाय तीन बार पढ़ै अथवा श्रवण करै तो शिवसारूप्य पावे जो चार बार पढ़ै वह शिवसायुज्य पाता है जो पुरुष प्रतिदिन इस माहात्म्यका एक श्लोक आधा श्लोक एक चरण अथवा एक वर्णही नित्य पढ़ै वह उस दिन के किये पापसे छुटजाता है इस संपूर्ण माहात्म्य को जो पढ़ै अथवा सुनै तो जितने अक्षर इस माहात्म्य में हैं उतनी ब्रह्महत्या उतने सुरापान उतने सुवर्णस्तेय उतने गुरुदारगमन औ उतने ही संसर्ग दोष तत्क्षण नाशको प्राप्तहोजातेहैं जितने इसमें अक्षरहैं उतनेबार सेतुके सब तीर्थों में स्नान करने का फल इसके पठन औ श्रवण से प्राप्त होताहै जो इसको भक्तिसे लिखै वहज्ञाननिवृत्तिकर शिवसायुज्य पाताहै जिसघरमें इसमाहात्म्यकी पुस्तक रहै वहां भूत वेताल रोग चोर अग्नि आदिकाभय नहींहोता औ ग्रहपीड़ाभी नहीं होती जिस घरमें यह माहात्म्यहोय वहघरसेतु क्षेत्रके समानहै चौबीसतीर्थ औ गन्धमादन पर्वत भी वहां निवास करतेहैं ब्रह्मा विष्णु शिवआदि देवता वहां निवासकरते हैं बहुत कहांतक कहैं तीनोंलोक वहां निवास करते हैं श्राद्धके समय एक अध्याय पढ़ै तो श्राद्धकी विकलता दूर होय और पितरों की तृप्ति होय जो पुरुष सदा इस माहात्म्यको ब्राह्मणोंको सुनाता

रहै उसकी गो और महिषी नीरोग रहती हैं औ बहुत दूध देती हैं यह माहात्म्य मठ देवालय नदी तड़ाग आदिके तीरपर पुण्य वनमें औ श्रोत्रियों के घरमें पढ़ना चाहिये औ किसी अपवित्र स्थानमें इसको न पढ़ै विषुवसंक्रांति अयनसंक्रांति हरिवासर अष्टमी चतुर्दशी आदि पर्व दिनोंमें इसको पढ़ै श्रावण भाद्रपद धनुर्मास औ उत्तरायण में पवित्र हो इस माहात्म्यको पढ़ै औ श्रोता भी पवित्र होकर श्रवणकरैं इस माहात्म्य में अनेक पुण्य तीर्थ बड़े बड़े पुण्यात्मा राजा तपस्वी ब्रह्मा विष्णु शिव आदि देवता वर्णन किये हैं औ धर्म अधर्म का भी इसमें प्रतिपादन किया है यह पवित्र माहात्म्य वेदके अर्थ करके युक्त है औ स्मृति-कर्त्ता व्यास आदि मुनीश्वरों का सम्मत है जो अपना कल्याण चाहै वह इसको अवश्यही पढ़ै जिससे यह माहात्म्य श्रवण करै उसको सुवर्ण वस्त्र आदि देवै वित्तशाठ्य न करै सुवर्णवस्त्र गौ भूमि आदि देकर सब श्रोता पौराणिक को संतुष्ट करैं पौरा-णिक का पूजन करने से तीनों देवताओं का पूजन होता है औ तीनों देवताओं का पूजन करने से तीन लोक संतुष्ट होते हैं साक्षात् परमात्मा ने रामचंद्र रूप से सीता लक्ष्मण सहित भूमि पर अवतार लिया इस माहात्म्य के पढ़ने औ श्रवण करनेवालों को रामचंद्रजी भोग औ मोक्ष देते हैं यह माहात्म्य श्रीवेद-व्यासजी के मुख कमल से निकला है युधिष्ठिर महाराज भीम-सेन आदि अपने भ्राताओं सहित अपने पुरोहित धौम्य ऋषि के मुख से नित्य श्रवण किया करते हैं हे मुनीश्वरो! हमारे मुख से यह अतिगुप्त औ श्रुति सम्मत माहात्म्य आपने श्रवण किया इसको नित्य आदर से पठन कीजिये यह वचन मुनीश्वरों को कहकर अपने गुरु वेदव्यास जीका हृदय में स्मरण कर प्रेम से रोमांचितहो अश्रुपात करते हुये आनंद से नाचने लगे इसी अवसर में शिष्यों पर अनुग्रह करने के लिये वेदव्यासजी वहां

प्रकट हुये सूतजी सहित सब मुनि उनके चरणों पर गिरे औ
आनंद से अश्रुपात करनेलगे व्यासजीने अपने हाथसे सूतजी
को उठाय आलिंगन किया मुनियों ने आसन बिछाया उसपर
व्यासजी बैठे औ उनकी आज्ञा पाय सब मुनि अपने २ आ-
सन पर बैठे तब व्यासजी शौनक आदि मुनियों से कहनेलगे
कि हे मुनीश्वरो ! हमारे शिष्य सूतजीने आपको सेतुमाहात्म्य
श्रवण कराया जिसके श्रवण से सब महापातक निवृत्त होतेहैं
श्रुति स्मृति पुराण इतिहास औ सब शास्त्रों का अर्थ इस माहा-
त्म्य में पर्यवसन्न है सब पुराणों में यह माहात्म्य हमको बहुत
प्रियहै हमारी आज्ञा से राजा युधिष्ठिर इस माहात्म्य को धौम्य
ऋषि के मुखसे नित्य श्रवण करते हैं इसलिये हे मुनीश्वरो ! आप
भी सब इस माहात्म्य को सदा पढ़ैं श्रवणकरैं औ अपने शि-
ष्योंको पढ़ावैं सब मुनीश्वरोंने व्यासजीकी आज्ञाको अंगीकार
किया व्यासजी भी अपने शिष्य सूतजीको साथले मुनीश्वरों से
बिदाहो कैलास को गये औ नैमिषारण्यवासी मुनीश्वर भी उस
दिनसे नित्य सेतु माहात्म्य को पठन औ श्रवणकर आनन्दको
प्राप्त होते हुये ॥

दो० भाषा माहिं विचारिकै तजि मनको परमाद ॥
रची रुचिर यह शिवकथा बुध दुर्गापरसाद १
हरनेहारी श्रवण ते भक्तन के भव फन्द ॥
बनीरहै यह भूमिपर जबलौं सूरज चन्द २
सुखीहोयँ शिवभक्त सब भूतिविभूषितभाल ॥
जिनके दर्शन पाइ कै कटैं पाप के जाल ३
सदा सदाशिवके तनय देवन के शिरताज ॥
विघनहरैं सब जगत के अतिकृपालुगणराज ४

ग्रन्थ समाप्त ॥

भविष्यपुराण क़ी० १=)

श्रीपण्डित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासीकृत भाषाहै-इसमें पौराणिक इतिहास, चारोंवर्णोंके धर्म, स्त्रीशिक्षा व परीक्षा, व्रतोंके उद्यापन, शाकद्वीपीय ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति, होनेवाले राजाओंका राज्यसमय, गर्भिणी के धर्म, धेनुदानविधान, जलाशय, देवालय बनाने और वृक्ष लगाने का फल और सब प्रकारके दानोंका माहात्म्यआदि वर्णन किये गये हैं ॥

शिवपुराण भाषा क़ी० १॥)

इसका पण्डित प्यारेलालजी ने उर्दू से हिन्दीभाषा में भाषानुवाद कियाहै-इसमें शिवजीके निर्गुण व सगुण स्वरूप का वर्णन, सतीचरित्र, गिरिजाचरित्र, स्कन्दकथा, युद्धखण्ड, काश्युपाख्यान, शतरुद्रिखण्ड, लिंगखण्ड, रुद्राक्ष व भस्ममाहात्म्य, व्रतविधि, भूगोल, खगोल व आदि में छवों शास्त्रों के मतकी भूमिका भी संयुक्त कीगई है ॥

स्कन्दपुराणका ब्रह्मोत्तरखण्ड भाषा क़ी० ।)॥

जिसको पण्डित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासी ने स्कन्दपुराणान्तर्गत संस्कृत ब्रह्मोत्तरखण्डसे देश भाषामें रचा-जिसमें अनेक प्रकार के इतिहास और सम्पूर्णव्रतों के माहात्म्य आदि वर्णित हैं ॥

बारहोंस्कन्ध श्रीमद्भागवत क़ी० ४) पु०

इसके भाषाटीका को श्रीअङ्गदशास्त्रीजी ने अक्षर अक्षर के अर्थ को ललित व्रजबोली में रचना किया है-यह टीका ऐसा मनोहर हुआहै कि जिसकी सहायता से थोड़ा भी जाननेवाला भागवत को अच्छीतरह से समझ सक्ताहै यह पुस्तक प्रत्येक विद्वान् के पास रहनी चाहिये क्योंकि भागवत बड़ा कठिन पुराण है विना ऐसे सहज भाषाटीका के सब को श्लोकार्थ नहीं समझ पड़ता है इसका मूल बीच में और भाषाटीका नीचे ऊपर रखकर अत्यन्त शुद्धता से पत्रेनुमा छपाहै काग़ज़ हिनाई है और छापा पत्थर है ॥

बृहन्नारदीयपुराण क़ी० ।=)

पण्डित देवीसहायशर्मा नारनौलनिवासीकृत भाषाहै-जिसमें श्री नारदजी और सनत्कुमारसंवादद्वारा श्रद्धाभक्तिनिरूपण, भगवद्भक्ति माहात्म्यवर्णन, उत्तम तीर्थों का निरूपण, सगरवंशीय सौदास राजा की

कथा, श्रीगंगाजी की उत्पत्ति, राजा बलिका वृत्तान्त, दा... निरूपण, व्रतों और श्राद्धों का विधान, तिथिनिर्णय, प्रायश्चि... यममार्ग का निरूपण, संसार के दुःखों का कथन, मोक्षोपायवर्णन, वेद... माली और तिसके पुत्र यज्ञमाली वा सुमाली की कथा और विष्णुजी के चरणोदक का माहात्म्य इत्यादि कथा वर्णितहैं ॥

सुखसागर क़ी० ७) पु०

सुखसागरों का तर्जुमा पंजाब के रहनेवाले बाबू मक्खनलालजी ने कियाहै--इस सुखसागर में बहुतही मोटेहरूफ़ और अत्यन्तही उम्दा तस्वीरें इत्यादि सब सामान है कि जिसकी तारीफ़ नहीं होसक्ती देखने ही से हाल मालूम होगा ॥

गणेशपुराण भाषा क़ी० २॥) पु०

इसको मुन्शीनवलकिशोरजीकी आज्ञानुसार नारनौलनिवासी पण्डित देवीसहायजी ने संस्कृत से श्लोक २ का देशभाषा में उल्थाकिया है--इसमें गणेशजीका सम्पूर्णचरित्र विस्तारपूर्वक व औरभी अनेक विषय वर्णितहैं।

श्रीवाराहपुराणपूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध क़ी० १) पु०

जिसका जयपुरनिवासी पण्डित माधवप्रसादजी ने मुन्शीनवलकिशोरजी के व्ययसे संस्कृत से देवनागरी में भाषाकिया और पण्डित दुर्गाप्रसाद और पण्डित सरयूप्रसादजीने शुद्ध कियाहै--इसमें श्रीभगवान् वाराहनारायण ने धरती से चौबीस हज़ार श्लोकों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होनेके लिये इतिहास संयुक्त कथायें वर्णन की हैं ॥

गरुड़पुराण क़ी० ≡)॥

इसमें ३४ अध्याय प्रेतकल्प के बीचमें मूल और नीचे ऊपर भाषाटीका रखकर छापेगये हैं--जिसमें सम्पूर्ण प्रेतही का कर्महै और प्रेतही की सम्पूर्ण षोडशी सपिण्डन शांति वृषोत्सर्ग इत्यादि क्रिया भी विस्तारपूर्वक वर्णित हैं ॥

लका वृत्तान्त, दा

ति र्णय, प्रायश्चि

, मो यवर्णन